श्रीमन् महाराज श्रीभद्रबाहू स्वामी

विरचित

॥ श्री कल्पसूत्रको अर्थ ॥

(बालायबोध)

ओ ग्रथ पर्यूपण पर्व माहे साधु श्रावक लोकांने आवश्य मेव उपयोगी जाणीने.

नाना दादाजी गुंड इणने

आपरा " व्यापारी " छापखाना माहे छपायो

समत १९५० सन १८९३

ओ पुस्तक पुना पेठ नानाकी आठे

भाई भगवानदासजी केशरचदजी नाहारकी

दुकान उपर मिलसी

किमत २ रुपया.

॥ श्री वितरागाय नमः ॥

श्री कल्पसूत्र ग्रंथको अर्थ लिख्यते.



प्रथम कल्पसूत्रकी व्याख्या कहे छे.

श्री जिनशासननें विषे सर्व पर्वमाहे शिरोमणि श्रीपर्युषण पर्व छे ते पर्वना दिवसोमा नगर नगरने विषे कल्पसूत्र वचाय छे पिण योग वहन करनारा साधु मुनिराजनेज सूत्र वाचवानो अधिकार श्रीतीर्थंकर भगवंते दीधो छे बीजा कोइथी सूत्रनी व्याख्या थाय नहीं माटे तेवा मुनिराजोनु आगमन सर्वस्थले होतु नथी तेथी जे गाममा साधु महाराज बिराजमान न होय ते गाम निवासी श्रावकोने कल्पसूत्र श्रवण करवानो अनंतराय पडे छे ते अनंतराय दूर करवाने वास्ते जेम पूर्वाचार्योये लोकोपकारने अर्थे पूर्वे अनेक प्रकरणोनी रचना करेली छे तथा वर्त्तमान कालमा पिण करे छे ते प्रकरण सूत्रोना अर्थ रूपज छे अने तेनु पठण चतुर्विध श्रीसंघ करे छे तेम हु पिण श्रीकल्पसूत्रनो प्राकृत अर्थ प्रकरण रूपे बनावु छु के जे ग्रंथ साधु, साधवी श्रावक अने श्राविका मिली चार प्रकारना श्रीसंघने वाचवाना उपयोगमा आवे केमके ए ग्रंथ पिण सूत्रनो अर्थ रूप होवाथी प्रकरण सदृश समजवो ॥ १ ॥ ॥

॥ हिवे श्रीपर्युषण पर्वने विषे ए ग्रंथ वाचवानो विधि कहे छे. जेम शहेरमा श्रीमुनिमहाराज चोमासु रह्या होय अने ते गामना श्रावको एकठा थई साधुनी पासेथी सूत्रनी पोथी मागी लेई आवीने एक श्रावकना घरमा रात्रे तिहा रात्रि जागरण करे पछी बीजे दिवसे श्रावक श्राविका एकठा थईने एक कुंआरा लोकोने

श्रीवोट वस्त्र पहेरावी हाथी उपर वेसाडीने अथवा अश्वप्रमुख वाहे उत्तम वहान ऊपर वेसाडी ते पोथी एक थालमा राखी ते थाळ ते परेला लोकराना हाथमा आपी सर्वेन बदाम, साकर, पतासा आदिक नी प्रभावना करी वाजते गाजते महोटा महोत्सव पूर्वक उपासरे आ वीनें ते पुस्तक गुरुना हाथमा, आपे गुरु वाचना करे ते सर्व श्रीसंघ सांभले अने गुरु आगल फलादिक राखे छे ॥ तेम आ पुस्तक पिण जे श्रावकादिकनी पासें होय तेनी पासेंथी मागी लावीनें पचे ठेरावे का बीजा कोइ श्रावकने घरे लइ जइ तिहा रात्रि जागरण करी पछी बीजे दिवसे सर्व संघ मिली पूर्वोक्त रीतें महोटा महोत्सव पूर्वक पौषधशाळामा किंवा उपाश्रयमां अथवा कोइ श्रावकने घरे जिहा सामायिकादिक करवानी कोइ स्वच्छ निर्मल जगा होय ते स्थानके अथ वा बीजी कोइ जीवादि उपद्रव रहित जगा होय के जिहा सर्व संघे मिली वाचवानो विचार कर्यो होय तेवी जगाने यथाशक्तिये शोभा वी राखी होय तिहा आवीनें ज्ञानभक्ति पूर्वक घणाज यत्नथी सर्व प्रकारनी अशातना टाली पोथी विवेकी सुज्ञ श्रावकना हाथमा आपीने वचाववी अने बीजा सर्वजनोंये प्रमाद, निद्रा, विकथादिकनो त्याग करी विनय पूर्वक त्या बेसीनें एकाग्रचित्तें सांभलवी ॥ २ ॥ ॥

हिवे श्रीपर्युषण पर्व तथा कल्पसूत्र अने श्रमणसंघ एमनुं महत्व कहे छे

॥ श्लोक ॥ नैतत्पर्वसमं पर्व, नचकल्पसमं श्रुतं ॥ नधार्मिकसमं संघ, स्त्रि रत्नानि जगत्त्रये ॥ १ ॥ अर्थ ॥ आ जगतने विषे दीपवाळिकादिक अनेक प्रकारना लौकिक पर्व छे तथा चोमासी, श्रीतीर्थंकरदेवना पाच कल्याणिक, अष्टमी, पक्खिका अने तीर्थयात्रादिक अनेक पुण्य पर्व छे ते सर्व लोकोत्तर उत्तम पर्व छे ए सहु पर्व विषे शिरोमणि चिं तामणि रत्न सदृश ज्येष्ट एवु सांवत्सरि क पर्व छे ए जेम सांवत्स रिक पर्व समान बीजु कोइ पर्व नथी तेम कल्पसूत्र समान बीजु कोइ सूत्र पिण नथी तथा चतुर्विध श्रीसंघ माहे श्रीसाधुमुनिराजना सर्व

समुदायसमान बीजो सब पिण कोइ नथी एटले सर्व पर्व माहे सर्वोत्तम पज्जोसण पर्व छे तेने विषे कल्पसूत्र वचाय ते पिण एकादशांगादि सर्व सूत्रमा उत्तम छे तेम कल्पसूत्रना वाचनार साधुमुनिराज ते पिण चारे प्रकारना संघमाहे उत्तम छे एम त्रणे साक्षात रत्न समान जाणवा ॥१॥

॥ हिवे व्याख्यान करनार पोतानी लघुता पूर्वक श्रीगुरुमहाराज अने श्रीसंघनी महत्वता देखाडे छे व्याख्यान करनार कहे छे के हु मंदमति, मूर्ख, अज्ञानी, महाजड छता पिण श्रीसंघनी समक्ष दक्ष थइने आ कल्पसूत्रनी व्याख्या करवानु साहस करु छु व्याख्यान करवाने उजमाल थयो छु, ते सर्व श्रीसद्गुरुनो प्रसाद अने चतुर्विध श्रीसंघनु सानिध्यपणु जाणवु जेम अन्य शासनमा कहेलु छे के श्रीरामचंद्रनी सेनाना वादरायें महोटा महोटा पाषाण लेइने समुद्रमा नाख्या ते पथरा पोते पिण तर्या अने लोकोने पिण तार्या ते काइ पाषाणनो तथा समुद्रनो अने वादराओनो प्रताप जाणवो नही परंतु ते प्रताप श्रीरामचंद्रजीनो जाणवो केमके पत्थरनो तो एवो स्वभाव छे जे पोते पिण बुडे अने आश्रय लेनारने पिण बुडाडे तेम हु पिण पत्थर सदृश छता श्रीकल्पसूत्रनी व्याख्या करू छु तेमा माहारो काइ पिण गुण जाणवो नही तेमज पौषधशाला अथवा पुस्तकना पानांनो पिण काइ गुण जाणवो नही ए गुण मात्र श्रीसद्गुरु अने श्रीसंघनोज जाणवो तथा जेम कोइ त्रहत्भावनी जाणवा वाली गीत कला अने नृत्य कलामा विशारद छपन्न कोडी ताल त्रहह शास्त्रनी पारग एवी नर्त्तकी होय ते गीतगान करते मृदंगध्वनि वाजते नृत्य करे अनेक चक्रगोला फेरवे अने हाव भावथी लोकोना मनरंजन करे तेमज कोइ गामडीयानी गामडियात एक घेली स्त्री होय ते पिण तालोटाना छंदे पडते थके नृत्य करे तथा जेम कोइ महागंभीर समुद्र होय ते पिण लहेरो आपे अने कोइक गामनु न्हानु तलाव होय ते पिण वर्षाऋतुमा पाणीथी पूरण भराय थकु लहेरो आपे तेने पिण कोइ निवारे नही तथा जेम शब्द द्रव्यमाहे अवद्द चोक्ख

मागीने खीर राधीयें ते पिण उजगायछे अने कूशकानी रावडी ॥ धीय ते पिण उजरायछे तेमा पिण काइ आश्चर्य नथी तेम जे एहज स्थान कें एहज क्षेत्रें अनेक गणधर, सपूर्ण श्रुतधर, महाशास्त्रना वेत्ता, नव रसावतार, महा व्याख्यानना करनारा व्याख्यान करे अने हुं पिण व्याख्यानकरू तेमा आश्चर्य एटलो फेर जाणवो एटले प्रारहेजेदने जाणनारी नर्त्तकी तथा समुद्र अने शुद्रनीरने सदृश ते गणधरादिक जाणवा अने गामडियान तथा गामनु तलाव अने कुशकानी रावडी समान मने जाणवो ते हु श्रीसद्गुरु अने श्रीसंघना प्रसादथी माननीय थयो छु जेम कोइ पाषाण जडरूपा तथा ज्ञान विवर्जित छता पिण ते नी ज्यारे प्रतिमाजी नीपजावीयें त्यारे ते सर्व जनोनें माननीय पूज नीय थाय तेणी परें श्रीगुरु तथा श्रीसंघना प्रसादथी हु पिण मान नीय थयोछु ॥ ४ ॥ हिवे कल्पसूत्रनो अर्थ करनार मारजना श्रीदेवगुरुने नमस्कार लक्षण मगलाचरणने अर्थे श्लोक कहे छे ॥

श्लोक ॥ नत्वा श्रीमन्महावीरं, गौतमादिगणाधिपान् ॥ कुर्वहं कल्पसूत्रस्य, व्याख्यां बालोपकारिणीम् ॥ १ ॥ ५ ॥ ॥ हिवे प्रथम श्रीगुरु महारा जनो आदेश लेइनें जे क्षेत्रमा साधु चोमासु रहे तिहां चोमासामा भाद्रपद मासने विषे पर्यूषण पर्व आवे थके मांगलिक निमित्ते पाच दि वस पर्यंत श्रीकल्पसूत्र वाचे ते कल्प एवु नाम आचारनु छे ते साधुनो आचार दश प्रकारनो छे, यदुक्त गाथा कहे छे ॥

गाथा ॥ आचेलुक्कादेसिय, सज्जायर रायपिंड किइकम्मे ॥ वय जिठ पडिकमणे, मास पज्जोसवण कप्पे ॥ १ ॥ ॥

॥ अस्यार्थ ॥ प्रथम अचेलक, बीजो उद्देशीक, त्रीजो शय्यातर, चोथो रायपिंड, पांचमो कृतिकर्म, छठो व्रत, सातमो ज्येष्ठ, आठमो प्रतिक्रमण, नवमो मासकल्प अने दशमो पजोसण कल्प ए दश प्रकारना कल्प एटले आचार तेना सामान्यथी नाम कह्या हिवे वि स्तारार्थ कहेछे ॥ प्रथम जे वस्त्र नही राखवा तेने अचेलक कल्प

कहीयें, तिहां श्रीऋषभदेव भगवान तथा श्रीमहावीर स्वामीना साधु श्वेतमानोपेत जीर्णप्राय वस्त्रने धारण करे तेमां कटीथी चार आंगुल नीचो अने गुडाथी चार आंगुल उंचो एवो साडा त्रण हाथनो चलोटो राखे तथा साडाचार हाथनो कपडो राखे तथा पोताना आंगुल प्रमाण एक वितस्ते चार आंगुलनी मुहपत्ति राखे एम अर्ध शरीर उघाडु अने अर्ध शरीर ढांक्यु राखे एवीरीतें पहेरेला वस्त्र ते पण पहिरया जेवा समजवा माटे तेने अचेलक कहीयें ते ऊपर दृष्टांत कहे छे जेम कोइ एक पुरुष धोतीया वणनारने कह्यु जे महारा धोतीया नाकीदथी आप केमके हु नागो फिरु छु एवु वचन व्यवहारथी कह्यु हिवे ते पुरुषे जूना वस्त्र पोतीयु पहेरयु छे तोपिण नागो फिरु छु एम कह्यु वली बीजु दृष्टांत कहे छे जेम कोइएक पुरुष पोतीयु पहेरीने नदी उतरयो तने कोई एके पुछयु के भाई तु नदी शारीते उतरयो तेवारे तेणे जवाब आप्यो के नागो थईने नदी उतरयो, वली त्रीजु दृष्टांत कहे छे जेम कोई एक डोसी जूना वस्त्र पहेरी वणकरनी पासें जई कहेवा लागी के अरे भाई महारा वस्त्र तइयार थया होयतो मने आप हु नागी फिरु छु एवी रीतें साधुने पिण जीर्णप्राय जूना श्वेतमानोपेत वस्त्र धारण करते छते पिण वस्त्र रहित अचेलक कहीयें तेम आ चोवीसीमां श्रीऋषभदेव अने श्रीमहावीरने साधिक एक वर्ष पछी इंद्रदत्त वस्त्रने अपगमे जावजीव पर्यंत अचेलक पणु हतु अने चोवीसे तीर्थंकर आश्रयितो दीक्षा लेता वखते इंद्र महाराज तेमना खंधा ऊपर देवदुष्य वस्त्र मूके ते जिहां सुधी स्कंधापर रहे तिहां सुधी सचेलक कहीयें अने पडी गया पछी अचेलक कहीयें तथा आ चोवीसीमां बीजा श्रीअजितनाथ भगवानथी मांडीने श्रीपार्श्वनाथ भगवान पर्यंतना बावीश तीर्थंकर मध्यना कहेवाय तेने देवदुष्य वस्त्र शेष बे घडी आयुष्य थाकतो रहे तिहां सुधी रहे छे माटे ते वस्त्रसहितने सचेलक कहीयें तथा ए बावीश तीर्थंकरना साधु पिण

ऋजु एटले शुद्धमन वाला सरल अने दक्ष एटले पंडित घणा डाह्या थ तुं होय माटे महोटा मूलना पाच रंग वाला मानोपेत रहित एवां वस्त्र राख तेथी एनें सचैलक कहीयें केमके एन ए अचैलक कल्पनी कांई मर्यादा नही माटे एमने ए कल्प अनियत छे अने पहेला तथा छेला तीर्थंकरना साधुनें ए कल्प नियत छे एटले निश्चय छे ए प्रथम अचैलक कल्प कह्यो ॥ १ ॥

हिवे बीजो उद्देशिक कल्प कहे छे जे साधु अथवा साधवीने उद्देशि करयो एवो जे आहारादिक तेने उद्देशिक आहारादिक कहीयें तिहां मध्यना बावीस तीर्थंकरना वखतमा ने साधु अथवा साधवीने निमित्ते कोइ ग्रहस्थें प्रात पाणी, औषध भैषज्य, वस्त्र, पात्र निपजाव्या होय ते तेहज साधुनें लेवा न कल्पे पिण शेष बीजा साधुनें ते आहारादिक लेवा कल्पे केमके तेने आधाकर्मादिक दोष न लागे अने छेहेला तथा पेहला तीर्थंकरना शासनने विषे तो एक साधु अथवा एक साधवीनें अर्थे जे आधाकर्मिक आहारादिक निपजाव्यां होय ते सर्वथा प्रकारें कोइ पिण साधुनें अथवा साधवीनें लेवा कल्पें नही ए बीजो उद्देशिक कल्प कह्यो ॥ २ ॥

हिवे त्रीजो सय्यातरी पिंडनो कल्प कहेछे जे उपाश्रयनो धणी होय तेने सय्यातरी कहीयें अथवा जे साधुनें रहेवानी उतरवानी जगा आपे एटले जेनी आज्ञा लेइने साधु जगामा रह्या होय ते घरना स्वामीनें सय्यातरि कहीयें तेना घरनो पिंड जे आहारादिक बार वस्तु ते सर्व तीर्थंकरना साधुओने वोहोरवी कल्पे नहीं ते बार वस्तुना नाम कहेछे १ आहार, २ पाणी, ३ खादिम, ४ स्वादिम, ५ कपडा, ६ पात्रा, ७ कंबल, ८ ओघो ९ सुई, १० पिप्पलक, ११ नखऊतारवानीनेरणी, १२ कानमाथी मेल काहाडवानी पाटुइ, ए बारे चीज तथा बीजा पिण छुरी कतरणी अने सरपला प्रमुख ते कोई पिण साधूनें लेवा कल्पे नही ए सय्यातर पिंड लेवामा अनेषणीक

अशुद्ध दोषनो संभव थाय प्रमादादि महोटा दोष उपजे केमके साधुना रोगे करी पारणाने उत्तरवारणाने अर्थे वारवार जाता आ वता अशुद्धमान आहारादिके करीने ते ग्रहस्थ दहीं दुध प्रमुख स्निग्ध वस्तु पिण आपे तेथी रसगृद्धि थाय अने मिष्टान्नना लोभे तेनु घर न मुके कदापि वेगलो बीजे गामे गयो होय तो पिण त्यांथी मिष्टान्नने लोभे फिरी आवे वली वस्त्रादिक मागवा थका ते गृहस्थ तुरतम आपे तेणे करी उपधिनी वृद्धि थाय वली ते सय्यातरनो पिंड लेता थका गाममा फिरवाथी छुटे तेथी ते सा धुनु शरीर आळु थाय वली ते सय्यातरनो पिंड लेवाथी कदाच गृहस्थने एहवो पिण भय उपजे के जे उपाश्रय करावे तेने आहारा दिक पिण आपवा पडे तेने लीधे कोई जगा आपे नही तेथी आहार शिष्यादिकनो मिलवो दुर्लभ थई पडे इत्यादिक दोषना प्रसंगथी सय्या तरिना घरनो आहार लेवो तीर्थंकरें निषेध्यो छे कदाचित कोई कारणे सय्यातरिना पिंड लेवो पडे तो रात्रिना चार पहोर क्रिया सझाय करतो जागरण करे पिण निद्रा न करे अने प्रभातनु पडिक्कमणु बीजे स्थानके जई करे तो उपाश्रयना धणीनो सय्यातर न थाय अने जो रात्रे निद्रा करे अने प्रभातनो पडिक्कमणु बीजे स्थानके करे तो बेहु सय्यातर थाय एटले बेहु स्थानके आहारादि लेवा न कल्पे तथा १ तृण, २ माटीनो ढेंफु, ३ भस्म, (राख) ४ मा त्रानुं ठामडु, तेने मात्रा कहीयें, ५ बाजोट, ६ पाटी पाटला, ७ श य्या, ८ सथारो, ९ लेप प्रमुख वस्तु, १० उपधि सहित चेलो एटले वस्त्रादिक सहित चेलो ए दश वस्तु सय्यातराना घरनी लेवी कल्पे ए त्रीजा सय्यातरि पिंड कल्प कह्यो ए कल्प सर्व तीर्थंकरोना साधुने निश्चय होय माटे एने नियत कल्प कहीयें ॥ ३ ॥

हिवे चोथो राजपिंड कल्प कहे छे जे महोटो छत्रपति चक्रवर्त्ती दिक राजा होय अने जेने सेनापति, पुरोहित, अ

मार्थवाह ए पांचवाना होय पाचनी मार्थे राज्य करे तेने राजा कहीये तेना घरनो आहारादिक पिंड पहेला तीर्थंकरना साधु साध्वीने उहेला श्रीवीरजगवानना साधु साध्वीनें लेवो कल्पे नही केमके राजद्वारमा घणा लोक मिले तिहा घणो वखत लागें तथा कोइक अमांगलिक कहे तथा तिहा हाथी, घोडा, रथ अने स्त्री प्रमुखनें जोतां थका राग उपजे वली कोइक चोर कहे कोइक हेरू पिण कहे इत्यादिक अनेक दोष उपजे वली लोक निंदा करे जे आ साधु थइनें राज्यपिंड लीये छे अन्यदर्शनीयोना शास्त्रमा पिण राज्यपिंड निवारचो छे माटे पहेला अने छहेला तीर्थंकरना साधुये राज्यपिंड न लेवो अने बावीश तीर्थंकरना साधुओ ऋजु अने पंडित छे माटे राजाना घरनो निर्दोष आहार जाणे तेवारे आहार लीये अने सदोष जाणे तो न लीये माटे तेमने ए कल्पनी मर्यादा नथी ए चोथो राज्यपिंड कल्प कह्यो ॥ ४ ॥ ॥

हिवे पांचमो कृतिकर्म कल्प कहेछे, जे वांदवु तेने कृतिकर्म कहिये ते बे प्रकारे छे एकतो ऊभु थावु बीजु द्वादशावर्त्तवांदणो वांदवु तिहा श्रीजिनशासनने विषे सर्व तीर्थंकरोना साधुओनी एवी मर्यादा छे के जेणे पहेली दीक्षा लीधी होय ते साधुने पाछथी दीक्षा लेनारो साधु वांदे पिण बापदीकरो अथवा राजा अने प्रधान इत्यादिक न्हानो महोटो जुवे नही परंतु दीक्षा जो दीकरे प्रथम लीधी होय अने पिताये पाछलथी लीधी होय तो पिता पुत्रनें पिण वंदना करे एम राजा पोताना प्रधानने पिण वंदना करे तथा सर्व साध्वीयो तो पुरुषोत्तम धर्म जाणीने सर्व साधुनें वांदे परंतु न्हानो महोटो जुवे नही जो सो वर्षनी दीक्षित साध्वी होय अने एक दिवसनो दीक्षित साधु होय तो पिण ते साध्वी साधुने सामी जइनें ए पूज्य! पधारो एवीरीतें विनयपूर्वक सन्मानपणा देइने वांदे, केमके धर्ममांहे मुख्य प्रधान पणु ते पुरुषनेंज कह्यु छे, माटे पुरुष अधिक

छे तेथी पुरुष स्त्रीने वांदवु नहीं, जो साधु थईने साध्वीने वांदे तो घणा दोष प्राप्त थाय केमके स्त्रीजाति तुच्छ छे माटे अहंकार करे तो तेथी नीच गोत्रने बांधे, वली लोक निंदा करे माटे पुरुष स्त्रीने वांदवु नही ए कल्प मने चोवीशे तीर्थंकरोना साधु आश्रयी नियत जाणवो ए पांचमो कृतिकर्म कल्प कह्यो ॥ ५ ॥ ॥

हिवे छठो व्रतकल्प कहेछे, तिहां प्राणातिपातादिक पांच महाव्रत छे एटले प्राणातिपात, मृषावाद, अदत्तादान, मैथुन अने परिग्रह ए पांचथी विरमवु ते पांच महाव्रत कहीयें तिहां श्रीऋषभदेव अने श्रीमहावीरना साधु तथा साधवीने तो तादृश जाणपणाना अ भावथी पांचे महाव्रत व्यवहारथी छे अने मध्य बावीस जिनना वा रांना साधु तो परिग्रह व्रतमाहे परिग्रहित स्त्रीभोगनु पच्चखाण जाणे छे तथा त्रीजा अदत्तादान व्रतमाहे अपरिग्रहित स्त्रीभोगनु पच्चखा ण जाणे छे एटले स्त्रीने परिग्रह रूप गणीने पांचमा परिग्रह व्रत साथेज लीये छे, केमके जिहां स्त्री तिहां परिग्रह अने जिहां परि ग्रह तिहां स्त्री होय छे माटे बावीश तीर्थंकरना साधुने चोथु मै थुन विरमण व्रत वर्जीने शेष चार महाव्रत जाणवां अथवा श्रीऋ षभदेव अने महावीरना तीर्थे रात्रिभोजन व्रत मूळ गुणमाहे गणे छे तेथी रात्रिभोजन विरमण व्रत साथे गणीयें तो साधुने छ व्रत थाय अने बावीश जिनना तीर्थे तो रात्रिभोजन व्रत उत्तर गुणमा गणे छे माटे चार व्रत जाणवा ए छठो व्रतकल्प कह्यो ॥ ६ ॥

हिवे सातमो ज्येष्ट कल्प कहे छे ज्येष्ट एटलु महोटापणु नाम छे तिहां श्रीऋषभदेव अने महावीरना साधुओ तो महोटी दीक्षा दी धा पछी लघु वडाइ गणाय छे माटे जेणे न्हानी दीक्षा पहेली लीधी होय ते महोटो गणाय अने जेणे न्हानी दीक्षा तो पहे ली लीधी होय पिण महोटी दीक्षा पछी लीये तो ते आगलानी अपेक्षायें एटलु गणाय जेम पिता अने पुत्र तथा राजा अने प्रधान

था शेठ अने चाकर तथा माता अने दीकरी एम अनुक्रमे दीक्षा लीये पछी उठामणा आवे महोटी दीक्षा लीये तेवारें मुख्य मं कारें तो पिता, राजा, शेठ अने माता ए चार महोटा छे ते प्रण वामा जो अधिक थाय तो तेहज महोटा कहेवाय नहीं का पुत्र, प्रधान, चाकर अने दीकरी ए चारे न्हाना छे परतु ते प्रणवामां अधिक थइ जाय तो गुरु तेमने महोटी दीक्षा आपी महोटा करे अने बावीश तीर्थंकरना साधुने तो ए मर्यादा नथी, केमके ते तो ब धाये प्रवीण डाह्या होय छे तेथी तुरतज जखी लीये छे माटे ते दीक्षाना दिवसथीज वृद्ध अने लघु गणाय छे तेथी तेमनामा प्र थम जे दीक्षा लीये तेहज महोटो गणाय, जो पिता अने पुत्र तथा राजा अने प्रधान तथा शेठ अने वाणोतर तथा माता अ ने दीकरी ए सहु साथें दीक्षा लीये तो पिता, राजा, शेठ अने माता ए चार लोक रीतीयें महोटा गणाय तथा पुत्र, प्रधान वा णोतर अने दीकरी ए चारे लघु गणाय तथा महोटी दीक्षानें योग्य प्रधान अने पुत्र होय तो राजानें तथा पिताने पूछीनें म होटी दीक्षा आपे तेथी अप्रीति न उपजे ए रीते ए अनियत कल्प छे ए सातमो ज्येष्ट कल्प कह्यो ॥ ७ ॥ ॥

हिवे आठमो प्रतिक्रमण कल्प कहे छे प्रतिक्रमण ते जे आ वश्यकनुं करवु ते जाणवु तिहा प्रथम अने चरम जिनना वारा मां तो साधुने अतिचार दोष लागे किंवा न लागे तो पिण निश्चे थकी दैवसिकादिक पांचे प्रकारना पडिक्कमणाकरे अने बावीश तीर्थं करना साधुतो जो पाप लाग्युं छे एवु जाणे तोज दैवसिक अथ वा राइ पडिकमणुं साजे अथवा सवारे करे अने पाप लाग्यु न जाणे तो ते पिण न करे वाकी पाक्षिक, चोमासीक अने सावत्सरि क ए त्रण पडिक्कमणां तो बावीश जिनना वारामां नहोज करे एम ए पिण अनियत कल्प छे ए आठमो प्रतिक्रमण कल्प कह्यो ॥ ८ ॥

हिवे नवमो मासकल्प कहे छे पहेला अने छेला तीर्थंकरना साधु एक गाममा एक मास पर्यंत रहे उपरांत रहे नही मात्र चोमासानां चार महीना पर्यंत एक गाममां रहे परतु अन्य दिवसो मा एक महीनाथी उपरांत रहे तो घणा दोषोनो सभव थाय ए कतो गृहस्थ सार्थे प्रतिबंध थाय, हलका पणु पामे, लोकनो उपकार करी शके नही, देश विदेशनु ज्ञान न थाय, ज्ञाननुं आराधन न थाय माटे एक मास उपरांत रहेवानी साधुने आज्ञा नथी कदा चित् दुर्भिक्षादिक कारणे रहेवू पडे अथवा विहार करवाने अ समर्थ होय तो पिण वस्ति पालटण करे, पाडो पलटावे, घर पल टावे अने छेवट सथारानी भूमि पालटण करीने भावथी पिण मा स कल्प करे जे माटे लोकमा पिण कहावत छे के ॥ स्त्री पीयर नर सासरे, संजमिया थिरवास ॥ एता होये अलखामणा, जो माडे थिर वास ॥ १ ॥ अने मध्य बावीश तीर्थंकरना साधुओ तो विहार कर वाने जो सामर्थ्यवान होय तो पिण ते ऋजु अने पडित छे माटे तेमने मासकल्पनो काइ नियम नथी जो दोष नहीं लागतो होय अने लाभ जाणे तो देसूणा पूर्वकोडी वर्ष पर्यंत पिण एकज क्षेत्रमा एकज स्थानके रही जाय माटे ए अनियत कल्प छे ए नवमो मा स कल्प कह्यो ॥ ९ ॥

हिवे दशमो पर्युषणा कल्प कहे छे जे एक जगायें रहेवु तेने प र्युषणा कहे छे ते पंजोसण बे प्रकारना छे एकतो ग्रहस्थ जाणे अने बीजो गृहस्थ न जाणे ज्याहा पर्युषणा पर्वने पडिक्कमता थका सा धुलोक पूछे तेवारें रहेवाने विषे वर्त्तमान योग्य कहे पिण पर्यु षणा पर्व पडिक्कम्या पछी तो कार्तिक पुनम पर्यंत रहेवानु निश्च यथीज कहे तिहा गृहस्थनी आज्ञा थकी पाच दिवस यावत् रहेवु एम पाच पाच दिवस रहेता पचास दिवसें पंजोसण पर्व क रे तिहा कल्पसूत्र गृहस्थ आगल वाचे पछी सत्तर दिवस निश्चय

थी रहे एटले जे गृहस्थ जाणे ते तो भादरवा शुद्धि पांचमथी माडीने कार्तिक शुद्धि पूर्णिमा सुधी रहे अने बीजो जे गृहस्थ ने जाणे ते तो आषाढ शुद्धि पूर्णिमाथी माडीने भादरवा शुद्धि पंचमी सुधी जाणवु, केमके कदापि कोइ गृहस्थ साधुने पुछे के आप चोमासे रह्या तेवारे साधु कहेके जो क्षेत्र फरसना अथवा पांचदिन छैयें एवो जवाब आपे तेथी आगउना दिवस गृहस्थ ने जाणे अने पर्यूषण कर्या पछी तो अवश्य तिहांज रहे माटे ते गृहस्थ जाणी शके ते जघन्यथी सत्तर दिवस पजोसण अने उत्कृष्ट छ महीनाना पजोसण जाणवां ए कल्प श्रीऋषभदेव अने श्रीमहावीरना साधुओने निश्चयथी जाणवो अने बावीश तीर्थंकरनां साधुओने निश्चय नही ए दशमो पजोसण कल्प कह्यो ॥ १० ॥

एरीते ए दश कल्प कह्या ते दशे कल्प श्रीऋषभदेव तथा श्रीमहावीर स्वामीना साधुओने निश्चयथी जाणवा अने मध्य बावीश तीर्थंकरना साधुओने तो ए दशमांथी एक सय्यातर, बीजो चार महाव्रत, त्रीजो ज्येष्ट अने चोथो कृतिकर्म एटले वंदणा ए चार कल्प निश्चयथी होय छे अने एक अचेलक, बीजो उद्देशिक, त्रीजो प्रतिक्रमण, चोथो राजपिंड, पांचमो मासकल्प अने छठो पजोसण कल्प ए छ कल्पनो निश्चय नही ए जेवी मर्यादा बावीश तीर्थंकरोना साधुओनी कही तेवी मर्यादा श्रीमहाविदेह क्षेत्रना तीर्थंकरोना साधुओनी पिण जाणवी ॥ १ ॥ इहा कोइ कहे के साधुतो सर्वे सरखाज छे तो तेना आचारमा भेद केम पड्यो तेने उत्तर कहियें छैयें श्रीऋषभदेवजीनी वारे माणस ऋजु अने जड होय छे, तेमने धर्म समजाववो घणो कठण थाय छे तथा श्रीमहावीर भगवाननी वारें माणस वक्र अने जड होय छे, तेमने धर्म पालवो घणो दुर्लभ थई पडे छे अने मध्यना बावीश तीर्थंकरनी वारें माणस बधा ऋजु अने प्राज्ञ होय छे माटे तेमने धर्म समजाववो पिण सुगम होय छे अने पालवु पिण सोहेलु होय छे एवी रीतें मनुष्योनी

परिणाममा भेद होवाथी कल्पमा पिण भेद थया छे एम जाणवुं, परतु परमार्थथी भेद कांई पिण नथी, मात्र पुरुषोना परिणामना भेद छे ॥३॥

हिवे प्रथम तीर्थंकरना साधु जे ऋजु अने जड होय ते दृष्टांते करी समजावीयें छैयें श्रीऋषभदेवना तीर्थमा कोइएक आचार्यनो शिष्य थडेउ भूमिकायें गयो ते घणो वखत लगाडीनें पाछो आव्यो तेने गुरुयें पुछ्यु अरे शिष्य तेने आटलो वखत केम लागो त्यारे ते ऋजु पणाथी बोल्यो के स्वामी नाटकीया लोक रमत करता हता ते जोवाने ऊभो रह्यो हतो तेथी वधारे वखत लागो ते सांभली गुरु बोल्या हे वत्स ! आपणे साधु थइनें नाटक जोवा ऊभा रहेवु नहीं एथी पाप लागे छे माटे आपणने ए अकल्पनीय छे तेवारे शिष्यें तहत्ति कही एटले जेम तुमे कहो छो ते प्रमाण छे आज पछी जोइश नही फिरी कोइक दिवसें तेहज शिष्य बाहिर भूमि गयो हतो ते घणो वखत लगाडीनें पाछो आव्यो जेथी गुरुयें पुछ्यु जे आटलो वखत केम लागो तेवारें ते शिष्य बोल्यो के हे स्वामी रस्तामा नाटकणी नाचती हती ते जोवानें ऊभो रह्यो हतो तेने लीधे अवार थइ तेवारे गुरु बोल्या जे तुमनें पूर्वे मनाइ करी हती तेम छता केम जोवाने ऊभा रह्या तेवारें ते शिष्य जड पणाथी एटले मूर्खपणाथी बोल्यो महाराज तमेतो नाटकीया जोवाने मनाइ करी हती पिण नाटकणी जोवानें तो मनाइ करी हती नही तेवारे गुरु बोल्या हे महाभाग्य ! नाटकणी तो वली नाटकीया करता पिण अधिक रागनु कारण छे माटे तेनो सर्वथा नहीज जोवी ते सांभली शिष्य बोल्यो हे स्वामी ! मने प्रथम एवी समज पडी हती नही हिवे हु क्यारें पिण जोइश नहीं इहा ऋजु पणाथी सत्य बोल्यो अने जडपणाथी जो नाटकीआ वर्ज्या तो नाटकणी अवश्य वर्जवी जोइयें एटलु समज्यो नहीं ॥ १ ॥

हिवे वली बीजुं कोंकण देशीय दृष्टांत कहे छे जेम कोई एक कोंकण देशना वाणीयायें वृद्ध पणामा कुटुंब परिवार छोडी धर्म पामी वैरा

श्यवान यइने स्थविर पासे दीक्षा लीधी तेनें कोकण साधु कहीनें सर्व बोलावे एक दिवस ते थंडिल थकी आवी इरियापथिका क्रिरिया पडिक्म्यो तेने काउसग्ग पारता घणो वखत लागो तेवारें गुरुयें पूछ्यु जों, कोकणीक साधु! तमोने एटलो वखत काउस्सग्गमा केम लागो ते सा ंभली साधु ऋजु पणे बोल्यो हे स्वामीजी! में आज जीवदया चिंतवी गुरुयें पुछ्यु तुमे केवा प्रकारनी जीवदया चिंतवी तेवारें साधु बोल्यो जेवारें हु घरे गृहस्थ अवस्थामा रहेतो हतो तेवारें वर्षाकाले खेत्रमा वृक्षोनें कापी नाखी सूड करीनें जमीननें अग्नियें बाली शुद्ध करी तेमा धान्य वावतो हतो तेणेकरी माहरा घरमा घणुज धान्य निपजतु हतु तेथी महारु सर्व कुटुंब सुखी रहेतु हतु अने हिवे में तो दीक्षा लीधी छे अने महारा छोकरा आलसु छे ते खेतीमा काइ समजता नथी माटे जो निरुद्यमी थका निचिंत पणें घरमा बेठा हशे अने सूड नही करशे तो धान्य उपजशे नही तेथी ते बापडा भूखे मरशे एवा प्रकारनी मे जीवदया चिंतवी एम ऋजुपणाथी साधु बोल्यो ते सांभली गुरु बोल्यो हे भद्र! तुमे माठु ध्यान कर्यु छे केमके ए खेतीनो घणो पाप विना थाय नही ते माटे सावद्यनी अनुमोदना साधुनें करवी युक्त नथी माटे मिच्छामि दुक्कड देइनें शुद्ध थाओ ते सांभली साधुयें मिच्छामि दुक्कड दीधो, ए बीजु दृष्टांत कह्यो॥२॥

हिवे वली त्रीजु दृष्टांत कहे छे सोरठ देशन विषे एक ब्राह्मण रहेतो हतो तेनो पुत्र सासरे जवा लाग्यो तेवारे पितायें शिखामण आपी के हे बेटा! एकवार हा कहेवी अने एकवार ना कहेवी ए वी पितानी शिखामण धारण करी तें सासरे पोहोतो त्यां सासु सुसरायें पूछ्यु जे हे जमाइ! तुमे आव्या तेवारें ब्राह्मण बोल्यो हाजी, फिरी सासु सुसरे पूछ्यु के घरे कुशल खेम छे? तेवारें ब्राह्मण बोल्यो नाजी, फिरी पूछ्यु के तुमारा पिता देवलोक पहोता? ते वारें बोल्यु हाजी, फिरी पूछ्यु तेमनी पिछवाडे काइ, खरच खराचात,

फरी तेवारें कह्यु नाजी, ते सांजली साधु तुमरे कह्यु के तुमेतो मोटा मूर्ख छो तेवारें तेणे कह्यु हाजी, एटली वात थया पछी ते सर्व ब्राह्मण मित्रोनें मोकाले गया त्यां जइने जूए छे तो जमाइनो पिता जीवतो बेठो छे तेने राम राम जुहार जुहारकरीनें सर्व मिल्या, पछी जमाइना पितायें पूछ्यु के तुमोने सर्वेनु शा कामें अहींआ आववु थयु छे ? ते सांजली सर्वे बोल्याके तुमारे छोकरे तुमे परलोक सिधाव्या एवी वात अमारी पासें कही तेथी अहींआ आव्या छैयें, तेवारें ते छोकराना पितायें कह्योके ए छोकरो मूर्ख छे एवा जीवनें पिण ऋजु एटले भोला अने जड एटले मूर्ख कहीयें ए त्रीजु दृष्टांत कह्यो ॥ ३ ॥

एवा साधु प्रथम तीर्थंकर श्रीऋषभदेवना तीर्थे समजवा ए प्रथम तीर्थंकरना साधुओ आश्रयी त्रण दृष्टांत कह्या ॥

हिवे चरम एटले छेल्ला तीर्थंकर श्रीमहावीरस्वामीना साधु वक्र अने जड होय तेना ऊपर दृष्टांत कहे छे जेम कोइएक महावीर स्वामीना तीर्थनो साधु स्थंडिलें गयो ते घणो मोडो आव्यो तेने गुरुये वखत घणो लागवानु कारण पूछ्यु तेवारे वक्रपणाथी कहेवा लागोके बाहिर जाय तेनें वखतता लागेज एमां मने शु पूछो छो ! । पछी जेवारें गुरुयें घणु पूछ्यु तेवारें कह्यु जे नाटकी आ नाटक करता हता ते जोवा ऊभो रह्यो हतो तेने गुरुयें कह्यु जे यतियें नाटक जोवु नही ते तुमे जोयु तेथी पाप लाग्यु माटे मिछामिदुक्कड लीयो एम कही मिछामिदुक्कड दीधु, फिरी कालांतरें एक दिवस नटडीनु नाटक देखवा ऊभो रह्यो तेथी घणो वखत लागो, माटे गुरुयें तेनु कारण पूछवाथी वक्रपणाना योगथी वांका वांका उत्तर आपवा मांड्या पिण साधु कहे नही तो पिण गुरुयें घणु पूछ्यु त्यारे बोल्यो जे नाटकणी नाच करती हती ते जोवा ऊभो रह्यो हतो, ते सांजली गुरु बोल्या में ना कही ह

तो तो पिण तुं नाटक जोवा केम ऊभो रह्यो? तेवारें शिष्य व क्रपणाथी बोल्यो जे तुमे तो नाटकीआनु नाटक जोवाने वार्यो हतो परतु ते वखत नटडीनु नाटक जोवाने शा वास्ते वार्यो नो हो? तो एमा माहारो शो वाक छे एतो तुमारोज वाक छे, एम वक्रपणाथी उलटो गुरुनें उलभो दीधो ए वक्रपण आश्रयि प्रथम दृष्टांत कह्यो ॥ १ ॥ ॥

हिवे वली बीजु लोकीक दृष्टांत वक्र जडनु कहे छे कोइ एक शेठनो छोकरो घणो दुर्विनीत हतो ते पोताना मा बाप साथें वढवाड करया करे तेने मा बाप घणा समजावे तो पिण कोइनु कह्यो माने नही पछी कुटुबना माणसोयें तेने शीखामण आपी कह्यो के मा बापनी सामु तारें बोलवू नही तेवारें तेणे कह्यो हिवे हु बोलीश नही एम करता कोइएक दिवसें मा बाप प्रमुख सर्व कुटुंब मिली पुत्रने घर सोंपी कांइक कामसर बाहेर गया तेवार ते छोकरो पितानी शीखामण याद करतो घरना किवाड जडीनें खाटला उपर जइ सूतो, थोडीकवार पछी ते पितादिक आव्या तेणे छोकराने घणा साद करया तो पिण ते छोकरो खाट उपर बेठो बेठो साभले छे परतु बोले नही अने किवाड पिण उघाडे नही एम घणो वखत थयो त्यारे तेनो बाप भींत उपरथी चढी घरमा आव्यो अने जूए छे तो पुत्र खाटला उपर बेठो बेठो हसे छे तेने बापे मार आपीने पूछ्युं के तनें एटला साद करया तो पिण केम जबाब आप्यो नही वली किवाड शावास्ते उघाड्या नही तेवारें पुत्रें कह्यो जे तुमेज मने शीखाव्यो हतो के महोटाने सामु न बोलवु तो महारो एमा शो वाक छे? तेवारें पिताये कह्यु के अरे मूर्ख काम होय त्यारे तो बोलवु जोइयें ते साभली छोकरो बोल्यो के हिवे हु काम हशे तेवारें बोलीश, फिरी एक दिवसे शेठ घणालोकमा बेठा हता एटलामा घरे सगाणीयें राबडी बनावीनें छोकराने कह्यु के थारा बापनें बोलावी

जब तो रात्री शीरावीनें पछी सुगेधी काम उपर जाय, त्यारें ते शेठरो ज्याहां तेनो बाप घणा माणसोनी वित्तमा बेठो छ तिहां जइ हाटे सादें हेला पाडीनें कहेवा लागोके हे पिताजी! आज आ जो घरे राबडी थइ छे ते महारी माताये कह्यु छे के एकवार शीरावी जाओ पछी मुलेथी काम काज करो ते सांभळी शेठ घणा पामीनें त्यांथी उठ्यो आगळ जइ पुत्रनें एकांतमा कह्युके हे सुपुत्र! आ घणा लोकोमा लाज जाय तेवीरीतें तु शा वास्ते बोल्यो तेवारें पुत्र बोल्यो तुमेज मने शीखाव्यो हतो तो हु शु करु? तेवारें पिता बोल्यो के आज पछी जो एवु काम होय तो धीरे धीरे बोलवु, छोकरायें कह्युके हिवे धीरे धीरे बोलीश, एटलामा घणो एक दिवस ते शेठनें घरे लाय लागी तेवारें शेठाणीयें शेठने तेडवा सारु छोकरानें मोकल्यो ते छोकरो तिहां आवीनें जुए छे तो शेठ घणा लोकोनी विचमा बेठो छे तेवारें पोते दूर उभो रहीनें धीरे धीरे बोल्यो वणीवार थया पछी शेठ तने जोयो तेवारें शेठें पूछ्यु के अरे तु शासारु अहीआ आव्यो छे तेवारें ते छोकरो शेठनी पासें जइनें हळवे हळवे धीरजथी शेठना कानमा कहेवा लागोके आपणे घरे लाय लागी छे ते सांभळी शेठ बोल्यो के अरे मूर्ख घरतो बळी गयु हशे तु इहां आवताज केम बोल्यो नही तेवारें छोकरो बोल्यो के तुमे सीखाव्यो हतो के धीरे धीरे बोलजे तो एमा महारो वांक काइ नथी ए तुमारो पोतानोज वांक छे, पितायें कह्यु अरे एटलो थयो तो पिण हजी अकल आवी नही ज्यारे धूमाडा नीकळ्या त्यारे तुरतज धूळ नाखती हती तो अग्नि शांत थइ जात ए शेठनु केहेवु ते छोकरायें धारी राख्यु एम करतां शीतकाळ आवी तेवारें प्रभात समयें एनो पिता स्नान करवा बेठे छे तेना मस्तकथी धुंवाडा निकल्या ते देखी भडनो बेटो [illegible]

छोकरायें पितानां महोडामा नाम्यों तेवारे पितायें जाएग् जे ए छोकरो, खरोखर, मूर्ख छे वरी एक दिवस पितायें छाकरानें कह्यो के आ घोडो तिरस्यो छे तेने पाणी पीवरावजे अने न्हवरावी आवजे, छोकरायें कह्यो वे काम तो नही करू पितायें कह्यो न्हवरावी आवजे पछी ते छोकरो घोडा उपर चडी तळाव पासे जई घोडानु महोंडु बांधी न्हवरावीने पाछो घेर लाव्यो पिण घोडो तिरस्यो हतो माटे आकुळ व्याकुळ थतो देखी शेठें पुत्रनें मूर्ख जाणी घरमाथी काढी मूक्यो अने कह्यो के वाटे जाता कोई मिले तेने महोटे सादें जुहार करजे, पछी वाटे जाता कोई एक पारधी पास माडी मृगला एकठा करी उभो छे तेने छोकरायें महोटे सादें जुहार कर्यो तेनो साद सांभळीने सर्व मृग नाशी गया पारधीये तेने मार आप्यो अने मूर्ख जाणीने कह्यो के रे मूडा मार्गें जता छपतो चालयो जाजे वळी आगळ जाता कोइक कोटवाळ चोरनो शोध करवा निकल्यो छे तेणे छोकराने छपतो चोर देखी जाणी पकड्यो मार मारीने पछी मूर्ख जाणी कह्यो के घणा मागण दीठामां आवे तेवारे एम कहेजे के तुमारे एवु कोई वखते थाशोमा वळी आगळ जातां कोई एक गाममा विवाह छे ते देखी पहेला मूर्खायें कह्यो के तुमारे घेर एवु कार्य कोई वार म था जो ए वचन सांभळीने विवाह वा

उपर दृष्टांत कहे छे जेम कोई एक अजितनाथ भगवाननो साधु ते स्थंडि लथी वलो वस्पत करीने आव्यो माटे गुरुये वेनु कारण पूछ्यु तेवारे ऋजु पणाथी कह्यो के नाटकीआनु नाटक जोवा उभो हतो, गुरु बोल्या जे साधुयें नाटक जोवु नहीं तेवारे तेणे मिछामिदुक्कड देइने कह्योके हि वे कोइवारें जोवा ऊभो रहीश नही वली कोइएक दिवसें बाहेर गयो तिहा रस्तामां नटवी नाचती हती ते जोइ पंडित पणाथी विचार करयो के गुरुयें मुजनें नाटकीआनु नाटक जोवा व र्ज्योंछे तो नाटकणीतो वली विशेष रागनु कारण छे माटे ए मु जने सर्वथा जोवीज नही एवु विचारीने पाछो आव्यो ए ऋजु अने प्राज्ञनु दृष्टांत कह्यो ॥ १ ॥ एम ए दृष्टांत जे कह्या ते काइ सर्व साधुओ आश्रयी समजवा नही, परंतु कोइएक साधुना आ श्रयी जाणवा ॥ ॥

हिवे आजना समयना माणस वक्र अने जड छे ते प्रमाणे आ ज पांचमा आरामा चारित्रीया साधु नथी एम पिण न कहेवु क दापि अनाभोग पणे अतिचार दोष घणा लागे तेवा पिण साधु आजना समयमा छ केमके साधु विना धर्म न होय माटे व्य वहार भाष्यमा कह्यो छे के श्रीभगवतना आपेला शास्त्रनी जे खरोपरी प्ररूपणा करेतेने साधु कहीयें

॥ गाथा ॥ जो भणई नच्छि धम्मो, नय सामाईय न चेवय वयाइ ॥ सो समणसंघबज्झो, कायव्वो समण संघेण ॥ १ ॥ माटे जो पूर्व सा धुनी अपेक्षायें हीन कहो तो नहि कहो पिण दुषमकालमा साधु नथीज एम न कहीयें जे माटे साधु नो त्याग पिण छे ॥ ॥

हिवे ए दश प्रकारनो कल्प जे साधुनो आचार रूप धर्म छे ते त्रीजा वैद्यना औषध सरिखो छे एटले जेम त्रीजो वैद्य उपकारी थयो तेम आ कल्प पिण उपकारी जाणवो ते त्रीजा वैद्यनी कथा कही देखाडे छे कोइएक राजाने एकज पुत्र अत्यंत

थई राजायें विचार कर्यो जे आ पुत्रा रोग आव्या पहेलां एनें हु औषध करावु तो पछी कोइ वारें एनें रोगन थाय नहीं एम वि. तवी वैद्यने बोलावी पछ्यु के आ छोकरानु एवु औषध करो के जेण करी एने कोई वखत रोग न थाय तेवारें वैद्य बोल्यो के हे राजन् ! माहारी पासें जे औषध छे ते एवु छे के खावा थकी रोग होय तो जाय अने जो रोग न होय तो वली नवो रोग प्रगट थाय ते सांभली राजायें, कह्यो के सूता सिंहने जगाडवा सरिखु ताहारु औषध अमारे करवु नथी, एम कही तेने शीख आपी, पछी बीजा वैद्यने पूछ्यु तेवार ते बोल्यो के हे राजन् ! माहारु औषध खवडाव्याथी जो रोग होय तो गुण दोष कांई न थाय ते सांभली राजा बोल्यो जे भस्मा घृत दावा जेवु ता हारुं औषध हमारा कामनु नथी एम कही तेने पिण विदाय कर्यो, पछी त्रीजा वैद्यने बोलावी पूछ्यु तेवारें ते बोल्यो हे राजन् ! माहारु औषध एवु छ के जे खवरा थाथी रोग होय तो जतो रहे अने रोग न होय तो वली अपर रोग आवे नही तथा बल, बुद्धि, रूप अने तेजनी वृद्धि करे ए वात सांभली राजायें प्रसन्न थईने ते वैद्यनु औषध छोक रानें दिराव्यु अने वैद्यने शिरपाव आपी विदाय कर्यो एवी रीतें ए क ल्प सिद्धांत पिण त्रीजा वैद्य समान गुणकारी छे केमके एना श्रवणथ की जे पूर्वे कर्म बांध्या होय तद्रूप व्याधि दूर थई जाय अने नवा कर्म नो बंध पडे नही सर्व आपदा निवारे, सुख संपादे करे, चारित्रना गु णनी पुष्टि करे अने वली मोक्षना सुख तुरत आपे ए कल्पसूत्रने विषे प्रथम श्रीवीर चरित्र छ ते बीज समान छे, श्रीपार्श्वनाथ चरित्र छे ते अंकुरो छे श्रीनेमीश्वर भगवाननु चरित्र छे ते सुगंध छे, फल ते मो. छे, श्रीआदिनाथ चरित्र छे ते शाखा छे, थविरावली ते फूल छे, कथा छे ते सुगंध छे, फल ते मोक्ष छे, जे ए सूत्रना सर्व अक्षर सांभले ते आठ भवमां मोक्ष जाये॥

वेर अने चोमासु पूरण थया पछी एटले कार्त्तिक शुद्धि पूर्णीमा थया पछी पिण कदापि वर्षाद वरसवाथी मार्गमा कादव प्रमुख थया होय तो च्यारे दिवस पिण रहे तथा। वली कदाच जे गाममा साधु चोमासु रह्या होय अने हजी चोमासु पुरु न थयु होय तेवी स्थितिमा ते गाममा, १ मरकी आदिक रोगोनो उपद्रव थाय, २ भिक्षा दुर्लभ मिलती होय, ३ राजा दुष्ट होय तेणे कोप करचो होय, ४ कुंथुआदिक घणा जीवोनी उत्पत्ति थइ होय, ५ सर्प अग्नि आदिकनो भय उत्पन्न थयो होय, रोग अने वर्षाद विरमता न होय, दुर्भिक्ष पडे इत्यादिक कारणे चोमासामा पिण विहार करवानी आज्ञा प्रभुयें दीधी छे माटे विहार करवामा दोष नथी हिवे संजम निर्वाह करवाने अर्थें साधुने ज्या चोमासु रहेवु पडे तिहां प्रथम ते क्षेत्रमा उत्कृष्टपणे तो तेरे गुण जोवा जोईयें तेना नाम कहे छे १ जे गाममा चिखल कादव घणो न होय, २ जे गाममा बेइंद्रियादिक जीव घणा न होय, ३ स्थंडिल जवानी भूमि निरवद्य होय, ४ स्त्री पशु पंडकादिक दोष रहित उपासरो रहेवानो होय. ५ जे क्षेत्रमा दहीं दूध घणा मिलता होय, ६ जे गाममा भद्रक अने श्रद्धावान एवा श्रावकना घणा घर होय, ७ जे गाममा वैद्य घणा निपुण रहेता होय, ८ जिहा औषध घणा सुलभ मिलता होय, ९ जिहा श्रावकोना घरमा धन धान्य प्रमुखनो घणु संग्रह होय जिण कोई वातनी चिंता न होय, १० जे गामनो राजा अति भद्रक होय, यतिओनी भक्ति घणी करतो होय, ११ जिहा ब्राह्मण, तापस, जोगी, जरडा प्रमुख पाखंडी लोक जे छे ते साधुने अपमान करी शकता न होय, १२ जिहा भिक्षा सुलभ मिलती होय, १३ जिहा सज्झाय पठन पाठनादि सुखे थता होय ए तेरे गुण वाला गाममा साधुयें चोमासु करवु, कदापि एहवा योग न बने तो पिण जघन्यथी च्यार गुण तो अवश्य जोवा तेना नाम कहे छे १ थंडिल भूमि घणीय सारी शुद्ध फासु होय, २ जिहा सज्झाय ध्यान सुखे थाय एवी रहेवाने जगा होय. ३ जिहा [illegible] होय

निही गो रगी रूडी रीत मिळती होय ए चार गुण गेनना जोईने चौमासु करवु एम ए तेरे गुण उत्कृष्टथी अने चार गुण जघन्यथी कह्या तथा पांचथी मांडीने बारे गुण सुधी सर्व मध्यम गुण जाणवा, एवु क्षेत्र जोईने त्या साधुयें चोमासु करवु कारण के साधुजन पृथ्वी पीठने विषे नवकल्पि विहार करे तिहा अनेक तीर्थयात्राओ करता, गावोगावे विचरता मिथ्यात्वें पडना अनेक भव्यजीवोना उद्धार करता थका विचरे ते जेवारें चोमासु आवे तेवारें धरामडळें सजलधारायें वर्षाद पडे तेथी पगले पाणीनो प्रवाह चाले, कोमलकिसलय फूट, थानकें थानकें अनेक प्रकारना जतुओ उत्पन्न थाय ते माटे जीवरक्षा करनारा चारित्रियें वर्षाकालमा विहार न करवो, एकत्र स्थानकें रहेवु, अनेक प्रकारना घोर अभिग्रह करवा, जेमाटे साधुने तो वीशविश्वा दया छे परतु, श्रीकृष्णमाहाराज जेवा सवाविश्वानी दयाना पालनारा श्रावकेयें पिण चोमासामा शोल हजार राजाओने सभामा पधारवानी ना कही अने पोतें पिण सभा माहे नाव्या केमके वर्षाद माहे घणा कीडी कुथु आदिक जीव हणाय एवु जाणी ठाकोर पोढ्याछे एवो जबाब श्रीकृष्णे करघो त्याथी देव पोढणी इगीआरस लोकमा प्रसिद्ध थइ ए रीतें शुद्ध श्रावक पिण वर्षाकालें पाप जाणीनें देशातरनो व्यापार न करे माटे साधुनें पिण चोमासामा एक ठेकाणे रहेवु ते चोमासाने विषे पजोसण पर्व आवे थके मागलिकनें अर्थे सूत्रादिक आवश्य वाचवु.

हिवे पजोसण पर्व सर्व पर्वा माहे उत्कृष्ट छे माटे एनो महिमा कहेछ १ जेम मत्रमाहे पाच परमेष्टी मत्र, २ जेम तीर्थमाहे शत्रुजय तीर्थ ३ जेम दानमाहे अभय दान, ४ जेम गुणमाहे विनय गुण, ५ जेम व्रतमाहे ब्रह्मचर्य व्रत, ६ जेम सतोषमाहे नियम, ७ जेम तपस्यामाहे इद्रिय दमन, ८ जेम दर्शनमाहे जैन दर्शन, ९ जेम क्षीरमाहे गोक्षीर, १० जेम जलमाहे गगानीर, ११ जेम परमाहे हीर, १२ जेम वस्त्रमाहे चीर, १३ जेम अलकारमाहे चूडामणी, १४ जेम ज्योतिमाहे

निशामाणि, १५ जेम तुरगमाहे पचवल्लकिशोर, १६ जेम नृत्यकलामाहे मोर, १७ जेम गजमाहे ऐरावत १८ जेम दैत्यमाहे रावण, १९ जेम वनमाहे नदनवन, २० जेम काष्टमाहे चदन, २१ जेम तेजवतमाहे आदित्य, २२ जेम साहासिकमाहे विक्रमादित्य, २३ जेम न्यायवत माहे श्रीराम, २४ जेम रूपवतमाहे काम, २५ जेम सतीमाहे सीता, २६ जेम शास्त्रमाहे गीता, २७ जेम वाजित्रमाहे वजा, २८ जेम स्त्रीमाहे रभा, २९ जेम सुगधमाहे कस्तुरी, ३० जेम वस्तुमाहे तेज, ३१ जेम पुण्यश्लोकमाहे राजा नल, ३२ जेम फूलमाहे सहस्रदल कमल, ३३ जेम धनुर्धरमाहे अर्जुन, ३४ जेम इद्रियामाहे नयन, ३५ जेम धातुमाहे सुवर्ण, ३६ जेम दातारमाहे कर्ण, ३७ जेम गायमाहे कामधेनु गाय, ३८ जेम स्नेहमाहे घृत, ३९ जेम जलमाहे अमृत, ४० जेम ज्ञानमाहे केवलज्ञान, ४१ जेम सुखमाहे मोक्षसुख सुख, तेम सर्व पर्वमाहे पजोसण पर्व महोटु जाणवु ए भाद्रवा शुद्धि पचमी जेम श्रीजिनशासनने विषे माननीय छे तेमज पर शासनने विषे पिण ए ऋषीपचमीनो दिवस माननिय छे ते ऋषीपचमीनी कथा कहे छे पुष्पवती नगरीने विषे नीलकठ नामा ब्राह्मण रहेतो हतो तेनी सोमा नामे भार्या हती तथा इद्रदेव नामे पुत्र हतो ते जन्मथीदारिद्री हतो केटलेक काले तेना माता पिता मरण पामीने एनाज घरमा पिता बलदीयो थयो अने माता कुतरी थइ त्यामा श्राद्धपक्ष आव्यो तेवारे घरमा द्रव्य नही तेथी विचार करवा लागो जे माता पिताना श्राद्धनो दिवस महारे केवीरीते साचवो पछी बलदीयो तेहने घरे खेडवा आप्यो तेनु भाडु लेइ दुध, चोखा, खाड, घृत अने गोळ लेइ आवीने खीर रावी घणा ब्राह्मणोने नोतरु दीधु एवामा पूर्वजा जवलु पोतानु घर देखीने कुतरीने जातिस्मरण ज्ञान उपनु छे तेणे ते दूधमाहे उपरथी सर्प गरल नाख्यो ते दीठी तेवारे कुतरीये विचार्यु जे अज्ञाने करी आ खीरने ब्राह्मणो जिमशे तो मरण पामशे तेथी महारे खरी थइ पडशे

ब्रह्म हत्यानु पाप लागशे ने महारो पुत्र तथा वहु बे मरण पामशे ए
म विचारे छे एटलामा वहु आवी तेवारे तेने देखता कुलगोर दुरथारे
पोतानु मोहोडु घाली दुध चोटयु ते जोइ वहुने रीश चडी तेथी तने
मुसलना प्रहारे मार मारी केड भागीने ज्या गायनी शाला छे त्या
जइ हेठी पाडी दीधी तेथी ते तडफडवा लागी अने ब्राह्मणे बीजो दु
ध लावी खीर राधी सर्व ब्राह्मणोने जिमाडी श्राद्धनो दिवस सारुं थी
पछी ब्राह्मण थाको थको बाहेर गौशालामा खाटली पाथरी सूतो ए
टलामा सध्या समय थयो तेवारे आखा दिवसनु भूख्यो, तिरस्यो था
की गयेल बदल ते पिण पेला घाचीये लावीने तेना स्थानके बाध्यो
एटलामा कुलदेवी आवीने बळदीया तथा कुतरीना शरीरमा मकमी.
तेवारे कुतरी बळदीयाने कहेवा लागी के आज श्राद्धतो आपणु हतु
अने खावानु ब्राह्मणोने मिल्यु एटलुज नही पिण आ पापिष्ट वहुये
माहारी केड भागी नाखी तेथी महादुःख पामु छु तेवारे बळदीयो
बोल्यो जे आ पापिष्ट आपणो छोकरो पिण काइ समजतो नथी मने
पिण आजे घाचीने घरे मोकल्यो हतो तेणे आखो दिवस घाणीमा फिरा
व्यो अने चारो पाणी आप्या विना एमज भूखे मरतो आही आवी
बाधी गयो छे, ए सर्व वात खाटलापर बेठेला ब्राह्मणे साभली तेथी
तेना मनमा दिलगीरी पेदा थई अने विचार्यु जे आतो महारा माता
पिता देखाय छे एवो निरधार करी तिहाथी उठीने कुतरीने खीरनु
भोजन कराव्यु अने बळदने सारीरीते चारो प्रमुख आप्यु पछी पोते
पोताना माता पितानी सद्गति करवाने अर्थे परदेश जइ अनेक तीर्थ
करी कोइ महोटा ऋषीश्वरने पुछवा लागो के महाराज महारो बाप
बळदीओ थयो छे अने माता कुतरी थइ छे तेनी सद्गति केवी रीते
थाय ते प्रकार कहो तेवारे ऋषी बोल्यो जे ए बेहु जीवे ऋषी पचमीना
दिवसे अमस्ताने काम क्रीडा करेली छे मैथुन सेवन करयु छे तेना पाप
ने योगे ए अवतार पाम्या छे माटे हिवे तु अवारे ऋषि

ऋषी एटले भादरवाशुदि पचमीनो दिवस आवे ते दिवसे बलदनु खेडयु धान्य माइश नही चोगो चउविहारो उपवास करजे कदापि खाधा विना रहेवाय नही तो दश मुठी उडदना वाकला खाजे एटले एमनी सद्गति थशे पछी ते ब्राह्मणे तेमज कीधु ते दिवसथी लोकोने विषे ऋषि पचमीनु नाम प्रसिद्ध थयु छे ए ऋषिपचमीना पर्व आश्रयी कथा कही ॥

हिवे श्रीपर्युषण पर्व आवे तेवारे महोटो महोत्सव करी जे पुरुष तेलानी तपस्या एटले आठम तप करी श्रीकल्पसूत्रने सांभले ते पुरुष नागकेतुनी परे केवलज्ञान पामीने मोक्ष सुखने पामे ते नागकेतुनी कथा केहे छे चन्द्रकांता नगरीने विषे विजयसेन नामे राजा राज्य करतो हतो, ते नगरीमा श्रीकांत नामा शेठ रहेतो हतो तेनी श्रीसखि नामे भार्या हती तेने घणा उपाय करता देवदेवीओनी मानताओ करता एक पुत्र आव्यो अनुक्रमे ते पुत्रनु पालन पोषण करता केटले एक कालवी त्यो एटलामा पर्युषण पर्वना दिवसो आव्या ते समयमा ते बालकनी आसपास बेठेला माणसो मांहोमांहे वातो करवा लागा के आपणे सावत्सरीनो तेलो करीशु एटले आठमतप करीशु ए वात सांभलीने पहेला बालकने जातिस्मरण ज्ञान उपन्यु तेना योगे पोतानो पाछलो भव दीठो तेथी बाल्यावस्थामा पिण तेणे पोताना मनमा आठमनु तप करवु एवो निश्चय करीने स्तनपान करवु मूकी दीधु तेथी तनु शरीर कुमलाइ गयु मरणतुल्य अवस्था दीठामा आवी एवी पुत्रनी व्यवस्था जोइ तेना माता पिता घणुज दुःख धरवा लागा तेणे अनेक प्रकारना औषधोपचार करया तो पिण ते बालके स्तनपान करयु नही एम करता मूर्छा थी गे ते बालकने मूर्छा आवी गइ छोकराने मुवेला जेवो देखीने तेना बापनु हियु फाटी गयु तेथी ते मरण पाम्यो, तेमज माता पिण मरण पामी अने बालकने मृतक देखी तेना जातिवालाये धरतीमा दाट्यो पछी आपणा गाममा अपुत्रीयो श्रीकांतशेठ मरण पाम्यो छे एवी वात ... राजाये ते शेठनु धन लेवा सारु माणस मोकल्या, ...

आठम तपना प्रभावें करी धरणेंद्रनु आसन चलायमान थयु तेवारें अ
वधिज्ञाने करी सर्व वृत्तांत जाणी त्यां आवी बालकनें अमृत सचारें सजीव
करयो अने पोतें ब्राह्मणनु रूप धारण करी ते शेठना घरना बारणा
आगल उभो रहीनें राजाना माणसोने धन लेता अटकाव्या, राजपुरुषो
ये जइ राजानें कह्यो के ब्राह्मण धन लेवा देतो नथी तेवारें राजा पोतें
उतावलो आवीनें ब्राह्मणने कहेवा लागो के अमारा राज्यमा जे पुं
त्रीयो मरण पामे तेनु धन राजा लेइ जाय एवी परंपराय रीत छे मा
टे तुमे शा वास्ते अटकाव करो छो त्यारे ब्राह्मण बोल्यो हे राजन् ! ए
शेठनो पुत्र जीवतो छे राजायें कह्यु क्यां छे, तेवारें धरणेंद्र ते बालक
जमीनमांथी जीवतो काढीनें राजानें देखाड्यो ते जोइ सर्व लोक विस्म
य पाम्या राजायें ब्राह्मणनें पूछ्यु के आप कोण छो अने आ बालक
कोण छे तथा ए वात तुमे केम जाणी ? ब्राह्मण बोल्यो हुं धरणेंद्र
नागराजा छु तेहना प्रभावथी एना सहाय करवानें आव्यो छु राजा
बोल्यो ए बालकें जनमताज आठम तप केम करयु, धरणेंद्र बोल्या हे
राजन् ! ए बालक पूर्व जनमां एक वाणीयानों छोकरो हतो त्यां बाल्या
वस्थामाज एनी माता मरण पामी तेवारें एनो पिता बीजी स्त्री परण्यो
पछी ते ओरमान माता जो छोकरानो थोडो वांक होय तोपण अपराध
ना करे पण घणु खीजे तथा मारवा कुटवा वगेरे घणूज दुःख देवा ला
गी एम ते छोकरो नित्य प्रत्यें दुःख पामतो थको तेनो एक १७
मित्र हतो तेनी पास जइ तेणे पोताना दुःखनी वात कही तेवारें
बोल्योके हे भाइ ! ते पूर्व जनमां धर्म करयो नथी तेना योगथी दु
खी थयो छो एवो उपदेश सांभली तेणे यथाशक्ति तप करवानो प्र
न करयो पछी ते आठमे चौदश उपवास करतो अने बीजा दिवसें
नवकारसी पोरसी प्रमुख तप करतो अनुक्रमें पजोसण पर्व आव्यु
वारें तेणे आठम तप करवाना निश्चय विचार करीनें रात्रें तृणनी झुं
पडीमा जइ सूतो, एटलामा तेना घरनी लाय लागी तेवारें अपरमर अ

छोरमान मातायें घासनी झुपडी उपर अग्नि नाख्यो तेथी झुपडी बळी गइ अने छोकरा पिण शुभध्यानें मरण पाम्यो तेणे आठम तप ध्यान ना मिजाजथी इहां श्रुत्रीयार श्रीकांत शेठनें घरें जन्म लीधो अने जा तिस्मरण ज्ञान पामीनें एणे आठम तप करयु, तेथी जुलमें योगें मुरछांग त थयो हतो परतु जीवतो हतो तथापि लोके अजाण पणे तेने मुवे नें जाणी जमीनमा पडारयो ते में आवी अमृत मचार करी मुरछा उतारी मचेत कर्यो हे राजन्! ए महापुरुष छे, एहज जवमा मो क्ष जाशे एने घणाज यत्नथी गमजो, तुमनें पिण महोटो उप कारनो करवा वाळो थाशे एम कही पोताना गळानो हार बालकना गळामा नाखी धरणेंद्र पोतानें स्थानकें गयो, राजाय ते बाळकने हाथी उपर चडावी महोटा आडंबर सहित घेरे आण्यो पछी कुटुंब ना लोकोय शेठनुं मृतकार्य करी छोकरानु नाम नागकेतु पाड्यु ते बाळपणाथीज जितेंद्रिय परम श्रावक थयो, अष्ठमी, चतुर्दशीनो उप वाम करे, चोमासे छठ तप करे अने पजोसणनो आठम तप करे जिनपूजा, साधु सेवा नित्य करे, एक दिवसे नगरना विजयसेन राजायें कोइ पुरु षनी उपर चोरीनु झुठ कलंक आपी निरपराधी छता तेने मारयो ते मरीनें व्यतर देवता थयो तेणे आवी आगेथी नगरनो विनाश करवा सारु नगर प्रमाणे एक शिला आकाशे विकुर्वी लोकोने बीवराववा लाग्यो अने राजाने पाटुयें मारी मोहोडे वमतो करी जमीन उपर नाख्यो, ते कृत्य जोइनें नागकेतुयें जाण्यु जे हु जीवता छता श्रीसंघनो अने श्रीजिनचैत्यनो विनाश केम जोइ शकु!! एवु विचारी मनमा जीवदया आणी जगवानना प्रासाद उपर चढीनें शिलानें हाथ आडो दीधो पडती शिला राखी घणी रीते व्यतर पिण नागकेतुना तपनी शक्ति, न सहन करतो थको ते पोतानी विकुर्वेली शिलानें संहरण करीनें नागकेतुनें आवी पगे लागो अने नागकेतुना कहेवा उपरथी राजानें पिण साजा करीनें व्यंतर पोतानें थानके गयो, पछी नागकेतुनी घणी मानता

थई राजायें तेने सन्मान आप्युं नागकेतु जिन पूजनी वखते एक सर्प
करतो थको फिरे छे मारा नागकेतुने जगरतनी पूजा करता पुष्पनी
वचेथी सर्पे नाग डस्यो तेथी शरीरमां झेर व्याप्युं पण जिन पूजा ध्या
न करता छता तेना शुभध्यानथी केवलज्ञान उपन्युं तिहां दीक्षा लीधो शासन
देवीये आप्यो, पूर्वादिक सुर साधुनो वेश आप्यो, पछी ते पर्यंत
विहार करी घणा भव्य जीवोने प्रतिबोध आपी मोक्षे गया, एवो
नागकेतुनो अधिकार सांभळीने जे भव्य प्राणी एक अट्ठम तप करीने
पछी बेला तेलानी तपस्या करी श्रीपर्युषण पर्वनो महिमा करशे
ते जीव शाश्वत सुखने पामशे इतिश्री नागकेतु कथा समाप्त ॥ ॥

आ कल्पसूत्र पापनुं निवारक छे, मनोवांछित पूरनार छे, निकाचित
के मार कानिकर्म छे तेनुं ओपनार छे माटे भव्य जीवोने प्रमाद, निंदा,
विकथा आदि वेगळा करवा तेनुं तार जोईने एकाग्र मनथी सांभळवुं तथा
श्रीजिनशासनमां ये कह्यो छे के धर्मनां पर्व सर्वे सारा छे तेमां
पण जेम पहेले श्रीजिनेश्वर होयने जिन मंदिर आगार महातम करे
छे तेम इहां रूडा आचार, आविकाये जिन कल्पसूत्रनो आगार महो
त्सव करवो एवा विधियें करी जो कल्पसूत्र सांभळे तो बहु लाभकारी थाय

ए कल्पसूत्र श्रीमहावीर स्वामीने छठे पाटे चौद पूर्वधारी श्रीभद्र
बाहु स्वामी युगप्रधान थया तेमने चौद पूर्व मांहेना नवमा प्रत्याख्यान
न प्रवाद नामा पूर्वना माहेथी दशाश्रुतस्कंध सूत्र तेनुं आठमुं अध्यय
न रूप रच्युं छे ते जेम दधिनो सार घृत छे तेम सर्व शास्त्रनो सार
रूप ए सूत्र रच्युं इहां चौद पूर्वनुं नाम कहे छे तेमां प्रथम उ
त्पाद पूर्व छे ते अंबाडी सहित एक हाथी ऊभो करीयें तेनो जेटला
दिगमें देखाय तेटली शाहीनो एक दिगमें बराबर एटली शाहीयें लिखीये
तेथी ए पहेलो पूर्व लिखाय, बीजो अग्रायणी पूर्व बे हाथी जेटली सा
हीथी लिखाय, त्रीजो वीर्यप्रवाद पूर्व चार हाथी जेटली शाहीथी लि
चोथो अस्तिप्रवाद पूर्व आठ हाथी जेटली शाहीयें लिखाय तें
३ ॥

ज्ञानप्रवाद पूर्व सोळे हाथी जेटली शाइये लिखाय, छट्ठो सत्यप्र
दे पूर्व बत्रीश हाथी जेटली शाइयें लिखाय, सातमो आत्मप्रवाद
। चोसठ हाथी जेटली शाइयें लिखाय, आटमो कर्मप्रवाद पूर्व ए
सोने अठावीस हाथी जेटली शाइयें लिखाय, नवमो प्रत्याख्यानप्रवाद
। बेसो छपन्न हाथी जेटली शाइयें लिखाय, दशमो विद्याप्रवाद पूर्व पा
सोने बारे हाथी जेटली शाइथी लिखाय इग्यारमो कल्याणप्र
द पूर्व एक हजारने चोवीस हाथी जेटली शाइये लिखाय, बारमो प्राणा
यप्रवाद पूर्व दोहजारने अडतालीश हाथी जेटली शाइथी लिखाय,
रमो क्रियाविशाल पूर्व चार हजारने छन्नु हाथी जेटली शाइयें
लिखाय, अने चौदमो लोकबिंदुसार पूर्व आठ हजार एकसोने बाणुव
हाथीओना प्रमाण जेटली शाइथी लिखाय एम चौदे पूर्व लिखवा माडी
तो सर्व मिली १६३८३ हाथीओना ढगला जेटली शाइ जोइयें परंतु
अद्यापि पर्यंत कोइयें लिख्या नथी अने हिवे कोइ लिखशे पिण नहीं मान
प्रमाण आपीने श्रीजिनराजी जगवाने उपमा बतावी छे ए सूत्रथी मान कह्यो॥

हिवे ए चौदपूर्वनुं अर्थ थकी मान कहे छे समस्त जेटली नदी
ओ छे ते सर्व नदीओनी वालुना कणीया जेटला थाय तथा असंख्या
ता समुद्र छे ते सर्व समुद्रना पाणीना बिंदुओ जेटला थाय तेथी पि
ण अनंतगुणो एकेका सूत्रना पदनो अर्थ जाणवो ए रीते चौद पूर्व
ना नाम कह्या॥ ॥

ए कल्पसूत्र प्रथम तो जादरवाशुदि पंचमीना दिवसें रात्रिनुं
सांवत्सरिक पडिकमणुं करचा पछी छार्द्धरात्रि कालग्रहण करी श्री
गुरु-आज्ञा थका मुखथी सूत्रनो पाठ उच्चार करता अने बीजा सा
धुओ सर्व काउस्सग्ग करी सांजलता हता तेमज दिवसना साधवी
ओ पिण सांजळता हता ए विधि हतो॥ ॥

तेवार पछी श्रीमहावीर जगवानना निर्वाणथी नवसेंने एंसीमें वर्षे
पुस्तका रूढ थयो अने श्रीवीर निर्वाणथी नवसें त्र्याणुमें वर्षे आने

ध्रुव नगर नो रहनारा रत्नाकर कम छे तेने विषे ध्रुवसेन नामे राज्य करतो हतो तेने अंगज रत्न मेघागम नाम एक पुत्र हतो ते दैवयोगें मरण पाम्यो एटलामां पर्युषण पर्व दिन आव्यां तेवारें राजा घणो शोकाक्रांत थयो हतो तेथी धर्मनाटकनें विषे चित्त आवे नहीं वळी जेम राजा चाले तेम प्रजा चाले ए हेतुथी जीमा जे शेठ व्यवहारी प्रमुख लोक हता ते पण धर्मकार्यनें विषे प्रवर्ते नही एवी राजाने शोकातुर थया जाणी धर्मनी हानी थती देखीने गुरु ध्रुवसेन राजानी पासें पधारवा गया त्यां राजाने केहवा ला ग्या के हे राजन! तुमो शोकाक्रांत थया तेथी नगरना लोक पि ण सर्व शोकाक्रांत थया छे तमाटे शरीर धनादिक सर्व अनित्य छे, आयुष्य चपल छे संसार असार छे ए प्रकारना संसार स्वरूप नें तुमें जाणोज छो माटे धर्म माहें घणो आदर करो उपयुक्त थ ह्यो छे तेथी तुमे शोक निवारीनें पांचमीना दिवस पजोसण छे माटे प मेशाळा माहे पधारो तो श्रीभद्रबाहु स्वामीयें नवमा पूर्व माहेथी उद्धरेलु श्रीकल्पनामे सूत्र महामांगलिक प्राचीन समनां सभनु वंचाय छे ते वाचीयें तेवारें राजानें पांचमीने दिवसें पुत्र मरणनो शोक निवर्त्तवो हतो अने इंद्रमहोत्सव पिण हतो तेथी राजायें कह्यु के छठना दिवस अथवा चोथना दिवस ठेरावो तो महाराधना आवी शकाय दिवसें पचमीने दिवसे महाराधी थशे नहीं तेवार "अंतरावीसेक पति" एवो पाठ देखीने कारण विशेषें गुरुयें चोथनी थापना करी चोथनु कल्पसूत्र वाचवा रूपुं करयु कालिकाचार्यथी ओछरु बळमित्र अने भानुमित्र ए बे जाणोज साथे धरतनगरनो ध्रुवसेनराजा सभा स हित धर्मशाळा मध्ये आव्यो तेवारें नव वाचनाए करी प्रभावनायें स हित महोत्सव पूर्वक सर्व लोकनी समक्ष श्रीकल्पसूत्र गुरुयें वाच्यं ते दिवसथी चोथने दिवसें पजोसण थवानी परंपरा चाली छे अने केट

ला गच्छमां अद्यापि सुधी पांचमना पिण पजोसण करे छे तेमज

दिवसथी महोत्सव पूर्वक प्रभावना सहित सर्वलोकनी समक्ष कल्पसूत्र वाचवानी प्रवृत्ति चाली ते श्रीगुरु परंपरायें आज पर्यंत चाली आवे छे, अने ते प्रमाणे सर्वस्थले कल्पसूत्र वंचाय छे एना वाचवाना अधिकारी योग वहन करनारा साधुओ छे अने सांभलवाना अधिकार चतुर्विध श्रीसंघनें छे ॥

- एक मतमा, वली एम कहेलु छे के, वडनगरमा गुरुजी चोमासु रह्या हता एवामा पर्युषण नजीक आववामा ध्रुवसेन राजानो एकज पुत्र हतो ते दाहज्वरे पीडा पामवा लाग्यो तेना योगे राजा चिंतातुर थयो थको गुरुने वांदवा आवी शक्यो नही अने पर्युषण पर्वमा धर्मध्यानमा प्रवृत्ति करनारा घणा जनो दीठामा न आव्या तेथी गुरुयें तेनु कारण पूछयु तेवारें राजा शोकमा पड्यो जाणी गुरु पोते राज सभामा पधार्या त्या राजाने धर्मोपदेश आपी समजावीने महोटा छाजनु कारण जाणी मांगलिक निमित्तें कल्पसूत्रनी प्रथम वाचना करी ने सांभलता राजाना पुत्रने शाता थई एम करता नव वाचनायें तो सर्व दाहज्वर उपशमी गयो तेथी राजायें घणो हर्षवंत थईने महोटो महोत्सव कर्यो, धर्मनो महिमा वृद्धि पाम्यो, राजायें गुरुनें विनंति करी के श्रीसंघना मांगलिक निमित्ते ए कल्पसूत्र वर्षोवर्ष श्रीसंघने वाची सभलावु ते दिवसथी कल्पसूत्र चतुर्विध श्रीसंघनी आगल वाची संभलाववानी प्रवृत्ति चाली छे ते रीतें हमणां पिण श्रावकोना आग्रहथी कल्पसूत्रनी वाचना साधु मुनिराज करे छे

हिवे ए सूत्रना वाचवा थकी एना प्रसंगना महात्म्यने योगें साधु, साध्वी, श्रावक अने श्राविकाना कल्याण थाय ए वात निःसंदेह छे तेनी उपर कथा कहे छे कोइएक डोशीनो पुत्र वनमाहे गायो चारता थाय एक समय तेने सर्प डंस्यो तेथी मृत्युगत थयो, ते वात लोकोना मुख थकी सांभलीने डोसी वनमा गइ, त्या पुत्रने मुंछित थयो देखी, मोहना वश थकी पुत्रनु नाम वारंवार देईने कहे

॥ अथ कल्पसूत्रार्थ प्रारभ्यते ॥

हिवे जो पिण ए कल्पसूत्र पोतेंज सर्व विघ्नोपशांतिने माटे महामंगलिकरूप छे तो पिण शिष्यने मंगलबुद्धि होवाने लीधे एम लौकिक कार्यना प्रारंभमां पिण प्रथम श्रीदेवगुरुनुं स्मरण करीने पछी ते कार्यनो प्रारंभ करीयें छैयें तेम आ कल्पसूत्र रचना रूप कार्यनी आद्यमां पिण सर्व मंगलमांहे महामांगल्यकारी चौदपूर्वनो सारभूत एवो पंच परमेष्ठि मंत्रनो उच्चार कराय छे ते लिखीयें छैयें ॥

नमो अरिहंताणं के० ॥ नमस्कार हो विहरमान श्रीअरिहंत प्रत्यें ॥ नमोसिद्धाणं के० नमस्कारहो जे आठकर्म क्षय करी मोक्ष गया एवा सर्व सिद्ध प्रत्यें ॥ नमो आयरियाणं के० ॥ नमस्कारहो श्रीआचार्य भगवान प्रत्यें ॥ नमोउवज्झायाणं के० ॥ नमस्कारहो श्रीउपाध्याय प्रत्यें॥ नमो लोए सव्वसाहूणं के० ॥ नमस्कारहो अढीद्वीप रूप मनुष्य लोकनें विषे रह्या एवा सर्व साधु प्रत्यें ॥ एसो पंच नमुक्कारो के० ॥ ए जे अरिहंतादिक पांच नमस्कार छे एटले ए नमस्कार पंचक जे छे ते केहेवो छे तोके ॥ सव्वपावप्पणासणो के० ॥ सर्व पापनो प्रकर्षे करी नाश करनार छे ॥ मंगलाणंच सव्वेसिं के० ॥ सर्व मंगलमांहे ॥ पढमहवइमंगलं के०॥ प्रथम एटले मुख्य मंगल छे ए रीतें मंगल कहीनें हिवे मूळपाठनो अर्थ लखीयें छैयें ते कालने विषे एटले चोथा आराना अंतने विषे, ते समयने विषे एटले ते अवसरने विषे श्रमणभगवंत श्रीमहावीर स्वामीना पांच स्थानक उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्रमां होता हवा ते कहे छे एक उत्तराफाल्गुनी नक्षत्रमां देवलोकथी चवीनें देवानंदाजीनी कूखें गर्भमां आवी उपन्या, बीजो उत्तराफाल्गुनी नक्षत्रमां देवानंदाजीनी कूखथी लईने श्रीत्रिशला देवीनी कूखमां संक्रमाव्या त्रीजो उत्तराफाल्गुनी नक्षत्रमां जनम्या, चोथो उत्तराफाल्गुनी नक्षत्रमां गृहस्थ पणु त्यागीनें साधु पणु अंगीकार करयु, पांचमो उत्तराफाल्गुनी नक्षत्रमां अनंत अनुपम जेनें बीजी कोई उपमा लागे नही तथा जेनो व्याघात पिण व्यवच्छेद न थाय एवु

आवरण रहित समस्त प्रकाशक सपूर्ण पूर्णिमाना चद्र समान एवु श्रेष्ठ केवलज्ञान तथा केवलदर्शन भगवानने उत्पन्न थयु ए पाच स्थानक उत्तराफाल्गुनी नक्षत्रमा थया तथा स्वाति नक्षत्रमा भगवत निर्वाण एटले मोक्ष पद पाम्या ए पाच कल्याणक सामान्य पणे भगवतना कह्या हिवे विस्तारथी वर्णन करीयें छैयें ते कालने विषे श्रमण भगवान श्रीमहावीर स्वामी उष्णकालनो चोथो मास आठमु पखवाडियु अर्थात आषाढ शुद्धि छठनी रात्रें महाविजय पुष्पोत्तर प्रधान पुंडरीक नामे दशमा देवलोकनु विमान छे ते विमानमा वीश सागरोपमना आउखानो क्षय करीनें, देवभव त्यागीनें देवसबधी शरीर छाडीने, अतर रहित चवे, चवन करीने एहज जबूद्वीपना भरतक्षेत्रमाहेला दक्षिणभरतमा ए अवसर्पिणी कालना इहा अवसर्पिणी कोनें कहे छे ते देखाडे छे जे कालमा समय समय वस्तुनी हानि थती होय ते अवसर्पिणी काल कहेवाय अने जे कालमा समय समय वस्तुनी वृद्धि थती होय ते उत्सर्पिणी काल कहेवाय ते प्रत्येक एकेका कालना छ छ आरा होय छे, तेनु स्वरूप सक्षेपथी लिखीयें छैयें तिहा पहेलो सुखमसुखमा नामे आरो चार कोडाकोडी सागरोपमनो तेमा मनुष्य तिर्यचनो त्रणय पल्योपमनो आउखो होय, त्रण कोशनु देहमान होय, बेशेंनें छपन्न पासली होय, कल्पवृक्षना फल तथा माटीनो तूवरनी दाळ जेटलो आहार त्रण दिवसें करे, ओगणपचाश दिवस सुधि जोडलो जनम्यो पाले पछी देवलोके जाय ए अवसर्पिणीनो पहेलो आरो अने उत्सर्पिणीनो छठो आरो तेनी स्थिति मर्यादा कही ॥ १ ॥

बीजो सुखमा नामे आरो, त्रण कोडाकोडी सागरोपमनो, तिहा मनुष्य तिर्यचनु बे पल्योपमनु आयु, बे कोशनु शरीर, बोर प्रमाणे बे दिवसे आहार करे, एकसो अठावीश पासली होय अने चोशठ दिवस पर्यत अपत्य पालना करी देवलोकमा जाय ए अवसर्पिणीनो बीजो आरो अने उत्सर्पिणीनो पाचमो आरो तेनी स्थिति मर्यादा कही

त्रीजो सुखम दुखमा नामे आरो, बे कोडाकोडी सागरोपमनो, तिं हां युगळीया मनुष्य तिर्यचनु एक पल्योपमनु आयु एक कोशनुं शरी र, एकातरें आमला प्रमाणे आहार करे, चोसठ पांसली होय अने उगणयाएशी दिवस सुधि संतान पाडना करी, मरण पामी देवलोके जाय ए, अवसर्पिणीनो त्रीजो आरो अने उत्सर्पिणीनो चोथो आरो तेनी स्थिति मर्यादा कही ॥ ३ ॥

चोथो दुखम सुखमा नामे आरो बेतालीस हजार वर्ष न्यून एक को डाकोडी सागरोपमनो तेमा मनुष्यनु आयुष्य एक पूर्वकोडी वर्षनु अने पाचसें धनुष प्रमाण शरीर होय, इहां युगळीया न होय माटे जे वसन जेटलु जोइयें ते वसन तेटलु पोशन करे, मरण पामीने चारे गति मां हेली गमे ते गतिमा जाय, कोइक जीव कर्मक्षय करी मोक्ष विषे जाय ए अवसर्पिणीनो चोथो आरो अने उत्सर्पिणीनो त्रीजो आरो तेनी स्थिति मर्यादा कही ॥ ४ ॥

पांचमो दुखमा नामा आरो एकवीस हजार वर्षनो, तिहां मनुष्यनु सात हाथ देह मान, एकसोवीश वर्षनु आयु होय, मरण पामीने चारगति माहेली गमे ते गतिमा जाय परतु ए आरामा सर्व कर्मक्षय करीने कोइ मोक्षने विषे जाय नही, ए अवसर्पिणीनो पाचमो आरो अने उत्सर्पि णीनो बीनो आरो तेनी स्थिति मर्यादा कही ॥ ५ ॥

छठो दुखमदुखमा नामे आरो एकवीश हजार वर्षनो छे, एमा मनु ष्यनु सोळे वर्षनु आयु होय अने एक हाथनु शरीर होय, बिलमा नि वास होय, सर्व मनुष्य क्रूरकर्मी, न्यायमार्ग रहित दुर्गतिमा जावा वा ळा जीव जेमा होय एवो अवसर्पिणीनो छठो आरो अने उत्सर्पिणीनो पहेलो आरो तेनी स्थिति मर्यादा कही ॥ ६ ॥

ए रीते ए छ अवसर्पिणीना अने छ उत्सर्पिणीना मिली छ दु बा आरा थाय तेनो सर्व मिली वीश कोडाकोडी सागरोपम प्रमाण काल

हिवे एमां अवसर्पिणीनो सुखम सुखमा नामा पहेलो आरो विण सा

वुं थयो वळी सुखमा नामा बीजो आरो पिण संपूर्ण थयो तथा सुखम दुखमा नामा त्रीजो आरो पिण व्यतिक्रम थइ गयो अने दुखम सुखमा नामे चोथो आरो पिण घणो वीती गयो एटले तेमाथी पिण बेता लिश हजारने पचोत्तर वर्ष अने साडाआठ महिना उपर एटला वरषे न्यून एक कोडाकोडी सागरोपम वीती गया तेमा एकवीश तीर्थंकर श्री इक्ष्वाकु कुळमा थया जेमनु काश्यप गोत्र हतु तथा श्रीमुनिसुव्रत स्वामी अने श्रीनेमिनाथ भगवान ए बे तीर्थंकर श्रीहरिवंश कुळमा थया तेमनु गौतम गोत्र हतु ए रीते सर्व मिली त्रेवीश तीर्थंकर तो थइ चूका अने तेवारे ए अवसर्पिणी संबंधी चोथा आराना पचोत्तर वर्ष उपर साडा आठ महीना शेष काल रह्यो तेवारे प्रथम श्रीभरत महाराजायें श्रीआदिनाथ तीर्थंकरने पूछ्यु हतु त्यारे श्रीआदिनाथ भगवाने कह्यो हतु जे चोवीशमा तीर्थंकर श्रीवर्द्धमान परमेश्वर थाशे ते प्रमाणे श्रमण भगवान श्रीमहावीर छेल्ला तीर्थंकर ते ब्राह्मण कुंडग्राम नगरमा ऋषभदत्त नामा ब्राह्मण जेनु कोडाल गोत्र छे तेनी देवानंदा नामे ब्राह्मणी भार्या छे तेनु जालंधर गोत्र छे तेनी कूखने विषे मध्य रात्रिना समयमा उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्रमा चंद्रमानो योग होते छते देव संबंधि आहार तथा देवनो भव अने देवनु शरीर त्यागीने देवानंदानी कूखमा आवतरया ॥

हिवे श्रीऋषभदेव भगवाने कह्यो हतु के चोवीशमा तीर्थंकर श्रीमहावीर स्वामी थशे ते वात कया भवनी छे ते जाणवाने अर्थे श्रीमहावीर स्वामीना सत्तावीश भव लिखीयें छैयें आ श्रीजंबुद्वीपना पश्चिम महाविदेहने विषे प्रतिष्ठान पत्तनना राजाना गामनी चिंता करवा वालो नयसार नामे चाकर कणवारचो हतो ते एक दिवसें राजाना हुकुमथी घणा गाडा अने चाकर साथे लेइने काष्ठ लेवाने अर्थे वनमा गयो तिहा पोते एक वृक्षनी नीचे जइ बेठो छे अने बीजा चाकर माणस लाकडा कापवानो उद्यम करवा लाग्या छे एटलामा साथ थकी भूला पडेला केटला एक साधु त्या आव्या ते तेणे दीठा तेवारे हर्षवंत

न्मुन जइ वाडीनें पोताने स्थानके तेनी लावीनें आहार वोहोराव्यो पछी साधुये तेने धर्मोपदेश आप्यो ते सानळीने त्या समकित पाम्यो ते वार पछी ते साधु मुनिराजोनें पाधरो रस्तो देखाड्यो ए नयसारनो प हेलो जव जाणवो ॥ १ ॥

जिहाथी समकित पाम्या तिहाथी जवनी गणती थाय समकित पाम्या थी आगळ तो ससाग्मा नीचें अनत जव करचा ते गइ लिखाणमा ग णाय नही पछी त्याथी आयु क्षय करी अतसमये नमस्कार सहित मरण पामीने पहेले देवलोकें देवपणे उपन्यो ए बीजो जव जाणवो ॥ २ ॥

पछी देवजवमा एक पल्योपमनु आयुष्य जोगवी तिहाथी चवी त्रीजे जवें श्रीऋषजदेव स्वामीनो पुत्र जरत चक्रवर्ती तेनो मरीचि नामे पुत्र थयो तेणे एक दिवस श्रीऋषजदेव जगवाननी देशना साजळीनें दीक्षा लीधी ते वखत बीजा पण जरत राजाना पाचसे पुत्र अने सातसे पौ तरा मिली बारेसा पुरुषाए दीक्षा लीधी, एक दिवस उष्ण कालें शरी रमा ताप घणो लागो तेथी ते मरीचिनें मनमा नाहावानी इच्छा थई तेवारें सजमनो निर्वाह दोहेलो तेथी दीक्षा पाळव नें असमर्थ अने घरें पिण जवाय नही एव विचारी साधुनो वेप छाडीने मन कल्पनायें नवो त्रिदंडीनो वेप धारण करचो लोक पूछे तेवारें एवु कहे जे साधु त्रणदं डथी रहित छे अने हु त्रणदड सहित छु माटे माहारे त्रणदडनु चिन्ह हो तथा साधु महाराज द्रव्य अने जावथी लोच करे छे हु लोच क रवाने असमर्थ होवाथी माहारे मस्तके शिखा अने मुडन एटले क्षुर मुडन हो तथा साधु सर्व प्राणातिपादिकथी विरम्या छे महाराथी तेम पळी शक्तु नथी माटे माहारे स्थूल प्राणातिपातनी विरति हो तथा साधु शीलेकरी सुगधित छे अने हु मोटें करी डाक्यो छु माटे माहारे एक छत्र धारवा सारु हो तथा साधु पादत्राय करी रहित छे हु तेम नथी माटे माहारे पगें पावडी हो तथा साधु कषायथी रहित छे अने हु क षाये सहित छु माटे माहारे कषाइया एटले गेरूना रग्या वस्त्र हो त

आ साधु स्नानें करी रहित छे अने हुं तेम नथी माटे माहारे स्नान
पाणीये स्नान हो ए रीतें वेष लई हाथमा कमंडलु धारण करी प्रभु
ना समोसरणनी बाहेर बेसे परंतु एवो विकल्प वेश छता पिण जे कोई
पुछे तेनी आगळ खरेखरी हकीगत कहे अने तेनी पासें आवनारने शु
द्ध साधुमार्गनो उपदेश आपी श्रीऋषभदेव भगवान पासे दीक्षा देवरावे
एवो थको भगवान साथे विचरे एक दिवस श्रीऋषभदेव स्वामी अयो
ध्यायें पधाऱ्या तेवारें भरत चक्रवर्तीयें परमेश्वरने वंदना करी पूछ्यु
जे हे भगवंत ! आ समोसरणमा कोई तीर्थंकरनो जीव छे ? तेवारें भ
गवान बोल्या के समोसरणमा तो नथी परंतु समोसरणनी बाहेर ताहारो
मरीचि नामे पुत्र जेणें त्रिदंडीनो वेष धारण कर्यो छे ते चोवीशमो
श्रीमहावीर नामा तीर्थंकर थाशे तथा एज मरीचिनो जीव ते आ भ
रत क्षेत्रमा पोतनपुर नगरे त्रिपृष्ट नामे पहेलो वासुदेव थाशे तथा श्री
महाविदेह क्षेत्रना मूका नगरीयें प्रियमित्र नामा चक्रवर्ती थाशे एवी
वात सांभळीनें भरत महाराज हर्षवंत थई श्रीभगवान पासेंथी मरीचिनें
वांदवानी आज्ञा लेई समोसरणमाथी उठीनें समोसरणनी बाहेर ज्यां
मरीचि बेठो छे त्यां आव्या अने त्रण प्रदक्षिणा आपी वांदीनें कह्यो के
हे मरीचि ! हुं तने तथा ताहारा त्रिदंडीना वेषने तथा तुं वासुदेव था
इश ते ताहारा वासुदेव पणाने तथा चक्रवर्त्ती पणाने नमतो नथी
परंतु चोवीशमो श्रीमहावीर नामे तीर्थंकर थाइश माटे तेने वांदु छु ए
म कही भरत महाराज स्वस्थानकें गया पछी ए वात सांभळीने मरीचि
घणा आनंदथी बोल्यो के एकनो महारो दादो तीर्थंकर तथा महारो
पिता चक्रवर्त्ती अने हुं पोते पिण पहेलो वासुदेव थाइश तथा चक्र
वर्त्ती पिण थाइश वळी छेल्लो चोवीशमो तीर्थंकर थाइश माटे मने
वासुदेवादिक अधिक पदवीओ मिळशे तेथी अहो महारुं उत्तम कुल
एम कहीने पोतानी भुजायें ताळी ठोकी महा हर्षवंत थयो थको हा
थें ताळोटा देतो नाचवा लाग्यो, एवीरीतें पोताना कुळनो मद कर्यो

तेथी नीचगोत्र कर्म बान्ध्यु जेमाटे १ जातिमद, २ कुळमद, ३ लाभम द, ४ ऐश्वर्यमद, ५ बलमद, ६ रूपमद, ७ तपमद, अने ८ श्रुतमद ए आठ मदने करतो थको जीव हीन जात्यादिकने पामे हिवे कोइए क दिवस मरीचिना शरीरमां रोग उपन्यो तेवारे तेनो विशेष देखीने असजाति पणाने लीधे कोई पिण साधु तेनी वैयावच्च करे नही ते जोइ मरीचियें मनमा चिंतव्यु के माहरे रोग मिटी जाय अने सारो थाउ तो एक शिष्य करु के जे मने रोगादिक उपने वैयावच्च करवा काम आ वे एम निर्धारी राख्यु पछी केटला एक दिवसें तेने रोग मिट्यो अने शरीरें शाता थइ, एक दिवसें कोई कपिल नामा राजपुत्र मरीचि पासे आवी धर्मोपदेश साम्भळी प्रतिबोध पाम्यो पछी मरीचिनें कहेवा लागो के मने दीक्षा आपो ते साम्भळी मरीचि बोल्यो के श्रीऋषभदेव स्वामी पासेथी दीक्षा ल्यो तेवारें कपिल राजपुत्र श्रीऋषभदेवजीना समोव सरणमा गयो तिहा भगवंतने समोवसरणमा बेठा जोइ फिरी. मरीचि पासें आवीने बोल्यो के श्रीऋषभदेवजीतो राज्य लीला भोगवे छे माटे तें मनी पासें तो धर्म काइ पिण नथी पिण ताहारा पासें काइ धर्म छे के नथी ? एवु वचन साम्भळी मरीचियें तेनें यथार्थ कह्यो तो पिण बहुल कर्मी पणा माटे तेणे मान्यु नही तेवारें मरीचियें आदि कषाय सहित मतिभ्रमथी, मिथ्यात्वोदयना योगें, शिष्यना लोभथी, स्वार्थ थापवा विचार्यु जे ए महारे योग्य छे एम चिंतवीनें बोल्यो के हे कपिल ! काइक जैनधर्म महारा पासें पिण छे माटे तु मुझे दीक्षा ले, हु तुजनें दीक्षा आपीश एवा प्रकारें पोताना अर्थे सारु कपिलनें दी क्षा दीधी ए उत्सूत्र भाषण कर्युं पछी ते कर्मनें आलोयु पडिक्कम्यु नही तेना योगथी एक कोडाकोडी सागरोपम ससारमा परिभ्रमण कर वा सबधि कर्म उपार्जन कर्युं पछी ते मरीचि अनुक्रमे पोतानु चोरा्शी लाख पूर्वनु आयुष्य भोगवी समाधि मरण करीने ॥ ३ ॥

चोथे जवें पांचमें ब्रह्म देवलोकें दश सागरोपमनें आउखे दे
वता पणे उपन्यो ॥ ४ ॥

त्यांथी आयुष्य पूरण करी चवीनें पांचमे जवें कोल्लागसन्निवेशने
विषे एंशी लाख पूर्वनें आउखे कौशिक नामा विप्र थयो त्यां त्रिद
ण्डी तापसी दीक्षा ग्रहण करी आयुष्य पूरु करी मरण पामीनें घ
णा काल पर्यंत संसार परिभ्रमण करी ॥ ५ ॥

छठ जवें थूणापुरीमा पुष्पमित्र नामा ब्राह्मण थयो तिहां त्रिदंडी ता
पस थई बहोत्तेरलाखपूर्व आयु जोगवी ॥ ६ ॥

सातमे जवें पहेले सौधर्म देवलोकें मध्यम आउखे देवता पणे उपन्यो॥७॥

त्यांथी चवीने आठमे जवें चैत्य सन्निवेश साठ लाख पूर्वनें आउखे
अग्निद्योति नामा ब्राह्मण थयो त्यां पिण त्रिदंडी तापस थइ काल करीने॥८॥

नवमे जवें बीजे ईशान देवलोकें मध्यम आउखे देवता थयो ॥ ९ ॥

त्यांथी चवी दशमे जव मंदिराख्य सन्निवेशें छप्पन्न लाख पूर्वनें आ
उखे अग्निभूति नामा ब्राह्मण थयो त्यां पिण त्रिदंडी पणु ग्रहण करी
मरण पामीनें ॥ १० ॥

इग्यारमे जवें त्रीजे सनत्कुमार नामा देवलोकें मध्यम आउखे दे
वता पणे ऊपन्यो ॥ ११ ॥

त्यांथी चवी बारमा जवमां श्वेतांबिका नगरीनें विषे चुम्मालीश
लाख पूर्वने आउखे जारद्वाज नामा ब्राह्मण थयो अने त्रिदंडी पणुं
ग्रहण करी त्यांथी मरण पामीनें ॥ १२ ॥

तेरमे जवें चोथा माहेंद्र नामा देवलोकने विषे मध्यम आउखे देव
ता पणे ऊपन्यो ॥ १३ ॥

त्यांथी चवी घणु संसार भ्रमण करी वली चौदमा जवें राजगृही न
गरीने विषे चोत्रीश लाख पूर्वनें आउखे थावर नामा ब्राह्मण थयो त्यां
त्रिदंडी तापस पणु अंगीकार करी मरण पामीनें ॥ १४ ॥

पन्नरमें जवें पांचमें ब्रह्मदेवलोकें मध्यम आउखे देवता पणे ॥

त्यां ी चवीने वली पिण मणु ससार भ्रमण करी शोळमा भवने विषे राजगृही नगरीनो विश्वनंदी नामे राजा तेनी प्रियगु ना ı राणी तेनो पुत्र विशाखानंदी हतो अने ते राजानो बीजो न्हानोभाई वि शाखा भूति नामे युवराजा हतो तेनी धारणी नामे राणीनो कूखने विषे ते मरीचिनो जीव आवी पुत्र पणे उपन्यो, तेनो विश्वभूति नाम मावि त्रे दीधु ते अनुक्रमें यौवन वय पाम्यो त्यारे तेना पितायें परणाव्यो पछी ते प्रतिदिन पोतानी स्त्रीने साथें लेई वाडीमां रमवा जाय एक दिवसें विश्वनंदी राजाना कुवर विशाखानंदीयें, विश्वभूतिने क्रीडा करतो देखीने मनमा विचार करचो के जुओ तो खरा जे हु तो राजानो पुत्र छु अने आ तो युवराजानो पुत्र छे तो हु आ माहारा बापनी वाडीमा कोइ दिवसें पिण क्रीडा करतो न ी अने आ युवराजा नो पुत्र वाडी रोकीनें बेठो छे ए अयुक्त छे माटे हिवे हु पिण माहारी स्त्रीयो सहित इहा आवीने वाडीमा रमण करू तोज महारो जमवारो सफल जाणु नही का महारो जन्म व्यर्थ जाणवो एवो निश्चय करी ते कुमारें पोताना पितानें कह्यो के विश्वभूतीनें वाडीमाथी काहाडी मूको तो हु जइ ते वाडीमा क्रीडा करू तेवारें पितायें कह्यो के हे पुत्र ! हु कोई प्रपच करीनें विश्वभूतीनें काहाडी तुने वाडी आपीश ए प्रमाणे पोताना पुत्रने सतोष पमाडी पछी विश्वभूतीने वाडीमाथी काहाडवा निमित्त राजायें कपट करी एक पडहो वजडाव्यो के सिंह नामा राजानें पकडवा सारु राजा चडे छे, एवो ढ ेरो साजलीनें विश्वभूती आवी राजानें क हेवा लाग्यो जे हे स्वामी ! तुमे पोतेज ते बिचारा गरीबडा सिंह रा जानी उपर शु प्रयाण करो छो ? तेने तो हुज बाधी लावीश एम कही लशकर लेइनें विश्वभूति, सिंहराजा उपर चडाई करी गयो, पाछलथी राजायें विश्वभूतीना अत पुरनें राजवाडीमाथी काहाडीनें विशाखानदीनें वाडी सोंपी दीधी, एम करता केटलाएक दिवसें विश्वभूती पिण सिंह राजानें पकडी लावीनें राजानें आवी सोंप्यो तेवारें तेनो लोकों घणो य

शवाद बोलवा लाग्या, हिवे फिरी विश्वभूती पूर्वनी पर पोतानी स्त्रीयोनें साथे लेइ रमवा मारु राजवाडीयें गयो तिहा दरवाजा उपर विशाखा नदीना मुजट बेठा हता ते बोल्या के इहा विशाखानदी पोतानी स्त्रीया साथे रमण करे छे माटे बीजा कोइनें आववानो हुकुम नथी, राजायें वाडी एनें दीधी छे ते साजली विश्वभूतियें जाण्यु जे राजायें महारी साथे कपट कीधुछे माटे धिक्कार पडो आ ससारनें एम विचारी विरक्त थयो पछी मात्र पोतानुं बल देखाडवा सारु ते वाडीना दरवाजा पासें एक कोठनु झाड हतु तेने एक मुठीमारी तेथी ते वृक्षना थडाये कोंठ जमीन उपर पडीगया पछी विश्वभूती बोल्यो के जेटलो वखत आ कोंठनें जमीन उपर पाडवा लागो एटलोज वखत शत्रुओनें मारता लागे परतु लोको अपवाद बोले तेनी ज्यथी ए काम हु करतो नथी एवु कहीने सभूतिविजय मुनिनी पासे दीक्षा लेइ मासक्षपणादि घणु ज तप करयु, एक दिवसें ते विश्वभूति मुनि विहार करतो करतो मथुरा नगरीमा आव्यो तिहा मासखमणनु पारणु करवा सारु गोचरी नें अर्थे गलीयें फिरता थका कोइएक नवी प्रसूता गाय हती तेणे ढीक मारी तेथी साधु भुमिकायें पडी गयो ए अवसरमा एना काका नो दीकरो विशाखानदी ते पिण पोतानें सासरे एज गाममा आवेलो छे तेणे गोखमा बेठा थका विश्वभूतिने जमीन ऊपर पडतो जोयो ते वारें हास्य पूर्वक बोल्यो के हे विश्वभूति ! जे बल पराक्रमथी तें एक मुष्टीयें करी सर्व कोंठ पाडी नाख्या हता ते तारु बल सर्वे क्या गतु रह्यु ? एवु वचन साजलीनें मुनियें उचो दृष्टी करी तेने जोयो त्यारे मनमा अहकार आणीनें बोल्यो के अरे हजी पिण हास्य करे छे, तो जो हिवे हमणा पिण महारु बल केटलु छे एम कही पहेली गायने सींगडे पकडी आकाशे भमाडीनें भूमि उपर मुकी दीधीनें विशाखानदीनें कहेवा लागो के अरे तुतो जाणे छे जे एनु बल जतु रह्यु हशे पिण महारु बल क्यायें गयु नथी वली कहेवा लागो के कोंठ

हैारी तपस्यानुं फळ होय तो हु परजनमा घणो बळवत थयो थको तुजनें मारवा वालो थाउ एवो नीयाणो करी कोडी वर्ष पर्यंत चारित्र पालो छते अनशन करी त्याथी मरण पामीनें ॥ १६ ॥

सत्तरमे नवें महाक्रशु नामा सातमा देवलोकने विषे सत्तर साग रोमपना पूरण आउखे देवता पणे ऊपन्यो ॥ १७ ॥

तिहांथी चवीने अढारमे भवें पोतनपुर नगरमा प्रजापति नामे रा जा तेनी धारणी नामे राणीनी कूखमा चार सुपने सुचित्त एक पुत्र थयो तेनुं नाम अचल दीवु तथा वली एज प्रजापति नामा राजानीं मृगावती नामे एक पुत्री थइ ते एक दिवमें विवाहनी चिंताने लीधें ते कुमारीनीं मातायें तेने शिणगारी सुशोभित वस्त्राभूषण पहेरावीनें राजा पासें मोकली अने विचारयुं जे ए महोटी कन्या यौवन वय पामेली देखीने राजा कोइ कुलवान राजकुमारनें परणावी देश परतु राजा तो ते पोतानी सुरूपवाली पुत्रीने आवेली देखीनें कामेकरी पीडीत थ यो अने पोतेज पोतानी दीकरीनें परणवानी इच्छा करतो थको लो को अपवाद न करे एटला माटे सभामा बेठेला लोकोनी आगल कहे वा लाग्यो के हे भाइओ ! जे लोकनें विषे सारामा सारी चीज होय ते कीणी कहेवाय ? तेवारे सभाजनो बोल्या के जे उत्तम चीज होय ते तुमारी कहेवाय, राजा बोल्यो जे तुमारा मुखथी जे वचन निकल्यु ते निश्चयथी सत्य छे माटे आ सर्वोत्कृष्ट जे कन्यारत्न छे ते हु बीजा नें आपीश नहीं एनें हु पोतेंज परणीश एम कही ते पोतानी पुत्रीनें पोतेज परणयो अने तेनी साथें ससार सबधि सुख भोगववा लाग्यो एम करता एक दिवस ते विश्वभूतिनो जीव देवलोकथी चवीनें मृगावतीनी कूखें आवी उपन्यो तेवारें मृगावतीयें सात स्वपना दीठा पछी पूरण नव महीने पुत्र जन्म्यो तेवारें राजायें महोटो महोत्सव करीने ते बाल कनु नाम त्रिपृष्ट एवु दीधु अनुक्रमें ते बालक महोटो थया एवा अव सरमां शखपूर नगरनी पासें तुगी नामा पर्वत छे ते पर्वतनी गुफामा वि

શાખાનગીનો ભાવિ સિંહ પણે આવી ઉપન્યો છે તે વખતમાં અશ્વગ્રીવ નામે પ્રતિવાસુદેવ હતો તેનું શાલિનું ખેત્ત તે પર્વતની નજીક હતું તે શાલિના ખેત્તનો જે રખવાલો રહેતો તેને તે સિંહ મારી નાખતો હતો તેવારે તે અશ્વગ્રીવ પોતાના સેવક રાજાઓની ઉપર વર્ષોવર્ષ વારા પ્રમાણે હુકમ લખી ખેત્તની ચોકી કરવા મોકલતો હતો એમ કરતાં એક વર્ષે વારા પ્રમાણે તે પ્રજાપતિરાજાને ચોકી કરવાનો હુકમ આવ્યો તેવારે તે ખેત્તની રખવાલ કરવો સારુ રાજાયે પોતે જાવા માંડયું તેને ત્રિપૃષ્ઠ વારી રાખ્યો અને પોતે પોતાનો અચલ નામે ભાઇ જે ગૌતમસ્વામીનો જીવ છે અને આ ચવમાં બલદેવ થાશે તે સહિત ખેત્તની રખવાલ કરવા ગયો, નિદા વગર ટોપ પહેરી રથમાં બેશી અજર્જુન સારથી કરી શસ્ત્ર લેઇને જે ગુફામાં સિંહ રહે છે ત્યાં ગયો એટલામાં તો રથનો અવાજ સાંભળીને સિંહ પિણ ગુફાથી બાહેર આવ્યો તેને દેખીને ત્રિપૃષ્ઠે વિચાર્યું જે એ સિંહને બેસવા રથ નથી તો મહારે પિણ રથમાં બેસી લડવું નહી વળી એની પાસે શસ્ત્ર તથા કવચ નથી તો મહારે પિણ શસ્ત્ર તથા કવચ નહી રાખવા પછી શસ્ત્ર તથા કવચને રથમાં મૂકી પોતે રથથી હેઠો ઉતરી સિંહને કહેવા લાગ્યો કે અરે દાંતના ખાવા વાલા ઉઠી ઉભો થઇને મહારી સામો આવીજા એટલું કહ્યું કે તુરત તે સિંહ પિણ ઉઠયો અને મુખ ફાડી સાહમો લડવા આ યો કે તુરતજ ત્રિપૃષ્ઠે તે સિંહના હોઠ પકડી બે કટકા કરી ચીરી નાખ્યો, તો પિણ તે સિંહનો જીવ જાય નહી, તેવારે ત્રિપૃષ્ઠનો સારથી સિંહને કહેવા લાગ્યો કે હે સિંહ ! જેમ તું મૃગરાજ છે તેમ આ તાહારો મારનાર પિણ નરરાજ છે માટે તુંને કોઇ સાધારણ માણસે માર્યો નથી એવી વાત સાંભળી સિંહ મરણ પામીને નરકે ગયો પછી તે સિંહનું કલેવર લેઇ ગામમાં આવી લોકોની વિસ્મય વ લેવર નાખીને ત્રિપૃષ્ઠ બોલવા લાગો કે આ ઉપદ્રવ કરનાર સિંહને હું મારી આવ્યો છું માટે હિવે મહારા પ્રતાપથી અશ્વગ્રીવ પ્રતિવાસુદેવ સુખ સમાધિથી ચાવલ ખાઓ એ વાત લો

कोना मुखथी साजली अश्वग्रीवने महा क्रोध उपन्यो तेथी पोतानी सेना लेइने लडवा आव्यो ते त्रिपृष्ट साथे युद्ध करता कोइ पिण रीते पोहोची शक्यो नही तेवारे चक्र फेंगवीने तेना उपर नाख्यु ते चक्र पिण त्रिपृष्टना हाथमा आवी बेठु पछी तेज चक्र त्रिपृष्टे अश्वग्रीव उपर चलाव्यु तेण जइ अश्वग्रीवनु मस्तक छेदी नाखीने त्रिपृष्ट आगल हाजर कर्यु ते जोइ देवो आकाश उपर रही जय जय शब्द यही बोल्या के आ भरतक्षेत्रमा ए त्रिपृष्ट पहेलो वासुदेव थयो पछी ते त्रिपृष्ट अनुक्रमे त्रण खड साधीने वासुदेवनी राजलीलाना सुख जोगवता थका एक दिवस नाटक थातु हतु तेवामा राजाने निद्रा आववा लागी तेवारे शय्यापालकने कह्यो के मने निद्रा आवी जाय तेवारे ए नाटक करनाराओने शीख आपी वारी राखजो तो पिण ते शय्यापालके श्रोत्रेंद्रियना रसे करी तेमने गीत गान करता वारी राख्या नही एट लामा त्रिपृष्ट जागृत थइने बोल्यो के अरे आ नाटकीआने शा वास्ते रजा आपी नही तेवारे शय्यापालके कह्यो के हे प्रभु ! श्रोत्रेंद्रियना रसे करी हु रजा आपना चूकी गयो ते साजली त्रिपृष्टने क्रोध चड्यो पछी शीसो गरम करी तेनो उनो उनो रस ते शय्यापालकना कानमा रेडाव्यो तेथी ते मरण पामीने नरके गया ए रीते ते वासुदेवना जवमां घणा महोटा पापोपार्जन करी चोराशी लाख वर्षनु आयुष्य जोगवीने एशी धनुष प्रमाणना शरीरनो त्याग करी मरण पामीने ॥ १८ ॥

उगणीशमे जवें सातमा नरकने विषे नारकी पणे जइ उपन्यो ॥१९॥ त्याथी मरण पामीने वीशमें जवें सिंह थयो ॥ २० ॥

तिहाथी मरण पामीने एकवीशमें जवें चोथा नरकने विषे नारकीपणे जइ उपन्यो ॥ २१ ॥

त्याथी मरण पामी घणु ससार भ्रमण करी बावीशमें जवें रथपुर नगरे प्रियमित्र नामे राजानी विमला नामे राणी तेनी कूखने विषे पुत्र पणे उपन्यो मावित्रे विमल एवु नाम दीधु अनुक्रमे सर्व कलानो पारगामी

यो पितायें तेने राज्य सोप्युं एक दिवस वनमां क्रीडा करवा गयो त्यां
ाश महिषी हरण छोडाव्या निद्रा दयाना भजावे चक्रक परिणामे करी
ानुष्यायु बांध्यु, छेवटे दीक्षा लेइ उग्र तपश्चर्या करी, चक्रवर्त्तीनी प
दवी उपार्जी अंते एक मासनुं अनशन करी त्यांथी चवीने ॥ २१ ॥

तेवीशमे भवें पश्चिम महाविदेहमां मूका नगरीनो धनजय नामे राजा
तेनी धारणी नामे राणीनी कूखे आवी उपन्यो मातायें चौद सुपना दीठा
पछी पूरण मासे पुत्र जन्म्यो तेवारें मातापितायें महोटा महोत्सव पूर्वक
तेनुं प्रियमित्र एवुं नाम दीधुं ते अनुक्रमें. छ खंड साधी चक्रवर्तीनी
पदवी भोगवी अने श्रीपोटिलाचार्य पासेथी दीक्षा लेइ क्रोड वर्ष पर्यंत
चारित्र पाळी सर्व चोराशी लाख पूर्वनुं आयु पूरण करी त्यांथी म
रण पामी ॥ २३ ॥

चोवीशमे भवें शक्र नामा सातमे देवलोके सत्तर सागरोपमने आ
उखे देवता पणे उपन्यो ॥ २४ ॥

त्यांथी चवी पचीशमें भवें एहज भरतक्षेत्रना छत्रिका नामे नगरी
नो जितशत्रु नामे राजा तेनी भद्रा नामे राणीनी कूखने विषे पचीश
लाख वर्षने आउखे नंदन नामें राजपुत्र थयो त्यां चोवीश लाख वर्ष
सुधी गृहस्थावासें रहीने पछी पोटिलाचार्य पासेंथी दीक्षा लेइ एक ला
ख वर्ष पर्यंत दीक्षा पाळी जावजीव मुनी मास खमण करी वीशस्थान
कनुं तप आराध्युं तेथी तीर्थंकर नामकर्म निकाचित उपार्जी अने एक
मासनुं अनशन करी त्यांथी काळ करीने ॥ २५ ॥

छवीशमे भवें दशमा प्राणत देवलोकने विषे पुष्पोत्तरावतंसक
नामना विमानमां वीश सागरोपमने आउखे देवता पणे उपन्या॥२६॥

पछी त्यांथी चवीने मरीचिना भवमां जे कुळनो मद कर्यो हतो
ते नीचगोत्रकर्मना उदयथी सत्तावीशमा भवने विषे ऋषभदत्त ब्रा
ह्मणनी देवानंदा नामे स्त्रीनी कूखे आवी उपन्या ते एरीते प्रथम ती
र्थंकर श्रीऋषभदेव भगवानें भरत चक्रवर्तीनी आगळ कह्युं हतुं जे

कीना मुखथी सांभलीने अश्वग्रीवने महा क्रोध उपन्यो तेथी पोतानी से ना लेइने लडवा आव्यो ते त्रिपृष्ट साथे युद्ध करता कोइ पिण जीति पोहोची शक्यो नही तेवारे चक्र फेरवीने तेना उपर नाख्यु ते चक्र पिण त्रिपृष्टना हाथमा आवी बेठु पछी तेज चक्र त्रिपृष्टें अश्वग्रीव उपर चलाव्यु तेण जइ अश्वग्रीवनु मस्तक छेदी लावीने त्रिपृष्ट आ गल हाजर कर्यु ते जोइ देवो आकाश उपर रही जय जय शब्द करी बोल्या के आ भरतक्षेत्रमा ए त्रिपृष्ट पहेलो वासुदेव थयो पछी ते त्रिपृष्ट अनुक्रमें त्रण खंड साधीने वासुदेवनी राजलीलाना सुख भो गवता थका एक दिवस नाटक थातु हतु तेवामा राजानें निद्रा आववा लागी तेवारे शय्यापालकनें कह्यो के मने निद्रा आवी जाय तेवारे ए नाटक करनाराओने शीख आपी वारी राखजे तो पिण ते शय्यापालकें श्रोत्रेंद्रियना रसें करी तेमने गीत गान करता वारी राख्या नही एट लामां त्रिपृष्ट जागृत थइने बोल्यो के अरे आ नाटकीओनें शा वास्ते रजा आपी नही तेवारे शय्यापालकें कह्यो के हे प्रभु ! श्रोत्रेंद्रियना रसें करी हु रजा आपता चूकी गयो ते सांभली त्रिपृष्टनें क्रोध चड्यो पछी शीसो गरम करी तेनो उनो उनो रस ते शय्यापालकना कानमा रे डाव्यो तेथी ते मरण पामीने नरकें गया ए रीते ते वासुदेवना भवमां घ णा महोटा पापोपार्जन करी चोराशी लाख वर्षनु आयुष्य भोगवीनें ए शी धनुष प्रमाणना शरीरनो त्याग करी मरण पामीनें ॥ १८ ॥

उगणीशमे भवें सातमा नरकनें विषे नारकी पणे जइ उपन्यो ॥१९॥

त्याथी मरण पामीने वीशमें भवें सिंह थयो ॥ २० ॥

तिहाथी मरण पामीने एकवीशमें भवें चोथा नरकनें विषे नारकीपणे जइ उपन्यो ॥ २१ ॥

त्याथी मरण पामी घणु संसार भ्रमण करी बावीशमें भवें रथपुर नगरें प्रियमित्र नामे राजानी विमला नामे राणी तेनी कूखने विषे पुत्र पणे उपन्यो मावित्रें विमल एवु नाम दीधु अनुक्रमें सर्व कलानो पारगामी

यो पितायें तेने राज्य सोप्यु एक दिवस वनमा क्रीडा करवा गयो त्यां
ाश माहेथी हरण छोडाव्या निहा दयाना भावे भद्रक परिणामे करी
नुष्यायु बाध्युं, छेवटे दीक्षा लेइ उग्र तपश्चर्या करी, चक्रवर्तीनी प
दवी उपार्जी अंते एक मासनु अनशन करी त्याथी चवीने ॥ २१ ॥

तेवीशमे भवें पश्चिम महाविदेहमा मूका नगरीनो धनंजय नामे राजा
तेनी धारणी नामे राणीनी कूखे आवी उपन्यो मातायें चौद सुपना दीठा
पछी पूरण मासे पुत्र जन्म्यो तेवारें मातापितायें महोटा महोत्सव पूर्वक
तेनु प्रियमित्र एवु नाम दीधु ते अनुक्रमें छ खंड साधी चक्रवर्तीनी
पदवी भोगवी अंते श्रीपोटिलाचार्य पासेथी दीक्षा लेइ क्रोड वर्ष पर्यंत
चारित्र पाली सर्व चोराशी लाख पूर्वनु आयु पूरण करी त्याथी म
रण पामी ॥ २३ ॥

चोवीशने भवें शुक्र नामा सातमे देवलोके सत्तर सागरोपमने आ
उखे देवता पणे उपन्यो ॥ २४ ॥

त्याथी चवी पचीशमें भवें एहज भरतक्षेत्रमा छत्रिका नामे नगरी
नो जितशत्रु नामे राजा तेनी भद्रा नामे राणीनी कूखने विषे पचीश
लाख वर्षने आउखे नंदन नामें राजपुत्र थयो त्या चोवीश लाख वर्ष
सुधी गृहस्थावासें रहीने पछी पोटिलाचार्य पासेंथी दीक्षा लेइ एक ला
ख वर्ष पर्यंत दीक्षा पाली जावजीव सुधी मास खमणे करी वीशस्थान
कनु तप आराध्यु तेथी तीर्थंकर नामकर्म निकाचित उपार्ज्यो अने एक
मासनु अनशन करी त्याथी काल करीने ॥ २५ ॥

छवीशमे भवें दशमा प्राणत देवलोकने विषे पुष्पोत्तरावतंसक
नामना विमानमा वीश सागरोपमने आउखे देवता पणे उपन्या॥२६॥

पछी त्याथी चवीने मरीचिना भवमा जे कुलनो मद करचो हतो
ते नीचगोत्रकर्मना उदयथी सत्तावीशमा भवने विषे ऋषभदत्त ब्रा
ह्मणनी देवानंदा नामे स्त्रीनी कूखे आवी उपन्या छे एरीते प्रथम ती
र्थंकर श्रीऋषभदेव भगवाने भरत चक्रवर्तीनी आगळ कह्यो

मरीचिनो जीव तीर्थंकर थाशे ते निश्चयथी थयो ॥ २७ ॥

हिवे भगवान् श्रीमहावीर देवानन्दानी कूखे अवतरया ते समयने विषे त्रण ज्ञान सहित गर्भपणे आव्या त्यां हुं देवलोकथी चवीश ए वुं जाणे पिण चववाना वखतनो जे वर्त्तमान एक समय सूक्ष्मकाल छे माटे ते न जाणे अने त्यांथी चव्या पछी हुं देवलोकथी चवीनें देवानन्दानी कूखे उपन्यों छु एवुं जाणे हिवे जे रात्रिमा श्रमणभगवान श्रीमाहावीर स्वामी देवानंदा ब्राह्मणीनी कूखे उपन्या ते रात्रिमा देवानन्दा ब्राह्मणी सुखशय्यामा कांइक सूती कांइक जागती अर्थात थोडीक निद्रा मा रही थकी, उदार कल्याणकारी, उपद्रव रहित, धनकारी, मंगल कारि शोभा सहित एवा चौद महोटा सुपना देखीनें जागी ॥ ते चौद सुपनाना नाम कहे छे पहेले स्वपनें हाथी दीठो, बीजे वृषभ, त्रीजे सिंह, चोथे लक्ष्मी, पाचमें फूलनी माला, छठे चन्द्र सातमे सूर्य, आठमे ध्वजा, नवमें कुंभ कलश, दशमें पद्म सरोवर, इग्यारमे क्षीर समुद्र, बारमें देवविमान, तेरमें रत्नोनो ढगलो राशि, चौदमें निर्धूम अग्नि ए चौद सुपना एवा रूपना कल्याणकारी महामंगलना करनारा देखीनें जागी थकी हर्ष संतोष पामी, चित्तमा आनंद पामी, महोटा प्रेम स हित मन थयुं, परमहर्ष उपन्यो, हर्षने विषे पसरतु छे मन जेनुं, उ त्कृष्ट सौम्य मन छे जेनु, जेना मनमा हर्ष उल्लास थयो छे, मेघनी धारायें करी हणाणु एवु कदंब पुष्प जेम विकस्वर थाय तेम जेना रो मे रोम विकस्वर थया छे एवी थइ थकी पूर्वे दीठेल्या सुपनाने याद करे याद करीनें सूवाना पल्यंग उपरथी उठे उठीनें पादपीठ थकी पिण उतरे उतरीनें नही उतावली, नही धीरी, एवी बे गतिनी विचमा ठहेरती थकी ॥ ९ ॥ राजहंसीनी गति सरखी चालती थकी जिहां ऋषभदत्त ब्राह्मण छे त्यां आवती हवी, आवीनें ऋषभदत्त ब्राह्मण प्रत्यें जय विजय शब्द करीनें वधावे वधावीनें भद्रासन एटले बाजोठ उपर बेठी, त्यां

आववानो खेद मीटावीनें, परसेवो उपशमावीने, बे हाथ जोडी

दश नख एकठा करी मस्तकें अंजली करीनें कहेवा लागी के हे स्वामि ! में आज रात्र शय्यामा काइक सूता हस्ति आदिक चौद सुपना दीठा ॥६॥

तेनु शु फल थशे, कया प्रकारना कल्याणने करनारा थशे तेवारें ऋषभदत्त ब्राह्मण देवानंदाना मुखथी एवु सांभलीनें पोताना हियामां घणो खुशी थयो जेवा पाणीनी धाराथी कदंब पुष्प खुले तेवो तेनी रोमरा जि प्रफुल्लित थई तें सुपनोना अर्थ विचारवा लाग्यो विचारीनें देवानंदा ब्राह्मणीनें कहे उदारकारी हे देवाणुप्रिया ! तुमे जे सुपना दीठा ते मंगलकारी छे, तुमे जे सुपना दीठा तेनु फल एवु छे के हे देवाणुप्रिया धननो लाभ थाशे, पुत्रनो लाभ थाशे, सुखनो लाभ थाशे, निश्चे तु मारे नव महीनाने साडा सात दिवस गया के सुकुमार छे हाथ पग जे ना, हीन अंग रहित, संपूर्ण पांचइंद्रिय सहित शरीर जेनु छे, लक्षण व्यंजन, अने गुणेकरी सहित तथा मानोन्मानें करी सहित संपूर्ण भलु, शरीर जेनु छे एवो पुत्र थाशे हिवे लक्षण कोने कहीये ते कहे छे, जे पुरुषनो ज्यारें जन्म थाय त्यारे तेना अंगमा पुण्यनी रेखा प्रमुख पडे तेने लक्षण कहीयें ॥ सहज लक्षण इति वचनात् ॥ तिहां चक्रवर्ती त था तीर्थंकरोने तो एक हजारने आठ लक्षण होय अने बल्देव तथा वा सुदेवने एकसोने आठ लक्षण होय तथा बीजा सामान्य भाग्यवंत पुरु षोने बत्रीश लक्षण होय तेना नाम कहे छे १ छत्र, २ विंझणो, ३ ध नुष, ४ रथ, ५ वज्र, ६ काचबो, ७ अंकुश ८ वावडी, ९ स्वस्तिक, १० तोरण, ११ तलाव, १२ सिंह, १३ वृक्ष, १४ चक्र, १५ शंख, १६ हाथी, १७ समुद्र, १८ कलश, १९ प्रसाद, २० मत्स्य, २१ य व, २२ यूप यज्ञनु अंग, २३ थाजलो, २४ कमंडलु, २५ पर्वत, २६ चामर, २७ कांच, २८ वरद, २९ पताका, ३० लक्ष्मी, ३१ माला, ३२ मयूर ए बत्रीश लक्षण पूर्वकृत पुण्यना योगवाला पुरुषना हाथ पगना तलीयां विषे होय ए आदि देईनें एक हजारनें आठ लक्षण विश एराज उत्तम महापुरुषना जाणी लेवा तथा वली प्रकारांतरे शरीर

लक्षण कहे छे जेना नख, पग, हाथ, जीभ, होठ, तालु अने आंखो नी खूणा ए सात वाना रक्त होय सारां होय ते पुरुष भाग्यवान जा णवो ते समाग लक्ष्मी भोगवे तथा जेनी काख, छाती, कोट अने ग ळानी हनवटी तथा गळानो मध्यो, नाक, नख अने मुख ए छ वाना ऊंचा होय तो ते पुरुष सर्व प्रकारें उन्नति पामे तथा दांत, चामडो केश, आंगुलीना पर्व एटले आंगलीनी रेखा अने नख ए पांच जेना पातलां होय सूक्ष्म होय तो ते पुरुष घणो धनवान् थाय तथा नेत्र स्तनना अंतर, नाक, गळानो मध्यो अने भुजाओ ए पांच जेना लांबा होय ते पुरुषनु आयुष्य महोटु होय घणु धन पामे अने पराक्रमी होय तथा ललाट, पेट अने मुख ए त्रण जेना महोटा होय तो ते पु रुष राजा थाय तथा वली ग्रीवा, जंघा अने पुरुष चिन्ह, ए त्रण जेना, लघु होय टुंका होय तो ते पुरुष राजा थाय तथा बोलवानो स्वर, डूटी ए टले नाभी अने सत्व ए त्रण जेना गभीर होय ते पुरुष पृथ्वीनो धणी थाय अथवा प्रधान थाय एम जे पुरुषमा जेवा लक्षणहोय ते पुरुषमा तेवो आचार पिण होय, जेवु रूप होय तेवु धन पिण होय, जेवो स्व भाव होय तेवो गुण पिण होय ए प्रकारांतरें बत्रीश लक्षण कही देखा ड्या तथा बीजा पिण केटलाएक लक्षण कहे छे पद्म, वज्र अंकुश, छ त्र, शंख अने मत्स्य ए जेना हाथ पगमा देखाय ते पुरुष लक्ष्मीपति थाय तथा जेना चीकणा तांबाना वर्ण जेवा नखहोय ते पुरुष सुखी होय तथा जेना झलकता उज्वल अनारवत् स्नेह निबिड एवा बत्रीश दांत पूरेपूरा होय ते राजा थाय अने जेना एकतीश दांत होय ते भो गी थाय तथा त्रीश दांत वालो मध्यम कहेवाय अने त्रीशथी पिण ओछा दांत जेना होय ते सामान्य पुरुष गणाय जे पुरुष अत्यंत ठींग णो तथा अत्यंत डीघो तथा अत्यंत जाडो होय तेमज जे अत्यंत दुर्बल, अत्यंत कालो अथवा अत्यंत गौर वर्ण वालो होय ए छ ने विषे स

पण होय, जेना मस्तकने जिमणे भागे सवलो भमरो होय तो शु

ी जाणवो अने आलो जमरो होय तो अशुभ जाणवो ॥

तथा जेना हाथने विषे एक पिण रेखा नहोय अथवा घणी रेखाओ होय ते पुरुषनु आयुष्य अल्प होय तथा जेने देवपूजानी आगुलीना पहेला वेढाथी अधिक काइक उची टचली आगुली होय ते पुरुष धन वान् होय तथा तेनी मातानो पक्ष घणो होय तथा जेना मणिबंधथी बा नी रेखा तथा करतलथी वित्तनी रेखा अने आयुखानी रेखा जेनी स पूर्ण होय ते पुरुषनुं गोत्र, धन तथा आयुखु सपूर्ण होय अथवा आयु नी रेखा जेटली आंगली अतिक्रमे तेटली पचवीशी आयुखाना वरस जाणवी तथा जेना अगुठाने मध्यभागें यव होय ते पुरुष विद्यावंत शास्त्री होय अने उजवाला पक्षमा तेनो जन्म होय तथा जेना नेत्र लाल होय तेनु पासु स्त्री मूके नही तथा जेना नेत्र पीला होय तेने धन नही तथा जेनी भुजा दीर्घ होय तेने इश्वर पणु होय तथा जेनु र शरीर होय तेने सुख घणु होय तथा जेना हाथ पगने विषे कमळ, , अकुश, शख, मत्स्य प्रमुख होय ते पुरुष मदोटा लक्षणवालो होय तथा जेना नख राता होय तेने धननु सुख घणु होय तथा जेना नख जडा होय ते भिक्षुक होय तथा जेना नख लुखा होय ते अनाचारी होय॥

वली शरीर माहे मुख प्रधान छे ते मुखमा वली नासिका छे ते प्रधान छे वली नासिकामा नेत्र छे ते प्रधान छे माटे जेना जेवा नेत्र हो तेनो तेवो शील एटले आचार पिण होय तथा जेवी नासिका तेहवु आर्य पण होय, जेवु रूप होय तेवु वित्त होय, जेवु शील होय ते गुण होय उक्तं॥ यथा नेत्रं तथा शील, यथा नासा तथा र्जव ॥ यथा रूपं तथा वित्त, यथा शीलं तथा गुणा ॥ पाठांतरे ॥ सर्वसत्त्वे प्रतिष्ठित॥ १ इत्यादिक लक्षण जाणी लेवां ए लक्षण कह्या ॥

हिवे व्यजननु स्वरूप कहे छे जे जन्म्या पछी अगमा प्रगट था तेने व्यजन कहीये जेमके मसो, तिल अने लसण इत्यादिक सर्व व्यंजन जाणवा ते पुरुषने जिमणी बाजुयें होयतो सारा

मे डावी बाजुयें होय तो सारा जाणवा ॥

हिवे गुणनु स्वरूप कहे छे जेमा सौभाग्य पणु, उदारपणु अने धैर्यपणु इत्यादिक होय ते सर्व गुणो जाणवा ॥

हिवे मानोन्माननु स्वरूप कहे छे पुरुष प्रमाणे पाणीथी भरेली कुडीमा पचीश वर्षना पुरुषने बेसाडवो पछी ते पुरुषना बेसवा थकी जो एक द्रोण जार पाणी कुंडीमांथी बाहेर नीकले तो ते पुरुष मानोपेत एटले प्रमाण सहित जाणवो अने जो तागडीमा तोलता ते पुरुषनो अर्द्ध भार प्रमाण तोल थाय तो ते उन्मानोपेत पुरुष जाणवो ॥ इहा तोलनी वार्तानां प्रसगमा भारनु प्रमाण कही देखाडे छे प्रथम छ सरसवे करी एक यव थाय त्रण यवे एक निणोठी थाय त्रण निणोठीये एक वाल थाय तेवा शोल वाले एक गदीयाणु थाय तेवा दश गदीयाण एक पल थाय तेवा दोढसो पलनो एक मण थाय तेवा दशमणनी एक घडी थाय तेवी दश घडीयें एक भार प्रमाण थाय एवा अर्द्धभारे तोलाय ते पुरुष उन्मानोपेत मान सहित जाणवो एरीते पोणीचार मण उन्मानना थाय छे ॥ वली जे पुरुषनुं पोताने आगले भरता पोतानु शरीर एकसोने आठ आगलनु होय ते उत्तम पुरुष जाणवो तेमा बार आगलनु मुख होय ते ने नवे गुणीये तेवारे १०८ थाय ते मानोपेत पुरुष जाणवो तथा जेनु छनु अगुलनु शरीर होय ते मध्यम सम पुरुष जाणवो, जेनु चोराशी आगुलनु शरीर होय ते हीन पुरुष जाणवो अने श्रीतीर्थंकरनु तो एक सो वीश आगुलनु शरीर होय केमके तीर्थंकरने माथे बार आगुलनी उष्णीष शाखडीने ठामे होय तेमाटे एवो सर्व अगे सुदर चद्रमा समान सौम्य आकार धारो जेनु मनोहर प्रीतिकारी दर्शन छे एवा सुरूपवंत देवकुमारसमान पुत्रने तु जणीश ॥ ९ ॥

ते विण बालक बाल्यावस्थामा रहित थाशे तेवारें ते पोताना पितानु, आधीन थाशे ते केवो थाशे ते कहे छे एटले ते पुत्र युवान अवस्था पामे थके ऋगूवेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्वणवेद ए चार वेद तथा

ांचमो इतिहास पुराण शास्त्र, छठो नाम कोश निघटनामा माग्ग ए
वं छए शास्त्र ने अग उपाग सहित तेना तात्पर्यनो जाणवा वालो
ाशे, चार वेदनो जणाववा वालो थशे, जे भूलशे तेने बतावना वा
ो भूल देखाडवा वालो थशे, कूठ बोलशे, तेने वर्कवा वालो थशे, शुद्धनो
ारण करनारो थशे पारगामी थशे,छे अगनो जाण थाशे, साठ अर्थ जिहा
ुवा साठ तत्र शास्त्र तथा कापिलशास्त्रनो जाणनार थशे, गणित शास्त्रनो
नाणनार थशे, अक्षर शिक्षामा निपुण थशे, क्रिया शास्त्रमा निपुण, व्या
रणनो जाणनार, छद जोडवामा दक्ष, टीकानो जाणनार, ज्योतिष शा
स्त्रमां प्रवीण एम बीजा पिण ब्राह्मणोना शास्त्रोमा परिव्राजकोना शा
स्त्रोमा अत्यत निपुण डाह्यो एवो ताहारो पुत्र थाशे ॥ १० ॥
तेमाटे तुमे रूडा सुपना दीठा, जावत् आरोग्य कारी सुपना तुमनें आ
व्या एवु वारवार केहेतो हवो अने पोते पिण अनमोदना करतो हवो॥११॥
हिवे देवानंदा ब्राह्मणी ऋषभदत्त ब्राह्मणना मुखथी एवा अर्थ साम
ळीनें, तने मनमा धारी राखीनें, हर्ष सतोषयुक्त हिया वाली थइ थकी
हाथ जोडी, दश नख भेळा करी मस्तकें चडावी कहेती हवी ॥ १२ ॥
जे ए वात जेम तुमे कही तेमज छे, हे देवाणुप्रिय ! ए सत्यज छे
खोटी नथी, हे देवाणु प्रिय ! जे तुमे कहो छो ते सर्व सदेह रहित छे
एवु कहीने ते स्वप्नना रूडा प्रकारें अगीकार करीनें ऋषभदत्त ब्राह्म
णनी साथे मनोहर मनुष्य सबधि सुख भोगवती थकी विचरे छे ॥ १३॥
ते काळनें विषे शक्रेंद्र देवताओनो राजा जेना हाथमा दैत्योने
विदारण करनारु वज्र छे जेणे पूर्वना भवमा श्रावकनी पाचमी प्रति
मा सो वार वहन करी तेणे करी शतक्रतु एवं बीजु नाम ते पूर्वना
कार्तिकशेठना भवनी अपेक्षाथी छे ते कार्त्तिक शेठनी कथा कहीयें छै
यें पृथ्वीभूषण नामे नगरनें विषे प्रजापाळ नामे राजा हतो ते नग
रमा राजानो घणो मानिनो अने घणो धनाढ्य जैनधर्मी, परम श्रावक
एवो कार्तिक नामा शेठ रहेतो हतो तेणे श्रावकनी इग्यार प्रतिमा

मा'हेली पांचमी प्रतिमा सोवार वही तेनु तेथी शतक्रतु एवु नाम त्रे
कोमा प्रसिद्ध थयु एम करता एक समये गैरिक नामा तापस महिने
महिने पारणु करे छे ते परिव्राजक नगरनी बाहेर आवी उतारो क
र्यो तेने राजा आदिक सर्व लोक वादवा गया पिण एक कार्तिकशे
ठ शुद्ध समकेति छे माटे वादवा गयो नही तेथी तेना ऊपर तापस
क्रोध करवा लागो एवामां ते तापसने राजायें पोतानें घरे जिमवाने नो
तरु दीधु तेवारें तापसें मनमा विचार्यु जे बीजातो सर्व लोक मने वादवा
आव्या पिण एक कार्तिक शेठ जैनधर्मी छे ते मने पगे लाग्यो नथी माटे
हिवे तेने नमाडु एम चिंतवी राजाने कहेवा लाग्यो जे हे राजन् ! कार्तिक
शेठ पोतानी पीठ- उपर खीरनी थाळी राखीनें जोमन करावे तो हु तुमारे
घरे जिमवा आवु, ए वात राजायें कबुल करी तापसने पारणु करावानुं
कहीने पछी राजा कार्तिकशेठ पासें आवीनें कहेवा लाग्यो जे महारो गुरू
गैरिक नामे तापस महारे घरे जिमवा आवशे तेनें तुमे पीरसवा आवजो ते
सांभळी शेठ बोल्यो के हु सम्यक्त्व धारी छु माटे महारे ए वात यो
ग्य नथी ।पिण तुमारी वासिमा रहुछु माटे शास्त्रमा " रायाभिओगेण "
ए आगार छे ते आगारें करी ताहारी आज्ञाथी जिमावीश परतु मा
हारा भक्तिभावें करी जिमावीश नही पछी तापस जिमवा आव्यो ते
वारें शेठें खीर पीरसी, पिण तापस जिम्यो नही अने कहेवा लाग्यो
जे शेठ वांसो माडे तो पात्र मूकी भोजन करु पछी राजाना कहेवा
थी शेठें वांसो धइ वांसो माड्यो शेठना हाथनी अगुळीमा वींटी
पेहेरी हती तेमा जिनप्रतिमा हती तेनें नमस्कार कर्यो हिवे तापस
शेठनी पीठ उपर उनो उनो खीरनु पात्र मूकी भोजन करतो जाय
छे अने आंगुलीयें करी शेठनु नाक पिण घसतो जाय छे ने शेठनें चे
ष्टामां कहेतो जाय छे के जो मुजने पगे लागवा न आव्यो तो हु आ
ताहारु नाक कापु छु अने हमणा वारवार तुमने महारा आगळ न
मांडु छु एम चेष्टा करतो तापस पारणु करीने पोताने स्थानकें गयो

ने पाठउथी गरम पाल शेठनी चामडीमा मिन्ी गयो ते थयो कष्टे
कार्य छोडाव्यो ए कृत्य जोइ शेठे विचार्यु के जो में पहेलाज दीक्षा
लीधी हती तो आज एवी हेलना थात नही एवु चितवी वैराग्य पामीने
ठ एक हजारनें आठ वणिक पुत्रोनी साथे श्रीमुनिसुव्रत स्वामीनी पा
सेथी दीक्षा लेइ द्वादशांग जणी बार वर्ष चारित्र पाली सौधर्मेन्द्र थयो
ने गैरिक तापस पिण अज्ञान तप करी मरण पामीने इन्द्रनु वाहन
ऐरावन नामा हाथी थयो पछी ते देव हाथीनुं रूप करी इन्द्रनी पासे
आव्यो जेवारें इन्द्र तेना उपर चडवा लाग्यो तेवारें ऐरावते देवीने अव
धिज्ञाने करी जाण्यु के अरे एतो कार्तिक शेठ छे एवु जाणी नासवा मा
ड्यो पिण इन्द्र तेने पकडीने उपर चड्यो तेवारें शक्रेन्द्रनें बीवराववा
मारु हाथीयें बे रूप करचा ते देखी इन्द्रे पिण बे रूप करचा वली
हाथीयें चार रूप करचा त्यारें इन्द्रें पिण चार रूप करचा पछी इन्द्रे
अवधिज्ञाने पूर्वनो भव जोइ हाथीने तर्जना करी चलाव्या अने कह्यो के
अरे गैरिक हिवे तु क्यां छूटी जाइश तु पूर्वनो भव जाणतो नथी ? जे महा
री पीठ उपर थाल राखी जिम्यो हतो ? तो हमणा तु महारु वाहन थयो
छे माटे जे बाध्या कर्म ते भोगव्या विना छूटको नथी एवु सांभली,
अपराध खमावी मूलगु रूप धारण करीने हाथी शात थयो ए इ
न्द्र महाराजाना पूर्वला भव संबंधि कार्तिक शेठनी कथा कही ॥

वली ते शक्रेन्द्रनी सभावें तो बे आव्यो छे परंतु पांचशे देव ते इ
न्द्रना काम करवा वाला छे ते पांचसो देवोनी हजार आंखो एना का
मर्मां आवे माटे सहस्राक्ष एवु नाम छे तथा महामेर जने वशमा छे
माटे मघवा एवु नाम छे तथा पाक नामा दैत्यने शिक्षा दीधी माटे
पाकशासन एवु नाम छे एवो शक्रेन्द्र दक्षिणार्द्ध लोकनो ठाकुर, स्वामी,
ऐरावन जेनु वाहन छे, सुरनो इन्द्र, बत्रीश लाख विमाननो मालक,
रजरहित स्वच्छ निर्मल एवा वस्त्रनो धारण करनारो, लटकमान मा
ला मुकुटमा नवा सुवर्णना कुंडल तेणें करी घसीजतां एवा गात्र

जेना, वळी महोटी ऋद्धि, महोटी कांति, महोटु बळ, महोटो यश महोटु माहात्म्य, महोटुं सुख, लांबी पुष्पोनी माळा धारण करवाथी देदीप्यमान छे शरीर जेनुं एवो इंद्र ते सौधर्म देवलोकना, सौधर्मावतंसक विमानमां, सौधर्म नामे सभाने विषे शक्र नामा सिंहासन उपर बेठो थको, बत्रीश लाख विमानोमां वसनारा देवो, चोराशी लाख सामानिक देवो, तेत्रीश त्रायस्त्रिंशक गुरु स्थानीया देवो तथा सोम, यम, वरुण अने कुबेर ए चार लोकपाळ देवो, आठ अग्रमहीषी ते शोळहजार देवीना परिवार सहित, त्रण परखदा, सात कटक, सात कटकना स्वामी, प्रत्येके एकेकी दिशामां चाराशी हजार करतां चार दिशामां मिळी त्रणलाखने छत्रीश हजार आत्म रक्षा कारि देवो तथा बीजा पिण घणा सौधर्म देवलोकना वसवा वाळा एवा देव तथा देवीओ ते मनी ऊपर रक्षाकारी पणु, अग्रेसर पणु, नायक पणु, पोषक पणुं, सर्वेमां महोटाइपणु, सर्वेने पोतानी आज्ञा मनावतो थको, सेनापति पणु करतो थको, पोतें पालतो थको तथा महोटा स्वरसहित नाटक गीत, वाजिंत्र वीणा, करताळ अने बीजा पिण घणा वाजिंत्र जेवा के मृदंग पडह प्रमुख बाजाओना शब्द तेणे करी सहित दिव्य देव संबंधि भोग भोगवतो थको विचरे छे ॥ १४ ॥

एवा समयने विषे ए प्रत्यक्ष जम्बूद्वीप नामा द्वीपने विस्तीर्ण एवो महोटो अवधिज्ञान तेणे करी देखतो थको विचरे छे ते काळने विषे ते समयने विष श्रमण भगवंत श्रीमहावीर स्वामीने ऋषभदत्तनामा ब्राह्मण कोडालगोत्रनो तेनी तेनी देवानदानामें भार्या जालंधर गोत्रनी तेनी कुखने विषे गर्भ पणे उपन्या देखीने मनमां घणो आनंद पाम्यो, हिरदामां घणो हर्ष पसरयो, मेघ धारायें हणाणु एवु कदंब वृक्षनु फूल तेनी परे रोमांच विकस्वर थया, प्रधान कमळनी परे नयन अने वदन प्रफुल्लित थयां, भगवतनु अवतरवु देखीने तेना दर्शनथी उपन्न थयो जे हर्ष तेना वश थकी प्रकर्षे करी चळायमान थया छे

कडा, करण, बहेरखा बाजुबंध, मुकुट, कुंडल, हार अने मरोदो गा कुआवा प्रमुख जेना एवो इंद्र ते तत्काल सिंहासनथी उठी उ थईने चकतो मणिरत्ननो बाजोट ते उपरथी उतरीने जला वैडु र्य मरकतरत्न, अरिष्टरत्न, अंजनरत्न, तेणेकरीनें निपुण कारीगरे घ डी देदीप्यमान मणिरत्न जडेली एवी पावडी (चाखडी) पगथकी तारी पछी अखंड वस्त्रनों एगसाडी उत्तरासंग करीनें बे हाथ जोडी तीर्थंकर श्री महावीर देवने साहामो सात आठ पगला जई पोता ना विमानमाहे बेठो थको डावो ढींचण उचो राखी अने जिमणो ढीं चण भूमिकाने विषे थापे थापीनें त्रिणवार नमीनें त्रणवार मस्तक व धींने उगाडे लगाडीनें पछी चोथीवार त्रिणवार नमीने थोडो उंचो थईने कडा, कड़ा, बहेरखा, बाजुबंध, कुमखा तेणे करी सहित थकाय ते एवी भुजाओने संकोचीने वालीने दशनख जेडा करी, बे हाथ जो डी मस्तकें अंजली करीनें शक्रस्तवनो पाठ कहेतो हुवो ॥ १६ ॥

तेनो भावार्थ आ प्रमाणे छे — नमस्कारहोजो श्री अरिहंत भगवंत प्रत्यें, आदिना करवा वाला, चतुर्विध श्रीसंघ रूप तीर्थना करवा वाला, भवीजनने तारवा वाला, बीजाना उपदेश विना पोतानी मेळे बोध पाम्या, पुरुषोमाहे उत्तम पुरुषोमा सिंह समान, पुरुषोमा प्रधान पुंडरीक कमल समान, पुरुषोमा गंधहस्ति समान जेम गंधहस्तिनें देखी बीजा हस्ति नाशी जाय तेम श्रीतीर्थंकर भगवानने देखी परवादी रूप हाथीओ नाशि जाय एवा भगवान, लोक माहे उत्तम, लोकना नाथ, लोकना हित करनार, लोकमा दीपक समान, लोकने विषे उद्योत करनार, अ भयदानना दातार, ज्ञान चक्षुना देवा वाळा, मोक्षमार्गना दातार, क र्मथी भय पामनारा जीवोने शरणना दातार, संयम रूप जिवितव्य ना दातार, बोधबीज जे सम्यक्त्व तेना दातार, सर्व मरणना मिटावना वाळा, धर्मना दातार, धर्म उपदेश देवा वा ा, धर्मना नायक, धर्मना रथी समान जेम सारथी रथने शुद्ध मार्गमां फेरे जाय तेम भगवान

र्वने विश मीठा वचने बोल्या के हे मेघ ऋषि ! आज रात्रिमां तुं
गथी माहुना पग न खमाया, निद्रा न आवी, तेथी मनमा माठुं ध्या
ध्यायु जे हुं प्रभातमा घेर जाइश एवात सत्य छे ? मेघकुमार बोल्यो
महाराज ! सत्य छे प्रभु बोल्या हे मेघकुमार ! ए तुमने योग्य नथी
जगी नरक निगोदना दुःखो तो जीवें अनंतिवार दीठा छे तेनी आ
आ दुःख, कोण लेखामा गणे ? एवो कोण मूर्ख छे जे चक्रवर्तीनी
द्धि मूकीने दासपणु वाछे ? माटे मरवु सारु छे पिण चारित्र भंग क
सारो नथी ए चारित्रनु ज्ञान सहित कष्ट छे, ते आगळ घणा फ
देनार थाशे तथा जोके तें पूर्व भवें पिण धर्मने अर्थे घणा अकाम
ट भोगव्या छे, ते पिण महाफलदायक थया ते ताहारा पूर्व भव
मळ. आ भवथी त्रीजा भवने विषे वैताढ्य पर्वतनी पासें ६ दंतो
र महित श्वेत वर्णे एक हजार हाथणीनो नायक एवो सुमेरुप्रभ ना
तु हस्ती हतो, तिहा एकदा दावानळ लागा देखी भय पामीने
ाथी नाठो तृषायें पीड्यो थको एक सरोवरमा कादव घणो हतो
ने पाणी स्वल्प हतु तेमा हस्तीना मार्गने अजाणता पाणी पीवाने पे
, त्या कर्दममाहे खुंतो, पाछो निकली शक्यो नही एटलामा एक पू
भवनो वैरी बीजो हाथी त्या आव्यो तेणे दंतोशूलने प्रहारें करीने
ने हण्यो, तेथी सात दिवस पर्यंत महा वेदना भोगवी, एकसो वीश
नु आयु पूर्ण करी मरण पामी विंध्याचल पर्वतनी भूमिकायें तु चार
ाशरवाला, रातेवर्णे, सातशें हाथणीनो नायक, मेरुप्रभ नामें हस्ती
ो, तिहा पिण एक समयें दावानळ लागो देखी जाति स्मरण उप
, तथी पूर्वभव दीठो, पछी दावानळनो भय टाळवा सारु चार गा
लगे भूमिकानुं माडलु बनावी शुद्ध कीधु, तेमा तृणवेलि मात्र राखवो
ो नही उगता पहेलांज उन्मूली नाखतो हतो, एम घणा वर्ष वीत्या
ी, एकदा वनमें महोटो मगी दावानल लागो, तेवारें सर्व वनच
ो, आवी माडलामा रह्या, तु पिण तत्काळ आवी .

मांडल्यामां तिल जेटलो पिण मार्ग रह्यो नहीं, एवु सकीर्ण थयु एटलामां तें खुरज खणवानें पग उचो लीधो ते पगने स्थानकें निराली भूमिका देखी एक शशलो ताहारा पग नीचेनी भूमियें आवी बेठो पछी पग नी चो मूकता नीचें शशलो दीठो एटले तुजने दया आवी तेथी पग अधर राख्यो, अढी दिवसे दावानल उपशम्यो, तेवारें शशला प्रमुख सर्व जीव, पोत पोताने स्थानकें गया, ताहारो पग लोहियें नराणो तेने नीचो मूकतो थको पर्वतना कूटनी परें तु हेठो पड्यो त्रण दिवस सुधी भुखतृषायें पीडातो सो वर्षनु आयु जोगवी दया सहित मरण पामी, हे मेघकुमार ! तु राजकुलें उपन्यो छो अकालें मेघवृष्टिनो डो होलो तारी माताने थयो माटे तारु नाम मेघकुमार स्थाप्यु जे वखत तु जने हाथियोयें मार्यो, ते वखतें तो तिर्यचनु कोलु दु ख हतु, तो ते दु ख आगल आ साधुना संघट्टथी तु शु दु ख वरे छे ? ते साधु तो ज गद्वंद्य छे, एमना चरणनी रज तो पुण्यवान् जावने लागे माटे साधुना पग लागवाथी दु ग न आणवु एवा जगवानना वचन सांजली जाति स्मरण उपन्युं, तेणें करी पूर्वेला जव दीठा, पछी प्रजुने पगे लागी चा रित्रने विषे स्थिर थइने एवो अभिग्रह लीधो के आज पछी महारे बे नेत्रनो जावतो राखवो माटे ते टालीने बीजा शरीरनी शुश्रूषा, गमे तेवु सकट पडे तो पिण न करवी एवो जावजीव सुधीनो अभिग्रह क री निरतिचार पणे शुद्ध चारित्र पाली अंते एक मासनी सलेषणा करी विजयनामा अनुत्तर विमानमा देवपणे उपन्या, तिहाथी चवी महा विदेहमा उपजी मोक्ष पामशे ॥ इति मेघकुमार कथा संपूर्ण ॥ माटे जगवत ने धर्मसारथि सरखा कहिय ॥ ए प्रथम व्याख्यान समाप्त थयु ॥ १ ॥

॥ अथ द्वितीय व्याख्यान प्रारभ ॥

वली जगवानने नमस्कार करे छे धर्ममा चार अत करवा एवाचक्रवर्त्ति समान जगवान छे जेम चक्रवर्त्ति त्रण बाजु समुद्र अने एक बाजु चुल्ल हेमवत्र पर्वत पर्यंत राज्य करे तेम जगवान दानादि चार प्रकारनो धर्म प्ररू

पे माटे धर्म चक्रवर्त्ति कहीयें, संसार समुद्रमां डुबता प्राणीओने द्वी
प समान शरणागत वत्सल, कषाय हणाय नही एवा ज्ञान अने दर्शन
ना धरवा वाला, जेमने छद्मस्थ पणु रह्यु नथी, पोते राग द्वेषनें जी
त्या, बीजाने जीतावे, पोतें संसार समुद्रथकी तर्या, बीजाने संसार
समुद्रथी तारे, पोतें तत्त्वने जाण्या छे, बीजाने तत्त्वनो बोध करे, पोतें कर्म
रहित थया, बीजानें कर्मथी मूकावे, सर्वज्ञ, सर्वदर्शि, शिव एटले निरूप
द्रव, अचल, रोग रहित, जेनो अन्तनही अने क्षय पिण नही, बाधा रहि
त, ज्याथी फिरी पाछु संसारमा आववु नथी एवु जे सिद्धिगति नाम
क स्थानक तेने पाम्या एवा जिनेश्वरनें महारो नमस्कार होजो, जी
त्याछे भय जेमणे एवा भगवतनें नमस्कार हो श्रमण भगवंत श्रीम
हावीर छेला तीर्थंकर, आदिना करनार पहेला तीर्थंकर श्रीऋषभदेव
स्वामीयें देखाड्या यावत् मोक्षमा जावा वाला तेमने हु वांदु छु भगवा
न तो त्या गर्भमा छे अने हु देवलोकमा छु माटे त्या रह्या थका आ
मने देखवो एवु कहीने भगवाननें नमस्कार करे करीने सिंहासन उपर
पूर्वदिशानी साहामु मुख करीनें बेठो तेवारें शक्रइन्द्रना मनमा एवो वि
चार उत्पन्न थयो ॥ १६ ॥

ते कहे छे इन्द्र महाराजें विचार्यु जे श्रीअरिहंत भगवंत अथवा च
क्रवर्ति अथवा वासुदेव अथवा बलदेव ए त्रेशठे उत्तम पुरुष छे, ते
अंतकुल जे क्षुद्रजाती तेने विषे तथा प्रान्तकुल ते अधमाचारीना कुल
ने विषे तथा अल्पपरिवार वाला तुच्छ कुलने विषे तथा निर्धन ते द
रिद्रीना कुलने विषे तथा अदातार ते कृपणना कुलने विषे तथा चारण
प्रमुख भीखारीना कुलने विषे तथा ब्राह्मणना कुलने विषे आव्या,
आवे अने आवशे निश्चयथी ए वात पूर्वे थइ नथी, वर्तमान काले थाती
नथी, अने आगमिक कालें थाशे पिण नही एटले त्रेशठ शिलाका
पुरुष तो निश्चे थकी पूर्वोक्त अंत कुलादिकने विषे आव्या पिण
नथी, आवता पिण नथी अने आवशे पिण नही ॥ १७ ॥

ए पूर्वोक्त अरिहंतादिक त्रेशठ शिलाका पुरुष तो, निश्चयथकी श्री ऋषभदेवजीयें आरक्षक पणे जेने राख्या तेने उग्रकुल कहीयें ते कुलने विषे तथा जेने गुरुस्थानीय पणे राख्या तेने भोगकुल कहीयें तेने विषे तथा जेने मित्रस्थानें राख्या तेने राजन्य कुल कहीयें तेने विषे तथा प्रजा लोकपणे थाप्या तेने क्षत्रियकुल कहीयें तेने विषे तथा इक्ष्वाकु कुलने विषे तथा हरिवर्ष क्षेत्रना युगलीयानो ज परिवार तने हरिवंश कुल कहीयें एवा बीजा पिण तथा ए प्रकारना विशुद्ध जातिना उत्तम कुलने विषे आव्या छ, आवे छे अने आवशे, ए मर्यादा छे ॥१८॥

तथापि ए श्रीमहावीर स्वामी ब्राह्मणना कुलमा आवी ऊपन्या ए लोकने विषे अच्छेराभूत वात थइ एटले अनंती उत्सर्पिणी अने अवसर्पिणी जेवारें व्यतिक्रमे तेवारें कोइक काले एवा अच्छेरा थाय छे तेम आ अवसर्पिणीमा पिण एवा दश अच्छेरां एटले आश्चर्यकारी वातो थयेली छे एम इंद्र महाराज विचारे छे ॥

हिवे अवसर्पिणीनें विषे जे दश अच्छेरा थया ते वखाणे छे त्या प्रथम कोइ तीर्थंकरने केवलज्ञान उपन्या पछी उपसर्ग थाय नहीं अने श्रीमहावीर देवने केवल ज्ञान उपन्या पछी गोशालायें उपसर्ग कर्या ते कहे छे एकदा भगवंत श्रीमहावीर स्वामी विहार करता सावत्थी नगरीयें समोसर्या तेवारें गोशालो पिण, हु तीर्थंकर छु एम लोकोमा कहेतो थको सावत्थीयें आव्यो, ते समयें गौतमस्वामी गोचरीयें गया, तिहा लोकोना मुखथकी एवु सांभल्यु जे आज नगरीमा एक महावीरस्वामी अने बीजो गोशालो, ए बे तीर्थंकर आव्या छ पछी संशयवंत थइनें श्रीगौतम स्वामीयें भगवंत पासें आवीने गोशालानी उत्पत्ती पूछी, तेवारें प्रभुयें कह्यो के शरवण ग्रामनो रहेवासी मंखली जातिनो शनिश्चरनो दान लेनारो तेनी भद्रा स्त्रीनो ए पुत्र छे, ब्राह्मणनी गायनी शालामा जन्म्यो तेथी मातापितायें गो[illegible] नाम पाड्यु छ ए भिक्षामागतो हतो ते आवीने महारो शि

ा थयो उत्पन्न थयानमार्गे महारी माथे उत्पन्न थयो उत्पन्न थयो छे तो, महारी पासेथी जाणीने काम्पक महुसुत थया छ, तेजोलेश्या ग्रहण शीख्यो छे बीजु वळी दिशाचरो पासेथी निमित्तविद्या शीखीने ए प्रभु जिननाम धरावे छे परन्तु ए तीर्थंकर नथी, एवी वात प्रभु पास ा मासखीने श्रीगौतमे बीजा घणा लोको पासे वात करी, जे गोशा ो मंखली पुत्र छे, ते वात, गोशालाने काने गइ, तेवारे गोशालो क्रो ायमान थयो एवा समय भगवन्तनो आनंदनामा शिष्य गोचरीये ग ो तेने गोशाले बोलावीने कह्यो के हे आनंद ! तुं एक दृष्टान्त क हुं ते सांभळ, कोइएक चार वाणीया व्यापार करवाने अर्थे विवि प्रकारना किरियाणाना गाडा भरी परदेशे चाल्या मार्गमा कोइए क महोटी अटवीमा पेठा, तिहा तृषा लागी तेथी उजाडमा पा णीनी गवेषणा करता पाणीतो क्याय दीठु नही पिण चार वा ल्मिक एटले उदेहीना शिखर (ढीग) दीठा अने तेना उ पर नीला वृक्ष उगेला दीठा, तेथी जाण्यु के अहींआ अवश्य पाणी हशे ? एवु जाणी एक शिखर फोडयु तेमाथी घणु निर्मल शीतल जल निकल्यु, ते सर्वजनोये पीइने तृषा भांजी, वली बीजा वा सणोमा पिण पाणी भरी लीधु, पछी बीजु शिखर भागवा माडयु, ते वारे तेमाथी एक वृद्ध वाणीयो बोल्यो के आपणु काम थयु, माटे हि वे बीजु शिखर फोडशो मा, एम वारया थका पिण तेणे बीजु शिखर फोडयु, तेमाथी सोनु निकल्यु, तेवार लोभ लागो तेथी जोरेण वृद्धे व र्यो तो पिण त्रीजु शिखर फोडयु तेमाथी रत्न निकल्या वली वृद्धे व र्यो वार्यो तोपिण चोथु शिखर फोडयु, तेमांहेथी महाविकराल भयंकर दृष्टि विष सर्प निकल्यो, ते सर्वे दृष्टि विषे करी सूर्य सामु जोइने सर्व ने बाली भस्म कीधा, एक सुशिक्षाना आपनार वृद्धने दया आणी जी वतो मुक्यो, ए दृष्टान्ते ताहारा धर्माचार्यने एटली संपदा प्राप्त थइ तो पिण असंतुष्ट थको महारो अपवाद लोको आगल बोलीने, मने

के जे थकी हु ए सर्वथी अधिक थाउ एवो निश्चय करी, कपट थकी ते छ जणथी छानो जेवारें पारणु करवानो दिवस आवे तेवारें उ जणने एम कहे के महारु तो माथु दुखे छे, हु आज पारणु करीश नही तु मे सुखे पारणु करो बीजा दिवसे वली तेमना सरखु तप करे ए प्र माणे कपट थकी वीश थानकतप करयु तेथी तीर्थंकरनाम कर्म उपा र्ज्यु परंतु कपटनें लीधे स्त्रीपणानु कर्म बाध्युं शेवट सातेजणा बे मास नी सलेषणा करी चोराशी लाख पूर्वनुं आयु पाली मरण पामीने ब त्रीश सागरोपमने आउखे विजयतनामा अनुत्तर विमानें जइ उपन्या, पछी तिहांथी चवी एक अचलनो जीव तो अयोध्यानो सुप्रतिबद्ध नामे राजा थयो, बीजो धरणनो जीव, चपानगरीयें चद्रजमा नामें रा जा थयो, त्रीजो अभिचद्रनो जीव, काशी नगरीयें शखनामें राजा थयो, चोथो पूरणनो जीव, सावच्छी नगरीयें रुक्मिनामें राजा थ यो, पाचमो वसुनो जीव कुरुदेशें अदीनशत्रुनामें राजा थयो, छठो वै श्रमणनो जीव कपिला नगरीयें जितशत्रुनामें राजा थयो, अने सातमो महाबलनो जीव मिथिला नगरीयें कुभ राजा तेनी प्रभावती राणीनी कूखें आवी मल्लीकुमरी पणे ऊपन्यो, तेवारें मातायें चौदसुपना दीठा आशु शुदि इगीयारशें पुत्रीपणे जन्म्या अनुक्रमें यौवन अवस्था प्रा प्त थइ पछी अवधिज्ञाने करी पोताना छ मित्र, जूदे जूदे ठेकाणें उ पन्या देखी तेने प्रतिबोध करवाने अर्थे अशोक वाडीना रत्नें जडित घर कराव्यु, तेना छ बारणा कराव्या, तेमा पोताना रूप सरखो र त्नेंजडित सोनानी एक पूतली करावी, हिवे मल्लीकुमरी जे जे वारें भो जन करे ते ते वारें ते रत्ननी पूतलीने माथे बारणु कराव्यु छे ते बा रणानी उपर एकेको कवल नाखती जाय अने फिरी पाछु ढाकणु आ पी दीये एम नित्य करती जाय हिवे एकदा अयोध्या नगरीयें सुप्र तिबद्ध राजायें यसने देहरे पूजा रचावी छे, तिहा फूलनी माला देखी ने दूतने पूछ्यु जे तुमें एवो फूलनो श्रीदाम क्यारे पिण दीठो छे!

राग दूत बोल्यो जे हे राजन् ! मल्लीकुमरी घणी चतुर छे घणा रूपं
रु छे, ते जेवो फूलनो श्रीदाम बनावे छे तेहवा आपमां अशे पिण
श्रीदाम नथी हिवे पूर्वभवना प्रेमथकी सुमतिचंद्रराजायें मल्लीकुमं
नी याचना करवाने कुंभराजा उपर दूत मोकल्यो अने कहेवराव्यु
तुमारी बेटी मुजने परणावो ॥ इति प्रथम दूत ॥ १ ॥

तेवार ज्ञी चंपानगरीना अरहन्नक प्रमुख व्यवहारिया प्रवहण
री गंभीर पत्तने द्वीपान्तरें चाल्या, एवा समयमा इन्द्र महाराज अर
न्नक श्रावकनी प्रशंसा पोतानी सभाने विषे करवा लाग्या जे धन्य
अरहन्नकने, आज भरत क्षेत्रमा एना समान बीजो कोइ दृढ श्राव
क नथी ! ते इन्द्रना वचनने कोइएक मिथ्यात्वी देवना अण सद्दहतो
को तिहा अरहन्नक पासें आवीने ते देवतायें समुद्रना महोटो उत्पा
कर्यो ते जोइ अरहन्नक तो सागारी अणशण करीने निश्चल म
श्रीवीतराग देवनुं स्मरण करवा लाग्यो, तेवें देवतायें जणाए चला
ो अने एवु कह्यु जे तु श्रीवीतराग देवनु स्मरण मूकीने हरि हरादि
देवोनुं स्मरण करे, तो उपसर्ग निवारण करु नहींतर ताहारा
हाज समुद्रमांहे बुडावी देईश, एम कही जिहाज समुद्रमा बुडाव
लाग्यो, ते जोइ सर्व लोक एकठा मिली अरहन्नकने कहेवा लागा
देवतायें कह्यो तेम करो, तो पिण अरहन्नक श्रावकनु समकित दृढ
तेथी चलायमान न थयो, ते जोइने देवता तुष्टमान थइ कुंडलाभरण
जोडो आपी, अरहन्नकने पगे लागीने कह्यो के अहो अरहन्नक ! तु
ने धन्य छे, हे कृतपुण्य ! तुमारु जीवितव्य सफल छे तुमोने इन्द्र
हाराजें सभा समक्ष वखाण्या ते अणमानता में तुमारो अपराध क
र्यो, ते महारो अपराध तुमें खमजो, ते सांभळी अर्हन्नक बोल्या जे
हे लोक अने परलोकनु साधन एवो श्रीजिनधर्म पामीनें बीजो धर्म हु
अंगीकार न करूं, तेवारें देवतायें चार कुंडल आप्या, अने
स्थानकें गयो, हिवे ते व्यवहारीयो कुंभराजासें गंभीरपत्तनें .

व्यापार करी फिरी मिथिला नगरीयें आव्यो तेवारें देवताये आपेल चार कुडलमाथी राजाने बे कुडल आप्या, राजायें मल्लीकुमरीनें दीधां पछी व्यापारीयें पोतानी चपानगरीयें आवी, तिहा चपानगरीना राजा ने बाकी रहेला बे कुंडल आप्या राजायें पूछ्यु जे हे व्यवहारीया! तुमे परदेशमां कोइ तमासो दीठो? ते सांभली व्यवहारीयो बोल्यो के अमें मल्लीकुमरीनु रूप अद्भुत दीठु एवु रूप बीजे क्याहि पिण दीठु नथी, पछी चंद्रजसा राजायें पिण कुजराजा पासें दूत मोकलीने कहे वराव्यु के तुमारी पुत्री मल्लीकुमरी मुजने परणावजो इति द्वितीय दूत ॥२॥

एक दिवसें मल्लीकुमरीना बे कुडल भाग्या, तेवारें कुंजराजायें सो नीओ बोलावीनें कह्यो के आ कुडलनो जोडो सांधी आपो, तेवारें सो नी कुडल जोइने बोल्या जे महाराज! ए सधाय नहीं एतो देवताना कुडल छे, ते अमें केवी रीते साधियें? तेथी राजायें सर्व सोनीआने देश निकाल दीधा, ते सोनी वाणारसी नगरीयें गया, तेवारें त्याना शंख राजायें पूछ्यु के तमें देश केम छोड्यो? सोनी बोल्या जे महाराज! मल्लीकुमरीना कुडल देवता सबंधी छे, ते अमारा थकी सधाणा नहीं, तेणें करी देश छोडवो पड्यो अने मल्लीकुमरीना रूपनु वर्णन कर्यु, ते वारें वाणारसीना राजायें पिण मल्लीकुमरी याचवाने अर्थे कुंजराजा ने दूत मोकल्यो ॥ इति तृतिय दूत ॥ ३ ॥

हिवे रुक्मी राजायें पोतानी पुत्रीने चार महीना सुधी पीठी चरा वीने दूतने पूछ्यु जे हे दूत! तें आवु रूप क्याही पिण दीठु छे? तेवारें दूत बोल्यो जे मल्लीकुमरीने लावने अर्धे पिण ए रूप नथी, ते सांभली, रुक्मी राजायें पिण कुंजराजा उपर दूत मोकली, मल्लीकुम रीनी याचना करावी इति चतुर्थ दूत ॥ ४ ॥

हिवे कुंजराजानो पुत्र छे, तेणें पोतानी चित्रशाला चितरावी, तिहा चितारे मल्लीकुमरीनो अगुठो दीठो, ते समार्गे मल्लीकुमरीना सर्व अगनुं स्वरूप चित्री कार्यु, एकदा मल्लीकुमरीना भाईयें क्रीडा करता मल्लीकुमा

ेनु रूप चित्रशाळामा जोयु, तेने रीश चडी तेथी चितारांना हाथ
अंगुठो कापीने काहाडी मूक्यो, चितारो हस्तिनापुरें अदीनशत्रु रा
जाने मिल्यो, तिहां मल्लीकुमरीनु रूप, वर्णन करयु, ते सांभळी तेणे पिण
मल्लीकुमरीनी याचना करवा कुंभराजानें दूत मोकल्या. इति पंचम दूत ॥५॥

एक दिवस धर्मचर्चा करता एक परिव्राजिकाने मल्लीकुमरीयें जीती,
मानभ्रष्टा करी, तेथी ते रीशाणी थकी कपिला नगरीयें जइ जितशत्रु
राजाना मुख आगळ मल्लीकुमरीना रूपनु वर्णन करयु, तेणे पिण मल्लीकु
मरी मागवाने अर्थे कुंभ राजा उपर दूत मोकल्यो ॥ इति षष्ठदूत ॥ ६ ॥

ए रीतें छ दूत कुंभराजा पासें समकाळें आव्या, कुंभ राजायें सर्व
दूतोने कह्यो के हु महारी कन्या कोने आपवानो नथी, एवी रीते अप
मान करी काढी मूक्या, पछी ते छ ए राजाओ पोत पोतानु लशकर ले
इने समकाळें आवी मिथिला नगरीनें वींटी लीधी कुंभराजायें पिण बा
हिर आवी युद्ध करवा माडयु युद्ध करतां हार्यो अने पाछो नगरीमा
पेठो तेवारें मल्लीकुमरीयें छ ए राजाओने कहेवराव्यु के तुमे महारा र
ङ्गवरमा आवजो, पछी ते छ ए राजा छ बारणामाथी जूदा जूदा आव्या,
मल्लीकुमरीनी मूर्ति देखी व्यामोह पाम्या, एटलामा मल्लीकुमरीयें आवीने
ते पुतळीना माथा उपरथी ढाकणु उघाडयु तेवारें ते सडीगयेला अन्नानमा
कीडा पड्या हता तेमाहिथी दुर्गंध निकल्यो एटले सर्व जणे मुडा पामें
टूगटु आपी धुधुकार कीधो अने दु खी थवा लाग्या तेवारें मल्लीकुमरी बो
ल्या के हे नद्रो ! आ रत्नमय पूतळी उपर नियमसें एक कवळ आ
हारना संयोगथी एवी दुर्गंध वास आपे छे, तो महारा शरीरमा तो नित्यप्र
त्यें शेर धान्य पडे छे तेथी मलमूत्रनो भंडारज छे तेमा तुमें शु रागाध
थया छो ? एवो प्रतिबोध करीने पछी पूर्वलो भव सभळाव्यो, तेथी
ते छए राजाने पिण जातिस्मरण ज्ञान उपन्यु, पूर्वभव दीठा, पछी ते
छए कहेवालाग्या के हिवे अमने तारो, तेवारें मल्लीकुमरीयें कह्यो के हु
मणा तो तुमें घरे जावो, जेवारें मने केवळज्ञान .

थमो, हु तुमोनें दीक्षा आपीश, पछी ते छए राजा पोतपोताने स्थान कें गया, मल्लीकुमरीयें पिण सवत्सरी दानआपीनें त्रणशें राजपुत्र सा थे मिगशर शुदि इग्यारशने दिने दीक्षा लीधी, तेज दिवसें केवल ज्ञान उपन्यु, पछी ते छए मित्रें आवी श्रीमल्लीनाथ पासेंथें दीक्षा लीधी ते छए ने गणधर करया तेहज भवें मोक्ष गया, ए श्रीमल्लीनाथ स्त्रीवेदें उगणीशमा तीर्थंकर थया, तेमना समोसरणमा स्त्रीनी परखदा आगल बेशती हती अने पुरुषनी परखदा पाछल बेशती हती ते स्त्री वेदें कोइ तीर्थंकर थाय नहीं ते थयु ए बीजु अच्छेरू जाणवु ॥ २ ॥

त्रीजु कोइ तीर्थंकरने गर्भपालटो थयो नथी, ते आहीं श्रीमहावीर स्वामीने ब्याशी रात्रि पछी देवानंदानी कूखथी हरिणगमेषी देवतायें अपहरीनें त्रिशला क्षत्रियाणीनी कूखमाहे धरयो अने त्रिशलानी कूखें पुत्रि हती, ते महाणकुंडें देवानंदानी कुखें मूकी तेवु कोइवारें थाय नही, माटे ए त्रीजु गर्भ पालटन आश्चर्य जाणवु ॥ ३ ॥

चोथु श्रीवीरभगवाननें जेवारें केवलज्ञान उपन्यु, तेवारें देवतायें मिली समोसरणनी रचना कीधी, त्या घणी महोटी परखदा भेली थइ तेवारें भगवानें धर्मदेशना दीधी परतु प्रभुनी देशना साभलीने कोइ समकेत पाम्यो नही, तेमज व्रत पच्चखाण पिण कोइयें लीधु नही एरीतें देशना निष्फल गइ, एम तीर्थंकरनी देशना कोइ वखतें खाली न जय ते आ वेलायें खाली गइ, माटे ए चोथु आश्चर्य जाणवु ॥ ४ ॥

पाचमु जे एक द्वीपनो वासुदेव होय ते बीजे द्वीपें जाय नहीं, ते श्रीकृष्णनी द्रौपदी लाववानें अर्थे धातकीखंडे गया तेमज कपिल वासुदेवनो शख अने श्रीकृष्ण वासुदेवनो शख ए बे शंखे शख मिल्या। ते पिण कोइवारें मिले नही माटे ए आश्चर्य जाणवु तेनी कथा कहेछे कापिलपुर नगरमा द्रुपदराजानी चुलणी पटराणीनी कूखे द्रौपदी नामे पुत्री थइ तेना विवाह सारु स्वयवर मडप माड्यो, सर्वे देशोना राजा ते हस्तिनापुरथी पोताना युधिष्ठिरादिक पाच पुत्रनें तेडी पांडुरा

जा पिण आव्यो, अर्जुने राधावेध साध्यो तेवारें द्रौपदीयें अर्जुनना गळामा वरमाला नाखी ते वरमाला पूर्वभवमा द्रौपदीयें पाच भरता रनो नीयाणो करचो हतो तेना प्रभावथी पाचे पांडवोना गळामा जइ पडी पूर्वळा भवमा द्रौपदीनो जीव नागिला नामें ब्राह्मणीनो हतो तेण एक दिवस धर्मरुचि मुनिने कडवी तुंबडीनु शाक वोहेराव्यु ते मुनियें अन शन करी खाधु तेना योगथी, मुनि मरण पाम्या पछी नागिला साधुनी घात करनारी छे एव् आचार्यें साधुओने गाममा मोकली कहेवराव्यु तेवारें ब्राह्मणे नागिलाने घरमाथी काहाडी मूकी, ते भमती भमती म रण पामीने नरकें गइ त्याथी अनेक तिर्यंचादिकना भव फिरी एक शे ठने घरे घणी स्वरूपवाली सुकुमालिका नामें पुत्री पणे उपनी तेने तेज गाममा एक बीजा शेठना दीकराने परणावी ते रात्रे सुवागयो त्या सुकुमालिकानो स्पर्श थताज तत्काळ तेने दाहज्वर उपन्यो तेथी ते प डती मूकी चाल्यो गयो पाछळथी सुकुमालिकाने शोक करती जोइने तेना बापे एक भिक्षुकने परणावी ते पिण तेमज मूकी नाशी गयो प छी सुकुमालिका दुःखगर्भित वैराग्य पामीने साधवी थइ तेने गुरुणीयें नाकारो करचो तो पिण ते वनमा तप करवा गइ त्या एक वेश्याने पाच पुरुष हाजरीमा रह्या छे तेनें जोइने सुकुमालिकायें कह्यो के म हारा तपनो प्रभाव होय तो आगला भवमा मुजने पिण पांच भरतार होजो एवु नियाणु करयु, अंते अनशन करी इशान देवलोकें गइ त्या थी चवीने अहीं द्रौपदी थयेली छे ते पूर्वकृत नियाणाना योगें वरमा ला पाच जणाना कंठमा पडी देवोयें आकाशथी एवी वाणी करी के द्रौपदी पाच भरतारी छता पिण सती छे, पाचपांडव द्रौपदीनें परणी हस्तिनापुरमा आव्या त्या सुखें रहे छे, एक दिवस जेनी मुखाकृति सौम्य छे परंतु मनमा कपट घण राखे छे, वरकल चीर पहेरे छे, ज नोइ पहेरे छे, काला मृगना चामडानो उत्तरासंग करेळो छे, जेनो ज टानो महाराग्नि वाळो छे, जे कलह कोलाहलनो उगाडनार छे, एवो

नारद ऋषि आकाशमार्गेथी ते पाडवानी सनामा आव्यो, तेवारे पाडवो सहित सर्वे सज्ञाजनोयें उत्ता थइने आदर सन्मान आप्यु पर तु ते नारद जेवारें द्रौपदीने जोवा गयो तेवारें द्रौपदीयें तेने असजतो जाणी मांचो पूज्यो नही, तेम उठीने उत्ती पिण थइ नहीं, अने योग क्या पिण नहीं, तेथी नारदने रीश चडी अने विचार करवा लाग्यो के आ द्रौपदी पांच जरतार पामीनें मस्त थइ गइ छे, तेथी गर्वित थकी बेठी छे तो हिवे हु एने सकष्टमा नाखु एम चितवी, धातकीखंडना पूर्व जरत क्षेत्रमा अमरकका नामे नगरी छे त्या कपिलवासुदेवनो सेवक पद्मनाज नामे राजा राज्य करे छे ते राजा पोतानी सातसें राणीयो साथे वाडीमा रमतो हतो तेवा समयमा नारद पिण त्या गयो, तेने पद्म नाज राजायें वांदीने पूछ्यु के हे नारदजी ! महारो जेवो अतेउर छे तेवो अतेउर बीजे क्या तुमे जोयो छे तेवारें नारदजीये जाण्यु के आ स्त्रियोनो लोलुपी छे एम जाणी अवसर जोइने नारदजी कहेवा लाग्यो, के हे राजन् तु कूवाना देडका सरखो देखाय छे, तेम कोइ एक समुद्रनो देडको कूवाना देडकानी पासें आव्यो, तेवारें तेने कूवाना देडकायें पुछ्यु जे तु किहा रहे छे अने क्याथी आव्यो छो, तेणे कह्यो हु समुद्रमा रहु छु अने त्याथीज आव्यो छु तेवारें कूवाना देडकायें पूछ्यु के ताहारो समुद्र केटलो मोटो छे, तेणे कह्यो घणो महोटो छे, तेवारें कूवानो देडको हाथ पग पसारीनें बोल्यो के आटलो महोटो छे, समुद्रना देडकायें कह्यो एथी घणोज महोटो छे, तेवारें कूवानो देडको पोताना कूवानी चारे बाजुयें कूदका मारीने बोल्यो के आटलो महोटो छे, तो पिण तेणे कह्यो के एनाथी तो घणोघणो महोटो छे, तेवारें कूवानो देडको रोष आणीनें बोल्यो के अरे असत्य वादी तु इहाथी दूर जा, महारी फालथी पिण वली कोइ महोटो हशे ? माटे तु जुठ बोले छे, तेम हे राजन ! तें पिण कूवाना देडकानी परें आटलीज स्त्रीयो दीठी छे तेथी गुमान वखाण करे छे, परतु पाचपाडवानी स्त्री द्रौपदी एवी छे के तेना

के अंगुठाना नखाग्रना रूप सरखु पिण ताहारा काइ शरीरनु रूप नथी, ए लोकमा ए द्रौपदी समान काइ स्त्रीनु रूप नथी एम कहीने नारद चालतो थयो, पाछळथी पद्मोत्तर राजा कामे पीडित थको चिंतववा लाग्यो जे एवी स्त्री विना जन्म निष्फळ छे पिण द्रौपदीने पामवानो कोइ उपाय सूजयो नही तेवारें अठम तप करी पूर्व परिचित देवतानु आराधन कर्यु देवता प्रत्यक्ष आवी उभो रह्यो अने कहेवा लाग्यो के हे राजन! मने केम संभार्यो माटे जे काम होय ते फरमावो, पद्मोत्तर राजायें द्रौपदी लेइ आववानी याचना करी तेवारें देवतायें कह्यो ते महा सती छे माटे शील भंग करशे नही तो तु फोकट शा वास्ते तेने तेडावे छे तो पिण पद्मोत्तरें घणो हठ कर्यो त्यारें देवतायें द्रौपदीने अवस्वापिनी निद्रा आपी, ज्या सुती हती त्याथी ढोलीया सहित उपाडीने पद्मोत्तर राजानी अशोक वाडीमा लावी मूकी अने राजानें कह्यो के तें महारा हाथें मोटु काम कराव्यु छे, माटे हिवे कोइ पिण दिवसें तु मने याद करजे नही कदापि बोलावीश तो पिण हिवे हु आवीश नही एम कही देवता स्वस्थानकें गयो, केटलिक वार पछी द्रौपदी निद्रामाथी जाग्रत थइने विचारमा पडी जे हु इहा क्या आवी छु! तेवारें पद्मनाभ बोल्यो के में तुजने महारी साथें भोग करवा सारु देवतानी मारफतें इहा मगावी छे, तो हिवे तु महारी साथें विषयसुख भोगव, हु ताहारो दास छु, तेवारें द्रौपदी बोली हे देवाणुप्रिय! तु छ महिना सुधी महारु नाम लइश नही, महारी वाहार करवा वाला, पाचपांडव तथा श्रीकृष्ण छे ते जो छ महीनामा आही आवशें नही तो तु कहीश तेम थाशे, पद्मनाभें पिण हा कही अने विचार्यु जे इहा एनी खबर लेवा कोण आववनार छे? वली जोरावरीथी प्रीति पिण न थाय एम जाणी, द्रौपदीनें पोताना महेलमा तेडी गयो द्रौपदीयें त्या छठ छठ आठमनु तप अनु पारणे आयबिल करवा माड्यु, हिवे प्रभात हस्तिनापुरमा द्रौपदीने मेहेलमा दीठी नही, तेवारें पांडवोयें घणो शोध कराव्यो पिण

लागी नहीं, तेवारें पाडवानी माता कुंताजीयें द्वारिकामा जइनें श्रीट ष्ण वासुदेवने कह्यो के हे पुत्र! द्रौपदीने रात्रिय सुता थका कोइ देव, दानव, राक्षस अथवा विद्याधर अपहरी गयो छ, अने सर्व जगा जगायें जोइ पिण मिली नही तेवारें श्रीकृष्णजी काइक हास्य पूर्वक बोल्या के पाच पाडव एक द्रौपदीने पिण राखवाने समर्थ न थया, हु तो म्हारी बत्रीश हजार स्त्रीयोनी रक्षा करु छु, ते साजली, कुंताजी बोल्या के हे वत्स! आ अवसरमा हास्य करवानु काम नथी तु तुरत द्रौपदीनी खबर करव पछी श्रीकृष्णजीयें पिण घणो शोध करायो परतु कयाय खोज पाम्या नही तेवारें चिंतातुर थइ बेठा, एटलामा नारदऋषि त्या आव्या तेणे आवी कृष्णजीने चिंतामा बेसवानु कारण पूछ्यु त्यारे कृष्णजीयें कह्यो के तुमे कोइ स्थानके द्रौपदीने दीठी? नारदजी बोल्या ते पापणी कोइ साधुनें पिण बोलावती नहती माटे दु खमा पडी हशे, तथापी हुंतो काइ ओलखतो नथी, परतु धातकीखंड मा अमरकका नगरीयें द्रौपदी सरखी एक स्त्री दीठी छे पछी कोण जाणे तेहज होयतो होय एम कही, नारदजी चाल्या गया पछी श्री कृष्णे विचार्यु के आ कृत्य अवश्य कुबुद्धि नारदनुज करेलु छे माटे अमरकका माहेज द्रौपदी हशे एवु जाणी पाडवोनें लेइ सेना सहित श्रीकृष्णजी समुद्र तटें आव्या, समुद्र ओलगवानें अर्थे आठम तप करी लवणाधिप देवताने बोलाव्यो ते पिण प्रगट थइ बोल्यो के कहो शु काम छे हु करवानें तत्पर छु, तेवारें कृष्णजीयें सर्ववृत्तात निवेदन करी कह्यो के अमनें धातकी खडमा जावु छे, माटे अमारी सेनाने स मुद्रमाथी जवानो मार्ग आपो, त्यारें देवता बोल्यो के तुमे शा वास्ते त्या जवानो श्रम करो छो हु पोते जइ द्रौपदी लावीने तुमोने आपीश, वली तुमारो हुकम होय तो अमरकका नगरी सहित पद्मनाभ राजाने समुद्रमा नाखी देउ, तेवारें श्रीकृष्ण बोल्या के हे देव! तुमे एमज श
ळो एवा काइ सशय नथी तथापि अमोने पाच पाडव सहित

छ जण ने जवानो मार्ग आपो तो अमारे त्यां जवानी इच्छा छे ते स
ग्गी सुस्थित देवे ते छ जणाना छ रथ चालवानो मार्ग आप्यो पछी
पांडवो सहित श्रीकृष्ण समुद्र ओळंगीने अमरकंका नगरीना उद्यान
मा जइ दारुक नामा सारथीने दूत बनावीने श्रीकृष्णे पद्मनाभ पासें
मोकल्यो तेणे जइ पगउपर पग आपी त्रिवडी ललाटे चडावी, कह्यो
के हे पद्मनाभ ! श्रीकृष्णवासुदेवें तुमोने कहेवराव्यु छे के, पांडवोनी
स्त्री द्रौपदीने तुमें लेइगया छो ते घणु अयोग्य काम कर्युं छे तथा
पि हजी काइ बिगड्यु नथी माटे तुमे आवी द्रौपदी अमोने आपी जा
ओ, तेवारें पद्मनाभ बोल्यो के हु तुमोने पाछी आपवा सारु द्रौपदी
ने लेइ आ यो नथी, दूतो माहारा बन्धी लाव्यो छु माटे तु ताहारा
स्वामीने जइ कहे के तुमारे युद्ध करवु होय तो सुखें करो, हु पिण क्ष
त्री छु एम कही दूतने निभ्रछीने काहाडी मूक्यो, दूतें आवी श्रीकृ
ष्ण आगल तेणे कहेली सर्व वात निवेदन करी, श्रीकृष्णे जाण्यु के अ
साध्य रोग काइ औषध विना जाय नही माटे युद्ध करवा तैयार थया,
पद्मनाभ पिण सेना लेइ लडवाने साहामो आव्यो, पांडवो बोल्या के
अमे एनी सार्थे युद्ध करीशु कदापि जो हारी जइए तो आ प सहाय क
रजो त्यारें श्रीकृष्णे कह्यु के तुमें महोटा योधा छो पिण तुमारी आवी
वाणी सांभलता थका एवु लागे छे के तुमारे जीतवु कठण थइ पडशे,
तो पिण पांडवो श्रीकृष्णनी आज्ञा लेइ युद्ध करवानें गया, पद्मनाभें
पिण महोटु लशकर लेइने पांडवो सार्थे युद्ध कर्यु, त्यां जयित-पताका
वडाथी पांडवो हारी गया तेवारें नाशता थका सिंहनाद कर्यो ते सा
भली पांडवो हार्या जाणी, एकलाज श्रीकृष्ण रथ उपर बेशीनें पद्म
नाभनी सेनाने मथन करवा लाग्या त्यां धनुष्यना टंकारवडेज पद्मना
भनी सर्व सेना नाशी गइ अने पद्मनाभ पोते पिण नाशीनें नगरमा पेसी
गयो नगरना दरवाजा बधकरी मूक्या, तेवारें श्रीकृष्णे नरसिंह रूप
धारण करीनें हाथवडे मारी अमरकंका नगरीनो सर्व कोट नाखी नाख्यो,

सर्वे नगर धुजवा लाग्यु, घणा महेल पडीगया, पद्मनाभ राजा श्रीकृष्ण जीनु एवु पराक्रम देखीने बीहीनो थको द्रौपदीने शरने गयो अने क हेवा लाग्यो के हे सति ! तु महारी रक्षा करच, द्रौपदी बोली हे कगा ल ! में तुजने प्रथमथीज कहेलु हतु जे महारी पछवाडे श्रीकृष्णादिक बलवन्त राजाओ वाहार करनारा छे तो पिण तें मान्यु नही तेनो ठीक पिण हिवे जो तु जीववानी चाहना राखतो होय तो स्त्रीनो वेश पहेरी मुखमा तृण लेइ महारी पछवाडे बेसी रहे एटलु जो महारु कह्यो क रीश तो हु तुजने पगेलगाडी देइश केमके श्रीकृष्ण सत्पुरुष छे तेनी आगल जे नमी जाय तेने मारे नही माटे ताहारे जीवतो रहेवानो ए उपाय छे ते करच, पद्मनाभे पिण तेमज कर्यु, एटलामा श्रीकृ ष्णजी पिण आव्या, त्या जूवे तो पद्मनाभ स्त्रीनु रूप करी द्रौप दीनी पछवाडे बेठो छे, श्रीकृष्णें द्रौपदीनें पूछ्यं के आ कोण बैठो छे, द्रौपदीयें कह्यु पद्मनाभ राजा तुमारा भयथी नाशीनें महारे शरणे आ व्यो छे एम कही द्रौपदियें पद्मनाभने श्रीकृष्णनें पगें लगाड्यो तेवारें श्रीकृष्णे तेना उपर दया आणी जीवतो राख्यो अने पद्मनाभनें कह्यो के अरे तु जाणतो नहतो जे आ द्रौपदीनी पछवाडे महोटा महोटा वा हार करवा वाला छे ? पिण मूर्खोना माथामा जेवार पडे छे तेवारें अ क्कल आवे छे, तो हिवे ताहारु कर्यु कर्म तें भोगव्यु द्रौपदीना मना थकी तु जीवतो रह्यो एवु कही अखड शीलवती एवी द्रौपदीने लेइने पा च पाडव सहित श्रीकृष्णजी पाछा वल्या जयनो शखपूर्यो, एवा वख तमा ते खेत्रमा श्रीमुनिसुव्रत तीर्थंकर पासे त्यानो कपिल वासुदेव धर्मा ए साभले छे, तेणें शखनाद साभल्यो, मनमा शका उपनी जे कोइ बीजो वासुदेव उत्पन्न थयो ! तेथी भगवनने पूछ्यु के महाराज ! ए बी जो वासुदेव कोण थयो छे केणे महारो शख वजाव्यो ? भगवत बोल्या के हे कपिल ! एक खेत्रमा बे तीर्थंकर अने बे वासुदेव न थाय पिण जंबुद्वीप सबधि भरत क्षेत्रनो श्रीकृष्णनामें वासुदेव ताहारा स्र

खी ऋद्धिनो धणी छे, ते पद्मनाभ राजा द्रौपदी हरण करी लाव्यो हतो, तेने लेवाने आव्यो हतो, ते पद्मनाभने जातीने पाछो जाय छे, तेणें शखनाद कर्यो, ते सांभली तीर्थंकरनी आज्ञा लेइने कपिल वासुदेव तुरत तिहांथी उठीने पोताना मरखो वासुदेव जोवा सारु समुद्रने कांठे आव्यो, पिण श्रीकृष्णनो दूर नीकली गया मात्र समुद्रमा नीली, पीली रथनी ध्वजाओ देखीने, शखनो शब्द कर्यो, तेमा एवु जणाव्यु के हे मित्र! आप उभा रहो हु तुमोने मिलवा सारु आव्यो छु माटे एकवार पाछा आहीं आवो, तुमारा दर्शननी मने अभिलाषा छे, एवो शखनो शब्द सांभली श्रीकृष्णे पिण पाछो शखनो शब्द करयो तेमा आवीरीतें कहेता हुवा के हे मित्र! अमे घणा समुद्रनु उछरन करी गया छैयें माटे पाछा अवाशे नही तुमे अमारा उपर कृपादृष्टि राखजो एवु कहीने चालता थया, पाछळथी कपिल वासुदेवें जइ, पद्मनाभनें कह्यु के आ ताहारी नगरीना गढ मढ कोट केम पडी गया ? पद्मनाभें कह्योके अहींआ जबूद्वीपना भरतक्षेत्रनो वासुदेव महारी राजधानी लेवा आव्यो हतो तेनी सार्थे महोटु युद्ध थयु तेणे गढादिक तोडी नाख्या छे, कपिल वासुदेवें कह्यो के अरे अन्यायी महारी पासें तु जूठ बोले छे एम कही घणो निर्भ्रछीने देशमांथी काढी मूक्यो अने तेना पुत्रने राज्यपाटे थापी कपिल पोतानें स्थानकें गयो, पछी श्रीकृष्ण पाडवो साहित समुद्र उछरन करी पाडवोने कहेवा लाग्यो जे हु लवणाधिप सुस्थित देवने मिलवा जाउ छु एटलामा तुमे नावा लेइ गगानदी उतरीने पछी एक क्षण सार्थे तुरत नाव मोकली देजो पछी पाडव द्रौपदी सहित नाव लेइ गगानदी उतरया अने विचार्यु के जोइयें तो खरा जे कृष्णजी पोतें एकला गगानदी उतरी आवे छे के नथी आवता एम निरधार करीने नाव मोकली नही, त्या श्रीकृष्ण घणो रस्तन जोयया पिण नाव आवी नही, तेवारें मनमा जाण्यु जे पाडवो डुबी गया देखाय छे एवु विचारी चार भुजाओ करीने एक हाथमा सारथी स

हित रथ उपाड्यो, एक हाथमां शस्त्र राख्या, एक हाथमां घोडाने प कड्या अने एक हाथथी गंगा नदी तरवा लाग्या तिहां साडी बासठ योजन गंगा नदी पहोली छे तेनी मध्य भागमां जेवारें आव्या तेवारें श्रीकृष्ण घणा थाकी गया ते वखत गंगादेवीयें सहाय आपीने मध्यमां विकुर्वित गढ कर्युं त्यां केटलोक वखत विश्राम लेइने पछी पोतानी भुजाओथी गंगानदी तरीने तट उपर आव्या तिहां आवीने जुवे ते तो पांडवो नाव सहित बेठा बेठा हसे छे, तेवारें श्रीकृष्ण रीस च ढावीने पांडवोनें पुछवा लाग्या के अरे दुष्टो ! तमें नाव पाछी केम न मोकली ? पांडवो बोल्या, तमारी परीक्षा जोवाने न मोकली, तेवारें श्रीकृष्ण बोल्या के अरे में बे लाख योजन समुद्र ओलंघन करी पद्ममा थकी तमे साथ तेने जीती द्रौपदी आणी आपी, तेवारें मारी शक्ति न दी ठी ? जे हमणां महारुं बल जोवा बेठा ? एम कही क्रोध चडावीनें पांचे पांडवोने मारवा सारु लोहदंड उपाड्यो, पछी दया आवीने जाण्युं जे महोटो अनर्थ थाशे ? एम विचारी पांचपांडवना रथ भागी चूर्ण कर्या अने कह्युं के आजथीरे पापीओ हिवे महारी नजरें आवशो नही अने म हारा देशमां पिण रहेशो नही एम कही पांचे बांधवने देश निकाल क र्या अने जिहां रथ भाग्या, तिहां रथमर्दन कोट थयो, श्रीकृष्ण पोतानी सेना लेइ द्वारकामां गया अने पांडव पिण द्रौपदीने लेइ सेना सहित हस्तिनापुरें आवी कुंताजीने देशनिकालनी वात कही, तेवारें कुं ताजी द्वारकामां आवी श्रीकृष्णने मीठे वचनें समजावी पांडवोनें बोलावी श्रीकृष्णने पगे लगाड्या पछी श्रीकृष्ण आज्ञा आपी के ज्यां में तुमारा रथ भाग्या त्यां तमे पांडवमथुरा नगर वसावीने रहो पछी पांडवो त्यां श्रीकृष्णजीनी सेवा करता थका रह्या छेवट पांडुसेन नामे पोताना पुत्रने राज्य पाटें थापी पांचपांडव अने छठी द्रौपदीयें दीक्षा लीधी, छठ, अ ठमादिक तप करी चौद पूर्व भणी ते पांचेपांडव श्रीशत्रुंजय तीर्थ उपर ते गया, अने द्रौपदी पिण इग्यार अंग भणी मासनी संलेषणा करी

ामा ब्रह्मदेव लोकें गइ तिहांथी च्यवी महाविदेहमें मोक्ष पामशे ए रीतें जंबुद्वीपनो वासुदेव, धातकीखंडमां न जाय ते गयो ए पांचमो अच्छेरू जाणवुं वली केटला एकआचार्य एम कहे छे के बे वासुदेवनुं मिलाप तिहां जेगो न थाय अने इहां शब्देशब्द मिल्यो, माटे ए पिण अच्छेरू जाणवुं ॥ ६ ॥

हिवे छठ्ठु आश्चर्य कहे छे—युगलिया मरण पामीने नरकें न जाय, अने अहीं हरि तथा हरिणी, ए बे युगलिया मरण पामीनें नरकें गया ते ए अच्छेरू थयुं तेनी कथा आम छे के, जंबुद्वीपमाना भरतक्षेत्रने विषे कौशंबी नगरीनो सुमुख नामे राजा हतो एकदा प्रस्तावे वसंत ऋतुयें ते राजा हाथीउपर आरूढ थइ, नगरीनी नजीकना वनमां रमवानें अर्थे जतो हतो मार्गें जतां वीरक नामे कोलीनी वनमाला नामे भार्या अत्यंत स्वरूपवती छे ते पोताना धणीने घणी वल्लभ छे तेने देखीने मांहो मांहे सराग दृष्टीयें जोतां प्रीतिभाव उत्पन्न थयो तेथी राजा त्यां थकी आगल जाय नहीं तेवारें सुमति नामा प्रधान कहेवा लाग्यो के हे स्वामि! समस्त लोकन आव्या छता तुमें आगल केम चालता नथी? ते सांभली राजा पोताना प्रधाननी लाज आणी आगल वनमां गयो पिण शून्यचित्त थको मनमांहे केवल ते स्त्रीनुं चिंतवन छे तेथी क्यारें पिण चेन पामतो नथी. ते जोइने प्रधानें पूछयुं के हे महाराज! तुमें आज आवा शून्यचित्त केम देखाओ छो? एम फिरी फिरी घणो आग्रह करी पूछ्या थकी पोताना मननी सर्व वात राजायें प्रधानने कही ते सांभली प्रधान बोल्यो के तुमें काइ चिंता करशो नही, हुं तुमनें ए स्त्री मिलावी आपीश. पछी घरे आवी प्रधानें आत्रेयिका नामे परिव्राजिकाने बोलावी, सर्व वात समजावी वनमालानी पासें मोकली, तें तिहां त्यां जइ जूए छे तो वनमाला पिण विरहविव्हल थकी मुखें निःश्वास नाखती क्षणेक बेसे, क्षणेक उठे, क्षणेक पडे ए रीतें महाविरहिणी देखी तेने ते परिव्राजिका कहेवा लागी के हे वत्से! तुं आज एम दुःखिनी केम देखाय छे? ताहारु

दु ख मने कहे तो हु ते दु ख थी तने पार उतारु ते साजरी वामागर्ये गु ह्यनी वात कहीं तेवारें परिव्राजिका कोळी के ह तने राजानी साथें कालें मेळवीश, तु कांइ चिंता करीश नही पछी ते परिव्राजिका हर्षवत थकी त्या गे जइ सर्व वात राजानेने कहीं सवाने जइ राजानें सर्व वृत्तात मजा. ल्या तेवार पछी माजाने परिव्राजिका वनमाळाने राजा पासें तेडी आवी राजायें हर्षवंत थइ अत पुरमा तेने राखी अने तेनी साथें ते पं चविध विषयसुख भोगववा लाग्यो हिवें वीरक कोळी घरे आव्यो, ते वारें तेणें स्त्रीनें दीठी नहीं पछी पाडोशी प्रमुखने पूछतो थको जायाना विरहथी गेलो थयो थको आखा गाममा टे वनमाला हे वनमाला कर तो फिरतो फिरतो एक दिवसें सोमासमा राजाना प्रासाद नीचें आवी उभो रह्यो तेवामा राजा पिण वनमाळानें साथे लेइ गोखमा आवी बेठो, राजाये वीरककोळीने देखीने मनमा विचार्यु जे में पापिष्ठें पारकी स्त्री लेइ लीधी ए अत्यत लोक विरुद्ध अनार्य कार्य कीधु माटे मने धि" कार छे एम मनमा घणोज पोतानी निंदा करवा लाग्यो अने वनमाळायें पिण विचार्यु जे मे पापणीयें स्नेहवत भरतारने त्याग्यो ए महारा विर हथी ग्रथिल थयो माटे महारी शीगति थाशे एम बन्ने जण पश्चा त्ताप करे छे तेवामा अकस्मात् उपरथी विजली पडी तेथी बेऊ जण शुभ ध्याने मरण पामी हरिवर्ष क्षेत्रें युगळिया पणे उपन्यो त्या समस्त मनोवाछित कल्पवृक्ष पूर्ण करे छे अने सुखें रहे छे. पछी वीरक कोळी पिण ते बेहनु मरण जाणी ग्रथिल भाव त्यागी, अज्ञान तपस्या करी सौधर्म देवलोकें किल्बिषिया देवमा गइ उपन्यो त्या अवधिज्ञान जोयु त्यारें जाण्यु के अरे महारा पूर्वभवना वैरी तो यु गळीया थया छ, ते त्याथी मरण पामी ने पछी देवता थशे माटे ए देव ता न थाय एवो उपाय करु एम विचारी ते युगळने त्याथी उपाडीने चपानगरीमा इक्ष्वाकुवशनो चद्रकीर्ति राजा अपुत्रीयो मरण पाम्यो छे त्या नगरना लोक सर्व आपणो कोण राजा थाशे एवी चितामा पड्या

एटजामा ते देवतायें ते युगलीयाने लावीने नगरीना लोकोने सों
। अने कह्यो के हु तुमारे माटे ए राजा लाव्यो छु, एने जेवारे जू
लागशे तेवारे ए कल्पवृक्षना फल खाय छे, तेनी साथें माम मे
ीने खवरावजो तथा आहेडो करता शीखावजो, देवतायें मनमा चि
र्यु जे ए मास भक्षण करशे अने मासना लोलुपी थाशे तेथी मर
पामीने नरके जाशे तो मारु वैर वळशे एम चिंतवी हरि अने
रेणी एवु तेनु नाम आपी देवता पोताने स्थानके गयो, लोकें पिण
ताना कह्या प्रमाणे तेने माम मदिरा खवरावता शीखव्यु तेथी ते मा
ना लोलुपी थया, पछी ते हरिरामाना पुत्रादिक जे थया तेनो त्यांथी
रिवंश कुल कहेवाणो, ते हरिने हरिणी मरण पामी नरकें गया एटी
युगलीया नरकमा जाय नही ते गया माटे ए छठु आश्चर्य जाणवु ॥६॥
हिवे सातमु अच्छेरु कहे छे आ भरतक्षेत्रने विषे विभेळनागा स
विषे एक पूरण नामा शेठ रहेतो हतो ते एक दिवसें पाछली रात्रें
ग्यो थको कुटुंब जागरण करता मनमा विचार उपज्यो के, महा
घरमा घणु धन परिवार छे ते में पूर्वला भवमा कोइ सारी धर्मकर
ी कीधी छे तेना योगथी हु सपदा पाम्यो छु माटे फिरी हमणा पिण
ाइक धर्मकरु तो वळी आगल पामीश, एम चिंतवी, प्रभाते स्वज
ादिकने पूछी, पुत्रने कुटुंबनो भार सोंपी, पोते तापसी दीक्षा लेइने एवो
भिग्रह करयो के जावजीव सुधी महारे छठ छठ एटले बे उपवासे
ारणो करवो अने पारणाने दिवसें चारखुणानु पात्रु लेइने भिक्षा
ावी तेमा पहेला खुणामा जे भिक्षा मिले ते जळचर जीवोने खवरा
ी देवी, बिजा महारे खावी नही तथा बीजा खुणामा जे भिक्षा पडे
पक्षीयोने खवरावी देवी तथा त्रीजा खुणामा जे भिक्षा पडे ते अभ्या
ाने खवरावी देवी तथा चोथा खुणामा जे भिक्षा पडे ते जळमा
ोइने महारे पोते खावी एरीते बार वरसपर्यंत तपस्या करी मर

उपन्यो त्या उपमतात अवधिज्ञाने करी जोयु ना सौधर्मेंद्रना पग पोताना मस्तक उपर दीठा तेथी महाक्रोध उपन्यो तेवारे सर्व सामानिक देवोने बोलावीने कह्यो के हे देवो! आ कोण दुष्ट माठा पगरना धणी जे महारा मस्तकें पग देइने बेठो छ, तेवारें देवो बोल्या हे स्वामी पूर्व जन्मने विषे संपादन करेला पुण्य करी सर्वना करता अतिशय समृद्धि अने पराक्रम छे जेनु एवो आ सौधर्माधिप छ ए अनादिकालनी मर्यादा छे माटे इहा तुमारे कोप न करवो तुमारा सरखा इन्द्र पूर्वे थइ गया तेना उपर पिण एमज पग रहेता आव्या छे माटे इर्षा म करो इत्यादिक देवोये कह्यो तोपिण चमरेंद्र क्रोध जाचो थको बोल्यो के जेनी उपर सौधर्मेंद्र पग राखे एवा पूर्वे थयेला चमरेंद्र ते जूदा अने हु जूदो माटे हुं त्या जइ सौधर्मेंद्रने पग पकडी हेठो नाखु, एवु कही आयुधशालामा आवी, परशु शस्त्र हाथमा लेइने सौधर्मदेवलोके जावा लाग्या तेवारें सर्व देवोये वर्ज्या तोपिण कोइनु मान्यु नही, ते वखत सुसुमारपुरने विषे श्रीमहावीर प्रतिमास्थित रह्या हता तेनु शरण लेइने लाख योजननु रूप विकुर्वी अधाइ फूगी पडे एवो शब्द करतो, पगथी धरती कपावतो, हाथे ताडोता दतो, मेघनी पेरे गर्जारव करतो, वीजलीनी पेरे झबकार करतो, ज्योतिष्चक्रने त्रास पमाडतो, देवताओने जयभ्रात करतो, देवीओ त्रास पामती थकी देवोने गळे वळगवा लागीया एवा प्रकारनो कोलाहल करतो, परिघायुध फेरवतो, गर्वकरी अंध थयो थको सौधर्मेंद्र माहामो जायो त्या पोतानो एक पग सौधर्मावतसक विमाननी पद्मवर वेदिकाने विषे अने बीजो पग सौधर्मसभामा राख्यो तेवारें सर्व सौधर्म देवलोकना देवता जयभ्रात थइने इहा तिहा नाशी गया चमरेंद्र बोल्यो अरे देवो तुमारो इन्द्र क्या छे? काली अमावास्याने जनम्यो मने बतावो तो हमणा फरसुथी मारी नाखुं एवु देवताओने कहीने मुखमाथी अग्निज्वाला काहाडतो थको लाल होठ, कूवा सरखा गाल, खाड सरखा नाकना फोरणा अग्नि सरखा नेत्र, सपडा सरखा कान,

नी मरखा दांत, गलामां सर्प हाथमा वींछु ना बेरखा, क्याकतो ऽ गे नारेगा, क्याकतो नोलीना घोर बावेशी, कालु रूप धारण करेलु जो देखी, देवदेवीयें कोलाहल करचो सांजरीनें इंद्रे अवधिज्ञाने जोयु थार जाण्यु जे एतो चनरीयो अडवो पडो करेलो उडके छे माटे हिवे ने हु शिक्षा आपु एम विचारी, हजार देवताओंथी उपडी शके नही वु अग्निज्वाळा करतो देदीप्यमान वज्र चमरीया उपर मूक्यु ते पोतानी गर आवतो देखीनें चमरेंद्र नय पामता थको माथो नीचो अने पग उ चा करेंदा एवो थको, त्यांथी नाठो तेना कयाएक घरणा पड्या, करा एक पोर्न पडतो थको नासवा माड्यो पिण सजाने चमरेंद्रनी नीच आ वतामा शक्ति घणी होय अने वज्रने उच चडवामा शक्ति घणी होय थी छेटू रही गयु त्यारें चमरेंद्र पोताना लाग योजन वाला विकुर्वेला शरीरनो उपसंहार करी " शरण शरण " एवु बोली, कुंथुआ जेवो सूक्ष्म थइने श्रीमहावीर स्वामीना चरणनी विचमा प्रवेश करतो हवो एवी रीतें वज्रथी डरतो थको श्रीमहावीर स्वामीने शरणे बेठो एटलामा शक्रे ऐ जाण्यु जे चमरीयानी एटली शक्ति नथी जे विना शरणे इहा चाल्यो आवे माटे निश्चेथी ए श्रीअरिहंतनु अथवा अरिहंतनी प्रतिमानु अथवा भावित अणगारनु शरण लेइने इहा आव्यो हशे ? तो रखे अशातना थाय नही ? एवु विचारी अवधिज्ञाननो उपयोग आपी जोयु तो श्रीम हावीरस्वामीनु शरण लेइ आव्यो हतो एवु जाणी तत्काळ वज्रनी पाछळ शक्रेंद्र पिण चाल्यो ते श्रीमहावीरस्वामीथी चार अंगुळ अंतर थयेथी वज्रने पाछु खेंची लीधु कारण के महावीरस्वामीथी चार अंगुल छेटे वज्र परिभ्रमण करतो हतो पिण तीर्थंकरनी आशातना टालवा माटे तीर्थ करनी पासें वज्र जाय नही ए रीते चमरेंद्रने श्रीमहावीरस्वामीने शरणे आव्यो जाणी छोडी दीधो अने भगवानने कह्यो हे प्रभु ! मुझने आ रा खमजो एवु कही ईशानदिशें दूर जइने पगथी जमी कूटीने बोल्या अरे चमर हिवे श्रीवीरभगवाननी कृपायें तु महारो उपद्रव

पछी जगवानने वादी तेमनी आज्ञा लेइ शक्रेंद्र पोतानें स्थानक गयो चमरेंद्र पिण नाना प्रकारें जगवाननी स्तुति करी, वादीनें पोतानी चमरचंचा राजधानीयें गयो, त्यां पोताना सिंहासन उपर उदास थइ बेठो त्यारें सामानिक देवे आवी वधाव्यो अने कह्यो के शोक का करो छो तेवारें चमरेंद्रें पोतानी वीतक वात सर्व कही अने कह्युं के हे देवाणुप्रिया ! ए सर्व श्रीवीरजगवाननो उपगार छे माटे वांदवाने चालो एम कही सर्व देव देवीयोने लेइ महोटी ऋद्धि सहित आवीने श्री महावीरने वांदी नाटक करी पोताने स्थानके गयो एरीतें पाताळवासी चमरेंद्र उंचो सौधर्मदेवलोकें जाय नही ते आ अवसर्पिणी कालें गयो माटे ए सातमु चमरोत्पात नामे आश्चर्य जाणवु ॥ ७ ॥

हिवे आठमु अच्छेरु कहे छे अष्टापद पर्वत उपर उत्कृष्ट पांचशे धनुष्य अवगाहना वाला एक श्रीऋषभदेव पोतें अने जरत विना नव्याणु जगवानना पुत्र, तथा आठ जरतना पुत्र मिली एकसो ने आठ पुरुष एक समयमा सिद्धि पाम्या, ते मध्य अवगाहना वाला सीझे पिण उत्कृष्ट अवगाहना वाला एक समयें एकसोने आठ न सीझे, मात्र बे ज सीझे अने इहां एकसो आठ सिद्धा माटे ए आठमु आश्चर्य जाणवु ॥८॥

हिवे नवमु अच्छेरु कहे छे, श्रीमहावीर देव कोशांबी नगरीयें समोसर्या, त्यां चंद्रमा अने सूर्य जेना शाश्वता विमान, ज्योतिषचक्रमा छे ते तेज विमानमा बेसीने पश्चिम पोरसियें श्रीमहावीरने वांदवा सारु आव्या, अहिंआ कोइएक एवु कहे छे के उत्तर वैक्रिय विमानमा बेशीने आव्या, परतु तेम न जाणवु ए मूलगे विमानें बेशीनेज वांदवा आव्या छे ते, मूलगे विमानें कोइवारें न आवे अने हमणा आव्या माटे ए नवमु अच्छेरु जाणवु ॥ ९ ॥

हिवे दशमु असंजमी, आरंजी, परिग्रहवंत, अब्रह्मचारी गृहस्थना वेषे रहेला, तेनी पूजा, सत्कार ते असयतीपूजा नामें दशमु अच्छेरु छे, ते आवी रीतें के श्री सुविधिनाथना निर्वाण पछी केटलोक काल

व्यतिक्रम्यानंतर हुंडावसर्पिणीना दोषने लीधे मानुषोना विच्छेद थयो, सर्व साधुकाल करी गया कोइसाधु रह्यो नही, तेवारें लोक बोल्या हिवे कोने पूजीयें तेवारें ऋषभदेवजीनी वारें श्रावक ब्राह्मण कहेवाता तेनो दाखलो लेइ जे स्थविर श्रावक हता, तेनी पासे जइ लोको धर्म पूछवा लाग्या ते पिण जेवु जाणता हता, तवु तओने कहेवा लाग्या, लोक पिण तेमने धन वस्त्रादिक देवा लाग्या, ताा तेओ गर्वित थया थका पोताना मन कल्पित नवीन शास्त्र बनावी कहेवा लाग्या के जे कोइ पृथ्वी शय्या, मंदिर, सुवर्ण, रूपु, लोह, कपास गाय, कन्या, अश्व अने गज, अमने आपे, ते आ लोके तथा परलोके महा फल पामे अने अमेज सुपात्र छइयें एवो उपदेश सांभली लोके तेमने गुरु करी मान्या एवी असयतीनी पूजा चाली एम केटलाएक काले तो वली साधुनो धर्मज विच्छेद गयो अने जैन विना पाखंडी सन्यासी प्रमुख अन्य दर्शनीज पूजाववा लाग्या, प्रथम सदा सर्वदा सजमीनी पूजा थती नही तेथी विपरीतपणायें करीने श्रीशीतलनाथजिनना तिर्थ बे मता सुधि आश्चर्य चाल्यु, इहां जे साधु न होय अने साधुपणे पूजाय ते आश्चर्य जाणवु तेमज श्रीतीर्थंकरोनु तीर्थविच्छेद न थाय ते विच्छेद थयो ते पिण आश्चर्य जाणवु ए दशमु अच्छेरु छे ए रीतें ए दश आश्चर्य आ चोवीशीमा थया वली अनते कालें थशे ॥ १० ॥

हिवे दश अच्छेरा कया कया तीर्थंकरनी वारें थया ? ते कहे छे

श्री ऋषभदेवना वारामा एकशो ने आठ सिद्ध थया ॥ १ ॥

श्री शीतलनाथना वारामा हरिवंश कुलनी उत्पत्ति थइ ॥ २ ॥

श्री मल्लीनाथना वखतमा स्त्री तीर्थंकर थइ ॥ ३ ॥

श्री नेमिनाथना वखतमा अमरकंका नगरीयें श्रीकृष्णनु गमन थयु ॥४॥

अने श्री सुविधिनाथना वारामा असंजती ब्राह्मणोनी पूजा थइ ॥ ५ ॥

ए असजतीनी पूजा तो श्री आदिनाथना वखतमा पिण मरीची कपिलादिकनी सांभलियें छैयें एम पण करीने बीजा तीर्थंकरोना वारा

क्ही भगवानने वादी तेमनी आज्ञा लेइ शक्रेंद्र पोतानें स्थानकें गयो चमरेंद्र पिण नाना प्रकारें भगवाननी स्तुति करी, वादीनें पोतानी चमरचंचा राजधानीयें गयो, त्यां पोताना सिंहासन उपर उदास थइ बेठो त्यारें सामानिक देवे आवी नवाव्यो अने कह्यो के शोच का करो छो तेंवारें चमरेंद्रें पोतानी वीतक वात सर्व कही अने कह्युं के हे देवाणुप्रिया ! ए सर्व श्रीवीरभगवाननो उपकार छे माटे वांदवाने चालो एम कही सर्व देव देवीयोने लेइ महोटी ऋद्धि सहित आवीने श्री महावीरने वांदी नाटक करी पोताने स्थानके गयो एरीतें पातालवासी चमरेंद्र उंचो सौधर्मदेवलोके जाय नही ते आ अवसर्पिणी कालें गयो माटे ए सातमुं चमरोत्पात नामे आश्चर्य जाणवुं ॥ ७ ॥

हिवे आठमुं अच्छेरुं कहे छे अष्टापद पर्वत उपर उत्कृष्ट पांचशे धनुष्य अवगाहना वाला एक श्रीऋषभदेव पोतें अने भरत विना नव्याणुं भगवंतना पुत्र, तथा आठ भरतना पुत्र मिली एकसो ने आठ पुरुष एक समयमा सिद्धि पाम्या, ते मध्य अवगाहना वाला सीझे पिण उत्कृष्ट अवगाहना वाला एक समयें एकसोने आठ न सीझे, मात्र बे ज सीझे अने इहां एकसो आठ सिद्धा माटे ए आठमुं आश्चर्य जाणवुं ॥८॥

हिवे नवमुं अच्छेरुं कहे छे, श्रीमहावीर देव कोशांबी नगरीयें समोसरया, त्यां चंद्रमा अने सूर्य जेना शाश्वता विमान, ज्योतिषचक्रमां छे ते तेज विमानमां बेसीने पश्चिम पोरसियें श्रीमहावीरने वांदवा सारु आव्या, अहिंआ कोइएक एवुं कहे छे के उत्तर वैक्रिय विमानमां बेशीने आव्या, परंतु तेम न जाणवुं ए मूलगे विमानें बेशीनेज वांदवा आव्या छे ते, मूलगें विमानें कोइवारें न आवे अने हमणां आव्या माटे ए नवमुं अच्छेरुं जाणवुं ॥ ९ ॥

हिवे दशमुं असंजमी, आरंभी, परिग्रहवंत, अब्रह्मचारी गृहस्थना वेषें रहेला, तेनी पूजा, सत्कार ते असंयतीपूजा नामें दशमुं अच्छेरुं छे, ते आवी रीतें के श्री सुविधिनाथना निर्वाण पछी केटलोक काल

त्यतिक्रम्यानतर हुंडावसर्पिणीना दोषने गीवे साधुपणो विच्छेद थ
यो, सर्व साधुकाल करी गया कोइसाधु रह्यो नही, तेवारे लोक बो
ह्या हिवे कोने पूजीयें तेवारे ऋषभदेवजीनी वारें श्रावक ब्राह्मण क
हेवाना तेनो दाखलो लेइ जे स्थविर श्रावक हता, तेनी पासे जइ लो
को धर्म पूछवा लाग्या ते पिण जेवु जाणता हता, तेवु तम्रोने कहेवा
लाग्या लोक पिण तेमने धन वस्त्रादिक देवा लाग्या, ताही तेत्रो गर्वित
थया थका पोताना मन कल्पित नवीन शास्त्र रचावी कहेवा लाग्या के
जे कोइ पृथ्वी शय्या, मंदिर, सुवर्ण, रूपु, लोह, कपास गाय, क
न्या, अश्व अने गज, अमने आपे, ते आ लोकें तथा परलोकें महा फल
पामे अने अमेज सुपात्र छइयें एवो उपदेश सांभली लोके तेमने गुरु
करी मान्या एवी असयतीनी पूजा चाली एम केटलाएक काले तो
पछी साधुनो धर्मज विच्छेद गयो अने जैन विना पाखंडी सन्यासी प्रमु
ख अन्य दर्शनीज पूजावा लाग्या, प्रथम सदा सर्वदा सजमीनी पूजा
थती नही तेथी विपरीतपणायें करीने श्रीशीतलनाथजिनना तिर्थ बे
सता सुधि आश्चर्य चाल्यु इहा जे साधु न होय अने साधुपणे पूजाय
ते आश्चर्य जाणवु तेमज श्रीतीर्थंकरोनुं तीर्थविच्छेद न थाय ते विच्छेद
थयो ते पिण आश्चर्य जाणवु ए दशमु अच्छेरु छे ए रीतें ए दश
आश्चर्य आ चोवीशीमा थया वली अनते कालें थशे ॥ १० ॥

हिवे दश अच्छेरा कया कया तीर्थंकरनी वारें थया ? ते कहे छे

श्री ऋषभदेवना वारामा-एकशो ने आठ सिद्ध थया ॥ १ ॥

श्री शीतलनाथना वारामा हरिवंश कुलनी उत्पत्ति थइ ॥ २ ॥

श्री मल्लीनाथना वखतमा स्त्री तीर्थंकर थइ ॥ ३ ॥

श्री नेमिनाथना वखतमा अमरकंका नगरीयें श्रीकृष्णनु गमन थयु ॥४॥

अने श्री सुविधिनाथना वारामा असजती ब्राह्मणोनी पूजा थइ ॥ ५ ॥

* असजतीनी पूजा तो श्री आदिनाथना वखतमा पिण मरीची क
पिलादिकनी सांभलियें छैयें, एम घणु करीने बीजा तीर्थंकरोना वारा

र्वेला जवमा त्रिशलाराणीनो जीव देवाणी हतो अने देवानंदानो जीव ठाणी हतो अने एक नरमा रहेती हती, परंतु कषाय मटा बळवान जो जीव रुडुं करवानी चाहना करे तो कषाय माठ करी आवे हिवे लोभना वशथी जेठाणीयें देराणीनी रत्नकरंडीयो चोरी लीधो राणीयें सजाल्यो पिण लाधो नहीं तेवारें ते जणीयोने घरनी माहीं रें घणा धणी बोठाना ी थइ तोपिण जेठाणीयें करणीये आप्यो न ो तेना पत्नावथी कर्म बाधु ते कर्म देवानंदाने उदय आव्यो, त्रिश ानी देरादार हती तेथी इद्रने पिण एवोज विचार स्वाभाविक पणे नवीनयो जे त्रिशलाराणीनेंज पुत्र रत्न देवरावुं तेमाटे हे भव्य प्रा णीयो तुमे जूओ के जे जवि जेवुं शुभाशुभ करशे ते जीवने तेवु शु ाशुभ मिलशे ए उत्तर कहेवुं इहा कदापि कोइ अन्यदर्शनी पूछे के ए भगवानने गर्भमा जे आवी पाछो कर्यो ते तुमे दीठो तो नथी वारें अमे केम मान्य करीयें ? एवो प्रश्न करे तेने कहेवु के तुमारा तमा पिण भागवतना दशमस्कंधना बीजा अध्ययने बलदेवनु परावर्त्त यु छे वळी पुराणने विषे पिण पुरुषोने गर्भ उत्पन्न थया छे ते दे तायें कह्या छे ए उपर माधाता राजानी-कथा कहे छे—विशाळा गरीयें वनराजा महाधनवान छे परतु ते अपुत्रीयो छे माटे पुत्र थवा ारुं सोलाशे स्त्री परण्यो तो पिण तेने पुत्र थयो नही तेथी ते रा ना घणो चिंतातुर थयो जेमाटे शास्त्रमा कह्यो छे के " अपुत्रस्यगति ास्ति, स्वर्गोनैवचनैवच ॥ तस्मात्पुत्रमुखंदृष्ट्वा, स्वर्गंगच्छतिमानवा ॥ १॥

अपुत्रियाने गति न होय ते अवगतियो थाय तेवारें ते राजायें कोइ कना उपदेशथी अठ्यासी हजार तापस ऋषियोने नोतरीने भोजन करा यु नेनीयाक्रोड देवता आराध्या, तथापि काइमा पुत्र आपवानी श क्ति न दीठी तेवारें अठ्यासी हजार ऋषियोने पूछयु जे स्वामी तु, पेटन जरी जाणो छो पिण महारु काम करता नथी एवु राजनु ोलवु सानळी एक तापस बोल्यो े हे राजन् ! ताहारे पुत्र थाय

एवो उपाय हु जाणु छु, हु तुजने सोनाना कचोलामां पाणी मंत्रीनें आपु ते पाणी ताहारी स्त्रीनें पीवरावजे तेथी ताहारे पुत्र थाशे पछी राजा पाणी मंत्रावीने कचोलो भरी भरे लेइ आव्यो एटलामा तो स र्व राणीयोये पुत्र सबवी वात सांभलीने प्रत्येक जुदीजुदी राणी राजा ने कहेवा लागीके पाणी अमने आपो एम माहोमाहे क्लेश थवा ला ग्यो, राजाये विचारयु जे हिवे हु कोने पाणी आपु अने कोने न आ पु! एम चिंतवी कोइनें पाणी आप्यु नही पछी ते कचोलु लेइ वस्त्रे ढांकी पणीयारा उपर राखीने राजा पोताने आवासे आवी सूइ रह्यो एटलामा रात्रीये राजाने तृपा लागी त्यारे पाणी मगाववा सारु पासे कोइ माणस हतो नही पिण एक दासी तेनी शय्या पासे सुती हती तेने कह्यो के अरे दासी तृपा लागी छे माटे पाणी लेइ आ व ते दासीय जइ मंत्रेलु कचोलु पाणीनु भरेलु हतु ते आणी आप्यु राजार्ये पिण अजाणता पीधु ते पाणीना सत्त्वथी राजायें गर्भ धारण कर्यो दिवसें दिवसें पेट वधतु गयु तेथी राजा लज्जायमान थयो थको सभामा पिण आवे न ही, सवाने विचारयु जे ए घणु खोटु काम थयु पछी राजाने कही पाछा अठ्यासी हजार ऋपिआंने नोतरया अने ओल भो दीधो जे तुमे आ शु करयु? हिवे करार करो पछी ऋपिआयें तेत्रीश कोटी देवतानु आराधन कर्यु तेवारें इंद्रे आवी पोताना सेवकोने हाथें राजानु उदर विदारीनें माहेथी गर्भ काल्यो तेवारें सर्व बोलया जे ए धावी शकशे नही पछी इंद्रे स्त्रीनु रूप करी धवराव्यो क्रमेंक्रमें वध वा लाग्यो तेनु मांधाता एवु नाम दीधु इत्यादि अनेक वार्ता छे माटे गर्भ पिण परावर्त्तन थाय छे ए वात निःसंदेह छे इति मांधाता दृष्टांत संपूर्ण॥

हिवे इंद्रे हुकुम करया पछी हरणीगमेषी देवता पालाकडकनो मालं क ते खुशी थइ हाथ जोडीनें मस्तकें अंजली करीने आज्ञानें विनय सहित प्रमाण करी इंद्रमहाराजनी पासेथी निकलीने ते हरणीगमेषी उ त्तर पूर्वनी दिशामांनी इशाणखूणमा आवीनें वैक्रियसमुद्घात करे ते केवी रीं

तें तोर्के पोताना जीवना प्रदेश शरीरमायी बाहेर काहाडीने समुद्घात करे संख्याता योजननो उचो दड करे, जीव प्रदेश कर्मपुद्गलनो समूह दड रूप करीने प्रगट करे ते दड रत्नमय करे ते रत्न केवी जातिग्रोना होय ते कहे छे १ ककतनरत्न, २ वैडुर्यनीउरत्न, ३ वज्ररत्न, ४ लोहिताक्ष रत्न, ५ मसारगल्लरत्न, ६ हसगर्भरत्न, ७ पुलकरत्न, ८ सौगंधिकरत्न, ९ ज्योति साररत्न, १० अजनरत्न, ११ अजनपुलकरत्न, १२ जातरूपरत्न, १३ शुजगरत्न, १४ अकरत्न, १५ स्फाटिकारत्न, १६ अरिष्टरत्न, ए शोलि जातिना रत्न तेना असार पुद्गलने छाडीने सार पुद्गल ग्रहण करे ॥२७॥ करीने उत्तर वैक्रिय धारण करे, मूलरूप तिहाँकिज राखे नवु रूप करीने, मनुष्यलोकमा आवे, केवी गतिथी मनुष्यलोकमा आवे ते कहे छे एक चडा, बीजी चपला, त्रीजी जयणा अने चोथी वेगा ए चार गतियें करीने चालतां तो केटलीएक काल वीती जाय तो पिण मनुष्य लोकमा आवी शके नही [१] ते चार गतिनु प्रमाण कहे छे २८३५८० एटले बे लाख त्रियाशी हजार पाचशेनें ऐशी योजन अने एक योजन ना साठ भाग करीयें तेवा छ भाग उपर एटला क्षेत्रनु एक डगलु भर तो चाले ते प्रथम चडा गतिनु प्रमाण जाणवु तथा ४७२६३३ एटले ४ लाख बोहत्तर हजार छशेने तेत्रीश योजन अने त्रीश कला उपर एटला क्षेत्रनु एक डगलु भरता चाले ते बीजी चपला गतिनु मान जाणवु तथा ६६१६८६ एटले ६ लाख एकसठ हजार छशे छयाशी योजन अने चोपन कला उपर एटला क्षेत्रनु एक डगलु भरतो चाले ते त्रीजी जयणा गतिनु मान जाणवु तथा ८५०७४० एटले आठ लाख पचास हजार सातसो चालीश योजन अने अढार कला उपर एटला क्षेत्रनु एक डगलु भरतो चाले ते चोथी वेगागतिनु मान जाणवुं ए चार गतिना प्रमाण कह्या हिवे ए गतियों ना प्रमाणथी जो देवता चाले तो छ महीना सुधीमा पिण आ मनुष्य क्षेत्रमा आवी शके नही तेमाटे दिव्य देवगतियें करी असख्याता द्वी

१.

समुद्र उछरन करतो थको जिहां जबुद्वीपनु भरतक्षेत्र तिहां ब्राह्म णकुड गाम नगर तेमा ऋषभदत्त ब्राह्मणनो घर तेमा जिहां देवानंदा ब्राह्मणी सुती छे तिहां आव्यो, आवीने भगवानने देखी प्रणाम करीने, देवानंदा ब्राह्मणीना सर्व परिवारने अवस्वापिनी निद्रा देइने शुभ पुद्गल (घालीने) प्रक्षेप करीने कहेतो हवो के हे भगवन् आज्ञा आपो एवु कहीने, भगवानने पीडा रहित देवप्रभावे करीने हाथमा ग्रहण करी करसपुटमा लेइने, जिहां क्षत्रियकुड नगर त्या सिद्धार्थ क्षत्रिय राजाना घरमा जिहां त्रिशला क्षत्रियाणी छे तिहां आवीने तेना सर्व परिवारने अवस्वापिनी निद्रा आपीने अशुभ पुद्गल बाहेर काहाडीने शुभ पुद्गल प्रक्षेपीने भगवानने पीडा रहित त्रिशला राणीनी कुखमा मूक्या दशमा द्वारथी देवे प्रवेश कर्यो अने नाभिथी पाछो नीकल्यो एवु वृद्ध वाक्य छे पछी त्रिशलाना गर्भना पुत्री हती तेने त्याथी लेइने देवानंदानी कुखमा गर्भपणे मूकीने जे दिशाथी देवता आव्यो हतो ते दिशाये पाछा चाल्यो गयो ॥ २८ ॥

तिहां चडा चपलादिक चारगतिथी अधिक दिव्य देवगतियें करीने तीर्च्छा असख्याता द्वीप समुद्रमाथी थइने लाखयोजनना प्रमाणवाला शरीर सरखा पग मूकतो थको उंचो जिहां सौधर्म देवलोकमा सौधर्मावतंसक नामे विमान छे तथा शक्रसिंहासन छे अने जिहां शक्रेंद्रनामे देवताओनो राजा छे तिहां आव्यो आवीने शक्रेंद्रने पाछी आज्ञा सोंपी अर्थात् एम कह्योके तुमे कह्यु ते सर्व काम करी आव्यो छु ॥२९॥

ते कालने विषे ते समयने विषे, श्रमणभगवत श्रीमहावीरस्वामीने वर्षा कालनो त्रीजो महीनो पाचमु पखवाडियु आसो वदि तेरशने दिवसे ब्यायशीमी रात वीतीगइ अने त्र्यायशीमी रातना वर्त्तमानमा पोताना हितने लीधे अथवा भगवाननी अनुकपाने लीधे इंद्रे मोकलेला हरणीगमेषी देवता तेणे ब्राह्मणकुडगाम नगरमा ऋषभदत्तब्राह्मणनी भार्या देवानंदा ब्राह्मणी छे तेनी कुखमाथी लेइने जिहां क्षत्रियकुड गामनगरे

सिद्धार्थक्षत्रिय राजानी त्रिशला क्षत्रियाणी राणी छे तेनी कूखे मध्य रात्रिने विषे उत्तराफाल्गुनी नक्षत्रमा चद्रमानो योग आव्या थका पी डा रहित मूक्या ॥ ३० ॥

ते कालने विषे ते समयने विषे जगवान त्रणज्ञान सहित आवी उ पन्या तिहा मुजने इहाथी सहरण करशे एवु जाणे तिम सहरणनी, वेला सूक्ष्म छे माटे ते जाणे नही अने सहरण करचा पछी जाणे जे मो सहरण करयु एवु जाणे जे रात्रिमा श्रमणजगवत श्रीमहावीर स्वामीने देवानदानी कूखथी लेइने त्रिशला क्षत्रियाणीनी कूखमा गर्भप णे मूक्या ते रात्रिये देवानदा ब्राह्मणी पोतानी सुकोमल शय्यामा सू ति काइक जागतीने सुपनु आव्यु के महारा जे महामगलकारी चौद स्वप्न हता ते त्रिशलाक्षत्रियाणीये खेंची लीधा एटले हरणकरचा एवु सुपनु देखीने जागी ॥ ३१ ॥

जे रात्रिमा श्रमणजगवत श्रीमहावीरस्वामीने देवानदानी कूखमाथी लेइने त्रिशलाक्षत्रियाणी वासिष्ठ गोत्रवाली तेनी कूखमा मूक्या ते रा त्रिमा त्रिशला क्षत्रियाणी शय्यामा सूती हती ते शय्यानु स्वरूप एवी रीतें कह्यो छे तिहा प्रथमतो जेनु स्वरूप कहेवामा आवे नही एवु तो वसवानु घर छे ते घर कहेछु छे तोके ते घरनी मध्य एटले जींतनी माहेली बाजु चित्रे चित्रित छे अने जींतनी बाहेरनी बाजुने घसीने धो ली चलकदार करी छे एवु ते घर छे जिहा उपरनो जाग चित्राम सहित छे अने जमीननो जाग तो जेवो मणिरत्नोनो उद्योत होय ते वो छे तेथी ते घरमा सर्व अधकारनो नाश थइगयो छे, अने नित्य उ द्योत रहे छे वली जेने विषे जमीन उपर अनेक माडणा माड्या छे एवु आगणु छे वली आगणे सरस सुगधि पाच वर्णना फूलना पुज मूकेला छे ते फूलोनी रचना सहित छे तथा कृष्णागर जलो कुदरु शिलारस तेनो धूप तेणे धमधमायमान छे तेणे करी मनोहर छे सुगध प्रधान चूर्णनो गध छे जिहा, गधवटी समान छे तिहा पुण्यवतने योग्य जेहु

गर्भन करवामा न आवे एवी शय्या छे तेने विषे शरीर प्रमाणे बे पासे ओशींमा तकीया राख्या छे, बे पासे गालमसुरीया मूकेला छे, बे पासे उंची छे, मध्यमा उंडी छे, जेम गंगानदीनी रेतिमा पग मूकीयें ते नीचो जाय तेम जेमा पग मूकता नीचो जाय ते समान नीखारवा अलसीना पटकूल वस्त्रे ते खाट ढाकी छे, वली मच्छरदानीयें रचित, रजत्राणना वस्त्र लाल रमणीक सुकोमल वस्त्रे ढाकी छे, आकडाना फल माहेलो रुपास तथा माखण ते सरखो ते शय्यानो स्पर्श छे, वलु सुग - धित चूर्ण तथा फूलो जेने विषे बिछाव्या छे, एवी शय्या ते शय्याने विषे मध्यरात्रिना अवसरमा त्रिशला क्षत्रियाणी अल्प निद्रामा सुती छे, ते वेलायें गजवृषभादिक चौद सुपना देखीने जागी ॥ ३२ ॥

तेवारें ते त्रिशला क्षत्रियाणी ते चौद स्वप्नमाथी पहेले स्वपनें हाथी देखे ते हाथी केहेवो छे तो के ? चार दांत वालो छे, घणो उचो छे, जेवा मेघना छांटा धोला थाय तेवो धोलो छे, तथा जेवो मोतीनो हार, क्षीरसमुद्रनु पाणी, चन्द्रमाना किरणो, पाणीना कणीया, अने रुपानो पर्वत एना सरखो धोलो छे, वली ते हाथीना कुंभस्थलमाथी मद झरे छे तेथी तेना ललाट पासे भमरा गुंजारव करी रह्या छे, इन्द्रना ऐरावत सरखो महोटो देखाय छे, ते हाथी मेघनी पेरे गंभीर शब्द गाजतो थको छे, शुभ उत्तम सर्व लक्षणे करी सहित, महोटा पेट वालो एवो हाथी पहेले स्वप्ने त्रिशला क्षत्रियाणीयें दीठो ॥ १ ॥

तेवार पछी बीजे स्वप्ने त्रिशला क्षत्रियाणी वृषभ देखे ते वृषभ केहेवो छे तोके ? धोला कमलना समूह सरखो श्वेत छे तथा पोताना शरीरनी कांतियें करी सर्वदिशाओमा उद्योत करतो थको छे, तथा घणी शोभाना समूहे करी शोभित एवी खांधनी धूणी छे जेनी एवो छे, वली तेना शरीरना पातला केश छे ते केश जाणे हलें चोपड्या होय नहि ? एवा छे, घणो रुडो स्थिर शरीर छे वली जिहा जेवु अग जोईय सा तेवु अग छे जेनु एटले जिहा पातलु अग शोभे तिहा पातलु

छे अने ।जेहा जाड अंग शोभे तिहा जाडु अग छे तथा वट्ट गोल शोभायमान मउरहित तैलादिकें चोपड्या तीखा एवा बे शींगडा छे जेना तथा मोती सरखा उजला बरोबर सरखा शोभता दात छे जेना एवो वृषभ ते जाणीये अनेक मगलनुज सुख होय नहि ' तेने बीजा सुपनामा त्रिशला क्षत्रियाणीयें दीठो ॥ २ ॥ ३४ ॥

तेवार पछी त्रीजा स्वपनामा त्रिशला क्षत्रियाणी राणी सिंहने देखे ते सिंह केहेवो छे तोके । मोतीनो हार, खीरसमुद्रनु पाणी, चद्रमाना किरण, पाणीना कणीया, तथा रूपानो पर्वत तेना सरखो धोलु शरीर छे जेनु वली ते सिंह रमणीक देखवा योग्य छे तथा दृढ ठे हाथ प्रमुखना अवयव जेना वली उज्वल गोल अने तीक्षण एवी जेना मुखमा दाढा छे तेणे क री मुख शोभतु छे जेनु, वली कमल सरखा सुकोमल राता एवा जेना होठ छे, राता कमलना पत्रनी परें सुकोमड तालवु छे, जीभ बाहेर का ढाडतो थको लपलपायमान करतो थको शोभे छे, वली पीला अने वी जली सरखा चलकता चचल जेना नेत्र छे. वली विस्तीर्ण पुष्ट अने मा ता एवा साथल छे जेना, स्कद जेनु वट्ट परिपूर्ण निर्मल छे, व ली सु कोमल छे जग विस्तीर्ण एवा जे सिंह केसरा एटले मुखना केश जाणवा तेने आटोपे करी शोभित छे मुख जेनु, वली जमीन उपर पछाडीने फ टकारीने उचु कर्यु छे पुछ जेणे एवा पूछडानो अत एटले छेडो काननी विचमा छे वली सौम्याकारवालो लीला करतो थको आकाशमाथी उतरतो थको त्रिशलाना मुखमा पेसतो थको तीक्षण नखवालो सिंह त्रिशला रा णीयें त्रीजा स्वपनामा दीठो ॥ ३ ॥ ३५ ॥

तेवार पछी चोथा स्वप्नामा त्रिशलाक्षत्रीयाणी सपूर्ण पूर्णिमाना चद्र मा सरखु छे मुख जेनु एवी लक्ष्मी देवताने देखे ते लक्ष्मी किहा रहे छे ते कहे छे उचो हिमाचल पर्वत तेनी ऊपर एक पद्मद्रह छे ते द्रहमा एक कमड छे तिहा रहेवा वाली लक्ष्मी देवता तेनो पगथी लेइने सर्व अगनी शोभानु वर्णन श्रीभद्रबाहुस्वामी करे छे केमके प्रायें देवनानु

रूप वर्णनमा पगोथी वर्णन कराय छे माटे आहीं पिण पगोथी माडी ने वर्णन करे छे, ते लक्ष्मीदेवीना पग ज्ञ्जे प्रकारे करी सोनाना काचबा सरखा जाणे लावने रसे रच्या मास सहित एवा विचमा अति उचा अने पिठवाडे नम्या एवा छे तथा त्राबा सरखा नख छे, कमल सरखी को मल आगूलीया छ तथा पिडिओ केल सरखी गोल छे नीचेनीचे पातली अने उपरउपर जाडी एवी जघापिडियो छे तथा गुडा मासथी जेरेला छे माटे गुप्त छे हाड देखाय नही तथा ऐरावत हाथीना सरखो जघा नो विचलो प्रदेश शोजे छे, सोनानी कटिमेखला छे केडमा जेनी, वली लक्ष्मी देवीनी डूटीथी लेइने स्तन सुधी रोमराजी छे, मार्ये स्त्रीयोना श रीरमा रोमराजी होती नथी तेमा वली देवताने तो सर्वथा नहीन होय तापिण कवीश्वर श्रृगाररस वर्णन करता बोले छे, हिवे ते रोमराजी के हेवी छे तोके कजलनीपरे तथा जमरानी श्रेणीनी परे श्याम छे, मेघघटा सरखी काली छे, सरल मिलेला थका सुकोमल, मनोहार विलास सहित सरस सूका फूल सरखा कोमल छे, वली नाजिमडल जलु छे जेनु, मु ष्टीमा समाइ जाय एवी कटि छे, पेटमा त्रण सल पड्या तेथी शोजाय मान छे, वली सर्वांगोपागमा घरेणा आजूषण पहेरेला छे जेने ते घरे णा केहेवो छे तोके अनेक प्रकारना मणियोये करी जडेला छे, रत्नोये करी सोनामा मड्या छे, वली ऋदयमा बे स्तन छे ते जाणे सोनाना कठ शन होय नही? एवा छे, वली ते स्तन होरे करी तथा कुदमालाये क री व्याप्त छे तथा जला मोतीयोना जालीया तेणे करी विराजमान साने यानी माला वयाएक मणिसूत्रनो दोरो छे तेणेकरी कठ शोजायमान छे, बे कानोमा कुंडल बे शोजे छे, एवा घरेणाना समुदायथी लक्ष्मी देवतानु मुख शोजे छे, जेम राजा कुटुबथी शोजे छे तेम लक्ष्मी देवतानु मुख घ रेणाथी शोजे छे वली निर्मल कमलनी पाखडी सरखा दीर्घ तीखा अने अणीयाला एवा महोटा नेत्र छे जेना, बे हाथमा कमल छे तेमाथी पाणी, पिटकावती थकी छे, वली लीलाने वास्ते ९.

ते जेवारें कमल लोग्राने मारे हर्लाव तेवारें कमउमा ी सुगर निर्ले वरो लक्ष्मी देवीने मस्तके वेणीदड पणे, निर्मेल नरर्या वालो उ लाो केड सुधी शोभे छ एवा छे ए नखथी माडी मायानी वेणीसुध वर्णन करयु एवी लक्ष्मीदेवना पद्मद्रहना कमउमा वमतों हिमाचल नामा पर्वत उपर बेठी थकी दशदिशाी शाजायमान छे वरी हाथी आवी सूम्मा पद्म द्रहथी जल लईने लक्ष्मीदेवीने स्नान करावे एवी लक्ष्मीदेवताने त्रिशला क्षत्रियाणीयें चोथा सुपनामा दीठी ॥ ४ ॥

हिवे हिमाचल पर्वत उपर लक्ष्मीदेवतानो निवास छे निहां ए देवीनो परिवार केटलु छे तथा निवास केवा प्रकारनो छे ते कहे छे आ जरत क्षेत्रना छ खड छे तेना अतमा उत्तर दिशा तरफ एक चूल्हिमवत पर्वत सोनानो उ ते एकसों योजन उचो छे, तथा एक हजार बावन्न योजन अने बारे कला उपर, एटलो पोहोलो छे, तेमध्यें पद्मद्रह छे, ते दश योजन उंचो, हजार योजन लांबो, पांचशें योजन पोहोलो छ मधुरण ज लेररी जरचो शाश्वतो छे, तेनुं तलीय वज्ररत्नमय छ, जोफेरा पिर वज्रमय छे, ते द्रहना मध्यभागे एक कमल छ, ते कमलनु नाल दश योजननु दीर्घ छे, जलथी उपर बे कोश उचु छे, एक योजन पोहोलु छे, एक योजन दीर्घ छे, ताइक जाजेरा त्रण याजननी परिधी छे, दश योजन पाणीमा नाल छे, तेनु वज्र रत्नमय मूल छ, रिष्ट रत्नमय मूल नो कादो छे, इद्रनील रत्नमय नाल छे, राता सुवर्णमय बाहेरना पादडा छे, काइक जाबूनद सुवर्णमय अभ्यतरना पांदडा छे, तेमा सुवर्णमय कर्णिका छे, एटले विचली डोडी छे ते बे कोश पोहोली अने एक कोश उची छे, तिहा राता सोनाना केशरा छे त कर्णिकामा श्री लक्ष्मी देवीनु जवन छे, ते एक कोश लाबु, अर्धो कोश पोहोलु अने चउदशें चालीश धनुष्य उंचु छे, ते घरना बारणा पूर्व, दक्षिण अने उत्तर एवी त्रण दिशायें छे, ते बारणा पाचशें धनुष्य उचा अने अढीशें धनुष्य पो होळा छे, वरी ते घरमा अढीशें धनुष्य प्रमाण एक मणिमय पीठिका

छे ते पीठिका उपर लक्ष्मी देवीनी शय्या छे, हिवे तिहा ए देवीनां मु ख्य कमलनी पाखडियें लक्ष्मी देवीने आजरणादिक मूकवाना वलयाका रें एकशो ने आठ कमलो छे, ते कमलोनु सर्व उच नीचपणु मुख्य कमलथी अर्द्ध प्रमाणे जाणवु ए एकसोने आठ कमले करी ते मूल कम ल वींटेलू छे, जेम गढें करी नगरी विंटायली होय छे, तेम जाणवु, हिवे ते मूलगा कमलना बीजा वलयनी पूर्व दिशायें महर्द्धिक चार देवीओने वसवाना चार कमल छे, तथा वायव्य कोण, उत्तर दिशा, अने ईशानको ण, ए त्रणे दिशायें देवीना सामानिक देवताने वसवाना चार हजार क मल छे, तथा श्री देवीनी अभ्यतर पर्षदाना जे आठ हजार गुरुस्थानी य देवता छे, तेने वसवाना आठ हजार कमल, अग्नि कोणें छे, तथा मध्य पर्षदाना दश हजार मित्र स्थानीय देवताने वसवाना दश हजार कमल, दक्षिण दिशायें छे, तथा श्री देवीना बाह्य पर्षदाना किंकर स्था नीय बार हजार देवताने वसवाना बार हजार कमल, नैऋत कोणें छे अने श्रीदेवीना हाथी, घोडा, रथ, पायक, महिष, नाट्य, गधर्व ए सात कटकना स्वामीने रेहेवाना सात कमल, पश्चिम दिशायें छे हिवे वली लक्ष्मी देवीना अगरक्षक शोल हजार देवताने वसवाना शोले हजार क मल, ते त्रीजा वलयनी चार दिशामाहेली प्रत्येक दिशानें विषे चार चा र हजार कमल करता शोले हजार कमल छे, तथा चोथा वलयने विषे श्री देवीना अभ्यतर आजियोगिक बत्रीश लाख देवताने वसवाना ब त्रीश लाख कमल छे, तथा पाचमा वलयने विषे श्री देवीना मध्यम चा लीश लाख आजियोगिक देवताना चालीश लाख कमल छे, तथा छठा वलयने विषे श्री देवीना अडतालीश लाख बाह्य आजियोगिक देवता ना अडतालीश लाख कमल छे, एव मूल कमल सहित सर्व मिली छ वलयना एक क्रोड, वीश लाख, पच्चाश हजार, एकसो ने वीश कमल जाणवा. ते कमलना मान मुख्य कमलथी माडी अनुक्रमें अर्द्ध अर्द्ध प्रमाण लेवा ए सर्व कमलवासी देवता श्रीदेवीनो परिवार,,

देवो भवनपति माहेली जाणवो ॥ ए चोथु स्वप्न रह्यो ॥ ४ ॥ ३६ ॥

॥ इति बीजो वखाण समाप्त ॥

हिवे त्रीजो वखाण कहे छे ॥ तेवारपछी वली त्रिशलाराणी पांचमां स्वप्नना फूलोनी माला देखे ते मालामा रस सहित कल्पवृक्षना फूल, ते णे करी घणी मनोहर छे, वली चपाना फूल, अशोकनां फूल, पुन्नागना फूल ते नागप्रियगु सरखा ए फुलना झाड थाय छे, मोगरानां फूल, मा लतीना फूल, जाइना फूल, जूइना फूल, कोछज फूल ते कोइ बोले विशेष ना फूल, कोमना फूल कोरटना फूल, दमणाना फूल, नवमालिका ना फूल, बकुलवृक्षना फूल, तिलवृक्षना फूल, वासतिकाना फूल, पद्मक मलना फूल, उत्पल ते पुडरीकना फूल कुंदमचकुंद वृक्षना फूल, आग यियाना फूल, आम्रमाजर एवा प्रकारना फूलोनि बणी सुखध छे जेमा एवी बे फूलोनी माला तेनो मनोहर गधथी खेंचाणा थका आव्या ए वा जे भमरा भमरीयो तेनो गुंजारव शब्द जेने विषे थइ रहेलो छे व ली ए बेऊ मालामा सर्व ऋतुना फूल सुगधा पांच वर्णा छे परतु तेमा धोलो वर्ण विशेष छे ते ज्या ज्या जे जे फूल शोभे त्या त्या ते ते फूल गुथ्यो छे एवी बे माला पाचमा सुपनें त्रिशला राणीयें दीठी ॥ ५ ॥ ३७ ॥

तेवार पछी छठा सुपनामां त्रिशला देवी चद्रमा देखे ते चद्रमा केहे वो छे तोके गायना दूधना फीण सरखो उजलो छे, रूपाना कलश सरखो धोलो छे, वली ऋदय नेत्रने वल्लभ, सपूर्ण पूर्णिमाना अंधकारने हरवा वालो वली शुकलपक्षमा शोभायमान, कुमुदवननो बोध एटले उघाडवा वालो, रात्रिनी शोभाने करवा वालो, भली रीते उजला का चनी पेरें शोभायमान, आकाश रूप तलावनो हस बेऊ पक्षें करी पूर्ण, सर्व ज्योतिषियाना मुखनु मडन, अधकारनो वैरी, कदर्पबाणनो पूरवा वा लो, समुद्रना जलनो वधारवा वालो केमके जेवारें शुक्लपक्षमा चद्रमा ऊ गे तेवारें समुद्रनो वेग वधे, विरहिणी स्त्रीने चद्रना उदयथी अधिक विर ह जागृत थाय तेमाटे विरहियोने किरणोये करी शोषण करवा वालो,

आकाशना तिलक, रोहिणीना हृदयमें वल्लभ केमके चंद्रमा रोहिणीनो भरतार छे एवी लोकोमा केवत छे परतु रोहिणीतो नक्षत्र छे तै बने नही एवो पूर्णिमानो चद्र त्रिशलादेवीयें छठा स्वप्नामा दीठो ॥ ६ ॥ ३८ ॥

तेवार पछी त्रिशलाराणी, सातमें स्वप्ने सूर्यदेखे ते सुर्य केहवो छे तो के ' अंधकारना पडलने फोडवा वालो, वली रातो वर्ण छे ते वर्ण कहे वो छे तोके ' राता अशोक सरखो, केशूडाना फूल सरखो लाल छे, जे वु पोपटनु मुख लाल होय, जेवी आदि चिणोठी लाल होय तेवो सूर्य लाल छे, वली कमलना वननो उगाडवा वालो छे, ते माटेज कमलनी शो भा करवा वालो छे ज्योतिष शास्त्रनो तथा ज्योतिषचक्रना चिन्ह स रखो ओलखाणनो करवा वालो छे, आकाशमा दीवानी परे शोभे छे, हमतो पको हेमना समूहने हाथनी गरदन पकडीने काढाडवा वालो, वली ग्रहोनो राजा छे, रात्रिनो नाश करवा वालो छे, वली उगती वेला ये तथा आथमति वेलायें बे घडी पर्यंत सुखे दीठामा आवे पछी सुखें दीठामा आवे नही, वली रात्रिना विचरवा वाला जे चोर आदिक ते मनु भ्रमण मिटाडवा वालो, वली शीत पडीने मथन करवा वालो मे रुपवनने पासनि निरंतर महोटा मडल सहित चालवा वालो, वली सूर्य ना हजार किरणोये करी सर्व ज्योतिषीयोनी मजा मिटी गइ माटे इहा सूत्रकारो जे सूर्यनी हजार किरणो कहे छे ते जघन्यआश्रित लिखे छे, अ ने लोकमा पिण सहस्र किरण कहेवानी रूढी छे, परतु सूर्यना किरणो मा तो महिने महिने वध घट थाय छे ते आ प्रमाणे जे चैत्रमा बारासें कि रणो, वैशाखमा तेरासें किरणो, ज्येष्ठना चौदासें किरणो, आषाढमा पन्न रासें किरणो श्रावणना चौदासें किरणो, भाद्रवामा चौदासें किरणो, आशोजमा शोलासें किरणो, कार्त्तिकमा इग्यारासें किरणो, मार्गशिरमा एकहजारने पचाश किरणो, पौषमा हजार किरणो, माघमा सत्तासें किरणो, फाल्गुनमा इग्यारसें किरणो, एवो सूर्य [illegible] समान त्रिशलादेवीये सातमे सपने दीठो ॥ ७ ॥ ३९ ॥

तेवार पछी आठमें सुपने, त्रिशलामाता, ध्वजा देखे ते ध्वजा केहेवी छे तो के ! सोनानो जेनो दंड छे ते उपर रहेली छे, पाच वर्णना व स्त्रनी ध्वजा छ वली ते ध्वजानी उपर सुकोमल अनेक रंगना मोरपी च्छ धारया छे ते चोटी सरखा शोजायमान छे तथा घणो श्रीकार छे, तथा ते ध्वजामा सिंहनु रूप लीख्यु छे तेणेकरी वली बहुज शोजे छे ते सिंह केहेवो छे के जेवो शंख उजलो, कुंदवृक्षनु फूल उजलु, ज ळनो कणीयो उजळो तथा रूपानो कलश उजलो होय तेवो श्वेत वर्ण छे, जे सिंहने देखीने लोक एवु समजे के आ सिंह आकाश मंडल जे दवाने उद्यम करे छे के शु ? एवी ते सिंहनी मुखाकृति तथा शरीरा कृति छे, जे ध्वजानु वस्त्र वायरानी लहेरोथी थोडु थोडु चलायमान थइ रह्यो छे, वली घणो उचो लोकोने देखवा योग्य एवो ध्वज आ ठमा सुपनमा त्रिशला देवीयें दीठो ॥ ८ ॥ ४० ॥

तेवार पछी, नवमा सुपनामा, श्रीत्रिशलादेवी, पूरण कलश देखे ते कलश केहेवो छे तो के ? उत्तम दैदीप्यमान छे रूप जेनु निर्मळ ज लथी जरयो थको घणोज सुंदर छे सूर्यमंडल सरखी जाज्वल्यमान शो जा छे जेनी, वली जे कलशनी पासें कमळनी वाडी छे एटले कमलोथी वींटयो थको छे वली ते कलश सर्व मंगलोनो मिलाववा वालो छे, वली ते पूरण कलश, प्रधान रत्नोनु कमळ तेना उपर धर्यु छे, ने जोने आनंद आपवा वालो छे, सर्व दिशामा उद्योत करतो थको सर्व लक्ष्मीनो घर तेनी परें सर्व पाप रहित सर्व शोजा सहित लक्ष्मीनो निवास छे, वली जे कलशने गलामा छ ऋतुना सुगंधि फूलोनी माला छे, एवो पूरणकुंभ जलो रूपमय ते नवमे सुपने त्रिशलाराणीयें दीठो॥९॥४१॥

तेवार पछी, दशमा सुपनामा त्रिशलाक्षत्रियाणी पद्मसरोवर देखे ते पद्म सरोवर केहेवु छे तोके ? जे सरोवरमा ऊगता सूर्यथी उघड्या एवा हजार पाखडीना कमलो छे, ते विकस्वरमान कमलनी वासनायें करीने जेनु पा णी सुगंधमय थय छे, वली ते कमलोनी प्रजाये करीने पाणी लाल पीळ

रग जेवु देखाय छे, वली जे पद्मसरोवर जलमत्स्य कच्छवादिक जल
चर जीवोयें सेव्यु थकु रह्यो छे, वली जे पद्मसरोवरमा कमलपत्र उप
र पड्यों जलनो छाटो तेणे करी जाणे नीला आगणामा मोती जड्या
होय नहि ' एवु देखाय छे वली ते महोटु सरोवर छे तेमा सूर्यविका
सी कमल, चद्रविकासी कमल, नील कमल, महापद्म श्वेत कमल,
राता कमल, इत्यादिक कमलनी शोभा बनी रही छे तेथी घणुज रम
णीक थयु छे, वली ते कमलो उपर मसन्नथया एवा भमर भमरी
यो आवीने गुजारव करी रह्या छे वली तिहा कादबक हस, च
क्रवा, राजहस, बगला, सारस, एवा पखीयोयें करी शोभे छे,
अर्थात ए जातियोना पखीयो तिहा रहे छे, एवो पद्मसरोवर त्रिश
लादेवीयें दशमा सुपनामा दीठु ॥ १० ॥ ४२ ॥

तेवार पछी इग्यारमा स्वप्नमा त्रिशलादेवी खीरसमुद्र देखे ते खीरस
मुद्र केहेवो छे तोके ' चद्रमाना किरणोनी जेवी शोभा तेवी शोभा ते
समुद्रमा छे, वली चारे बाजु जे समुद्रनु जल वृद्धि पामे छे वली ते
मांथी चपलथी पिण घणा चचल एवा घणा उचा कल्लोल उठी रह्या छे, ते
कल्लोलें करीने पाणी घणुज चचल थयु छे, वली मदमद वायराथी चलाय
मान थया जे कल्लोल ते समुद्रना तट उपर आवीने तफाका खाई रह्या
छे, तेनो शब्द थइ रह्यो छे जेने विषे ते कल्लोलोथी समुद्र शोभी र
ह्या छे, वली ते कल्लोल मिल्या थका दोडता छे एटले एक कल्लोलनी
पछाडे बीजो कल्लोल दोडी रह्यो छे, पहेलो एक न्हानो कल्लोल चाले,
पछी महोटो कल्लोल चाले, एवी कल्लोलोनी शोभा छे जेने विषे, वली
जे समुद्रमा जलचर जीव कल्लोल करी रह्या छे, ते केवा जातीना तो के
महामगरमच्छ, तिमिंगलमच्छ, लवुमच्छ ते सर्व परस्पर मिल्या थका र
मत करे तेवारें तेमना पूछना उलालवाथी उछल्यु जे पाणी, तेमाथी फी
ण मगट थइ ते फीण कल्लोलोथी तणाईने किनारापर आवी पडे छे
ते ढगला थइ गया छे ते ढगला सर्व कपूरना ढगला

वली ते समुद्रमा गगा प्रमुख नदीयोना पाणी पडे छे तेमा चौद चौद ह
जार नदीयोना परिवार सार्थे गगा अने सिंधु ए बे जरतक्षेत्रनी नदीयो
पडे छे एमज चौद चौद हजार नदीयोना परिवार सार्थे ऐरवतक्षेत्रनी
रक्ता अने रक्तवती ए बे नदीयो पडे छे, तथा अठावीश अठावीश ह
जार नदीयोना परिवार सार्थे रोहिता अने रोहितासा ए बे नदीयो हेमव
तक्षेत्रनी पडे छे तथा अठावीस अठावीस हजार नदीयोना परिवार सार्थे
सुवर्णकुला अने रूपकुला ए बे नदीयो ऐरएयवतक्षेत्रनी पडे छे तथा छप
न्न छपन्न हजार नदीयोना परिवार सार्थे हरिकता अने हरिसलिला ए बे
हरिवर्ष क्षेत्रनी नदीयो पडे छे तथा छपन्न छपन्न हजार नदीयोना परि
वार सार्थे नरकाता अने नारिकाता ए बे नदीयो रम्यकक्षेत्रनी पडे छे त
था पाच पाच लाखने उपर बत्रीश बत्रीश हजार नदीयोना परिवार सा
र्थे सीता अने सीतोदा ए बे नदीयो महाविदेह क्षेत्रनी पडे छे, सर्व मिळी
चौदा लाखने छपन्न हजार नदीयोनु पाणी जे समुद्रमा पडे छे, इहा कोइ
प्रश्न करे के सूत्रमा तो खीरसमुद्र सुपनामा दीठो एवो पाठ कह्यो छे
अने तुमे तो नाना प्रकारनी वेलाये वधतो पाणी कहो छो तथा नदीयो
माहे मिले छे एवो कहो छो तेनु शु कारण छे, तेने उत्तर कहे छे जे
खीरसमुद्रनो पाठ कहेवा थकी लवण समुद्र लेवो कारण के लवणसमुद्र
नही कहेशो तो गगा अने सिंधु नदीयो पडे छे ए पाठ पिण सूत्रकारेज क
हेलो छे ते पाठ मिलशे नही माटे इहा एम समजवु के लवणसमुद्रनु पाणी
धोलु छे ते स्थानके त्रिशला माता ए लवणसमुद्रनु पाणी खीरसमुद्र सारिखु
देखे छे एवो इग्यारमे स्वप्ने खीरसमुद्र त्रिशला देवीये दीठो ॥११॥४३॥

तेवार पछी बारमे सुपने, त्रिशला माताये देवविमान दीठु ते केहवु
छे तोके पुडरीक उत्कृष्ट विमान छे तेमा उत्तम सुवर्णमणीना एकहजा
रने आठ थजोये करी विराजमान छे वली ते विमान आकाशमा दीप
कनी परें दीपी रह्यो छे, उद्योतमा सूर्यमडल सरिखी शोभा छे जेनी, व
ली जे विमानमा सोनानी जातोमा नागफणा खीला ठोक्या छे, वली

ानने स्थानके दिव्य फूलोनी मालाओ, सुवर्ण पत्रे करी लचायमान एवी ीयोनी माळाओ लटके छे, वळी ते विमाननी अंदर मृग हरणना प, नाहारना रूप, बळदना रूप, घोडाना रूप मगरमच्छ, जाडप ो, गरूड, मयूर एमना रूप, सर्पना रूप, किन्नरदेवोनां रूप, कस्तुरी मृगनां रूप, सर्दूलसिंहना रूप, हाथीना रूप, वनलता, पद्मलता मना रूप चित्रामणमा छे, वली जे विमानमा नाटक थइ रह्यां छे ते दरमा जे वाजित्रो वाजी रह्या छे तेना शब्दे करी पूराणुं एवु ते ेमान छे, वळी जे विमानमा मेघगाजे तेना सरिखो देवदुंदुभिनो शब्द इ रह्यो छे तेथी जाणीयें छैयें के सर्व जीवलोक समार ते शब्दथी ूण करयो छे अर्थात् ते शब्द सर्वत्र फेलाइ गयो छे, वली ते वि ानमां, अगर, कुदरु, शिलारस, एमना धूपनो घमघमायमान धूप सुगंध इ रह्यो छे वली जे विमानमा देवोने योग्य सदाउद्योत थइ रहेलो छे, वोने योग्य सर्वदा सात सुखनो निवास रूप एवु देवविमान त्रिशला मातायें बारमा स्वप्नमा दीठु ॥ १२ ॥ ४४ ॥

आ स्वपनामा बारमें स्वप्ने देवतानु विमान कह्यो ते जे तीर्थंकरनो जीव देवलोकथी चवीने मातानी कूखमा आव्यो होय तेनी माता विमान देखे अने जे तीर्थंकरनो जीव नरकथी निकली मातानी कूखमा आव्यो होय तेनी माता बारमा सुपनामा भुवन देखे एवो पाठ छे ॥

तेवार पछी त्रिशलाक्षत्रियाणीए तेरमे स्वप्ने रत्नोनो ढगलो दीठो तेमा क्या कया रत्न छे १ पुलकरत्न, २ वज्ररत्न, ३ नीलरत्न ४ सस्यकरत्न, ५ कर्केतनरत्न, ६ लोहितरत्न, ७ मरकतरत्न, ८ प्रवालर त्न, ९ स्फाटिकरत्न, १० सौगंधिकरत्न, ११ हंसगर्भरत्न, १२ मस रगल्लरत्न, १३ अंजनरत्न, १४ चंद्रप्रभरत्न एवा बीजा पिण अनेक जातिना उत्तम रत्न ते सोनाना महोटा थालोमा भरेला ते रत्नोनो ढ ो केहेवो छे तोके मेरुपर्वत जेटलो उंचो, आकाशमा दे... एवो रत्ननो ढगलो त्रिशला देवीयें तेरमा स्वप्नमां दीठो ॥ १३ ॥

तेवार पछी चौदमे स्वप्ने त्रिशला क्षत्रियाणीए निर्धूम अग्नि दीठो ते केहेवो छे तो के ! घणो उजलो निर्मल पीलो अने लाल वर्ण वालो, वली मधु अने घृतथी सींच्यो थको, निर्धूम धगधगायमान जाज्वल्यमान शिखावालो, वली ते अग्नीमा अनेक न्हानी शिखाओ छे वली तेथी कोइक शिखा अधिकी वली ते अधिकथी पिण कोइक शिखा उंची केटली एक शिखाओ वली घणीज न्हानी एवी अनेक ज्वालायें करी अग्निनी शिखा मिली रही छे वली जे अग्नीमा अनेक ज्वालाओ माहोमाहे मिली रही छे, एवा धूम्ररहित अग्नीनी ज्वालाओ ते कोइ आकाश प्रदेशमा चाली होय तेनी परे घणी चपल अग्निनी शिखा त्रिशलाक्षत्रियाणी देवीयें चौदमा सुपनामां दीठी ॥ १४ ॥ ४६ ॥

एवा चौदे सुपना देखीनें त्रिशला राणी जागृत थइ ए सुपना केवा छे तोके' शुभ छे, सौम्य जलाछे, घणु रूडु वल्लभ छे दर्शन जेमनु, भाउ रूप छे जेमनु, एवा सुपना देखीने त्रिशला माता जागी ते केवी छे तोके ' जेवा कमल उघडे तेवां नेत्र विकसित थया छे जेना, हर्षना वशपकी सर्वअंग हर्ष सहित होतु हवू सर्व रोमराजी उल्लासित थइ ॥ ए चौद सुपना सर्व तीर्थंकरोनी माताओ देखे, जेवारें तीर्थंकर गर्भमा आवे तेवारे देखे, तेम त्रिशलादेवी पिण श्री महावीरस्वामी कूखमा आव्या ते ना योगें चौद सुपना देखीने शय्यमां जागती हवी ॥ ४७ ॥

तेवार पछी त्रिशला क्षत्रियाणी पूर्वे कह्या एवा चौद सुपना देखी ने जागती थकी घणीज पोताना ह्रदयमा खुशी थइ, संतोष पामी, जेवु मेघनी धारायें करी हणाएुं कदव वृक्षनु फूल तेनी परे उल्लासपाम्या छे रोमरूप जेना, अर्थात् रोमरोम हर्ष पाम्या पछी ते सुपनाने याद करे जे अनुक्रमें में एवा एवा सुपनाने दीठा एवी रीते याद करीने उठे, उठीने बाजोट उपर पग आपीने हेठी उतरे उतरीने नही उतावली ए, टले मनमा उतावल नथी तथा कायाथी चपल पणु नथी, रस्तामा ठोकर रहित, विलंबरहित, गीत प्रमुखना आडीगणने न लेनी थकी, राज

एवी सरिखी गतीयें करी चालती थकी जिहा सिद्धार्थ क्षत्रिय राजानो श यो छे, जिहा सिद्धार्थक्षत्रिय राजा पोढ्या छे, तिहा आवीनें, सिद्धार्थ क्षत्रिय राजाने एवी वाणीथी जगावती हवी ते केवी वाणी तो के ? जे सिद्धार्थ राजानें वल्लभ लागे, सिद्धार्थ राजा एवी वाणीनी सर्वदा चाह ना करे, एवी वाणी तथा द्वेषरहित एवी तथा सर्वना मनने गमती एवी तथा वल्लभपणानी चेतवणी करवा वाली तथा स्वर अक्षरें करी स्पष्ट एवी तथा कल्याणनी करवा वाली एवी तथा रुद्धिनी करवा वाली एवी तथा निरुपद्रव अर्थात् उपद्रव रहित एवी तथा धनना लाभनी करवा वाली एवी तथा मगलनी करवा वाली, श्रीकार अलकारादि शोभा सहित हृद यमा कोमल लागे एवी, वली जे वाणी साभलवाथी मनमा आनद थाय एवी, वली कोमल, मीठी रसयुक्त, जेना वचन थोडा अने अर्थ णो एवी वाणीथी त्रिशलादेवी पोताना भरतारने जगावती हवी ॥४८॥

तेथी सिद्धार्थराजा जाग्यो, त्यारे त्रिशलाराणी सिद्धार्थराजानो आ र्यी नाना प्रकारना मणिरत्नथी चितरयो एवो सोनानो बाजोट म रत्नोथी जड्यो ते उपर पलोंठी वालीने बैठी, रस्तानो खेद मिटाडी सुखे बैठी, बेसीने सिद्धार्थराजा प्रत्यें जेवी रीते पूर्वे वर्णन करी आ या एवी वाणीयें करी केहेती हवी ॥ ४९ ॥

हे स्वामी ! निश्चे हु आज पूर्वोक्त शय्यामा काइक सुती काइक जागती थकी, में गज वृषभ आदिदेइ जे पूर्वे कहीराख्या ते चौदा स्वप्ना दीठा, देखीने जागी, ते महोटा सुपनानुं फल जाणु जे काइ फलवृत्ति रूडुं पामशु काइ थाशे ? एम त्रिशलायें पोताना भरतारने पूछ्यु ॥ ५० ॥

तेवारें सिद्धार्थराजा त्रिशलाना मुखथी एवो अर्थ साभलीने, हर्ष संतोष पामीनें, चित्तमा आनद पाम्यो थको, प्रीतिकारी परम सौम्य हर्ष हृदयमा फेलयो, जेम मेघनी धारायें छटायेलु एवु कदबवृक्षनु फूल तेनी परें उल्लसित थयो थको, साभलीने तेनो विचार करयो, पोता ना स्वभाव प्रमाणे पोतानी बुद्धि विज्ञाने करी ते स्वप्नोनो अर्थ

तेवार पछी चौदमे स्वप्ने त्रिशला क्षत्रियाणीए निर्धूम अग्नि दीठो ते केहेवो छे तोके ! घणो उजलो निर्मल पीलो अने डाउ वर्ण वालो, वली मधु अने घृतथी सींच्यो थको, निर्धूम धगधगायमान जाज्वल्यमान शि खावालो, वली ते अग्नीमा अनेक न्हानी शिखाओ छ वली तेथी कोइ क शिखा अधिकी वली ते अधिकथी पिण कोइक शिखा उंची तेटली एक शिखाओ वली घणीज न्हानी एवी अनेक ज्वालाये करी अग्निनी शि खा मिली रही छे वली ते अग्नीमा अनेक ज्वालाओ मांहोमाहे मिली रही छे, एवा धूम्ररहित अग्नीनी ज्वालाओ ते कोइ आकाश प्रदेशमा चाटती होय तेनी परे घणी चपल अग्निनी शिखा त्रिशलाक्षत्रियाणी देवीये चौदमा सुपनामां दीठी ॥ १५ ॥ ४६ ॥

एवा चौदे सुपना देखीने त्रिशला राणी जागृत थइ ए सुपना केवा छे तोके ! शुभ छे, सौम्य जडाछे, वणु रूडु वल्लभ छे दर्शन जेमनु, भलु रूप छे जेमनु एवा सुपनां देखीने त्रिशला माता जागी ते केवी छे तोके ! जेवा कमल उवडे तेवां नेत्र विकस्वित थया छे जेना, हर्षना व शथकी सर्वअंग हर्ष सहित होतु हवु सर्व रोमराजी उल्लासित थइ ॥ ए चौद सुपना सर्व तीर्थंकरोनी माताओ देखे, जेवारे तीर्थंकर गर्भमा आवे तेवारे देखे, तेम त्रिशलादेवी पिण श्री महावीरस्वामी कूखमा आव्या ते ना योगें चौद सुपना देखीने शय्यमां जागती हवी ॥ ४७ ॥

तेवार पछी त्रिशला क्षत्रियाणी पूर्वे कह्यां एवा चौद सुपना देखी ने जागती थकी घणीज पोताना हृदयमा खुशी थइ, सतोष पामी, जेवु मेघनी धाराये करी हणाणुं कदंब वृक्षनु फूल तेनी परे उछ्लसपाम्या छे रोमरूप जेना, अर्थात् रोमरोम हर्ष पाम्या पछी ते सुपनाने याद करे जे अनुक्रमें में एवा एवा सुपनाने दीठां एवी रीते याद करीने उठे, उठीने बाजोट उपर पग आपीने हेठी उतरे उतरीने नही उतावली ए टले मनमा उतावल नथी तथा कायाथी चपल पणु नथी, रस्तामा ठोकर रहित, विघ्नरहित, चौंत प्रमुखना ओठींगणने न लेती थकी, राज

इमी सरिखी गतीयें करी चालतो थको जिहां सिद्धार्थ क्षत्रिय राजानी श
य्या छे, जिहां सिद्धार्थक्षत्रिय राजा पोढ्या छे, तिहां आवीनें, सिद्धार्थ
क्षत्रिय राजाने एवी वाणीयें जगावती हवी ते केवी वाणी तोके? जे
सिद्धार्थ राजानें वल्लभ लागे, सिद्धार्थ राजा एवी वाणीनी सर्वदा चाह
ना करे, एवी वाणी तथा द्वेषरहित एवी तथा सर्वना मनने गमती एवी
तथा वल्लभपणानी चेतवणी करवा वाली तथा स्वर अक्षरें करी स्पष्ट एवी
तथा कल्याणनी करवा वाली एवी तथा वृद्धिनी करवा वाली एवी तथा
निरुपद्रव अर्थात् उपद्रव रहित एवी तथा धनना लाभनी करवा वाली
एवी तथा मंगलनी करवा वाली, श्रीकार अलंकारादि शोभा सहित हृद
यमां कोमल लागे एवी, वली जे वाणी सांभलवाथी मनमां आनंद
थाय एवी, वली कोमल, मीठी रसयुक्त, जेमां वचन थोडा अने अर्थ
घणो एवी वाणीयी त्रिशलादेवी पोताना भरतारने जगावती हवी ॥४८॥

तेवारें सिद्धार्थराजा जाग्यो, त्यारे त्रिशलाराणी सिद्धार्थराजानी आ
ज्ञायी नाना प्रकारना मणिरत्नथी चितरचो एवो सोनानो बाजोठ म
णिरत्नोथी जड्यो ते उपर पलोंठी घालीने बेठी, रस्तानो खेद मिटाडी
नें सुखे बेठी, बेसीने सिद्धार्थराजा प्रत्यें जेवी रीते पूर्वे वर्णन करी आ
व्या एवी वाणीयें करी केहेती हवी ॥ ४९ ॥

हे स्वामी ! निश्चे हुं आज पूर्वोक्त शय्यामां कांइक सुती कांइक
जागती थकी, में गज वृषभ आदिदेइ जे पूर्वे कहीआव्या ते चौद स्वप्नां
दीठां, देखीने जागी, ते महोटां सुपनानुं फल जाणुं जे कांइ फलवृत्ति
फल्लु थामवु कांइ थाशे? एवुं त्रिशलायें पोताना भरतारने पूछ्युं ॥ ५० ॥

तेवारें सिद्धार्थराजा त्रिशलाना मुखथी एवो अर्थ सांभलीने, हर्ष
संतोष पामीनें, चित्तमां आनंद पाम्यो थको, प्रीतिकारी परम सौम्य
हर्ष हृदयमां फेल्यो, जेम मेघनी धारायें छटायेलुं एवुं कदंबवृक्षनुं फूल
तेनी परें उल्लसित थयो थको,, सांभलीने तेनो विचार कर्यो, पोता
ना स्वजात प्रमाणे पोतानी बुद्धि विज्ञाने करी ते स्वप्नोनो अर्थ

ग्रहण करयो, अर्थ ग्रहण करीने सिद्धार्थराणीने मीठे वचने करी एवु केहेतो हवो ॥ ९१ ॥

हे देवाणुप्रिया ! तें मनोहर सुपना दीठां, तें कल्याणकारी सुपनां दीठा, शिवकारी, धनकारी आरोग्यकारी, घणा दीर्घायुना करवा वा ला एवा तें सुपना दीठा ॥ तेनु फल आवी रीते छे, हे देवाणुप्रिया ! तुमोने अर्थनो लाभ थाशे, तुमोने भोगनो लाभ थाशे, सुपनो लाभ थाशे, राज्यनो लाभ थाशे, ए निश्चे नवमहीना उपर साडासात दिव स गये थके अमारा कुलमां ध्वजा समान, अमारा कुलमा दीप समा न, अमारा कुलमां दीवा समान, अमारा कुलमा पर्वत समान स्थिर, अमारा कुलमा शिखर समान, अर्थात् मुकुट समान, अमारा कुलमा तिलक समान, अमारा कुलमा सूर्य समान, कुलनो आधार, कुलनी वृ द्धिनो करवा वालो, कुलनी कीर्तिनो करवा वालो, कुलना निर्वाहनो क रवा वालो, कुलना यशनो करवा वालो, कुलमा वृक्षसमान, घणा लो कोने छत्रछायामां राखवाथी कुलनी विशेष वृद्धिनो करवा वालो, एवा पुत्र थाशे वली सुकोमल छे हाथ पग जेना, संपूर्ण पांचेंद्रिय परवरा छे जेना, लक्षण, व्यंजन अने गुणे करी सहित, मानोन्मान प्रमाण स र्व शरीर सुंदर, चंद्रमानी परे सौम्याकार, मनोहर दर्शन करवा यो ग्य, एवो पुत्र तुमने थाशे ॥ ९२ ॥

ते पुत्र केवो थाशे तोके ! बाल्य अवस्था छाडीने जेवारे विज्ञा न अवस्थामां आवशे तेवारे सर्व कलाओ मात्र देखवाथीज जाणी ले शे पिण तेने शीखाववुं पडशे नही वली युवान अवस्थामा शूरवीर महादानेश्वरी, समप्रतिज्ञा निर्वाहक एटले पोतें अंगीकार करेली वातना निर्वाहनो करवा वालो, संग्राममां वीर एटले पाछो जाय नही, जमी न उपर राज्य करवा वालो, घणा हाथी घोडा रथ पायदल प्रमुखनो मालक एवो, राजाओनो राजा थाशे ॥ ९३ ॥

तेमाटे तुमे उदारकारी यावत् सुपना दीठा एवीरीतें सिद्धार्थराजा

वे वार त्रणशार त्रिशला राणीने कहे, प्रशामा करे तेवार पछी त्रिशला क्षत्रियाणी सिद्धार्थराजाना मुखथी आ वात सांभळीनें हर्ष संतोष पामी, यावत् हाथ जोडीने मस्तकें अंजली करीनें, एवं केहेती हवी ॥ ९४ ॥
हे स्वामी ए अर्थ एमज छे, तुमे कह्यो ते तहत्त छे, संदेह रहित छे जे प्रमाण में वाछ्योहतो हे स्वामी तेम प्रमाण में आपना मुखथी ग्रह ण कर्यो, एम हे स्वामि जे तुमे कहोछो ते अर्थ सत्य छे एवीरीतें वार वार केहेती थकी एम कहीने, सुपनाना अर्थने रूडीरीतथी अंगीकार करी नें सिद्धार्थराजानी आज्ञा लेइने नानाप्रकारना मणीय जडित एवा सो नानाबाजोट उपरथी उठीने, नही धीरी एवी पूर्व कहेली रीत मुजब चालती थकी जिहा पोतानु शयन घर छे तिहा आवीने एम केहेती हवी ॥ ९५ ॥
जे महारे उत्तम स्वप्न दीठामा आव्या तो हिवे महारे सूवु न ही, जो सुइ जाउ तो वळी कदापि बीजा कोइ पाप रूप खोटा स्व प्र आवीजाय तो ए रुडा सुपनानु फल जातु रहे तेमाटे देव गुरु स बंधि रूडी मगलकारी, शुभकारी, धर्म कथा कहीने रात्रि पूर्ण करु एवु करीने स्वप्न जागरण करती थकी, पोतें जागती बीजा ने जगावती विचरे ॥ ९६ ॥
तेवार पछी प्रभात समये सिद्धार्थ राजा कुटुबिक जे सेवक पुरुष तेने बोलावीने एम केहेतो हवो ॥ ९७ ॥
उतावळथी हे देवाणुप्रिय! आज सारीरीतें बाहिरनी उवठाणशा ळा जे कचेरी छे तेनें गंधोदकथी सींचो कचरो काढो वाहारीने सा फ करो, लींपो, लींपीने पछी प्रधान सुगंधि पाचवर्णना फूल तेना ढग ला करावो, कृष्णागर, कुंदरु, शिलारस तेना धूप उखेवो अने सुग धना चूर्णनी गोळी, अगरबत्ती उखेवो, सुगंधे अभिराम करो, सुगंधे वा सित करो, गंधनी वाटमूको, आ काम तुमे करो, बीजा कोइनी पासें क रावो, आ महारी आज्ञा पाछी तत्काल सोंपो ॥ ९८ ॥
तेवारें कुटुबिक पुरुष एवु सांभळी घणाज खुसी थइने, हाथजोडी

राजायें भेटणु छोड्यु तेमाथी डाबडो निकल्यो उघाड्यो तेमा थकी वली नवने बांधेली एक सोनानी डाबली निकली तेना ढकन उघाड्या तेवारें मा हेथी राख निकली तेवारें प्रधानें कह्यो तुमारा वैरीयें राख मूकी छे, ते राख चोपडी तुमे जोगी थाओ, ते सांभली राजा क्रोधातुर थयो तेवारें सिधीपालकें जाण्यु जे राजायें वैर साध्यु एवु चिंतवी उत्पातनी बुद्धीयें करी कहेवा लाग्यो के राजन ! तुमे उलटो विचार मत करो, ए राख बहु गुणकारी छे राजायें पूछ्युं एमा शो गुण छे ? सिधीपालक बोल्यो अमार। राजायें यज्ञ कीधो हतो तेना उपर असंख्य द्रव्य खरच्यु ते यज्ञ पूरण थयाथी तेनो परम तिलक करवानें अर्थे सर्वे राजाओने मोकल्यो छे एमा काइ विरोध नथी एनुं प्रभात काले तिलक करता जन्मांतरना पातक टले अने सौभाग्य पामे, ते सांभली राजा प्रसन्न थयो अने जाण्यु जे मे वैर भावथी अवलु विचार्यु पिण एणे तो वैर टालवा ए उपकार कर्यो छे, पछी राजायें ते सिधीपालकने घणुं सन्मान आपी, एक महीना सुधी पोतापासें राखीने घणा हाथी घोडा आभरण देइ पहेरामणी करीने सीख आपी, तथा हिवे तुमारा राजासाथें अमारे परम मित्राइ छे एवो पत्र लिखी आप्यो ए सर्व भेट लेइ सिधीपालक पोताना राजा पासे आव्यो राजानें पत्र दीधो सर्वे वस्तु पिण आपी तेवारें राजा विस्मय पाम्यो, वली राजायें पटराणीने कह्यो के तु ताहारे पीयरे जा, ज्यारे हु नामांकित मुद्रिका मोकलुं तेवारें परत आवजे पिण बीजा कोइना कहेवाथी आवीश नही, पछी ते राणी पीयर गइ पाछलथी राजायें सिधीपालकने कह्यो के म्हारी राणी रीसाणी थकी पीयरे गइ छे तने तुमें तेडी लावो तो तुमारी अ क्कल खरी जाणु,पछी सिधीपालक तीर्थवासीनो वेश करी राणीना पीयरना गाममा गयो राणीनी खबर पडी तेवारें राणीयें तेडाव्यो अने कह्यो के तु मुजने मिलवा केम नाव्यो तेणे कह्यो हु तीर्थवासी थयो छु तेथी संसार संबंधि कोइ कार्यमा पडतो नथी, राणीये कह्यो धन्य तो पिण मने राजाना समाचार कहो तेवारें सिधीपा

हवा लाग्यो के राजायें हमणा कोइक राजानी पूत्री परणवानो आदर करयो छे ते कन्या घणी रूपवती छे तेने पटराणी करवा धारयु छे एवी वात सामली राणी उतावली पाछी पोताने घरे आवी राजायें पु छयु तुमे तेड्या विना उतावला केम आव्या तेवारे राणी रीश आणीने बोली जे तुमे नवी पटराणीने घरे जाओ छो तो हिवे मुने शावास्ते ते डो एवो उलजो सामली राजा विस्मय पाम्यो पछी राजायें सिंधीपा लकने तेडावी अातजागी राणीने मनावी राजा हर्ष पाम्यो, सिंधी पा लकने घणां वस्त्र आभूषण आपी सन्मान्यो ॥ एम सिद्धार्थराजानी स भामा एवा सिंधीपालक आदिदेइने शेठनापुत्र सेनापति बुद्धिवंत प्रमु ख घणा बैठा छे ॥ इति सिंधीपालक कथा ॥ इत्यादिक बावीशथी आ दि लेइने त्रेसठ पर्यंत टीकाकारें लिख्या छे एमना परिवारसाथें परवरयो थको सिद्धार्थराजास्नानघरथी निकलीने सभा मडपमां आवे छे ते क हेवो शोभे छे तोके धवलमेघनी घटामा जेवो सूर्य निकले तेणी परें शो भे छे वली जेवा नक्षत्र ग्रह प्रमुखना तारामा चंद्रमा शोभे तेवो ते लोको मा राजा शोभे एवो मजनघरथी निकलता शोभयमान थयो थको नर पति, नरोमा इंद्र, नरोमा वृषभ समान, नरोमा सिंहसमान, घणी अ धिक राजतेजनी लक्ष्मीयें करी दीपतो थको, स्नानघरथी निकलीने ॥ ६२॥ जिहा सभानी शालाछे तिहा आवीनें सिंहासन उपर पूर्वदिशानी सन्मुख मोहोंडु करीने बेठो ॥ ६३ ॥

बेशीने पोताथी उत्तर अने पूर्वदिशानी विचमानी इशानकूणमा आ ठ बाजोठ श्वेत वस्त्रथी ढाकेला श्वेत सरसव अने श्वेत द्राब कुकुथी मंगल अर्थ पूजीने थापे अने एक पडछि एटले पडदो बाधे ते पडछि केहेवी छे तोके ! नाना प्रकारना मणिरत्नोथी जडेली छे, सर्व लोकने देखवा योग्य, घणामूल्यनी, भला पाटणमा नीपजेली, रेशमना वस्त्रनी अनेक चित्रामवाली एटले मृग, वृषभ, घोडा, मनुष्य, मत्स्य, पक्षी सर्प, किंनर, अष्टापद, चमरी गाय, हाथी, वनलता, पद्मलता, इत्यादिक

अनेक रूप जे पडछिमां माडचा छे एवी पडछी धारी, (पडछी एटले पडदो जाणवो) ते पडछीनी माहेली बाजुयें, अनेक जातिना मणि ने करी जडित रूडा सुवाळा गादला सहित मशरूने वस्त्रविशेषे ढांक्यु तेनी उपर श्वेत वस्त्र आच्छाद्यु, सुकोमल अगने सुखकारी स्पर्श छे जेनो एवो रूडो एक बाजोट त्रिशलाक्षत्रियाणीने वास्ते रचावे, रचावीने पछी सिद्धार्थराजा कुटुंबिक पुरुषने बोलाविने एम कहे ॥ ६४ ॥

के शीघ्रमेव एटले तत्काल हे देवाणुप्रिया, अष्टांग महानिमित्तना जाण, सूत्रअर्थना धरवा वाला, अनेक प्रकारना शास्त्रमा कुशल, स्वप्न शास्त्रमा कुशल एवा स्वप्न लक्षण पाठकोने बोलावो इहा आठ अगना नाम कहे छे तेमां प्रथम फरकण विचार अंग तेमां शरीर फरके तेनो विचार जेमके स्त्रीनु डाबु अंग फरके तो सारु इत्यादिक वातो जाणवी, बीजु स्वप्नविचार अग तेमा उत्तम, मध्यम अने कनिष्ट एवा स्वप्नानोवी चार, त्रीजो स्वरविचार अग तेमां काली चिडी, रूपारेल, शीयाल प्रमुख बोले ते सुभव फल कहेवाय, चोथु भूमिकप अंग तेमा भूमिकपवाथी जे शुभाशुभफल तेना कहेनारा शास्त्र ते भौमविद्यानामे चोथु अग जाणवु, पाचमु मसा, तिल, लसण इत्यादिकोनो विचार जेमा छे ते व्यजन विद्या नामे पांचमु अग जाणवु, छठो हाथ पगनी रेखा जोवानो विचार जेमा छे ते लक्षणविद्या नामे छठु अग जाणवु, सातमु उत्पात विद्या ते उल्कापात तारा त्रूटे, मडळ मडे इत्यादिकोनो विचार जेमा छे ते सातमु अग जाणवु, आठमु अतरिक्ष विद्यानु अग ते ग्रहोनों अस्त उदय चक्र तेना फल जेमा छे ते आठमु अग जाणवु एवा जाण स्वप्नपाठक पुरुषोने बोलावो एवु सिद्धार्थ राजायें कह्यो त्यारें ते कौटुंबिक पुरुष साजली ने घणो खुशी थयो पछी हाथ जोडी यावत् साजलीनें तहत्ति करीने॥६५॥

सिद्धार्थ क्षत्रिय राजानी पासेथी निकलीने क्षत्री कुंड गामनगरनी विचमाथी थइने ज्या स्वप्न पाठकोना घर छे त्या आवीने स्वप्नलक्षण पाठको

हे स्वम पाठको तुमोने सिद्धार्थ क्षत्रिय राजा याद करे छे ते माटे हु तुमोने बोलाववा आव्यो छु तेवारे स्वमलक्षणपाठक सिद्धार्थ क्षत्रिय राजाना, कौटुंबिक पुरुषनी वाणी सुणीने एटले तुमोने सिद्धार्थराजा बोलावे छे एवी वाणी सांभलीने, घणाज हर्ष संतोष हृदयमा पामवा लाग्या पछी स्नान मंजन करीने, पोताना घरना इष्टदेवने पूजीने, शरीर उपर कौतुकने अर्थे तिलक छापा प्रमुख करीने, दहीं, डाभ अने सरसवने मांगलिक माटे करीने इहा दुष्टस्वम प्रमुखनो नाश करवो ए प्रायश्चित्तनो टालवु छे, तेमाटे ते करीने, इहा कोइ प्रश्न करेके सिद्धार्थराजाना स्नानना वर्णनमा तो देवपूजा करवी आवी नही अने आ निमित्तियाओना संक्षेप पाठमा देवपूजा आवी तो सिद्धार्थराजा देवपूजा नही करता हता ? एवु पूछे तेने उत्तर कहे छे के आ वखत तो सिद्धार्थराजा शिणगार करीने सभामा आवता हता तेथी तिहा दही, डाभ अने सरसवनी परे पाठ नथी तेथी जाणवामा आवे छे के निमित्तियाओने पूछी विदाय करीने पछी पूजा करी हशे ! केमके सिद्धार्थ राजा पिण श्रीपार्श्वनाथ भगवानना श्रावक छे तेथी श्रीपार्श्वनाथजीनी मूर्त्ति तेमना घरमा अवश्य होवी जोइयें, वली आगल " णायाकय बलिकम्मा " ए पाठ त्रिशलाजीना अधिकारमा चाल्यो छे अथवा कर्त्तायें पिण ए पाठ सहजनो जाणी नही लिख्यो होय ! ! एम पिण संभवे छे पछी केवली गम्य हिवे स्वमपाठक शुद्ध मांगलिक वस्त्र पहेरीने, घणा मूल्यना घरेणा पहेरी सर्व शरीर शोभायमान करीने, वली पिण सरसव अने दुर्वा मंगल निमित्ते मस्तके धारण करीने, उठीने, पोतपोताना घरथी निकलीने, क्षत्रियकुंड गामनगरनी विचमा थी थइनें, जिहा सिद्धार्थराजानो मुख्य महेल छे तेने बारणे आवी सर्व एकठा थया, पछी सर्व भेला थइने माहोमाहे विचार करवा लाग्या के आपणा बधाएमा कोइने महोटो थाप्यो नथी माटे एक जणने महोटो थापो, केमके एहविना तो अन्यतिन्न टोलु वाजे, माटे माहोमा

हे स्वप्ननो अर्थ विचारीनें एक महोटाना मुखथी राजा आगळ रहेवं रावयु, पिण जणे जणें जुदु जुदु बोलवु नही जो जणें जण जुदु बोलवा जाशो तो आदर पामशो नही जेम न्यायशास्त्रमां कह्यो छे के ॥ यत्रसर्वेपि नेतार , सर्वे मत्सरवादिन ॥ सर्वे ममत्वमिच्छंति, तेवसीदति एदवत् ॥१॥

जिहा सर्वजण अग्रेसर थावा जाय अने सर्व अहंकार सहित बोलवा वाला होय, परस्परें ईर्ष्या करवा वाला होय, सर्व महोटाइ पणाने वाछवा वाला होय तेमनो समुदाय जेम पाचशें सुभट अनादर पामी दु ख करवा लागा तेम दु ख करे, ते पाचसें सुभटनी कथा कहे छे, कोई समयें इहा तिहाथी आवीने पाचसें सुभट भेला थइ गया, ते रोजगार करवा सारु देशातरेगया तिहा कोइ कोइ राजाओनी पासें बे चार दिवस रही रही चाल्या जाय एम करता एक महर्द्धिक महोटा राजाने जइ मिल्या तेवारें ते राजायें घोडा, वस्त्र घरेणा, शस्त्र इत्यादिक सामग्री तेमनी पासे दीठी तेमज ते सुभटो सर्वे सुरूपवान हता तेने देखी राजा तेमने सन्मान आपी बोल्यो के तुमे कोण छो अने क्याथी आव्या छो तेवारें ते पुरुषोयें राजाने प्रणाम करीनें कह्यु के हे राजन् ! अमे नोकरी रहेवा सारु आव्या छैयें यावत् तेमनी वातो साभलीने राजा प्रमुख सर्व सभा खुशी थइ तेवारें राजायें प्रधानने बोलावीने कह्यु के आ सुभटो सारा देखाय छे, आबरुदार छे, काम पडता सग्राममा पाछे हठें तेवा नथी एवा राजाना वचन साभली प्रधान बोल्यो के हे स्वामी ! ए सुभट देखवामा तो सारा छे पिण असबध छे केमके एमनामा कोइ नायक नथी तेथी काम पडशे तेवारें भागी जाशे तो तुमे ओलखो केने आपशो ? एवु प्रधाने कह्यो तोपिण राजा समज्यो नही तेवारें प्रधाने जाण्यु जे राजानु मन ए सीपाइयोने नोकरी राखवानुं छे एवु समजीने प्रधाने कह्यो हे महाराज ! एनी परीक्षा करीने आपणे नोकरीमा राखवु राजायें पिण कह्यो के सुखेंथी परीक्षा करो ~ प्रधाने तेमने कोइ सारी जगा जोइने तेमा उतारो आप्यो अने

नती वसतें एक ढोलीयो एक गादलु अने एक उमीयु ने मुजटोने उतारे
ीकल्यों वली भोजनादिक सामग्री पिण घणी मोकली ते मुजटोये भोग
ा कर्यु पछी जेवारे सुवा लागा तेवारे ढोलीयो देखीने माहो माहें
ाचमें जण लडवा लाग्या तेमा थी एक बोल्यो के मेरा दादा वडाथा,
ग्रीर मनी बडाहु, इस्में में सुउगा तेवारे बीजो बोल्यो के एकदि
न वनमें सिंह बोलाथा, उसका साद घरमें बैठेबैठे सुनके मेरे
बागके सातदिन तक तप आयाथा, इस्में मेंही सबसें बडा हुं,
पछी त्रीजो बोल्यो के मेरे बडे भइयानें सेंके हूए सत्ताइस कुपापडो
एक पावकी लानसें भागी डारीथी, इस्से मेंही बडा हु, वली चोथा
बोल्यो के मेरे मामाने एक उदराकों हराइ दीयाथा इस्में मेंही बडाहु,
पछी पाचमो बोल्यो के मेरा मामाने सातसेरकी खीचडी खाइथी, छठो
बोल्यो के मेंतो छ गोलीकी छास पीताहु, सातमो बोल्यो के मेंतो घर
ही मगन्न जाता हु, आठमो बोल्यो मेंतो सातदिनतक मोइ रहता
भागतानही, नवमो बोल्यो मेंतो बिल्लीसेंभी डरताहु, दसमो बो
ल्यो में कुत्ता भूंके जद भाग जाउं, एवीरीते एक कहे हु सुउ, बी
ो कहे हु सुउ तु काइ मालक नथी, एम आखिरात्र सुधी लड्या ते
ारे तेमां पाच सात जण समजु हता ते बोल्या अरे तुमे लडाइ मतकरो
ःशय्यानी साहामां पगराखीने बद्धाये सुइ रहो ए न्याय सर्वने बराबर
माणवामां आव्यो तेथी सर्वजणो ढोलीया सामा पगराखीनें सुइ रह्या
अने बीजी पिण सर्व चीजो पाती प्रमाणे वेंची लीधी पछी प्रभात
थयु तेवारें राजाना माणसो जे निगाह करवा रह्या हता तेणे जइ
राजा आगल सर्ववात कही तेवारे राजायें निश्चछीने सर्वने शीख आपी
काइ आदर पाम्या नही एवु स्वप्न पाठके परस्पर विचारीनें एक
जणाने मालक थाप्यो अने जिहां सिद्धार्थ क्षत्रियराजा छे तिहां आ
व्यां आवीने सिद्धार्थराजाने जय विजय शब्द करी वधाव्या ॥ १७ ॥

॥ इति तृतिय व्याख्यान समाप्त ॥

॥ अथ चतुर्थ व्याख्यान प्रारंभ ॥

हिवे ते सुपनपाठक सिद्धार्थक्षत्रिय राजाने हाथजोडीने जयविजय शब्द करी वधावे अर्थात् हाथ पसारीनें आशिर्वाद आपे ने कहेके हे राजा ! तुमें दीर्घ आयुष्य वाला हो, घणी आजीविकाना धणीहो, लक्ष्मीवानहो, जशवानहो, बुद्धिमानहो, कीर्त्तिमान्हो वली सिद्धार्थराजाने पार्श्वनाथ स्वामीनो सेवक जाणीने श्रीपार्श्वनाथजीनी स्तुतिकरीनें आशिर्वाद आप्यो ॥ श्लोक ॥ दशावतारोव पायात्, कमनीयाञ्जनद्युति ॥ किंतुदीपो नहिश्रीप, किं तुवामागजोजिन ॥ १ ॥ अर्थ —दश छे अवतार जेना तेने दशावतार कहीयें एवा वली मनोहर श्यामकांतिवाला एवा कोण छे ? तेवारें बीजो कोइ कहेके दीप एवुं नाम दीवानुं छे अने दशा एवुं बत्तीनुं नाम छे वली काजलनी श्यामकांति छे, तेवारें कहे छे जे ए दीवो, तो नहीं परंतु श्रीप एटले श्रीकृष्ण तेना पिण दश अवतार थया तेथी कृष्ण हशे केमके कृष्ण काला पिण छे अने तेना दश अवतार पिण छे, तेवारें कवि कहे छे के दीवो अने श्रीकृष्ण ए बेउं नथी तेवारे ए कोण छे के ? श्रीपार्श्वनाथ स्वामी वामादेवीना पुत्र छे केमके ए दशभव करीनें तीर्थंकर थया इहां अमरभूतिना भवथी दशभव गणवा वली एमनी श्यामकांति पिण छे तेथी पार्श्वनाथ स्वामी छे ते तुमारु रक्षा करो एवो आशिर्वाद सांभलीने सिद्धार्थ क्षत्रियराजायें ते सुपनलक्षण पाठकोनें वांद्या, वस्त्रादिक देइने पूज्या, सद्गुणेकरी स्तव्या, सन्मान आप्युं, अने पूर्वे तैयार करेला जे आठ भद्रासन छे तेनी उपर जूदा जूदा बेसाड्या ॥ ६८ ॥

इहां कोइ कहेके श्रीपार्श्वनाथजीनो श्रावक सिद्धार्थराजा समकेती छे तेणे मिथ्यात्वी एवा स्वप्न पाठकोनें केम वांद्या ? हिवे एने उत्तर कहे छे ए तो लोकोपचार विनय छे तेतो संसारिक पणानो छे पिण पूज्यपणाने तथा धर्मना कामने माटे नथी जेम लौकिकमा जुहार करे तेने पिण वदन कहे छे तेम ए पिण जाणवुं ॥ तेवार पछी सिद्धार्थ राजा त्रिश

क्षत्रियाणीने पश्चिम वेसाडे ते तिण पोताना हाथमां फूलफल लेइने पछी उत्कृष्ट विनयथी सिद्धार्थ राजा स्वमस्वप्न पाठकाने कहे॥६९॥
हे देवाणु प्रिया आज त्रिशला क्षत्रियाणीयें पूर्वे वर्णवी आव्या एवा होय गजवृषभादि चौदे स्वमा ते यावत् अल्प निद्रामां सुती थकी स्वान जागी ॥ ७० ॥
तेथी ए चौदे स्वमानु हे देवाणु प्रिया कांइ कल्याणकारी फल थाशे ॥७१॥
तेवारें ते स्वमलक्षणपाठक, सिद्धार्थक्षत्रियराजाना मुखथी ए अर्थ सांभली घणाज खुशी थया ते स्वमाने हृदयमां धारण करचा, अने अ विचारवा लाग्या माहोमाहे विचार करचो, ते स्वमानो अर्थ ग्रहण कर्यो, माहोमाहे एक बीजाने पूछीने निश्चय करचो, पछी सिद्धार्थ राजानी आगल स्वमाना शास्त्रोनो विचार केहेता हुवा ॥ ७२ ॥
ते शास्त्रांतरथी सुपनानो विचार लिखे छे मनुष्योने नव प्रकारें स्वमा आवे छे तेमां प्रथम तो जाणेली वात स्वमामां आवे, बीजो सांभलेली वात सुपनामां देखे, त्रीजो दिवसें दीठेली वस्तु सुपनामां देखे, चोथुं वात, पित्त, कफ ना विकारथी स्वम आवे, पांचमो सहज स्वभावथी स्वम देखे अथवा मलमूत्रा दिकनी पीडाथी स्वम देखे, छठो चिंतामां पड्यो थको स्वम देखे, ए छ कारणथी जे स्वमा आवे ते निष्फल छे एनुं कांइ शुभाशुभ फल मात्र थाय नही सातमो देवतानी सान्निध्यथी सुपनु देखे, आठमो धर्म कर्म मां रहेलो प्राणी घणों कर्म करे तेने धर्मना प्रभावथी उत्कृष्ट पुण्यने योगें सुपनु आवे, नवमो घणा उत्कृष्ट पापना उदयथी स्वम आवे ए पाछ ला त्रण स्वमा प्राणी देखे तो तेनु शुभाशुभ फल अवश्य थाय खाली न जाय तथा धातुप्रकोपथी वायुनु जोर होय तेवारें वृक्ष, पर्वत, टूंक उपर चढवुं तथा आकाशमां उडवु एवां स्वमा आवे तथा पित्त प्रको पथी सोनु, रत्न, सूर्य अने अग्नि प्रमुख स्वमामां देखे तथा श्लेष्म अधिक होय तेना योगथी अश्व, नक्षत्र, चन्द्र, शुक्लपक्ष, नदी, सरो वर, समुद्र इत्यादिक उजलापणा देखे ते निष्फल जाणवा वली गाय,

बलद, हाथी, महेल पर्वत, वृक्ष एमना उपर चड्यो एवु स्वप्न देखे तो महोटाइ पामे तथा विष्टाविलेपन शरीर देखे तो निरोगी थाय, स्वप्न मा रुदन करे तो हर्षनी प्राप्ति थाय, स्वप्नमा राजा, हाथी, घोडा, सोनु, बळद, गाय, कुटंब देखे तो कुळनी वृद्धि होय, तथा प्रासाद उपर चडीने जाणे जिमु छु एवु स्वप्न देखे तथा समुद्र तरु छु एवु स्व प्न देखे तो जो नीचकुळमा तेनो जन्म थयो होय तोपिण राजा था य वळी दीपक, माम, फळ, कन्या, पद्म, छत्र अने ध्वजा एटला वा ना सुपनामा देखे तो जय पामे, तथा पोताना इष्टदेवनी प्रतिमाने जो स्वप्नमा देखे तो आयुर्वृद्धि पामे तेमज कीर्त्ति, यश अने धननी पिण वृ द्धि पामे वळी जे कपास, चरम, हाड अने छास ए चार श्वेतवस्तु वर्जीने बीजी कोइ पिण सफेत वस्तु स्वप्नामा देखे तो भली जाणवी तथा ज हाथी, देवता, घोडो अने राजा ए चार चीज विना बीजी कोइ का ली वस्तु स्वप्नमा देखे तो ते सारी जाणवी नही तथा स्वप्नमा गायन करे तो रुदन करवु पडे, स्वप्नमा नाचे तो बदीखाने पडे, स्वप्नमा हसे तो शोकमा पडे स्वप्नमा भणे तो कळह थाय, वळी जो स्वप्नमा देवता साधु, ब्राह्मण, राजा पितृ, वृषभ एटला माहेलो कोइ आवीने कोइ प्र कारनी वात कहे ते वात अवश्य सत्य थाय तथा स्वप्नमा धोळो सर्प जमणी भुजाने डसे तो हजार सोनैयानो लाभ थाय, वळी कोइ फल्यु फूल्यु वृक्ष तथा रायणनु वृक्ष तेना उपर पोते चड्यो एवु स्वप्नमा देखे तेने घणु धन मिले वळी गधेडो, उट, भैंस भैंसो एमना उपर एकलो हु चड्यो छु एवु स्वप्न देखे तो ते तत्काल मरण पामे, वळी जे पुरुष धोळा का डा वाळी धोळा चदननु विलेपन करेली एवी स्त्रीने हु भोगवु छु एवु स्वप्न देखे तो तने सर्व प्रकारनी लक्ष्मी मिळे वळी जे राता वस्त्रवाळी, राती चदन कृष्णगध विलेपन वाळी स्त्री भोगवु छु एवु स्वप्न देखे तो तेनु लोही सुकाइ जाय, वळी जे रत्नना, सोनाना अने सीसाना दरवाजो उपर हु चड्यो छु एवु देखे तो ते अवश्य समकित पामीने मोक्ष मा

तथा जे स्वप्नमा दारु प्रमुखनो घडो जाणे मे उपाड्यो छे एवो पोता
त्र स्माने मान तो ते समकित पामीने त्रीजा भवमा मोक्ष जाय ॥ हिवे
ागळा देवीये जे चौदे स्वप्न दीठा तेनु फळ तो आ प्रमाणे छे जे प्र
म स्वप्नमा चार दंतोशळवाळो हाथी दीठो ते देखवाथी ए पुत्र महा
ारूपी थाशे वळी दान, शील तप अने भाव रूप चार प्रकारना
र्मनी प्ररूपणा करशे, वळी चोसठ इंद्र तथा गजपति जे राजाओ ते एना
रणकमळने सेवशे ॥ वळी बीजे सुपने वृषभ दीठो तेथी तुमोने धर्मधोरी
त्र थशे एटले भरतक्षेत्रने विषे जेम करषणीओ वृषभ थकी धान्यनु बीजवार
ेम ए पुत्र बोधरूप धान्यनु बीज वावशे ॥त्रीजे सुपने सिंह दीठो तेथी निर्भय
अने शूरवीर त्रण भुवनमा पोतानी आज्ञा मनावशे एवो ए पुत्र थाशे एटले
जेम सिंह होय ते श्वापद जीवोथी विनाश पामतु एवु जे वन तेनु रक्षण करे
तेम ए पिण सम्यक प्ररूपणा रूप सिंहेकरी कुदृष्टि जे मिथ्यात्वरूप श्वा
पद जीवो ते थकी नाश पामतु एवु जे भव्य जीवरूप वन तेनु रक्षण करशे
अथवा आठ कर्म अने आठ मदरूप श्वापदोनो नाश करशे, वळी त्रण भु
वनने विषे पोतानी आज्ञा मनावशे ॥ चोथा सुपनामा लक्ष्मीदेवता दीठी
तथा त्रण जगतनी तीर्थंकर लक्ष्मीनो भोक्ता थशे एटले वरसीदान देइ दी
क्षा पामी केवल रूप लक्ष्मी पामीने आठ प्रातिहार्य रूप तीर्थंकरनी ल
क्ष्मीने भोगवशे ॥ पाचमा सुपनामा फूलनी बे माळाओ दीठी तेथी सत्पु
रुषोने माथे पूज्य पण भोगवशे एटले जेम फूलनो तुरो मस्तके धराय छे
तेम एनी आज्ञा पिण सर्व भव्यजीवो मस्तके धरशे तथा बे माळा दीठी
माटे एक श्रावकनो अने बीजो साधुनो एवा बे प्रकारना धर्म कहेशे ॥
छठा सुपनामा चंद्रमा दीठो तेथी ए सौम्य दर्शन वाळो थशे, शीतल प
रिणामवाळो थशे, भव्यजीव रूप कुवलयनो बोध प्रकाश करवाने चंद्रमा
सदृश थशे ॥ सातमा सुपनामा सूर्य दीठो तेथी मिथ्यात्वरूप अंधकारनो
हंता थशे तथा पोते प्रभामंडळे करी अलंकृत थशे ॥ आठमा सुपनामा-
ध्वजा दीठो तेथी कुळमा ध्वजा समान उत्तम थशे तथा धर्मध्वजाये करी

बिराजमान थशे, जगतने चारे दिशायें धर्मध्वजाये करी शोभावशे ॥ नवमां सुपनामा पूरण कलश दीठो तेथी संपूर्ण गुणी थश ... धर्मरूप प्रासाद उपर कलश चडावशे ॥ दशमा सुपनामां पद्मसरोवर दीठु तेथी जगतना तापने हरवावाळो थाशे तथा चालतां थका एना पगतले देवता ओ सुवर्णकमल थापशे ॥ इगीआरमा सुपनामा खीरसमुद्र दीठो तथी गंभीर हृदय वालो थाशे तथा केवल ज्ञानरूप रत्न पामीने चौदे राजलोकना जाण थशे ॥ बारमा सुपनामा देवविमान दीठु तेथी देवताओनो पूजनीक थाशे एटले वैमानिक पर्यंत चार निकायना देवताओ एनी सेवा करशे ॥ तेरमा सुपनामा रत्ननी राशी दीठी तेथी देवता त्रणगढ करशे, तिहां बेशी भव्यजीवोने धर्मदेशना आपशे ॥ चौदमा सुपनामा निर्धूम अग्नि दीठो तेथी दीप्तिवंत थाशे तथा तेजवंत थाशे तथा जेम अग्नि कंचनने शुद्ध करे छे तेम ए तुमारो पुत्र आत्माना शुद्ध स्वभावनी शुद्धि करनारो थाशे भव्यजनोना मन शुद्ध करशे, कर्ममलने बाली नाखशे ॥ तथा ए चौदे सुपना दीठा तेथी चौदेराज लोकनो स्वामी थाशे ॥ एवा चौदे सुपनामांथी एवा फलवालो तुमारो पुत्र थशे ॥ वली स्वप्न पाठको कहे छे के हे देवानुप्रिया अमारा सुपनशास्त्रमा बेंतालीश स्वप्न सामान्य अशुभ फलदायक कह्या छे अने त्रीश स्वप्न उत्तम महोटा फलना देवावाला कह्या छे सर्व मिली बोहत्तर स्वप्न कह्या छे तेमांथी श्री अरिहंत अने चक्रवर्त्तिनी माता अरिहंत अने चक्रवर्त्ति गर्भमा आव्यां थका त्रीश महोटा सुपनामांथी गज वृषभादिक चौदे महोटा स्वप्न देखे ॥ ७४ ॥

अने वासुदेव गर्भमा आवे तेवारे वासुदेवनी माता ए चौदे महोटा सुपनामा माहेला कोइ पिण सात स्वप्न देखे ॥ ७५ ॥

बलदेव गर्भमा आवे तेवारे बलदेवनी माता ए चौदे महोटा सुपनां माहेला गमे ते चार सुपना देखे ॥ ७६ ॥

मडलिक राजानी माता ए चौदे सुपना माहेलु एक सुपनु देखे ॥ ७७ ॥

हिवे बेतालीश मध्यम अने त्रीश उत्तम सुपना जे पूर्वे कह्या तेना नाम

हे छे, तिहा प्रथम बेतालीश सुपनाना नाम कहे छे, गधर्व, राक्षस,
पिशाच, मुकम, महिष, अहि, वानर, कटकद्रुम, नदी, खजूर, र-
न, उट, खर मिनकी, श्वान, दोरड, संगीत, धीग, ऋषभ, अस्थि,
न, तम, कस्त्री, चर्म, रक्त, अश्म, वामन, कलह, विविक्तदृष्टि,
शोष, भूकंप, ग्रहयुद्ध, निर्घात, भग, भूकंप, तारापतन सूर्यचंद्र
र, महावायु, महाताप, विस्फोटन, दुर्वाक्य, ए बेतालीश माठा सुपना
शुभ फल दायक जाणवा, हिवे त्रीश उत्तम सुपनाना नाम कहे छे, अर्ह
बौद्ध, हरिकृष्ण शम्भु, ब्रह्मा, स्कंद, गणेश, लक्ष्मी, गौरी, नृप,
ती, गौ, वृषभ, चंद्र, सूर्य विमान, गेह अग्नि, स्वर्ग, समुद्र, सरोवर,
ह, रसाल, गिरि, ध्वज, पूर्ण घट, पुरीष, मांस मत्स्य, कल्पद्रुम, ए त्रीश
ना शुभ फलदायक जाणवा, ए बधा मिली बोहोत्तर सुपनाना नाम कह्या

हिवे जे पुरुष स्थिरचित्तवालो होय, जितेंद्रिय होय, पचेंद्रिय जेणें वश
कीधा होय, शांत मुद्रावालो होय, वली धर्मरागी होय, धर्मानुरागी
होय, धर्म उपर श्रद्धावंत होय दयावंत होय, इत्यादिक उत्तम गुण
गुणी होय, तेने जे सुपनु दीठामा आवे, ते मारु अथवा माठु फ
ल करे, वली रात्रिने प्रथम पहोरे स्वप्न देखे तो एक वरषमाहे फल
आपे, रात्रिने बीजे पहोरे सुपनो देखे तो छमास माहे फल आपे, रात्रिने
त्रीजे पहोरे सुपनो देखे तो त्रणमास माहे फल आपे, रात्रिने चोथे पहोरे
स्वप्न देखे, तो एक मासमाहे फल आपे, रात्रिना अंतनी छेल्ली बे
घडी मात्र रहे तेवारे स्वप्न देखे, तो तेनु फल दश दिवसमाहे पामे, सूर्य
उगती वेलाये सुपनो देखे तो तत्काल फल पामे, तथा जो माठु सुपनो दी
ठामा आवे तो पाछा सुइ रहेवु अने कोइनी आगल कहेवु जिण नही,
तथा उत्तम सुपनो देखी गुरुआदिक आगल कहेवु, जो संभलाववा योग्य
गुरु आदि न मिले तो गायना कानमा पिण संभलाववु, भलु स्वप्न देखी
ने सुवे तो निष्फल थाय, भलु सुपन देखी मूर्ख जन आगल तो सर्वथा
पण न कहेवु, केम के जेवु फल सांभले, तेवु फल पामे, पिण उत्तम

आगलज कहेवु ते उपर मूळदेवनु दृष्टांत कहे छे, कोइएक राजानो पुत्र अणमानितो थको छे तेनु नाम मूळदेव छे पिण तेने दान आपवानु घणुन व्यसन छे तथी राजायें तेने काहाडी मुक्यो ते फिरतो फिरतो कोइक गा मे आव्यो पोते महाधर्मवन जैनमति छे परतु खावाने नहतु तेवारें शहे रमां याचवाने गयो तिहा फिरता एक वाणीयायें नेंशने अर्थे उडद रा ध्या हता ते मूळदेवने आप्या तेने लेइ वाडीमा आव्यो अने मनमां चितवतो बेगे जे कोइ अतिथि आवेतो तेने भोजन आपीने पछी हुं भोजन करु एटलामा एक साधु पिण जून्यो थको त्यां आव्यो, ते वारे मूळदेवें ते ऋषिने देखी बाकला वोहोराबी दीधा अने पोते आन दपणे सूइ रह्यो तिहा निराबाध पणे बहो चद्रमा में गिल्यो एवु सु पु दीठु, ते स्वप्न देखीने जाग्यो अने वळी जे वाडीमा ए मूळदेव सूतो हतो तेज वाडीमा एक बावानो मठ छे ते बावाना चलायें पिण तेहज सुपनु दीठु देखीने जाग्यो प्रभातें पोताना गुरुनें कह्यो तेवारें गुरुयें क ह्यो जे तु आज गाममा भिक्षा लेवा जइश तेवारे तुजने चद्रमा जेटलो महोटो घृतें चोपडेलो रोटलो गोळ सहित मिलशे ते सांजळी चेलो राजी थइने भिक्षा लेवा गयो तेवारें तेने गुरुना कह्या प्रमाणे रोटलो मिल्यो हिवे ते वात राजकुमार मूळदेवें सांभळीने विचार्यु जे हु एनी आगल महारा सुपनानी वात जो कहीश तो मने पिण एटलुज फळ केहेशे केमके जे स्वप्न एना चेलायें दीठु छे ते में पिण दीठु छे मा टे एनी आगळ तो वात कहीश नही एम विचारी हाथमा श्रीफळ लेइने शहेरमा गुरु आगळ गयो तिहा सुपनानी वात कही तेवारें गुरुयें क ह्यो जे तु महारी दीकरी परणीश ता हु तुजने सुपनानु फळ कहीश मूळ देवे कह्यो महारी न्यात जात तो तु जाणतो नथी अने ताहारी पुत्री केम परणावे छे? निमित्तियायें कह्यो में सर्व वात जाणी छे एम कही तेने पुत्री परणावीने पछी सुपनानु फळ कह्यो के आ गामनो अपुत्री ओ राजा आजथी सातमे दिवसें मरण पामशे अने तुमे आ गामना रा

जा थाशो तेवात सांभी माळीने मूळदेव फिरी नेटज वाडीमा गयो एम करता सातमे दिवसे गामनो राजा पिण मरण पाम्यो तेवारे रा जाविना कोइने चाले नही नेथी पच एकठा थइने एवो ठेराव कर्यो के पाटवी घोडो, पाटवी हस्ति अने पाटवी प्रधान इत्यादिकने शिख गाडीने कह्यो जे जेने ए राजा करी थापे तेने राजगादीयें बेसाडीयें केमके एम करवाथी पितराइ गोत्राइ जे होय ते आगल कोइ वातो करी शके नही हिवे हाथी अने घोडो ए बे बाहेर निकलीने जे वाडी मा मूळदेव सूतो छे ते वाडीमा आवी हाथीयें गलाराट करी मूळदेवना मस्तके कलश ढोल्यो अने घोडे हणहणाट कर्यो पछी हाथी तेने सूंढथी उपाडी पोतानी पीठ उपर बेसाडीने शहेरमा लेइ आव्यो, लो कोयें तेने राजपाटे थाप्यो, माटे सारु स्वप्न दीठु होय तो उत्तम डाह्या पुरुष आगल कहेवु पिण मूर्ख आगल नव कहेवु ॥

हिवे उत्तम सुपनो मूरख आगल कहेवाथी जे दु ख थाय ते आश्रयी वणिकस्त्रीनु बीजु दृष्टांत कहे छे, कोइएक वणिकस्त्रीयें सुपनामाहे समुद्र पीधो, प्रभाते गुरु समीपें पूछवा जता मार्गमा एक सहियर मिली तेण पू छ्यु जे हे बेहेन ! गहूली लेइ क्यिा जाओ छो ? एम घणा तकारे पूछ्यु, तेवारें तेने यथास्वरुप कह्यो जे म सुपनामा समुद्र पीधो, तेनु फल गहूली करी गुरुने पूछीश, एवु सांभलतांज सहसाकार सहियर बोली एवडो मोहोटो समुद्र पीता ताहारु पेट केम फाट्यु नहीं ? एम हासी मा बोलीने चालती थइ पछी गहूली करी गुरुने सुपननु फल पूछ्यु ते वारें गुरुयें आकार इगित देखीने कह्यो के ए सुपनो तुमें मध्य कोइ आ गल प्रकाश्यु देखाय छे ? तेवारे तिणने सहियरनी वार्ता कही, ते सा भली गुरु बोल्या जे तुमें पूर्वें कोइ आगल जो न कह्यो होत, तो तुमोने भाग्यवत पुत्र थात, हिवे तो आजथी सातमे दिवसें शरीरें कष्ट थशे, माटे तुमें घरे जइ आतमसाधन करो, पछी बाइ घरे आवी आतमसाधे देवगत भइ, तेमाटे रूडु सुपनो जेना तेना आगल कहेवु नहीं

कहेवा योग्य न मिले,तो गायना कानमा कहिवें, तिण कह्या विना फल न होय तथा प्रथम शुभ स्वप्न देखी पछी माठु स्वप्न देखीयें, तो माठा सुपनानु फल पामीये,एम परावर्त्त जाणवु तथा कोइ सिंहें अथवा घोडे अथवा सुवर्णे जोतरयो रथ तेना उपर पोतें बेठो छे एवु सुपनु देखे, तो राजा थाय, घोडा, वाहन, वस्त्र, घर, कोइ लेइ जाय छे, एव स्वप्न देखे, तो रा जभय, शोक, बंध, विरोध अर्थहानि थाय सूर्य चद्रनु बिंब गिल्यु पीधु देखे, तो समुद्र पर्यंत पृथ्वीनो धणी थाय तथा उगले गमे बे ठो, नदीतीरें शाल्नु करु छु एवु स्वप्न देखे, तो समस्त देशनो पति थाय पोतानी स्त्रिनु हरण देखे, तो धननो नाश थाय, उजले सर्पे जिमणी भुजायें डंक दीधो, एवु स्वप्न देखे, तो रात्रिमा सहस्र सोनैया पामे मनुष्यना मस्तक, चरण, भुज खाउ छु एवु स्वप्न देखे तो रा ज्य पामे काली गाय, अश्व, गज, प्रतिमा देखे, तो, सारु थाय अने बीजी काली वस्तु देखे, तो माठी जाणवी तथा माठु स्वप्न देखी दे वनी पूजा देखे, तो सारी वस्तु पामे, भ्रो, अक्षत, चदन देखे, तेने मा गलिक थाय वली राजा, हाथी, घोडो, सुवर्ण, वृषभ, गाय, एटला वाना स्वप्नमा देखे, तेनी कुटुब वृद्धि थाय रथें बेठो जाय, त राजा थाय, तांबूल, दधि, वस्त्र चदन, आइ, बकुल, कुंद, मचकुद, फूल, द श, एटला वाना देखे, तो धनागम थाय दीप, पाना, फल, पद्म, क न्या, छत्र, तथा ध्वज हारादिक आभरण देखे, तो लक्ष्मीनो लाभ थाय हरण, महरण, भूषण, मणि मोती, कनक, रूपु तथा धातुपा त्रन हरवु देखे, तो तेने धननी हानि थाय बारणा, जोगल, हिंडो लो, पावडी, घर भाग्यो देखे, तो तेने स्त्रीनो नाश थाय पगरखा तथा छत्र लाधा देखे, अथवा तीक्ष्ण तरवार देखे, तेने मार्ग चालवु थाय, जे बाहाणमा चढ्यो, ते वाहाण भाग्यु ने पोतें तरी नीकले एवु स्वप्न देखे, ते परदेशें जाय, तिहा धन पामी आवे आमने नेत्ररोग, रोमच्छेद देखे, तो धनक्षय थाय, भेंशो, उंट उपर चढी दक्षिण दि

शायें जाय, तेनु शीघ्र मरण थाय कमलाकर, रत्नाकर जने पूर्ण न दी, तथा मित्रनु मरण देखे, तो घणु द्रव्य पामे, क्वाथ पीयु छु एवु देखे, ते अतिसार रोगें मरण पामे, वळी जात्रायें जाय, पूजा करे, तेने कुलवृद्धि थाय इ; सरोवरें कमळ उग्या देखे, ते कोढ रोगें मरण पामें, हाथी, घोडो, गादलु, सिंहासन तथा वरना वस्त्र एटला वाना गया देखे तो राजानो जय थाय, हथीयार, आभरण, माणि, मोती, सोनुं अने रूपु एटलां वानानो नाश थतो देखे तो तेनु धन अने मान बे वाना जाय. जे पोतानी भार्याने कोइ लेइ जाय छे एवु देखे तो तेनी संपदानो नाश थाय, पोतानी स्त्रीने कोइ पराजय करेछे एवु देखे तो क्लेश उपजे, गोत्रमाहेली स्त्री कोइ लेइ जतो देखे तो तेना जाइ मनुष्य नवीवाने पडे, पोतानो ढोलीयो अने घोलु वस्त्र स्वमना दे खे तो पोताने पीडा उपजे, कोइ मनुष्यना पगनु हुं मास भक्षण करुं छु एवु स्वप्न देखे तो राजा थाय, पद्मसरोवर, समुद्र अने नदी उत रतो देखे तो घणु द्रव्य पामे वळी उनु पाणी, गायनु छास गोळमा भेळवेलु पीधु एवु देखे तेने अतिसार रोग थाय तेथी मरण पामे, देवमूर्तिनी पूजा करुं छु, यात्रा करुछु एवु देखे तेने सर्वप्रकारें ऋद्धिथाय हृदय उपर कमळ उग्यु देखे तो तेनु शरीर कोढरोगे विनाश पामे इत्यादि ॥ माटे हे देवाणुप्रिया! त्रिशलाक्षत्रियाणीयें जे चौदे महोटा स्वप्न दीठा ते उदारकारी, मंगळकारी छे तेनु फल हे देवाणुप्रिया! अर्थनो लाभ थाशे भोगनो लाभ थाशे, पुत्रनो लाभ थाशे, सुखनो लाभ थाशे तेमाटे हे देवाणुप्रिया! निश्चे ए त्रिशला क्षत्रियाणीने नव महीना अने साडासात दिवस व्यतिक्रम्यानतर तुमारा कुळमां ध्व जा समान, दीपकसमान, मुकुटसमान, पर्वतसमान, तिळकसमान, कुळनी कीर्तिनो करवा वाळो, कुळना निर्वाहनो करवा वाळो, कुळमा सूर्यस मान तेजवत, कुळनो आधार, कुळना यशनो करवा वाळो, कुळमा वृ क्ष समान, कुळपरंपरानी वृद्धि करवा वालो, जेना हाथ पग घणा सु

कोमल छे एवो वली कोइ इंद्रिये हीन नहीं, लक्षण व्यंजन गुण सहित मानोन्मान सहित, संपूर्ण सर्व अंग जेनो सौम्याकार, वल्लभकारी जेनु दर्शन छे एवो पुत्र थाशे ॥ ७८ ॥

वली ते बालक बाल्यावस्था छोडीने ज्यारे विनय विज्ञान पणो युवान अवस्था पामशे त्यारे शूरवीर, पराक्रमवान, घणा हाथी घोडा रथ प्रमुख सेनानो मालक, चार अंत पृथिवी सुधी राज्य करवा वालो एवो चक्रवर्त्ति राजानो राजा थाशे अथवा त्रण लोकनो नाथ धर्मचक्रवर्त्ति एवो तीर्थंकर थाशे ॥ ७९ ॥

ते माटे हे देवाणुप्रिया त्रिशला क्षत्रियाणीयें यावत् मंगलकल्याणकारी, स्वप्न दीठा ॥ ८० ॥

तेवारें सिद्धार्थराजा ते स्वप्न लक्षण पाठकोना मुखथी एवो अर्थ सांभली करीने हृदयमा हर्ष संतोष पाम्यो थको हाथजोडी अंजली करीने स्वप्न लक्षण पाठकोने कहेतो हुवो ॥ ८१ ॥

एमज थवानु छे, हे देवाणुप्रिया एवोज ए अर्थ छे, जूठो नथी, में वांछ्यो तेज प्रमाणे तुमारा मुखथी ग्रहण कर्यो, जे तुमे कहो छो ते सत्य छे एम कहे, आ वचन उपर कोइक टीकाकारे सोमराजानी वारमा एक गांगो तेली थयो छे तेनु दृष्टांत आपेलु छे परंतु ते पाछलथी थयेलो छे अने आ वातनो प्रथमनी छे तेथी ए दृष्टांत मलतु नथी पिण उपनयनमां मिलती वात छे वली दृष्टांत होय ते एक देशीय होय माटे लोकोने आनंदने वास्ते जो पिण अर्वाच्यादिकोमा नथी तो पिण लिखी मूकीये छैयें तद्यथा ॥ सिद्धार्थराजा कहे छे के सुसिद्धिनु केहेवु ते सर्व स्थानके सिद्धज थाय छे जेम गांगो तेलीने थयु छे, ते गांगो तेलीनी कथा कहे छे, कोइ एक विद्यार्थि दक्षिणदेशमा प्रतिष्ठानपुर नगरने विषे कोइ एक ब्राह्मणनी पासेथी त्रीश वर्ष पर्यंत विद्या भणीने अहंकारमा आव्यो तेवारे माथा उपर अंकुश धारण कर्यो तथा गर्वेने विद्याये करीने महारो पेट फाटी जा(य तेना भयथी पाताना पेटने पाटो बाध्यो, वली जो कोइ वादी महारा

थे वाद करता नाशिने आकाशमा जाय तो तेने निसरणी उपर चडी
वो पटकी आपु एवा गर्वे करी एक नीसरणी पिण पोतानी पासे
खी, वली वादी जो नाशिने पातालमा प्रवेश करी जाय तो तेने खो
न बाहार काहाडीश एवा अभिमानथी एक कुदाली पिण पोतानी
मे राखी तिहा निसरणी तथा कुदाली एक चाकरना माथा उपर
पी तथा वली जो कोइ वादी महारा सार्थे वादमा हारी जाय तो
ना मुखमा तृण रखावी देवु एवा विचारथी एक माणस घासनो पु
ो लेइने तेनी पिछवाडे पिछवाडे चाले एवा आडंबर सहित चालतो
को दक्षिण, गुजरात, मारवाड, मेवाड इत्यादिक देशोना पडितोनी सा
पे वाद करी तेने जीताने सरस्वती कठाभरण इत्यादि बिरुदावली
बोलावतो थको सर्व गामोना पडितोने जीततो थको अनुक्रमे मालव
देशमा उज्जेणी नगरीना भोजराजानी सभामा पाचशें पडित छे एवी वात
साभलीने ते पडितोनी सार्थे वाद करवा सारु उज्जेणीयें आव्यो तेने रा
जायें महोटा आडंबरथी नगरमा प्रवेश कराव्यो, रुडा महेलमा उ
तारो आप्यो. पछी ते पडित राजानी सभामा आवी पडितोनी सार्थे वाद
करीने राजानी समक्ष कालिदास मात्र आदिक पाचशें पडितोने जीत्या
तेवारें राजाये विचार्यु जे आ महोटो आश्चर्य थयो जे परदेशी ब्राह्मणें
आवीने महारा सर्व पडितोने हरावी दीधा तेथी महारा पडितोना मा
ननी हानी थइ एवो चिंतातुर थइने क्रीडा करवाने अर्थे जावा लाग्यो
मार्गमा जता रस्तामा एक नेत्र वालो कानो एक गागेतेली घाणी उपर
बेठो छे ते घाणीमाथी तेल लेइने बीजो एक जुदो घडो हतो तेमा ना
खे पिण तेलनु एक टीपु मात्र बाहेर पडता दीठे नही एवा काणा
घाचीने देखीने राजाये विचार्यु जे आ काणानी बुद्धि जुओ केनी
छे! तो ए काणानी अक्कलनो तो पारज नही होय एम कहेवु तेज
सत्य छे पछी राजायें तेने बोलावीने पूछ्यु के अरे तुं भट्टाचार्य सांथे
विवाद करीश ? तेवारें ते बोल्यो हा महाराज! हु वाद करीश एवा

महारु शु प्रधानु छे ? ए भट्टाचार्यनी साथे वाद करवो काइ महोटी वात नथी जो जोरावर जबर देखीश तो पिण अटपटा न्यायथी तेने जीती लेइश पछी राजाये आदितवारने दिवसे भट्टाचार्यने बोलावीने कह्यो के हे भट्टाचार्य! महारा जे साधारण भट्टो हता तेने तुमे जीत्या पिण हजी महारा पासे तोनो जे आचार्य छे तेनी साथे जो वाद करो अने जीतो तो हु जाणु के तुमे खरा पंडित छो तेवारे दक्षिण भट्टाचार्ये कह्यो हा राजन्! हु तेनी साथे पिण वाद करीश माटे ते किहाछे तेने आही बोलावी लावो तेवारे राजायें भट्टाचार्यने आसन आपी बेसाड्यो पछी कालीदास, क्रीडाचन्द्र प्रमुख पंडितोने एकठा करीने कह्या के जाओ पंडितजाने लेइ आवो तेओये जइ गागातेलीने भट्टाचार्यनो वेश कराव्यो, घरेणा पहेराव्या अने शरीरमा तो ते, प्रथमथीज मातेलो मदोन्मत्त हाथी सरखो छे तेने पालखीमा बेसाडी पाचशें पंडितोये परवर्यो थको राजसभामा लाव्या, राजायें उठी अंदर दीधो, सर्व सभा उठा उभी थइने महोटा सन्मानथी सिंहासन उपर बेसाड्यो तवारे दक्षिण भट्टाचार्ये तेने जोइने विचार्यु जे आतो मातेलो छे अने हुतो शरीरे दुबलो छु तेथी एनी साथे वाद करता पार पावे नही माटे एना साथे वचननो कलह करवो नही मात्र तरत्म पूछवु एम चितवीने एक आंगुली उंची करी तवारे भोजराजाना भट्टे क्रोधकरीने बे आंगुली उंची करी ते जाइ दक्षिण भट्टाचार्ये चमत्कार पामीने पांच आंगुली उंची करी वेरा बनावी ते जोइ गागातेलीयें मुठी जोडी बनावी तेवारे दक्षिण भट्टाचार्ये पोताना मस्तक उपरथी अंकुश उतारी नाख्यो, पेटे पाटो बाध्यो हतो ते छोडी नाख्यो अने निसरणी तथा कुहाडो पिण नाखी दीधा, तृणनो पूलो बाली नाख्यो, समस्त माननो त्याग करी सर्व सभा समक्ष भोजराजाना भट्टने पग लाग्यो अने कहेवा लागो के महोटी आश्चर्यनी वात छे जे में कोइए पण जीत्यो नही पिण तू महोटो पंडित माटे तें मुजने जीत्यो ते जोइ भोजराजा विस्मय पामीने दक्षिण भट्टाचार्यने पूछ्युं के तुमे केवा प्रकारनो वाद करयो तेवारे भट्ट बोल्यो के तुमारे

ष्ट महाज्ञानवान् छे कारणके मे एनी सार्थे समस्यायें वाद करच्यो जे ध्या
जगतमा एक शिव छे एवु स्थापन करवा मारु एक आगुली तुमारा ज
हने बतावी तेवारे तुमारा भट्टे ने आगुली देखाडी नेथी हु समजी गयो -
के मात्र शिवज नथी पिण शिव अने शक्ति ए बेउ छे पछी वली में कह्यो
के इंद्रियो पाच छे तेथी पाच आगुली बतावी तेवारे आपना जट्टाचार्यै
मुठीजोडीने बतावी तेथी हु समजी गयो के पाचइंद्रियोतो खरा पिण तेने व
श राखवा जोइयें तेवारें में जाएयु जेए पडित त्यागी ज्ञानी अने जितेंद्रियछे
एवीरीते वाद थयो तेमा हु हारीगयो एना समान बीजो पडित में
क्याय पिण दीठो नही एवु कहीने दक्षिणजट्टाचार्य मानभ्रष्ट थयो
थको पोताने देशे चाल्यो गयो, पाछथी जोजरानायें गांगातेलीने
पुछ्यु के तें केवा प्रकारनो वाद करच्यो अने केवीरीते जीत्यो तेवारें
तेणे बोल्यो के महाराज दक्षिणजट्टाचार्य घणो ग्वरात्र माणस छे मने
कहेवा लाग्यो के ताहारी एक आख छे ते हु फोडी नाखीश एवु म
नमा लावीने एक आगुली उचीकरी तेवारें में बे आगुली उची करी
ने समजाव्यो के तुतो एक आख फोडतो पिण रही जाइश परंतु हु
ताहारी बे आखो फोडी नाखीश त्यारे मने पचो देखाडी बोल्यो के, हु
पने थाप मारीश तेथी ताहारु मोहोडु फिरी जाशे तेवारें में मुठीवाली ब
तावीने हु तुमने एक मुठी मारीश तो तु पाताळमा पेसी जइश एवी वात
तेलीना मुखथी साजलीने राजा प्रमुख सर्व सज्जने हसवु आव्यु अने
बोल्या के ए महोटो जाग्यशाली सुसिद्धिवालो छे एवु कही वस्त्रादिक प
हेरामणी आपी सन्मान देइ गांगा तेलीने घेर पोहोचतो करच्यो ए री परे
सिद्धार्थ राजा कहे छे के हे स्वप्न पाठको ! तुमे सुसिद्धि कहो तेथी महा
रे तो तुमारु कहेवु सत्य थाओ एवु सिद्धार्थराजाए स्वप्न पाठकोने क
हीने कहीने ते स्वप्नाने रुडीरीते धारण करीने ते स्वप्नलक्षण पाठकोने
प्रथम असन पान खादिम स्वादिमादिक चार आहार जिमाडीने फूल
फल गंध माळा अलंकारादिकें करीने सत्कार सन्मान आप्युं ते, सत्कार

सन्मान आपीने घणी अजीविका जीवे तिहां सुधी रहया करे एवो करी दीधी अर्थात गाम प्रमुख आपीने शीख आपी ॥ ८२॥

तेवारपछी सिद्धार्थ क्षत्रियराजा सिंहासन थकी उठीने जिहां त्रिशलाक्षत्रियाणी पडछीमा बैठी छे त्या आवीने कहे छे ॥ ८३ ॥

एवो निश्चय हे देवाणुप्रिया स्वप्न शास्त्रमां बेंतालीश सामान्य स्वप्ना अने तीस उत्तम स्वप्ना सर्व बहोत्तर स्वप्ना कह्या छे ते त्रीशमांथी चौदे महोटा स्वप्ना तीर्थंकर अने चक्रवर्त्तिनी माता देखे अने एज चौदे स्वप्न मांहेला सात स्वप्ना वासुदेवनी माता देखे अने चार बलदेवनी माता देखे, एक मडलिकराजानी माता देखे, एवु स्वप्न पाठके कह्यु ने जे तुमे चौदे स्वप्ना दीठा ॥ ८४ ॥

ते तुमारे चक्रवार्त्त तथा तीर्थंकर होवावाळो पुत्र थाशे ॥ ८५ ॥

ते पछी त्रिशलादेवी ए अर्थ सांभळीने हृदयमा खुशी थइ थाव स्वप्नानो अर्थ धारण करीने ॥ ८६ ॥

सिद्धार्थ राजानी आज्ञा लेईने नाना प्रकारना मणिरत्नोना आसनथी उठीने तावोद रहित यावत् राजहस सरखी गतियें चालती थकी ज्या पोतानु भुवन छे तिहां आवीने पोताना मंदिरमा प्रवेश करती हुई ॥ ८७ ।

जे दिवसथी श्रमणभगवत श्रीमहावीरस्वामी ते राजानाकुलमा हरिणगमेषी देवें संहराया ते दिवसथी वैश्रमणनामे इद्रमहाराजनो जे भडारी जेनुं लोकोमां धनद एवु नाम छे ते जेनी तेना हुकुमना उठाववा वाला एवाजे तिर्यक लोकनिवासी वैताढ्यपर्वतनी मेखलाये रहेनारा व्यतरनिकायना तिर्यकमृजक देवता ते शक्रेंद्रना हुकुमथी घणाजनथा एवा जे जुनाधन थइ्या महानिधान ते केवा धन लोके जे धनना स्वामीहीण थइ गया, जे धनना संचय करवा वाला घडाववा वाला मरण पामी गया छे, तेमनो कोइ गोत्री पिण रह्यो नथी, सर्वथा ते धनना स्वामी विच्छेद गया, डाटवा वाला विच्छेद गया, डाटवा वालाना कुलगोत्र पिण विच्छेद पाम्या तेमनु धन, ते हिवे जे स्थानके गाडीने मरीगया ते स्थानको

मां नाम कहे छे ग्रामबुधिनी गुण जिहा जना रहे तेने गाम कहीये जिहां धडावीने मरीगया ते धन तिहाज रहीगयु ते धन तथा जिहां कर नही लागे तेने नगर कहीये, धूलनो कोट जिहा होय तेन खेट कहीये, खोटु नगर ते कर्बट कहीये, श्रखी बे कोश उपर जे गाम होय ते मडप कहेवाय, जेने चारे बाजुये गाम वसे ते द्रोणमुख कहे वाय, जळमा अने थलमा थइने मार्ग जाय ते पट्टण कहीये, जिहा तापसोनु वसवु होय तेने आश्रम कहीयें, तीर्थस्थानके जे गाम होय तेने सबाह कहीयें सार्थवाहने उतरवानु स्थानक होय तेने सन्निवेश क हीये एवा प्रकारना गामोने विषे सिंघोडाने आकारे रस्ता होय तेने विषे तथा त्रिवाटने विषे, चोवटाने विषे तथा घणा मार्ग जिहा भे ळा थता होय तेने चच्चर मार्ग कहीये तथा चौमुखा देवोना मंदिरमां, महोटापथ एवा राजमार्गने विषे देवकुळमा, सभामा, पाणीना स्थानक मा, बागमा, उद्यानमा, वनमा, वनखडमा, एकजातिना वृक्ष होय ते ने वनकहीयें, अनेक जातिना वृक्ष जेमा होय तेने वनखंड कहीयें, म शाणमा, सूनाघरमा पर्वतनी गुफाओमा, होमना स्थानके, पर्वतनी शि ला खोदेली होय तेमा क्षेमवानी शाळामा लोकोने वसवाना स्थान कोमा एटला स्थानके घालेला जे धन ते सर्वजगाओना धन लेइ, लइ ने सिद्धार्थ राजाना घरमा नाखो एवो इद्रमहाराजनो हुकुम थयो, ते वारे तिच्छीलोकना वसवा वाला तिर्यकजृभक देवता ते सर्वधन लेइ ल इने सिद्धार्थराजाना घरमा नाखे ॥ ८८ ॥

जे रात्रीमा श्रमणभगवान श्रीमहावीर स्वामी ज्ञानकुल जे सिद्धार्थ राजा तेना कुलमा आव्या ते रात्रियी माडीने सिद्धार्थराजा, सोनेकरी, रूपेकरी, धनेकरी, धान्येकरी राज्येकरी, देशेकरी वाहनेकरी, कटके करी, पाखी समुखेकरी, भंडारेकरी, धान्यना कोठारेकरी, पुरेकरी, अ तेउरजे राणीयोनो परिवार तेणेकरी, देशवासी लोकोयेकरी, यशवातेकरी घण घणु वध्यो, वृद्धि पाम्या तथा घणो धान्य गणवामा आवे एवा बे

बीश प्रकारनां धान्य तेनां नाम कहे छे जव, गहु, शालि, मीहि, साठ कोद्रवा, सामो, कांग, राल, तिल, मुग, उडद, अलशी, चणा, तिउडा, वालै, सिलिंद, राजउडद, उच्छु, मसूर, तुअर, कुलथी, धाणा, कलायरो इत्यादिक प्रकारना धान्यथी तथा बीजा पिण सोनु, रूपु, रत्न, मोती, मणि, दक्षिणावर्त्त शख, राजवर्त्त, शिला, मुगिया, लाल, रत्न, पद्मराग आदिके करी वध्यो वृद्धि पाम्या तथा प्रीति, सत्कार, समुदायें करीने घणा घणाज वध्या, वृद्धि पाम्या, तेथी श्रमणभगवंत श्री महावीर स्वा मीना मातापिताओना मनमा एवो हर्ष विचार उपन्यो ॥ ८९ ॥

के जे दिवसथी अमारे आ पुत्र कूखमा आव्यो छे ते दिवसथी लेइने अमे सर्व प्रकारें पूर्वे कह्या एवा सोनां रूपा प्रमुख वस्तुये करी वध्या, प्री ति सत्कारें करी घणाघणाज वध्यां, माटे जेवारें अमारे घरे आ पुत्रनो जन्म थाशे तेवारें अमे ए छोकरानु नाम जेवा एमा गुण छे तेवु आपीशु वृद्धिपणाना गुणेकारी वर्द्धमान एवु नाम स्थापन करीशु ॥ ९० ॥

तेवारें श्रमणभगवत श्रीमहावीर स्वामी पोताना मातानी उपर अ नुकपा एटले दया लावीने विचारयु जे हु जेवारे गर्भमां हालु चालु छुं तेवारें माताने दुःख उपजे छे एम चिंतवीने मातानी कुखमा निश्च ल रह्या, हाल्या चाल्या नही, कम्प्या नही, पोताना अगोपाग गो पवी राख्या एवा थया थका रह्या, इहा कवी उत्प्रेक्षा करे छे के जाणे भगवान् मोहराजाने जीतवासारु एकाते विचार करता रह्या छे के शु ? अथवा कोइ परब्रह्मनु अगोचर ध्यान करे छे के शुं ? अथवा कल्याणरस प्रत्ये पोताना आत्मगुण साधवा रह्या छे के शु ? अथवा कामदेवनो निग्रह करवाने अर्थे रूपपरावर्त्तन विद्या साधता रह्या छे के शु ? एवीरीतें श्रीभगवान् मातानी कूखने विषे रह्या ते तुमोने क ल्याणरूप लक्ष्मीने अर्थे थाओ इति ॥ ९१ ॥

तेवारें त्रिशलामाताना मनमा एवु थयु जे महारो गर्भ कोइ देवता लइ गयो, । ए महारोगर्भ मरण पाम्यो, महारो गर्भ चविगयो, महारो गर्भ गलिगयो,

ए महारो गर्भ प्रथम हालतो चालतो हतो ते हमणा हालतो चालतो नथी तेथी जाणुं छं जे गर्भने कुशल नथी एवुं विचारीने मनमा संकल्प थयो, चितातुर समुद्रमा बुडच्या अने हाथ उपर मोहोडुं धरी नीचीदृष्टि राखीने घार्त्तध्यान ध्यावता लागी, ते आर्त्तध्यान आ प्रमाणे छे ते आगला आ लावामां कहे छे ॥ ९२ ॥

हिंवे त्रिशलादेवीनो शोक विचार लिखीयें छैयें ॥ अहो एटले खेदकारक वचने शोक करे छे के माहारो जे गर्भ हतो रह्यो ते हुं निश्चे अभागणी छुं, हीणपुण्यवाली छुं, अभागीयाना घरमा चिंतामणीरत्न रहे नही अथवा दारिद्रीना घरमा निधान केम रहे? जेम मारवाडमा कल्पवृक्ष रहे नही, तेम पुण्यहीणने तृषालागे तेवारे अमृतपान करवानी इच्छा थाय तो ते केवी रीते पूरण थाय? वली कहे छे के हे दैव, हे कर्म, तुं महा निर्दय छो निर्लज्ज छो, तुजने करुणा नथी, अरे पापिष्ट दुष्ट घरे निरपराधी लोकने मारवावाला, तुं महारो विना मुद्दे वैरी केम थयो? माहारो में शो अपराध करचो के जे थकी तें माहारो मनोरथरूप कल्पवृक्ष उखेडी नाख्यो, जो में कोइ ताहारो अपराध करचो होय तो हे पापी तुं प्रगट थइने शावास्ते कहेतो नथी? तें मुजने दुःखनी खाण प्राप्त करी दीधी, तें मुजने नेत्र आपीने पाछो खेंची लीधो, तें मुजने हाथमां निधान आपीने पाछो खेंची लीधो, तें मुजने मेरु पर्वत उपर चडावीने पाछी जमीन उपर नाखी दीधी. तें महारा मुखमा आवेलो कोळीयो खेंची लीधो, तें महारा निपजेला पाकेला धान्यना क्षेत्रने बाळी दीधुं, तें महारी रसकुंपिका नाखी दीधी, तें महारुं जहाज पार समुद्रमा डुबावी दीधुं, अथवा वली दैवने उलजो देवाथी शुं थाय । अरे जीव तें आगला भवमा एवा कर्म बाध्या हशे ते कर्म तुजने हमणां उदय आव्यां छे पूर्वभवमा में माताओनी पासेथी बालकोने दूर करचा हशे तथा गाय प्रमुखना वाछरुने दूध पीवा दीधुं नही, वृक्षनी डालीयो भागी मोरोवल्ली पाक कोडी, दव लगाव्या, अणगल पाणी पीवा, उदरोना ईं

ल खोद्यां, भूरुधी फास्यां, ... अने गोहना द...
तल रेडयु कीडी मकोडाना घरमां उष्ण पाणी रेडयां, पोपट मेना प्रमु
खने पिंजरांमां घाल्यां तेमनी माताना वियोग करयां, चिडा प्रमुख पंखी
ओना माळा पाडयां इंडा फोडयां जू जीव मारयां, लोकोना गर्भ उपर
द्वेष करयो, गर्भ पडाव्या, गर्भस्तंभन कराव्यां, वशीकरण, उच्चाटन क
राव्या ताहारो पुत्र मरण पामजो एवा श्राप दीधा, पापना मंत्र अने
औषध करयां, कोइने विष दीधु, कोइना रत्न चोरी लीधां, कोइनुं शी
ल भंगाव्यु, अथवा व्रत लेइने भांग्यां, कोइना गाम बाल्या, महोटा वृक्ष
धरतीमांथी उखेडी नाख्यां, महोटा तलावना शोषण करयां, अथवा
देवद्रव्य भक्षण करयां, जैनमंदिर पाड्यां, गुरुना अवर्णवाद बोल्यां,
देवगुरु उपर द्वेष करयो, दान देताने वर्जना करी, वृक्षना फल विदा
रयां अथवा अनंतकाय भक्षण करयां, काचाफल तोड्यां घणु शु कहुं!
एवा माहारे जीवे पाप करयां हशे ते पाप हमणां मुजने उदय आव्यां
छे के जे थकी महारो आवो गर्भ गली गयो, माटे हुंतो पारविनानी दु
खणी थइ जो महारो ए चौदे स्वप्ने सूचित गर्भ गयो तो हिवे माहारे
संसारमां बीजु शु सुख छे, हु राजपाटने शु करु वधारे शु कहु, त्रणलो
के पूजित एवा पुत्र विना सर्व माहारे शुनु छे, हिवे किहां जाऊं, शु सा
रु, कोनी आगल जइ पुकार करु एवा विलाप करती थकी त्रिशला
देवी यूथभ्रष्ट हरणी सरखी थइ, इहां तिवारे, नीसासा नाखे, एवी
अ व्यवस्थित थयेली त्रिशलादेवीने देखीने सखीयो पूछवा लागी के हे स्वा
मिनि! आज तु एवी केम थइ रही छो? अने तने पूछीये छैये के आ
दु खनु शु कारण छे तेवारे त्रिशलादेवी आखमांथी आंशु नाखीने निसा
सो मुकती बोली के हे सखीयो! हु तमोने शु कहु हु निर्भागणी छु,
महारु जीवितव्य गयु, तेवारे सखीयो बोली हे सखी! आवा अमंगलिक
वचन मत बोल, बीजु सर्वे रह्यो पिण ताहारा गर्भने तो कुशल छे! तेवा
रे त्रिशला बोली हे सखियो! जो महारा गर्भने कुशल होय तो बी

तु मारे तु दुःख छे एवु कहेता मूर्छा खाइने जमीन उपर पडी गइ तेवारे सखीयोए चंदनजल छिटकावीने वींजणायें वायरो करी सचे तन करीने फिरी पूछ्यु ताहारा गर्भने शु थयु तेवारें राणी गद्गद स्वरथी बोली के महारा गर्भ जतो रह्यो एवु सांभळी सखीयो पिण सर्व दुःखी थइ थकी राजाने जइ ए हकीगत कही तेथी राजा पिण दुःखी थयो, नाटक वाजित्र सर्व निषेध कर्या, सर्व शोकातुर थइ बेठा के हवे शु करीये एवा थया के तेने काइ पिण सुझे नही, तेवारे कोइक तो निमित्तियाने पूछता हुवा, कोइ ज्योतिषीया जोशीने पूछता हुवा, अने वृद्ध स्त्रीयो, शांति पुष्टि करती हुई, कुळदेवीने उलभा देती हुई के हे देवी आ वखत तु किहां गई, एवा एवा विलाप करे छे पिण त्यां कोइ शब्दथी बोले नही, स्तब्ध थया, सर्व शोकनी राजधानी सरखा थया आसुथी मुख धोता थका, निशासा न्हाता थका, दुःखे पीडाता थका, कोइने खावु पीवु पिण सूझे नही एवा स्वरूप थया तेवारें थोडी वार पछी जगवाने जाण्यु के प्रथम वाजित्र प्रमुख वाजता हता ने हमणा केम नथी वाजता? एवु जाणी अवधिज्ञाने जोयु तेवारे सर्व व्यतिकर जाणीने विचार्यु के जुओ यत ॥ किंकुर्मे कस्यवानूम मोहस्यगतिरीदशी॥दुःखदोदुरितायास्माक, दोषनिष्पत्तयेगुण ॥१॥

आ मोहराजानी गति केहेवी छे मे में तो गुण कर्यु तो आही उलटु अवगुण थयु ते उपर कलिकाळनु दृष्टांत कहेछे, जेम कोइ एक पथी परदेशथी घणु द्रव्यउपार्जन करी पोताने घरे आवतो हतो तेरामा रस्ते चालता कोइक अटवी आवी तेमा दव लाग्यो दीठो ते दवमा कोइ सर्प दाझे छे ते सर्पें पहेला वाट मार्गुने कह्यो के मुजने आ दवमाथी बाहेर काहाड्य तेवारें तेणे बाहेर काहाड्यो त्यारे सर्पे कह्यो जतो रहे हु तुजने भक्षण करीश ते पुरुष बोल्यो में तुजने दवथी राख्यो, उपकार कर्यो, मरणमाथी उगार्यो तो उलटो तु मुजने भक्षण करीश? सर्पे कह्यो आज कलिकाळ वर्त्ते छे आजना सम

धर्मा गुणनो दोष थाय तेमाटे हु तुजने करडीश तेवारे पथी बोल्यो हे धणा वर्षे घेर जाऊ छु वली माहारी पासे द्रव्य छे माटे घेरे जइ म हारी स्त्रीने द्रव्य आपी तेनी शीख मागी आऊ छु एवो कोल आपी पोताने घेरे आव्यो, स्त्रीने सर्व वात कही शीखमागीने ते पुरुष अर थीमां पाछो आव्यो, स्त्री पिण पाछलथी आवी सर्पने स्तुति करी कहे वा लागी जे अहो नागराजा महारा भरतारनु भक्षण करशोतो महारी शी वेत्र थशे, महारे शत्रु पिण घणा छे तेवारें सर्पे कह्यो ते शत्रु निवारण उपाय तुजने बतावीश, तेनी तु चिंता मतकरजे आ औषध महारा राफडा पासे छे तेनु मूल लेइ पाषाण उपरे घसीने तेना छांटा वैरी उपर नाखजे तो बलीजस्मथाशे स्त्रीयें ते औषधीनु मूललेइ, अ मृत मूलीने पाषाण उपर घसीने सर्प उपर छांटा नाखवा तैयार थ इ तेवारें सर्प बोल्यो में तुजने औषधी देखाडी तो वली मुनेज बाले छे उलटो गुण उपर अवगुण करे छे तेवारें स्त्री बोली जे गुणनो त्याइ दोष छे एवु तुमेज तुमारा मुखथी कहो छो माटे हिवे तुमारे बोलवु न ही एम कही सर्पउपर छांटा नाख्या ते बली भस्म थयो ॥

एम विचारी गर्भमाहे रह्या जगवाने एक दिशें टचली अगली ह लावीने एक दिशे हालरया तेवारें त्रिशलाजीये जाण्यु अरे महारो तो गर्भ छतो छे, अने में फोकट खोटो शोक करचो एवु चिंतवन करीने कहेती हुई के हे सखीयो ! महारा गर्भने कुशल छे, एवी वात हर्षथी कहेती हुई, में अज्ञानथी विलापात करचो, महारा भाग्य महोटा हु धन्य कृतपुण्य, हु त्रण भुवनमा मान्य, माहारु जीवधु प्रशसनीय, मने जैनधर्म फर्यो, में पूर्वे जे धर्म सेव्यो हतो ते प्रगट थयो, माहारु जी बबु सफल, सखीयो जयजय करवा लागी, अष्टमंगल मांड्या, कुंकुम छांट्या, राजाने वधाइ दीधी, राजा पिण खुशी थयो, वाजित्र वाज्या नाटक महोत्सव थया, तोरण बाध्या, बदीजन जयजय शब्द बोल्या, बदीखाना छोड्या, अनेक लोक मिल्या, मगलिकनी वातोयें करी की

लाहल थइ रह्यो, महादान आप्या, ए प्रमाणे आनंदथी राजानी राजधानी हर्षरूप थइ, सूत्रकार कहे छे के ते गर्भनु कुशल न जाणवाथी सिद्धार्थ राजाना घरमा मृदग, ताल, विणा, हस्तताल नाटक इत्यादि लोक व्यवहार एवा सर्व कार्य आनंदरहित थया हता ॥ ९३ ॥

तेवा महावीर स्वामी माताने शोकातुर जाणीने एक दिशथी हालता हुवा तेवारें त्रिशला हृदयमा हर्ष पामीने बोली ॥ ९४ ॥

महारो गर्भ हरण थयो नथी, यावत गल्यो नथी, आ महारो गर्भ प्रथम हालतो न हतो ते हमणा हाले छे, एवु कहीने हर्ष पामीने विचारवा लागी, हिवे श्रमण भगवत श्रीमहावीरस्वामीने विचार थयो जे महारा मातापिता हमणाथीज एवा प्रकारनो मोह करे छे तो जेवारे हु दीक्षा लेऊ तेवारें तो ए घणु दु ख पामे माटे हिवे महारे महारा माता पिता जीवे तिहा सुधी दीक्षा लेवी कल्पे नही एवु जेवारें साडाछमहिना गर्भने थया तेवारे भगवाने अभिग्रह लीधो अर्थात् आही साडाछमहीनानो गर्भ थयो, साडाछमहीना वीत्या ॥ ९५ ॥

तेवार पछी त्रिशलामातायें स्नान करचुं, घरे देवपूजा मगल करचा, सर्व घरेणा आभूषण पहेरच्या, हिवे गर्भप्रतिपालन करवाने अर्थे घणो पडो आहार लीये नही, घणो उन्हो आहार लीये नही, घणो तीखो सुठ मिरचादिकनो आहार लीये नही घणो कडवो निंबादिक, घणो कशायेलो हिरडा प्रमुख, घणो खाटो ते आंबली प्रमुख, घणो मीठो ते गुडादिक, घणो चोपड्यो ते घी प्रमुख, घणो लूखो ते चणा प्रमुख घणो सूको ते पूडला पापडी प्रमुख, घणो लीलो ते फल फूल कदमूलादिक इत्यादिक भोजन खाय नही, जे भोजन करे ते पिण विधि सहित करे, वस्त्रपिण विधियें करी पहेरें गधादिक विधियें लीये, माला प्रमुख विधियी पहेरे, गर्भनी रक्षाने वास्ते पोताने रोग थवा दीये नही, शोक करे नही, मोह करे नही भय राखे नही, घणा काम करे नही, जे जे काम गर्भने हितकारी होय ते ते कामकरे, मानोपेत पथ्यकरती थकी गर्भने पोषे, जे देशमा जे

चीज पाचन थनी होय, जे वाल्मा ने चीज गुणकर्त्ता होय ते पामे वा परे, एवु करे, कोमल शय्याये शयन करे, सुखासनने विषे बसे, उंची नीची फिरे नही, इत्यादिक गर्भ यत्न करे वली वाग्भट्टादिक ग्रंथोमा कहेलु छे ते कहे छे, गर्भिणी स्त्री जो वायडु न्याय एटले वायुचीज खाय तो गर्भ कुबडो थाय, आधलो थाय, वामन थाय, पित्त करनारी चीज खाय तो गर्भ पडीजाय तथा तेनु अंग पीलु थाय, कफ करनारी चीज खाय तो पाडु रोग श्वेत वर्ण वालो थाय अथवा कावरचितरो थाय तथा जो गर्भवाली स्त्री लूण घणु खाय अने आखमा काजल घणु घाले तो छो करो नेत्र रहित आधलो थाय, घणोवडो आहार करे तो वायु घणो थाय घणु उन्ह खाय तो छोकरो निर्बल थाय, मैथुन सेवन करे तो गर्भ मरण पामे, घोडा प्रमुख उपर चढे, घणी दोडे, घणी चाले, चालती पडे, पेट मसलावे, खाड प्रमुख उछळ, उनी नीची सुवे, मेडी प्रमुख उपर चडे उतरे, ऊत्कडक बेस, उपवास करे वमन विरेचन जुलाब लीये एल्ला वाना करे तो गर्भ पडीजाय, घणु रुदन करे तो छोकरो ची पडी आख वालो थाय, घणा गीत गायतो छोकरो बहिरो थाय, घणी वातो करे तो लायर थाय, घणु हसे ता मश्करो थाय, घणी गालो बोले तो छोकरो लंपट थाय ॥ तथा ऋतुऋतुमा शु शु पथ्य करवु शु खावु ते कहे छे, वर्षाऋतुमा लूण गुणकारक छे, शरद ऋतुमा जल गुणकारक छे, शिशिर ऋतुमा खाटोरस गुणकारी छे, वसत ऋतुमा घृत गोल इत्यादिक गुणकारक छे ॥ वली काइ महोटी वृद्धावस्था वाली स्त्रीयर बतावे ते रीते निशम्भराणी करे छे ते कहे छे के बाइ धीरजथी बोलो, धीरजथी चालो, क्रोध मतकरो, पथ्य खाओ पथ्य आकरो घाघरो अने कांचली बाधो नही, घणु हसवु मतकरो, चाइणीमा सूवो नही, केमके अगामे सुतांथकी पुत्र बाडो रावणखंडो थइ जाय इत्यादिक चडी घणु नीचु न चाल्वु घणी उची चडीशमा, दिवसे सुतांथकी छोकरो उघण थाय आधीओ थाय मन कापवा थकी पुन

दृशीरीयो थाय, वर्णु दोडवाथी पुत्र चचल थाय, घणु हसवाथी होठ दात, तालु अने जीभ काला थाय, घणा गीत गावाथी बहेरो थाय, घणुं वायु करवाथी उन्मत्त थाय, अति बोलवाथी बोलको थाय, अति शोक करवाथी उचाटीयो थाय, मूर्च्छाथकी निर्बुद्धि थाय, अ ति जय रासवाथी गर्भ जेकड थाय अति परिश्रम करवाथी मदश क्ति थाय अने आलसु थाय इत्यादिक वातो सर्व वडेरी कहे ते प्रमा ण त्रिशलाराणी पिण गर्भनी प्रतिपालना करे ॥ हिवे त्रिशला माता ने नवा डोहोला उपजे छे के पूजा करु, दान आपु, साहमी वात्सल्य करु इत्यादिक डोहोला सर्व सिद्धार्थराजा सपूरण करे, हर्ष सहित स न्मान करीने पूरा करे पिण एवु न कहेके तुतो बेठी बेठी फद करे छे एवीरीते डोहोलानु अपमान करे नही एम त्रिशलादेवीने उपजता डोहोलानी इच्छा सर्वथा तेना मनमा रहे नही, ए प्रकारे मिटावी आ पे छे, तिहा रयवाडी प्रमुख वनक्रीडा प्रमुखना डोहोला तो सर्व सिद्धा र्थराजाये पूर्या परतु एक दिवसे त्रिशलादेवीने एवो डोहोलो उपन्यो के इंद्राणीना कुडल सची लेइने हु पहेरु ते डोहोलो राजाथी पूरण थ यो नही तेथी मनमा दुमणी थई (अर्थात् खिन्न थइ) तेवारे राजाना पू छवाथी डोहोलो पूरो करवानी वात राणीना मुखथी सामलीने राजा क हेवा लाग्यो के ए डोहोलो पूरण करीश पिण ए वात महारा हाथमा नथी एटलामा इद्र महाराजनु आसन चलायमान थयु तेवारे इद्रे अवधि ज्ञाने जोइने भगवाननी मातानो डोहोलो पूरण करवा माटे इद्राणी प्रमुख देवागनाना समूहने लेइने क्षत्रियकुड नगरनी समीपे एक महा दुर्गम पर्वत छे तिहा इद्रपुरनामे नगर वसावीने पोताना परिवार सहित आवी रह्यो, सिद्धार्थराजाये साभल्यु जे इद्र महाराज आपणा पर्वतमा रहे छे तेवारे सिद्धार्थराजाये इद्र महाराजने केहेवरावी मोकल्यु के अमारी राणीने कुडल जोइये छैये माटे तुमारी इद्राणीना कुडल आप जो ते साभली इद्रे कुडल आप्या नही तेवारे सिद्धार्थराजा सेना लेइ इद्र सामे युद्ध करवा गयो तिहा इद्रमहाराजतो जीतवाने समर्थ छे, तो

थापि जाणी भूमी हार खाइने भागी गया पाछलथी सिद्धार्थराजायें पुकार करतो रुदन करती एवी इद्राणी अप्सराना हृदमा बेठेली हती तेना कुडल लूटीने त्रिशलाराणीने आपीने डोहोलो पूरण करचो वली बीजा पिण डाहला पूरचाके सत्तरभेदी पुजा रचावु, तीर्थयात्रा करु, देवगुरुनी भक्ति करु, सुपात्रे दान आपु इत्यादिक अनेक डोहला त्रिशलाने उपन्या ते राजायें पूरण करचा ॥

एवीरीतें त्रिशला राणी डोहोला पूरीजतो, सूवे, बेसे, उजेरहे, सघली ऋतुने विषे सेववा योग्य, गर्भने सुखना करनार, एवा भोजन आच्छादन, वस्त्र, गध माला प्रमुख लीये, गर्भना हितकारक पथ्य करी देशकाल योग्य आहार करती थकी, गर्भपोषण करती थकी पोताना परिजन जे दासी सहेलीओ प्रमुख तेमनी साथे विचरती थकी फिरती थकी पोताना आवासमा रहे छे ॥ ९९ ॥

ते कालने विषे ते समयने विषे श्रमणभगवत श्रीमहावीर स्वामी उनाळानो पहेलो चैत्र महीनो तेनु बीजु पखवाडियुं एटले चैत्रशुद्द ते चैत्र शुद्दनी तेरशने दिवसें नवमहीना उपर साडासात दिवस गया थकां इहा नवमहीनाने साडासातदिवस गर्भावासनो अधिकार छे परतु ओछो अधिको होय तोपिण पाठ एवो बोले तो तेनी काइ हरकत नथी गर्भमा रहेवानो काल तो चोवीशेतीर्थकरनो आ प्रमाणे छे —श्रीऋषभदेवजी नवमहीनाने चारदिवस रह्या, श्रीअजितनाथनी आठ महीनाने पच्चीश दिवस रह्या, श्रीसभवनाथ नवमहीनाने छ दिवस रह्या, अभिनदन आठ महीनाने अठावीश दिवस, सुमतीनाथ नवमहीनाने छ दिवस, पद्मप्रभ नवमहीनाने छ दिवस सुपार्श्वनाथ नवमहीनाने छ दिवस, चद्रप्रभ नवमहीनाने आठदिवस, सुविधिनाथ आठ महीनाने छव्वीश दिवस, शीतलनाथ नवमहीनाने छ दिवस, श्रेयासनाथ नवमहीनाने छ दिवस वासुपूज्य आठमहीनाने वीशदिवस, धर्मनाथ आठमहीनाने छव्वीश दिवस, शातिनाथ नवमहीनाने छ दिवस, कुथुनाथ नवमही

नाने पाचन्दिवस, अरनाथ नवमहीनाने आठ दिवस, मल्लिनाथ नवमही नाने सात दिवस मुनिसुव्रत नवमहीनाने आठदिवस नेमिनाथ तथा ने मनाथ नवमहीनाने आठदिवस, पार्श्वनाथ नवम नि ने छ दिवस, श्रीम हावीरस्वामी नवमहीनाने साडासात दिवस, ए चोवीश तीर्थंकरनी गर्भ स्थिति कही ॥ हिवे उच्चराशिना सात ग्रहमा पहेलो चन्द्रयोग होने छते, निर्मल दशदिशाओ ते वादला अने धूल रजे करी रहित होने छते, जनमति वेलायें अन्धकाररहित, अग्नि दावानल प्रमुख उपद्रव रहि त दिशाओ होने छते, एवा वनमां पक्षीयो सर्व जयकारी शब्द बोली रह्या छे, प्रदक्षिणावतसानुकूल शीत मन्दमन्द सुगध सहित एवो पवन भूमिमा चालीरह्यो छे पृथ्वीमा सर्वजातिनां धान्य नीपज्या छे ते ना योगें करी हर्षवत थया थका सर्वदेशोना लोक क्रीडा करता थ का विचरी रह्या छे तेकालें मध्यरात्रिना समयमा उत्तराफाल्गुनी नक्ष त्रना त्रीजा पाया सार्थे चन्द्रमानो योग होते छते रोग रहित एवी त्रिशला राणी ते रोगरहित त्रणज्ञान सहित एवा पुत्रने प्रसवती हुई ॥ ९७ ॥

॥ इति चतुर्थ व्याख्यान समाप्त ॥

॥ अथ जन्मपत्रिका स्थापना लिख्यते ॥

स्वस्ति श्री ऋद्धि वृद्धि जयोमांग ल्याभ्युदयश्च सवा सत्तिर्श्ने एकाणु ना वर्षे मासोत्तममासे चैत्रमासे शुक्लपक्षे त्रयोदशी तिथौ सौमवासरे घटी ५९, पल ११ उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र घटी ६०, ध्रुवयोग घटी ४९, पल ५९, तैतलकर्णे एव पनाग शुद्धौ श्री इष्ट घटी ४५, पल १९, इक्ष्वाकु वंशे श्रीक्षत्रिय कुंडल पुरनयरे सिद्धार्थगृहे भार्या त्रिशला क्षत्रियाणी कु क्षीपुत्ररत्नमजीजनत्, त्रण भुवन दीपक भगवत श्री महावीर जनम्या त द्य जन्म कुंडली स्थापना इति ॥

॥ अथ पंचम व्याख्यान प्रारभः ॥

जे रात्रिमा श्री महावीर स्वामी जनम्या ते रात्रिमा त्रण

देवीयो ते रागीना मात आरना आणे पगाम अपर ज्यारन पद गहा लोग तेनी परें गाणयामां गहो आवे एवो तेना शब्द होनो हुवो- अति अव्यक्त कोलाहल शब्दमय होनो हुवा एटले जेवारे प्रणामनो बोध ते वारें शब्दमय थाय पिण मालम पडे नही ॥ हिवे सूत्रना अर्थने अनुसारें विस्तार सहित जन्म महोत्सव करीये छैयें ॥ जे समयमा श्री महावीर स्वामीनो जन्म थया तेवारें त्रण जगतमा उद्योत थयो, वली आकाशमा देव दुंदुभी वाजी, वली नरकना जीवोने पिण क्षणमात्र आनंद थयो, केम के भगवानना अतिशय थकी नारकी जीवने पिण मुहूर्त मात्र शाता रहे वली स्थावर जीवोनु पिण विशेष छेदन भेदन न थाय तेथी तेने पिण सुख उपजे, जन्मती वेलाये सर्व जमीन उछासमानवी परें थइ रही हिवे श्री भगवतनो जन्म महोत्सव कहे छे तेमा पिण प्रथम छप्पन दिगकुमारिकाना आसन चलायमान थया तेवारें अवधी प्रयुंजी भगवाननो जन्म थयो जाणी, गर्वें तिहा आवे, तेना नाम कहे छे, रुचकद्वीपनी वसनारी चार दिशानी आठ आठ, तथा वे विदिशानी चार चार अने मेरुनी ऊर्ध्व दिशानी तथा गजदंत गिरिनी अधो दिशानी आठ आठ, मिली छप्पन दिगकुमारिका ते रात्रें तिहा आवे,-तेमा प्रथम भोगंकरा, भोगवती, सुभोगा, भोगमालिनी, तोयवरा, विचित्रा, पुष्पमाला अने अनंदिता. ए आठ दिगकुमारिकाओ अधोलोकें गजदंताकार पर्वतनी हेठे वसनारी छे ते आवीने भगवंतनी माताने नमस्कार करीने ईशानकोणे एक सुतिका घर बनावे एक योजन एटले चार गाओ प्रमाण धरतीने सवर्तक वायरे शुद्ध करीने, कांटा, कांकरा, दूर करीने सुगंधित करे ॥ तेवार पछी मेघंकरा, सुमेघा, मेघवती, मेघमालिनी, सुवत्सा, वत्समित्रा, वारीषेणा अने बलाहिका, ए आठ दिगकुमारिकाओ, ऊर्ध्व लोक नंदन वनना कूटोने विषे वसनारी छे, त्याथी आवीने प्रभुने तथा प्रभुनी माताने नमस्कार करीने ते सुतिका घरने विषे सुगंधित पाणीयें करी सहित फूलनो वरसाद वरसावीने गीत गाती रहे ॥ तेवा

र पछी वगी नंदोत्तरा, नंदा, आनंदा नंदीवर्द्धना, विजया, वैजयंती जयंती अने अपराजिता, ए आठ दिगूकुमारिकाओ रुचकद्वीपनी पूर्वदिशाना पर्वतने विषे वसनारी छे ते त्यांथी आवीने जगवान् तथा जगवाननी माताने नमीने मुख देखवाने प्रजुआगल दर्पण हाथमां लेइने गीत गाती उजी रहे ॥ तथा समाहारा, सुप्रदत्ता, सुप्रबुद्धा, यशोधरा लक्ष्मीवती, शेषवती, चित्रगुप्ता अने वसुंधरा, ए आठ दिगूकुमारिकाओ रुचकनामा तेरमा द्वीपनी दक्षिणदिशाना पर्वतने विषे वसनारीओ छे, ते त्यांथी आवी जिनने तथा जिननी माताने नमस्कार करीने सोनाना उत्तम कलश सुगंधित पाणीथी जरी हाथमां धारण करी जगवाननी माताने स्नान करावे प्रजु आगल गीत गान नाटारंज करे ॥ तथा इलादेवी, सुरादेवी, पृथिवी, पद्मावती, एकनासा, नवमिका, जद्रा, अने सीता, ए आठ रुचक द्वीपनी पश्चिम दिशाना पर्वतने विषे रहेनारीयो छे, ते त्यांथी आवीने प्रजु तथा प्रजुनी माताने नमस्कार करी जगवाननी माताने आगल वायरो करवाने अर्थे वींजणा हाथमां लेइ उजी रहे ॥ तथा अलंबुशा, मितकेशी, पूंडरीका, वारुणी, हासा, सर्वप्रजा, श्री अने ह्रीं, ए आठ दिगूकुमारिकाओ रुचक द्वीपनी उत्तरदिशाना पर्वतने विषे वसनारीओ छे, ते आवी जगवत तथा जगवतनी माताने नमीने जगवतनी बे बाजुयें चार चार उजी थकी चामर हाथमां लेइने प्रजुने ढोले ॥ तथा विचित्रा, चित्रकनका, तारा अने सौदामिनी ए चार दिगूकुमारिकाओ रुचकद्वीपनी विदिशाना पर्वतने विषे वसनारी छे, ते आवीने जगवत तथा जगवतनी माताने नमीने हाथमां दीवा ग्रहण करीने उजी रहे ॥ तथा रूपा, रूपासिका, सुरूपा अने रूपकावती, ए चार दिगकुमारिकाओ रुचकद्वीपनी विदिशिमा वसे छे, ते आवीने जगवत तथा जगवतनी माताने नमीने जगवतनु चार अंगुल प्रमाण नालच्छेदीने कापे पछी धरती मांहे खाडो खणीने तेमां नाखे तेना उपर वैडूर्य रत्ननो चोतरो करे, ते नी उपर दर्ज वावे तेवार पछी सूतिका गृहथकी वेगला एक पूर्व

एक दक्षिणदिशें अने एक उत्तर दिशें, ए त्रणठेकाणें त्रण केलीना घ र करे, तेमा सिंहासन रचे पछी दक्षिण दिशाना केलीगृहमध्ये भग वत तथा भगवतनी माता, ए बेहुने लावीने सिंहासन उपर बेसाडीने तेमने सुख उपजे एवु सुगंधी तेलोनु मर्दन करे, पछी पूर्वदिशाना केली ग्रहमा लेइ जइ सिंहासन उपर बेसाडी स्नान करावे, चदन लेपन क रे, पछी उत्तर दिशाना कदलीग्रहमा सिंहासन उपर बेसाडी अरणीका ष्ठथी घसीने अग्नि जगाडी चदनना काष्ठथी शांति पुष्टि होम करी, ते होमनी रक्षा पोटली करी भगवत तथा भगवतनी माता ए बेहुना हाथ मा बाधे, बाधीने हे भगवान् ! पर्वतायुर्भव एवो आशीष आपीने म णिमय गोला बे उछाले पछी तेने बजावीने भगवानने रमवामाटे पल्यक उपर बाधीने गीत गान करी भगवत तथा भगवतनी माताने जन्मस्था नकें मूकी पाछी पोत पोताने स्थानकें जाय ॥ ए एकेका दिग्कुमारिका ने चार चार महत्तरादेवी छे, चार हजार सामानिक देवो छे, सोल ह जार अगरक्षक देवो छे, सात अनीकाधिपति छे, तथा बीजा पिण घणा परिवारें परिवृतथकी एक योजनना विमानमा बेशीने प्रभुनो जन्ममहो त्सव करवाने जेम आवे, तेम महोत्सव करीने पोताने स्थानकें पाछी जाय, ए देवी भवनपतिमाहेली एक पल्योपमायुवाली जाणवी, ए दे वीयोनो एज स्वभाव छे, के तीर्थंकरनो जन्म थयाथी प्रथम एमनु आ सन चलायमान थाय तेवारें प्रभुनो पहेलो जन्ममहोत्सव ए देवीयो करे, पछी बीजा इद्रादिक देवो करे ॥ इति ॥ ५ ॥

एम दिग्कुमारिकाओयें महोत्सव कर्या पछी चोसठ इद्रोना आसन चलायमान थाय तेवारें श्रीमहावीर भगवाननो जन्म थयो एवु अवधि ज्ञान जाणीने प्रथम सौधर्म इद्र, हरणीगमेषी देवताने बोलावी बार योज न पोहोली अने छ योजन उची तथा एक योजन नाली, पाठांतरें चार योजननी नाली कहे छे ॥ यदुक्तच ॥ बारसजोयण पहुला, छुच्चोसा चयाइ च्चइउच्चत्त ॥ चत्तारिय नालाओ, देवा सयपत्त वायति ॥ १ ॥

ण्टी सुघोषा नामे घटा बजाववानो हुकुम आपे, तेवारें हरणीगमेषी
ना पाचसें देवोनी साथे ते घटा बजावे ते घंटाना शब्दथी सौधर्म दे
ोकना बत्रीश लाख विमाननी घंटा वाजे, तेवारें सर्व देवता सावधान
ई जाय॥ यदुक्त ॥ मुणिऊण सवमद्द मिलतिजवणाय वितर पडह ॥
इयि सीयनाय, घटेण विमाणिया देवा ॥ १ ॥

एम प्रमाणे इशांद्र लघु पराक्रमनामा देवता पासे सुघोषा घटा ब
डावें, एम चोसठ इंद्र सहु पोतपोताना देवोनी पासें घटा बजडावे तेवा
सर्व देवो इंद्र महाराजनु काइ कार्य छे एवु जाणीने इंद्रमहाराजनी पा
आवी हाजर थाय पछी सौधर्मेंद्र पिण पालकनामक विमान तेना मध्य
ागमा पूर्वदिशानी साहामो सिंहासन उपर बेसे तेनी आगळ इंद्रनी आ
अग्रमहिषी आठ भद्रासन उपर बेसे अने इंद्रने डावे पासे चोराशी
हजार सामानिक देवो भद्रासनो उपर बेसे जिमणा पासे त्रण पर्षदा बेसे
मा बार हजार अभ्यंतर पर्षदाना, चौद हजार मध्यम पर्षदाना तथा
ोळ हजार बाह्य पर्षदाना मिली बेतालीश हजार देवो भद्रासन उप
बेसे तथा इंद्रनी पछवाडे सात कटकना देवो भद्रासन उपर बेसे चारें
देशायें चोराशी चोराशी हजार आत्मरक्षक देवता भद्रासने उपर बे
स, एवीरीतें सर्व चोसठ इंद्रो पोतपोताना विमानमा बेठा जाणी लेवा ए
मकारें सर्व इंद्र देवदेवीओ सहित नंदीश्वर द्वीपें आवे तेमा केटलाएक
देवो इंद्रनो हुकुम राखवा सारु आवे, केटलाएक देवो मित्रना प्रेरया
थका आवे, केटलाएक पोतानी देवीओना प्रेरया थका आवे, केटला
एक तीर्थंकरनी भक्ति जाणी करी आवे, केटलाएक कौतुक जोवा सा
रु आवे, केटलाएक अपूर्व आश्चर्य जोवाने अर्थे आवे, ते देवो पोत
पोताना जूदा जूदा वाहन उपर चड्या थका माहोमाहें आपसआप
समा सिंहना वाहन उपर चडेला देवता हस्तिना वाहन उपर चडना
रा देवताने कहे छे के ताहारो हाथी दूर राख, नही तो महारो सिंह
जबरदस्त छे ते तारा हस्तिने मारी नाखशे एमज पाडाना वाहन उ

पर चडेला देवता घोडाना वाहन वालाने कहे छे तथा गरुड उपर अ सवारी करनार देव सर्प उपर असवारी करनाराने कहे छे तथा चित्रा ना वाहन उपर बेठेला देवो छे ते छागना वाहन उपर बेसनाराने कहे छे एम वचन विवाद करता कोडाकोडी देवताओ लहु पोतपोताना वा हननी प्रशंसा करता चाले छे तिहां देवसमुदायें करी आकाश यद्य पि घणु महोटु छे तोपिण साकडु थई गयुं, वली मार्गमां कोइएक देव ता मित्रने छोडी आगल चाल्या जाय तेवारें तेनो मित्र कहे के अरे थोडीवार उभा रहो हु पिण आवु छु तेवारें ते देवता कहे प्रथम भ गवानने नादवानो महोटो लाभ कोण मूके ? एवु कहीने चाल्यो जाय एवी रीते जे जबरदस्त होय ते आगल निकली जाय अने कोइएक निब लो होय ते पडता थका बोले जे भाइ आ मार्ग घणो साकडो छे ते वारें बीजो कोइ कहे चुप रहो ए पर्वना दिवस साकडाज होय छे कोइ कहे घणु नही बोल खबर पडशे तो इंद्र मारशे एवीरीतें आकाशथी हेठा उतरता थका जेवारें ज्योतिषीना तारा पासें आव्या तेवारें ताराओनी कि रणो लागवाथी कवि उत्प्रेक्षा करे छे के जो पिण देवता सर्वे निर्जर छे तो पिण जरा सहित थया मस्तकमां जाणे धोला केश उग्या के शु ? ए वा देवताना मस्तकें ताराना विमान शोभि रह्या छे ते जाणीयें रूपा नो घडोज होय नही ! वली शरीरें तारा लाग्या तेना योगें प रसेवाना बिंद सरखा दिसवा लाग्या एरीतें सर्व इंद्र अने देवो न दीश्वरद्वीपमां विमान संकोचीने रहेता हुवा ॥

हिवे सौधर्म इंद्र भगवानना जन्म घरने विषे आवीने, भगवान तथा भ गवाननी माताने नमस्कार करीने त्रण प्रदक्षिणा आपी भगवाननी माताने कहे के हे रत्नकुक्षिधारिणी! हे रत्नगर्भे! हे रत्नदीपक हे माता! पहेला दे व लोकनो हुं इंद्र छु ते ताहारो पुत्र चोवीशमो तीर्थंकर छे तेनो जन्म महो त्सव करवा सारु आव्यो छु माटे तुमे काइ डरशो नही एम कही " नमो स्तु रत्नकुक्षिधारिके तुभ्य " ए पाठ भणीनें भगवननी मातानें अवस्वापिनी

तिहा आवीने बीजो भगवान नेवुं स्वरूप करी मातानी पासे राखीने इ द्र पोताना पाच रूप वैक्रिय बनाव्या तेमा एक रूपे करी बे हाथे करसंपुटमा राखी भगवानने उपाड्या अने एक रूपे भगवतनी पिठवाडे रह्यो थको उपर छत्र धर्यु अने बे रूपें बे पासें चामर ढालवा लाग्यो, अने एक रूपें वज्र उछालतो थको भगवानननी आगल चाल्यो, एम च भा मिली पाच रूप इद्र महाराजें वैक्रिय कर्या, तेना आगळो पाछ ला रूपने वखाणे अने पाछळो आगला रूपने वखाणे, एम पाच रूपे करी इद्र महाराज, मेरुगिर उपर जिहा पाडुक वन छे, तिहा भगवतने लेइ आवीने मेरुनी चुलिकाथी दक्षिण दिशायें अतिपा डुकम ला शिलाने तळे शाश्वतु सिंहासन छे, तेनी उपर भगवानने उत्संग मा लेइने इद्र महाराज पूर्व सन्मुख बेठा, तेवारें तिहा बार देवलोक ना दश इद्र, भवनपतिना वीश इद्र, व्यतरना बत्रीश इद्र अने चद्रना तथा सूर्य, ए बे ज्योतिषीना इद्र, एम सर्व मिळी चोसठ इद्र सपरिवार मज्जनोत्सव करावावानें अर्थे मिल्या छे, ते सर्व इद्र तथा देव मिळीने पोतपोताना सेवक देवताओने आज्ञा आपे के जाओ एक हजारने आठ सोनाना कलश, तथा एक हजारने आठ रूपाना कलश, तथा एक हजारने आठ रत्नना कलश, तेमज चोथा सुवर्णरौप्यमय, पाचमा सुवर्ण रत्नमय, छठा रत्नरौप्यमय, सातमा सुवर्णरौप्यरत्नमय, आठमा माटी कामय, ए आठ जातिना प्रत्येक एक हजारने आठ आठ कलशो, क रता आठ हजारने चोसठ कलश थाय एवा सर्व मिळी अभिषेक कल शो एक क्रोडने साठ लाख होय तेनो विगत लिखीयें छैयें भवनपति ना वीश इद्र, व्यतरना बत्रीश इद्र, वैमानिकना दश इद्र, तथा अढी द्वीपना एकसोने बत्रीश चद्र सूर्य, धरणेंद्र भूतानेंद्रनी बार इद्राणी, व्य तरनी चार इद्राणी, चमरेंद्रनी दश इद्राणी, ज्योतिषीनी चार इद्राणी सौधर्म ईशान ए बेनी सोल इद्राणी, सामानिक देवोने एक, त्रायत्रिंशक नो एक, लोकपाल देवोना चार, अगरक्षक देवोनो एक, पर्षदाना त्रे

कदोरो, खेलमादलिया, पाटीआलो कदोरा, लटकण गउग, नागफू ली, नाग, नागला, मौर, वैसर नथ, काटो मयोदय, आनण अंग निया हिंगलो कुकुम एला जवला चूडी, चूडली, घर कळ्या, वा. रेली, लालि, पचमेखला, हाथसांकली, सोनानालहेरिआ तावीत, क ढला, सलिअलु, कलाडी, अगवट्ट, लोठिआ, कुची, पाईल, मानग्रैवे यक, नवग्रैवयक, ऊपलवींटी, मकोडारखडी, अदेह इत्यादिक अनेक जातिना आजरणोनी वृष्टी करता हुवा ॥

हिवे जगवतने जन्म कल्याणके चौदे राजलोके उद्योत थाय नरकमां पिण उद्योत थाय तिहा पहेली नरकें सूर्यसमान् तेज थाय, बीजीयें वा- दलायें ढाकेला सूर्यसरखो तेज थाय, त्रीजीये चद्रमा सरखु तेज थाय, चोथीयें वादलायें ढाकेला चद्र सरखु तेज थाय, पाचमीयें ग्रह सरखु तेज थाय, छठीयें नक्षत्र सरखु तेज थाय, सातमीयें तारा समान तेज थाय, एम जगवानने जन्मादिक पाच कल्याणकें नरकादि सर्व चौदे राजलोक पृथ्वी आदिकमा सर्वत्र तेज थाय, एवी रीतें जवनपति, व्यतर, वाणव्यतर, ज्योतिषी अने वैमानिक देवतायें तीर्थंकरनो जन्म महोत्सव कर्या पछी प्रजात समये सिद्धार्थ राजा नगरना रखवालानें बोलावीने कहेतो हुवो ॥ १०० ॥

हे देवाणुप्रिया तुमे उतावला क्षत्रिय कुंड नगरमा बदिवानोने छूटा करी मूको अने तोल मापा वधारो तथा क्षत्रियकुंडनगरनी माहेली कोरे अने बाहर कचरो कादो काहाडी साफ करो, लींपावो, तेनी उपर सुगधी जलनो छिटकाव करावो, त्रिखुणामार्ग त्रणमार्ग, त्रिवाटा, चोवटा, तथा जि हा पण मार्गजेळाहोय ते चच्चर चारमुखमार्ग, राज मार्ग ए सर्व रस्तानें पवित्र करावो, कचरा काटा काहाडीने साफकरावीने रस्तानें बरोबर करो, तथा जेनी उपर बेशीने सुखेंसी सर्व लोको महोत्सव जोइ शके ए वा महाटा माचाउपर माचा बधावो, अनेक प्रकारना रगनी ध्वजा पताका करावो स्थानके स्थानके बधावीने नगर शोजायमान करो, शहेर

ना मार्गोने लीपावो, धोवरावो वली गोशीर्षचंदन, रक्तचंदन,पाचआगुलीआ छापा देवरावो, घरमा चंदनना कलश थापना करावो,चंदनकळशघटित तो रणोने घरोना बारणे बधावो, लांबी महोटी अने गोल तथा लटकाती एवी पुष्पमालाओनो समूह लटकावो, पाचवर्णा फूलोना ढगला करावो,कृष्णागर, प्रलोकुंदरु, शिलारस, धूकतो थको घमघमायमान मनोहरगंध सुगधगधित अगरबत्ती उखेवो, मनोहर गध करो,वली नाटक करवा वाला जे पोते नाटक करे ते, रशीउपर नाचे ते, मल्लयुद्धकरनारा मुठीयोथी युद्धकरनारा, भाड भवाइया, कथाना करवावाला रास बोलवाला, उट अने हाथी उपरथी कूदी जाय तेने प्लवक कहे छे ते, राजानी वंशावलीना बोलनारा पाठक कवित कहेनारा, कोटवाला, शुभाशुभ निमित्तना कहेवावाला वासनी उपर नाचनारा, चित्रामणना पाटीया देखवावाला जेने मंख कहे छे ते, तथा चामडानी मसकने वायराथी भरीने बजावे तेने तूणयल्ला कहे छे ते, तुंबिनी वीणा बजावणारा, हाथताल देइने नाचनारा, अनेकतालना बजावनारा ए सर्वने बोलावीने ठेकाणे ठेकाणे बेसाडी आपो ए सहु पोतपोतानी कलाओ लोकोने देखाडे ए काम तुमे करो तथा सैंकडामें करावो वली हजारो गमे धूपरा एटले विवाहना मंडप मा पाले छे ते तथा हजारो गमे मुसळ उभा करावीने महारी आज्ञा मने पाछी सोंपो ॥ १०१ ॥

तेवारे ते कौटुंबिक पुरुष घणाखुशी थइने राजाना हुकम प्रमाणे काम करीने राजानी आज्ञा राजाने पाछी सोंपी ॥ १०२ ॥

तेवार पछी सिद्धार्थराजा मल्लयुद्धनी शाळामा आवी, युद्ध करी, तेल मसलावी, स्नानकरीने सर्व वस्त्र पहेरी माला प्रमुख पहेरीने म

नाम छे मादलनी जात, मृदग, देवबाजु तेने दुदुभि कहीयें, ए नव जातना वाजाना शब्द प्रतिशब्द तेणे करी सिद्धार्थराजा हर्ष करतो रहे, वली क्षत्रियकुंड गामनगरमां उमुक्क एटले दश दिवस सुधी दा न कोइनी पासेथी लेवु नही तथा उकर एटले गायो ढोर प्रमुखनु जे कर लागे ते दशदिवस पर्यंत न लेवो तथा उक्किट्ठ एटले खेत्र प्रमुख नो जे कर लागे ते दशदिवस सुधी नही लेवो तथा अदिज्ज एटले दशदिवस सुधी कोइ हाटमा मूल्यलेइने वस्तु वेंचे नही जेने जोइति होय ते राजानी पासेंथी मोफत लेइ जाय तेना पैसा राजाना भंडारमा थी देवाय तथा अमिज्ज एटले दशदिवस सुधी कोइ चीज मापवी नही तथा अप्पवेसे एटले दशदिवस लगें कोइ राजानो माणस जोरक रीने जोरावरीथी कोइना घरमा प्रवेश करी कोइ चीज वस्तु लीयें न ही तथा अदड एटले कोइयें अपराध कर्यो होय तेनी पासेंथी गुनाह प्रमाणे दड लेवो जोइये ते दड दश दिवस सुधी लेवो नही तथा कुदड एटले कोइने अपराध अल्प कर्यो होय अने दड वधारे लेवो तेने कु दड कहीयें तें कुदड दश दिवस पर्यंत लेवो नही तथा अधरिम एटले दश दिवस सुधी कोइ उधारे लेइने ऋण करे नही एटला वाना सिद्धा र्थ राजायें मूक्या बक्षीस कर्या वली अत्यंत स्वरूपवान एवी वेश्याओना नाटक थाते तथा अनेक ताल बाजासहित नाटक थाते पछी उत्कृष्ट मृदग बजाववा सारु सज्ज कर्या छे मृदग जिहा तथा नृत्य थइ रह्यो छे जिहा, कुमलाणी नथी एवी विस्तार सहित फूल मालाओनो समूह छे जि हा, हर्षवान थया थका ते देशना सर्वलोक क्रीडा करे छे ए प्रमाणे दशदिवस पर्यंत स्थितिपतिका एटले पोताना कुल परपरानी मर्यादा पुत्र जन्मनी ते सिद्धार्थराजा क्षत्रियकुंड नगरमा करे ॥ १०३ ॥

तेवार पछी सिद्धार्थराजा दशदिवसनी कुलमर्यादामा जिनपूजामां सो सोनैया लागे तथा हजार सोनैया लागे तथा लक्ष सोनैया लागें एवु जे भजन तेना निमित्तें द्रव्य राखे एटले पछी पूजा करावीशु एवो अभिप्

प करीने पूर्वोक्त द्रव्य काहाडे वली आठम, चौदशना दिवसें पोसह करनारा श्रावकोनी जक्ति करवा निमित्तें द्रव्य राखे ते एवा अजिप्राय थी के जाणे पोसह करवावालाने पारणे साहामी वात्सल्यना काममा आवशे वली बीजु पण देवायोग्य द्रव्य धर्मने अर्थे कल्प्यु एवु द्रव्य पोतें सिद्धार्थराजा देतो थको, बीजाओनी पासेथी देवरावतो थको विचरे ॥ वली पूर्वोक्त रीतें सो, हजार अने लाख सोनैया प्रमाणें वधामणाने अर्थे जेट लोको लेई आवे छे ते लेतो थको, बीमा करने लेवरावतो थको एवी रीत दश दिवस सुधी करतो थको कुलमर्यादा करे ॥ १०४ ॥

तेवार पछी श्रमण जगवान श्रीमहावीरस्वामीना माता पिता जगवानना जन्मदिवसथी पछी आगल पहेलादिवसें तो कुलस्थिति करे अने त्रीजे दिवसें चद्रमा तथा सूर्यना दर्शन करावे हमणा आजना कालमां तो त्रीजे दिवसे काच देखाडे छे, परतु मूल विधि आवी छे जे गृहस्थ गुरु आवीने श्रीअरिहतनी प्रतिमा आगळ स्फाटिक अथवा रूपानी चद्र मूर्ति करावे ते प्रतिष्ठावी पूजीने माडे पछी बाळक तथा बालकनी माताने स्नान करावी जला वस्त्र पहेरावी चद्रोदयनी वेलायें पुत्रने हाथमा लेइने माता सहित पुत्रने बेसाडी प्रत्यक्ष चद्रमा साहामा आणी एवी रीतें मत्रजणे ते लिखे छे ॥ ॐअर्हं चद्रोसि निशाकरोसि नक्षत्रपतिरसि सुधाकरोसि औषधिगर्जोसि अस्यकुलस्य ऋद्धि वृद्धि कुरुकुरु ॥ एवा मत्र नो गुरु उच्चार करे, माता पुत्रने चद्रमा देखाडी नमावे वली पुत्रने लेइ गुरुने पगे लगावे, गुरु आशिर्वाद आपे ते एवीरीतः—श्लोक ॥ सर्वौषधिमिश्रमरीचिराजी, सर्वापदासहरणे प्रवीण ॥ करोतु वृद्धिसकलेपिवसे, युष्माकमिदु मतत प्रसन्न ॥ १ ॥

तेवार पछी चद्रमानी स्थापेली मूर्तिने विसर्जन करे कदाचित कालि चौदस, अमावास्या होय अथवा वादला होय तेथी चद्रमा न देखाय तो तेज रात्रीयें तेज चद्रमानी मूर्ति आगल तो जरूर करे एवी रीते तेम दिवसनी साजे जे विधि होय ते [illegible]

ते सूर्य उदयनो वेलायें सोनानी अथवा त्रांबानी सूर्यमूर्ति करीने पूर्वनी पर स्थापन करी ते मूर्तिनी आगल पुत्रसहित माताने बेसाडी गृहस्थ गुरु एवीरीते मंत्र बोले ॥ ॐअर्हंसूर्योसि, दिनकरोसि, तमोपहोसि, सहस्र किरणोसि, जगच्चक्षुरसि, प्रसीदास्य कुलस्य तुष्टिं पुष्टिं मोदं कुरु कुरु ॥ ए सूर्यमंत्र उच्चारीने माता सहित पुत्रने सूर्यनुं दर्शन करावे पछी माता पुत्रने लेइ गुरुने पगे लगावे तेवारे गुरु आशीर्वाद आपे ते लिखियें छैयें ॥ श्लोक ॥ सर्वसुरासुरवंद्य, कारयिता सर्वधर्मकार्याणां ॥ भूयात्रिजगच्चक्षु, मंगल दस्ते सपुत्राय ॥ १ ॥

पछी पापन करेली सूर्यमूर्तिने विसर्जन करे वली छठे दिवसें धर्म जागरण करे, इग्यारमें दिवसे अशनिकर्मनिवर्त्तन करे माटीना सूना वासण काहाडी नाखे, नवा वस्त्र पहेरे ॥

हिवे बारमो दिवस आव्या थका अशन ते अन्न विगय प्रमुख तथा पान ते मीठा पाणी प्रमुख तथा खादिम ते खारक खोपरा प्रमुख तथा स्वादिम ते लविंग पान प्रमुख ए चार प्रकारनो आहार रंधावे रंधावीने सिद्धार्थराजा पोताना मित्रोने, ज्ञातिने एटले पोतानी जातिवालाने, पोताना पुत्रपौत्रादिकोने, काकाने, सुसरा प्रमुखने, पोताना दास दासीयोने, वली सिद्धार्थ राजानाज गोत्रवालाओने, वली क्षत्रियोने तथा गामना क्षत्रियोने एवा बीजा पिण महोटा लोकोने निमंत्रण करे अर्थात् नूतो आपे पछी भगवानने तथा त्रिशला राणीने स्नान करावे, घरे देवपूजा करावीने पछी विघ्न निवारवाने अर्थे कौतुकथी काजलना टीलां टबका करे, मंगलिकने अर्थे सरसव, दहीं, दर्भ, चावलनुं तिलक मस्तके धारण करे, नवा वस्त्र पेहेरे, वली जेमां भार अल्प अने मूल्य घणु एवा घणा मोलयना घरेणा पहेरे, पहेरीने भोजननी वेलायें भोजन मंडपमा सुखे बेसे, वली पूर्वे नोतरेला मित्रादिकोने अशन, पान, स्वादिम, स्वादिमादिक चार प्रकारना आहार जिमाडे हिवे तेमा केटला एक आ

* स्वाद करवा योग्य तेना स्वाद करता थका अशनादिक मोदक प्र

मुख सर्व चीज खवाइ जाय तथा केटली एक सेलडी प्रमुख चीज थोडी खाय अने घणी नाखी आरे वली केटली एक खजुरप्रमुख चीज घणी खाय अने थोडी नाखीदीये एवीरीतें चारे प्रकारनो आहार साधर्मिकादिकोने सिद्धार्थराजा जिमाडता थका विचरे ॥ १०५ ॥

॥ हिवे प्रथातरथी जोमननो विधि लिखीयें छैये ॥

केलिपत्रे छायेला माडवा नीचें मध्यान्ह वेरायें कुंकुमछादित मंडपमा सर्वने बेसाड्या, मखमलना पातिया नाख्या, ते उपर सर्व पवित्र थइने आवीबेठा, तेना पेट पाताले पेठा, आगळ सुवर्णरत्नजडित बाजोट मेल्या, तिण उपर सोनाना थाल जगमगवाला थया उजमाल ॥ कने मेली कटोरीया, निर्मल जलसे धोवे, माहे मुखडा जोवे, ते कहेवा छे लोके ' फादाला, फुदाला, दुदाला, सुहाला, आवे अधिआला, मुछाला, कोइ जमाइ कोइ साला, इसी पाति बेठी तिहा पीरसणवाली पेठी, ते घणी रूपाली वस्त्र पहेर्या शोले शिणगार कर्या हाथमा मरोटी झारी सुगानोकी निजरो ठारी ॥ हाथधोवाया, मनमें काम सुराया, पहेला ते फल पिरसे देख्यासें मन विकसे ॥ ते कहेवा फल पिरस्या तेना नाम कहे छे -अखोड मिसरिकीपात, चोपडी चारोली केला रायण लीलानालियेर बदाम पिस्ता द्राख आंबा आबा तथा स्याग दाल पक्व, सेवा सेतुत दाडिम नारगी मीठालींबु पाकाकिरणा खारक खजूर सेव जाबु गुदा पेमदीबोर लीलीद्राख छोलेली सेलडी कागदी आमफल रामफल सिनाफल बीजोरा, इत्यादिक उदार मनथी पिरस्या देरकीया खाना हीया हर्ष्या ॥ किस्याक खावे के पिरसणवाली तेना मुख सामा जोइ मोहमा पड्या खाया जावे, पिण पेटफाटे ते निजर न आवे ॥ मालपानी जमीनमा नीपज्या घउ हाथथी मसल्या घोइने दल्या जला वखी मेदो छाण्यो तेना पिरस्या खाजा, दातोमा करे अवाजा ॥ हिवे बहु पक्वान, खाजा थया सावधान ॥ पिरसण वाली सुहाली, मानकरे रही माझी ॥ पहेली पिरसे लाडू, जिमे बैठा जाणे साढ ॥ सिहकेसरीया मे

इया, ममाळा अधिका जेरया ॥ कमार मगदाग मोदक किटिया मनगी या दाळिया ॥ इस्यामोदक खावे, बूढो मरद हो जावे ॥ अच्छी पिस्ती मुरकी, खावा जीजडी फुरकी ॥ जलेबी मुखमा घाले, रसना गटका चाले ॥ पेडा पेटमा पडिया, मखमेलता गुडिया ॥ मखाणा मुखमा घाले, ब दबड जाणे बोले ॥ घेवर मुखमा धरिया, खाता घृतबहु झरिया ॥ नीणा तारनी फीणी, आणीसेवा जीणी ॥ दहींथरा दोठा खावे, मनमा हसना आवे ॥ साकली तिलनी खाधी, सिंघोडा सेवमु साधि ॥ आवे साकर सी रो, सोकरा मन थयो धीरो ॥ लापसी घाछी आवे, मेवा खीचडी खावे ॥ इम अनेक पकवान, जिमे बेठा राजान ॥ देवमुगधीसाल, खावा थया उजमाल ॥ मुगदालनें जेंडी, घीमुगघी ठेली ॥ खीचडी पतली पोली, थाये इकवीशनी एककोळी ॥ सालणा मुखमा जावे, जीजवरफरी थावे ॥ मूगीया केर रायडो ी, घाळोल, करवदा काचा, केळा चोरानी फली मुगनी फली नीलाचणा, मिरचीं, पीपल, सागरी, काचरी, बावल्या, क रेला, जींडी, तरोइ, बेंगण, मोगरी काकडी तउडा तींडसी इस्या जातना साग, जीरा मिरची समजाग ॥ गरम मसाळा पडिया घृतमाहे पहेला छ मकिया ॥ हिंग वधार सुगधा, खाता तज्या सम घधा ॥ जीजवरफरी होवे, कळीकंदने जोवे ॥जाजीविणारी मेथीरी चदलेआरी पालखारी सुआरी थेगरी खाना नीज शोजाधरी ॥ मिसरीमा जेल्यो दूध, पीता नरही शु द्ध ॥ जरचोंपेट बोल्या सहु एम, हिवे खावानो नेम ॥ दहीं खीनें मुच डे चाल्यो पाणी जोरारावं शुद्ध तिहा आणी ॥ करमो खाधो पूर, राह पडी रायतापूर ॥ मीठा पाणी पीवा, पापडमुख शुद्ध कीवा ॥ शुद्ध पाणी सें चलु करीजें न माने पेटमें उचार दीजे ॥ वली दीधा पान तबोल, के शरछाटे रगरोळ ॥ हीरचीर मखमल पटवर, वस्त्रदिधा ते पहिरे सुंदर ॥ फूलमाळा पहेरावे, हर्ष मने बहुलावे ॥ आभूषण पहेरामणी देवे, एम सिद्धार्थ राजा जस बहुलेवे ॥ इति सिद्धार्थराजाकृत जन्मोत्सव समाप्त ॥

ईरीतें मरुदेशआदिकमा जे जोजन विधि कहेवाय छे ते प्रमाणे लिरुवो

हिवे वली प्रकारांतरें कच्छगुर्जरादि देशोमां जे प्रमाणे भोजनविधि कहेवानी चाल प्रवर्त्ते छे ते मुजब आहीं लिखीये छैयें, ए बे प्रकार मांथी वाचनारने जे रुचे ते वाचवु अथवा बेहु प्रकार सज्जा आगल वाची समजाववा ते प्रकारांतरे आहीं लिखीये छैयें ॥ माड्यो तोरण उत्तम माडवो, तुरत आगणुं बेसवानु नवु ॥ तेतो नीला रत्नज तणु, तिहां सघरा माड्या आसन, बेसता किसी विमासण ॥ वली आगल मूकी सोनानी आडणी, ते केम जाये छाडणी ॥ उपर सोनाना थाल, अत्यंत घणा विशाल ॥ विचमा चोसठ वाटकी, लिगार नहीजाय का टकी ॥ गंगोदक दीधा थाल, कचोलामें हाथ लाउ ॥ हिवे सघली पक्ति बेठी, एटले पीरशण हारी पेठी ॥ ते केहेवी छे ? शोल शिणगार सज्या, बीजा काम तज्या ॥ हावभावनी रूडी, खलके हाथें सोनानी चूडी ॥ लघु लाघवनी कला, मन कीधा मोकला ॥ चित्तनी उदार, अति घणी दातार ॥ बोलती हाथ, परमेश्वर देजो तेहनो साथ ॥ घमघमती आवे, सघलाने मन भावे ॥ पहेला फलहिवे पीरसे, सघलानां मन हर्षे ॥ एवी छे पिरसनारी भली, मृगनयनी, होंसनी पूरी, धर्मनी शूरी, शीलवति शक्तिवति एवी पिरसनारीयो छे ते प्रथम फल खावा ना लावे छे पाका आंबानी कातली, ते बूरा खाडशु भेली ॥ वली पातला पाका केला, ते खाडशु कीधा भेला ॥ सखरा करणा, वली पीला वरणा ॥ लीला नारंगा, दीसे महासुरंगा ॥ नीलरीयण, पीरसी भली भायण ॥ दाडिमनी कली, खाता पूगे मन रली ॥ लींबजाने अखोड, खाता पूगे मनना कोड ॥ द्राखने बदाम, केइ कागदीने केइ श्याम ॥ सिलेमी खारकने खजूर, ते पीरशा जरपूर ॥ नालियेरी नरगी, ते साकरी गोल्शु भरी ॥ लींबु खायाने मीठा, एहवा ते कदी न दीठा ॥ चारोलीने पीस्ता, लोक जिभे हसता ॥ वली शेलडीने सीताफल, ते पिण पीरश्या परिगल ॥ हिवे पक्वान आणे, ते केहेवा वखाणे ॥ घेवरपूडा खाजा, ते तुरत कीधा ताजा ॥ मदलाने साना, जाणे प्रसादना

छाजा ॥ एहवा पवित्र प्रधान, माउवी घउ, तेहने दरया तेहनी पड़शुद्री, महाचतुरे शोधीनीर्ये करमोइ, तेहना खाजा वीर्ये तल्या फूल्या महाविशाल, एवा सातपुडा खाजा, वली फगफगता फेणा, दुधवर्णा दहीथरा ॥ घृतवर्णी सुवाली, अमृतनेवी जिलेबी ॥ घीनाघेवर पतासा मोतीचूर गुंदवडा ए लची दाणासहित साकरीया चणा, खाडसाकरना दहीथरा, अनेक जातिनी सुखडी पिरसे, विशुद्धदले केलव्या, सारामिश्र खाडथी भेलव्या ॥ माहे एलचीना चमत्कार, पछी पिरव्या लाडु, जाते नाना गडु ॥ कुण कुण तेहना नाम, जिमता मन रहे नही एक ठाम ॥ वली लाडुना नाम कहे छे. मोतीआ लाडु, दलिया लाडु, सेवैया लाडु, चूरमाना लाडु, तिलना लाडु तिगडुना लाडु, मुगना लाडु, जगरीना लाडु, सिंहकेसरीया लाडु कीटीना लाडु तेजाना लाडु, खमखसीयाना लाडु जवखरीया लाडु, चोंगिया लाडु, उडदीया लाडु, अमृतिया लाडु, दीठा दाढ गले, पूरण पुण्याये ए मिले ॥ भोजनने अर्थे पीरसे, लक्ष्मी एवा मोदक, जातजातना दीस, जिमता वाधे मुखनो वान, तेना हियडाहीसे ॥ दातारना हाथे परीजल, कृपणना हाथ धूजे ॥ वली बीजा आव्या पकवान, जिमता वाघे मुखनु वान ॥ कुण कुण जाति, नग नवि जाति, सखरासोटा, तेमाहे नही खाटा ॥ बरफीनी जाति, फीणीनी जाति, मरकीनी जाति, दूधपिंडीनी जाति, साकरीयामोतिचूरनी जाति, मसूरनी जाति जिलेबीनी जाति, सक्करपारानी जाति, गोलपापडीनी जाति, हिवे आव्या वडा गुंदवडा, फीणी सखरा सोट, तेमाहे नही खोट ॥ दहीवडा, फेणवडा, मथीयावडा कामीयावडा सालियावडा ॥ पातली सेव, पीरस्यानी रूडी टेव ताजो गुद तल्यो गुद ॥ कुडलाकृत जिलेबी, शीरो लापसी ॥ जिण दीठे दाढा गले, स्वर्गहुंति देवदेवी टलवले ॥ वली मीठो मगद, सारो माल नगद ॥ खाडनु चूरमु, साकरनु चूरमु, पछी पीरशी साल, ते जिमीयें विशाल ॥ ते कुण कुण भेद साजलता उपजे उमेद ॥ सुगधसालि सुवर्णसालि, घनजी सालि, रानी सालि, नीली सालि, पीली सालि, महा

सालि, शुद्ध सालि, कौमुदि सालि, मालवी सालि, कमल सालि, कोक णी सालि, तिलवासी सालि, जीरा सालि, कद सालि, रायजोग सालि, कुवारी सालि, चद्रायण सालि निकी सालि, गुरुडा सालि व ली साबु चोखा अखंड चोखा ने वली खाडचा, सबला छाडचा, हलवा हाथथी सोह्या, नख थकी वीएया, उत्तम स्त्रीयें धोरचा, सुजाण स्त्रीयें ओसाया, एवा अणीयाला सुगंधि फरहरा, उवाकुर पीरख्या ॥ वली उपर दाल पीरशी, तेना नाम कहे छे, मडोरनी दाल मुगनी दाल, काब ली चणानी दाल, गुजराती तुवरनी दाल, उडदनी दाल, जालरनी दाल, मठनी दाल वर्णे पीली, परिणामें सीली वली परिघलवृत पीरख्या ते केहेवा छे? तो के आजना ताव्या, एवा गायना घी, भेंशना घी, पीला वरणना घी, नाकें पीया घी, मजीठवर्णा घी, हिवे पोली पीरसी, ते केहेवी छे ? तो के आछी पोली, घीमा हे जबोली, फूकनी मारी फल्सी जाय, एकवीश पोलीनो एक एक कोलीओ थाय ॥ छप्पोछंद ॥ मुरकी मोती चूर, सेव किणी माकर स रखी ॥ माना खुरमा खाड, प्रिया तिहा पीरसें हरखी ॥ केला तणी का तली, अवरस मूके घोली ॥ घल घल घीनी नाल, पीरसे पातली पोली ॥ साल दाल बहुमालणा, गोरस करवे चित्त ठरयु ॥ ऋषभ कहे ए निमण करयु, बाकी सघलु एलो बरयु ॥ १ ॥ चोला मरटी तेल, साक विण निर्त्ये सारे ॥ पीरसे चूडी नार, पेट कहो केणी पेरे ठारे ॥ उपर ल्होली पेंश, छास पिण पीरसे पाणी ॥ सिंधव नही तिगार, किशु कहें कर्मनी वाणी ॥ आहार सेर अढीतणो, सेर सवा दोहिलो लहे ॥ -कवी ऋ षभ कहे एलो बरयु, जोजन एहने कुण कहे ॥ २ ॥ हिवे शाक पीर स्या तेना नाम कहे छे, नीली डोडीना शाक, टिंडसीना शाक, चो पडाना शाक, कोहेला, कक्रोडा करवदा, कालिंगडा, केला, कार ला, आरिया, तुरिया खरबुजा, बेंगण, मोघरी, नींबु, अबोलीया, वा लोल, चवलानी फली, शेवगानी शिंग, सागरी, काचरी, आमला, के

रना फूल, केरडा, *छोली मिरचा, लीली पीपर* छोत्री रायता, माटा खारा, मोला गरया, तरया, वधारया, फुगारया, छमकारया, वत्री पीरसी नामी ते उपरें सहुको राजी ॥ ते कोण भातनी ते कहे छे सरसवनी भाजी, सूवानी भाजी, मूलानी भाजी, चिणानी भाजी, चौल नी भाजी, मेथीनी भाजी, थेगीनी भाजी, अफीणनी भाजी, तादुग्नी भाजी, हिवे वडीना शाक करया तेना नाम कहे छे दालवडी, डब कावडी सूपरावडी घासवडी मारवडी दहीवडी घोलवडी पापडवडी म रिमात्रावडी, घणा जोलेंजीना घणा वधार मसालाना चमत्कार सबड का देता अगुली चाटता मनमा विशेषे भावता, हिवे रायताना नाम कहे छे खारकना रायता, खोपराना रायता, द्राखना रायता, बदाम प्रमुख मेवाना रायता, हिवे वडा कइ कइ जातना पीरश्या ? ते कहे छे मिरचाना वडा, तरया वडा, कोरा वडा, कांजीघोलवडा, घोल वडा, मुगनी दालना वडा, चवलानी दालना वडा, उडदना वडा, दहीं व डा गूदवडा, फेणवडा, मेथीया वडा, सालीयावडा, घणे जोलें जीना, घणे तेलें सनि, मिरचाना घणा चमत्कार, अत्यन्त घणा सुकुमार, हाथे लीधा उछले, मुखें घाल्या तुरत गले, घणु शु कहियें ए वडा एवा तो छे, के जेने खावाने अर्थे घणा देव देविओ पिण टलवले छे, हिवे प लेव पीरसी, ते केहेवी छे ? चोखानी पलेव, जुवारनी पलेव, बाजरी नी पलेव, गहुनी पलेव हलदीया पलेव, पीपलीया पलेव, सुठीया पले व, सवडकीया पलेव, हिवे भोजन जिमता विचमा पीवानो पाणी, आवे छे, ते कहे छे साकरना पाणी, द्राखना पाणी, खाडना पाणी, गगाना पाणी पालर पाणी, कपूरे वास्या पाणी, एलचीयें वास्या पा णी, घना सीतल पाणी, हीमना पाणी, हिवे दही अने दहीनां घोल आवे, ते केहेवा छे ? ते कहे छे गायना दहीं, भेशनां दहीं काठा जम्योडा दहीं, मधुरा, सखरा, सजीराला, सलवणा जाडा घोल, तेना । कचोल, चावलशुं जिमता थया रगरोल ॥ वली सखरा करं

श्रा नरी श्रागीने पीरस्या, ते करनामांहे नणी रान, जिमतां नीक न श्रा
इ उपर जीरां तुणनो मनिवान, कगणहारी निण ग्नाम ॥ पन नामन
कगव्या पछी एकाते तेहज श्रासन रह्या थका ने चलु कराव्या ते
चलु करावबाना पाणी केवा श्राव्या, ते कहे छे, केवडानी वासना पाणी,
कापाना वामना पाणी, कपूरें वास्या पाणी चदने वास्या पाणी, पाडले
वास्या पाणी सुगधी पाणी, गगोदकना पाणी, चंदने निवारया पाणी
एल्चीयें निवारया पाणी, इत्यादिक पाणीयें करी चलु कराव्या, पछी
तृणशला प्रमुखथी मुख शोधी दातोनी शुद्धि करीने परम सोच्य थया,
हिवे मुखवास दीधा ते कहे छे, वाकडी सुपारी, चीकणी सुपारी, ते
निश केशर वरणी, कपूरें वासित, वली तीखा लविंग जायपत्री, जायफ
ल, मोटा डोडा, एलची, पाका नागरवेलना पान, ते वली काथा चूना
सहित दीधा, वली घणा श्रादर सन्मान, घणा गीत गान, गणा तान
ने मान, हिवे कइ कइ जातिना कइ कइ जातिना वस्त्रोनी पहेरामणी
करी, ते कहे छे, देवदुष्य वस्त्र, रत्नकंबलवस्त्र, पाजडी, खीरोदक,
श्रगणा सेला, श्रबोतर, मूठकसबी, जरग्राप, मखमल, त्रिणीया बुल
बुल, चमम, पाटू टसरिया, शणीया, जेरव, नारीकुंजर, पट्टहीर, पट
सीश्रोली, पचसइया, फूलपगर, फूलकागी, दोरीया, जादर, चादर ने
त्रसट, धोतीपट्ट, राजपट्ट, गजवडी, सुवर्णवडी, हसवडी कालवडी, सु
घचित्रा, पटकूल, पट्टहीरसाडी, घाटडी, चीर, किणखाप श्रतलशलाहि,
लाराचीनी, पापडीश्राचीनी, सपीश्रा गुश्रागरी, श्रामाणिश्रा श्रागराइ,
सगुनीपटणी, मशरु तास्ता, शालु, दुपट्टा, त्रिपट्टा, बास्ता, इकडी,
मुगदा, छायल नारी कुंजर, शालडा, रत्नकबल, चूनडी, घाटडी, इत्या
दिक पाचरगी वाघा पहेराव्या, वली काशमीरी केशरना छाटणा की
धा, जला जला सुगध बावना चदनना विलेपन कीधा, श्ररगजा, चू
श्रा, चपेल, फूलेल, केवडो, मोगरो, जाइ, जुइ, कुद, मचकुद, चपो,
मरुश्रो, दमणो, केतकी श्रने मालती प्रमुख फूलोनी मालाश्रो पहेरा

वी, पत्री वली मुकुट, तिलक, बाजुबंध, हार, चौर, बेईरवा, रत्नाव
ली, मुक्तावली, चंद्रावली हीरावली, प्रवालावली, सूर्यावली, प्रहावली
नक्षत्रावली, श्रोणिसूत्र, कटीसूत्र, पट्टशीर्षक, चूडामणि, कुंडल, कटक
कंकण, अंगद, मुद्रनदक, -दशमुद्रक, चक्रांक, अमर, मेखला, मुदक
पदक, साकलु, साकली चिचिष्ट, जगउत्तरी दाराहाशडी, कपाली,
ग्रैवेयक हेमजाली, मणिजाली, मौक्तिकजाली, वर्णमरीका, जामर,नेउ
र, घूघरा, पीगहा, वींछीया, अगुठडी, वालाजाल कुमणा, अकोटा,रू
पाला, हरीयाराखडी, गोफणा, उलसीयो, त्रिसंधीयो, त्रोटी, वोरहा
करी वेन्ला, मुरकी, मोतीदर, गठोडा, तुगल, चपकली, पानडी, हो
लेरताली, मोतीसर, सरलीया, टीला, टीली, चादला, आड, नवग्रह,
मुद्रडी, अगुठी, वींटी वाकरु, गलसरी, छापकरजाली, हेमजाली मा
दलीया, खेलमादलीया, कंदोरा, पाटीआला कदोरा लटकणमोड ना
गफूली, नागला, मोरवेसण, नथवाली, सिंदूर, कुकुमरीली, जवलाचूडी,
घरचूडी, चूडा, काकणी, कारेली लाल, पोंची, मेखला, हाथला कं
ली, सोना, लहेरीया, तावीत कडला, कुंडली, वाकडी वेलीया न्ले
लीया, इत्यादिक आभरण पहेराव्या, ए रीतें, मित्र, ज्ञाति पोताना
सत्रियो तथा कुटुंब सगा सबंधीनी भक्ति विविध प्रकारनी कीधी

॥ इति भोजन तथा आभरण विधि समाप्त ॥

हिवे बालकनु श्रीवर्द्धमान एवु नाम दीधु, ते वखाणे छे हिव ते
मित्र, न्याती, गोती, स्वजन, पितरीया प्रमुखने सत्कार सन्मान आ
पीने त्रिशलादेवी तथा सिद्धार्थराजा एवु कहेवा लाग्या ॥ १०६ ॥

जे हे देवाणु प्रियो ! अमारे घरे ए पुत्र गर्भने विषे आवी उपन्या
पछी अमे रूपेकरी, अणवडे सोनें करी, धान्यें करी, राज्यें करी, वा
हने करी, मनुष्यना सत्कारे करी, अयत घणा वृद्धि पाम्या तथा सा
मत जे सीमाडाना राजा अने चदप्रद्योतनादिक राजा, ते पिण अमारे व
। थया तथा अमारी चाकरी करवा आव्या ॥ १०७ ॥

तेथी अमारा मनमा एवु चिंतव्यु हतु जे के जेवारें अमारे घरे बालक नो जन्म थाशे तेवारें ए बालकनु नाम रूप गुणे करी, प्रधान निष्पन्न श्री वर्द्धमान एवो आपीशु, ते अमारा मनोरथ सिद्ध थया अमारी इच्छा पूरण थइ माटे अमें ए कुमारनु वर्द्धमान एवु नाम आपीयें छैयें तुमे पिण ए कुमारनें श्री वर्द्धमान कुमार एवा नामथी बोलावजो ए रीते सघळे स वेंने शिरपाव पहेरामणी करीने सर्व सज्जननी साखें बालकनु नाम स्थापन कर्यु ॥ १०८ ॥ पछी ते सर्वेने विदाय करचा ॥

॥ इति श्री वर्द्धमान नामस्थापन संपूर्ण ॥

ते श्री वर्द्धमान भगवान केहेवा छे ? तोके सात हाथनु महोटु शरीर छे जेनु वली समचोरस संस्थान छे, सुवर्ण वर्ण देहनी निर्मल कांति छे, वज्र ऋषभनाराच संघयण छे, एवा भगवान् छे, हिवे श्री वर्द्धमान स्वामीना सर्व मिली त्रण नाम थया ते कहे छे एक तो मातापितायें आपेलु नाम श्री वर्द्धमान भगवान छे अने बीजु रागद्वेष रहित तपस्या मा खेद सहन करवाथी श्रमण एवु नाम जाणवु अने त्रीजु जे अकस्मात उपने ते भय अने सिंहादिकोना उपद्रवथी जे भय उत्पन्न थाय ते भै रव कहीयें ए भय भैरवोथी चलायमान थया नही निर्भय पणे रह्या थका भूख तृषा प्रमुख परिसहे करीने क्षोभ पाम्या नही एम परिसह उपसर्ग सहन करचा तथा सर्व तो भद्र प्रमुख प्रतिमाना पालवावाला, चार ज्ञान सहित, धैर्यवान, अरति रति परिसहने वेठीनें रागद्वेष रहित पणे सुख दु ख सहन करचा, तेथी द्रव्यवीर्य पाम्या थका मोक्षजवानो निश्चय करचो छे तो पिण चारित्र पालवामा तत्पर रह्या एवा वीरपणा ना गुणोयें करी देवताओयें श्री महावीर स्वामी एवु नाम दीधु तथा भ गवान आमळ क्रीडा करतो वेलाये देवना क्षोभ पमाडया आव्यो तेनाथी भय पाम्या नही ते कथा आगल कहिसशे तेवारें पिण देवना महावीर एवु नाम दीधु ॥ १०९ ॥

हिवे भगवान श्री महावीर स्वामी दिवस दिवस चन्द्रकलानी पेरें वध
ता थका, घणा दासदासीयो साथे परवरचा थका, अत्यंत रूपवान म
स्तकें भमराना सरखा काला केश छे जेना कमल सरखा नेत्र छे, प्रवा
ला समान बिंबोष्ठ छे, धोला दांत छे, कमल गर्भसरखो गौर वर्ण छे,
कमलना गंधसरखो श्वासोश्वास छे, सर्व देवताओना रूपथी पिण घणुं
रूप छे, जेनुं एटले सव देवोनुं रूप जो एकठुं करीयें तो भगवानना डाबा
पगना अंगुठानी एक कलानें पिण पहोंचे नहीं केमके त्रणे लोकमा
सर्वथी अधिक रूप श्रीतीर्थंकर भगवान्नुं होय छे तेथी ओछुं गणध
र महाराजनुं रूप तेथी ओछुं आहारक शरीर वाला साधुनुं रूप ते
थी ओछुं अनुत्तर विमानवासी देवोनुं रुप जाणवुं तेथी ओछुं नव ग्रै
वेयकना देवोनुं रूप, तेवार पछी बारमो देवलोक, इगीयारमो दशमो
नवमो, आठमो, सातमो, छठो, पांचमो, चोथो, त्रीजो, बीजो, पहेलो,
देवलोक ए सर्व क्रमें करी एक बीजाथी उतरता उतरता रूप वाला
कहेवा, तेवार पछी जोतिषि देवोनुं, पछी भवनपतिदेवो पछी व्यंत
र देवो, पछी चक्रवर्तिराजा, पछी वासुदेव, पछी बल्देव, पछी मंडलि
क सामान्यराजानुं रूप जाणवुं ए सर्व अनुक्रमें एकेकथी हीनहीन
रूपवाला जाणवा वली भगवान जातिस्मरण ज्ञानसहित अप्रतिपाति
मति, श्रुत अने अवधि मिली त्रणज्ञानें करी सहित, सर्वथी उत्कृष्ट दे
हनी कांति छे जेनी एवा भागवान अबीह बलवंत बुद्धिवंत सुरूपी,
दिव्यस्वरूप धारी, साहसिक वली रूपाला, रंगीला रढीयाला, रे
खाला, रतीला, मातिला एवा भगवान रमता रमता जेवारें आठवर्षना
थया तेवारें सरखा सरखा राजकुमारो साथें क्रीडाकरता थका ते देश
मा प्रसिद्ध पामेली एवी आमलकी क्रीडा रमवा सारु नगरनी बाहि
र एक पीपलेनुं वृक्ष छे त्यां सर्वकुमारो एकठा थइने सर्व छोकरा दों
डवा लाग्या ते आवीरीतें के बे बे छोकरा साथें दोडे तेमा पहेलो जे
पीपलीना वृक्षने जइ पकडे ते जीत्यो अने जे पाछल रहीजाय ते हा

त्यो पछी जे हारे ते पोतानी खाध उपर जीतेला छोकराने बेसाडीने ने स्थानकथी होड करीने दोड्या होय ते स्थानके पाछो जइ मूके ए रीतेनी रमत पोताना जेवडा छोकरा सार्थे जगवान करे छे एवामा सौधर्मेद्र सजामा बेठा अवधिज्ञाने करी जगवाननु महाबल जाणीने सजामा केहेवा लागा के आजना समयमा श्री महावीर जगवान बल वान छे एवो कोइ बीजो बलवान नथी जो महारासहित सर्व देवो मिळीने तेने बरावना जाय तो पिण डरे नही एवा छे ते इंद्र महारा जना वचनने अणसद्दहतो थको एवा कोइ मिथ्यात्वी देवता ति हाथी उठीनें जिहा जगवान रमता हता तिहा आव्यो अने छोकरानु रूप करी जगवान सार्थे रमवा लाग्यो तेवारें जगवान अत्यत वेगथी दोडी नें तुरत जइ पीपलीना फाडने हाथ लगाडीने आगल चाल्या अने देव तार्ये पीपलीना नीचेनी डालीयोमा सर्वत्र फूंफरा करतो एवा सर्पनु रूप बनाव्युं ते जगवाननी सामो फणाटोप करीने बीवरावना लाग्यो पि ण जगवानें सर्पने पोताना हाथथी दूर करीनें पोने पीपली उपर चडी गया अने मनमा तें सर्पनो काइ पिण जय आव्यो नही हिवे जेवारें ते देवकृत बालक हरचो अने श्री वर्द्धमान जीत्या तेवारें ते देवरूप बाळके पोतानी खांध उपर जगवानने चढावीने तेने बीवरावना मारु सात ताडवृक्ष जेटलु उचू रूप करयु तेने जोइने बीजा सर्व बालको जय पामीने नाशि गया अने मजुना मातापिताने जइ सर्व वृत्तात कह्यो तेवारें मातापिता चिंता करवा लाग्या तेमनी चिंता टालवाने मोट ज गवाने वज्रप्रहार जेवी पोतानी मुष्टि, देवनी पीठ उपर मारी तेथी ते देव अरराट करतो चीश पाडतो थको जमीन उपर पडी गयो पछी थयो लज्जायमान थइ पोतानु रूप प्रगट करीने केहेवा लाग्यो के हे प्रजु ! जेवा तुमोने इंद्र महाराजे वखाण्या तेवाज तुमे धीरजवाला महा बलवान छो ए अवसरमा इंद्र महाराज पोते पिण तिहा आव्या अने ते देवताने जगवानने पगे लगाड्यो देवतायें पिण जगवानने पगे लागी

अपराध खमाव्यु ते देव मिथ्यात्वपणु त्यागी समकेति थयो पछी इंद्रमहाराज तेने पोतानी साथे देवलोकमां लेइ गयो

॥ इति आमलपीपलि क्रीडा संपूर्ण ॥

हिवे भगवान आठवर्षना थया एटले माता पिताये मोहना वशथकी विचार्यु ॥ श्लोक ॥ लालयेत्पंचवर्षाणि, दशवर्षाणिताडयेत् ॥ प्राप्तेषोडश केवर्षे, पुत्रमित्रवदाचरेत् ॥ १ ॥ तथा ॥ मातावैरीपिताशत्रु पुत्रोयेन नपाठित ॥ शोभते न सभामध्ये, हंसमध्येबकोयथा ॥ २ ॥

अर्थ —छोकराने पांच वर्ष रमाडवो रमत करावची अने दश वर्षनो थाय तेवारें धाकमां राखवा तथा शोले वर्षनो जेवारें थाय तेवारें तेने मित्र सरखो जाणवो ॥ १ ॥ तथा जो पुत्रने भणावे नहीं तो माता तेनी वैरिणी जाणवी अने पिता तेनो शत्रु जाणवो केमके जो भणे नहीं तो ते पंडितोनी सभामां जेम हंसोनी पंक्तिमां बगलो शोभे नहीं तेम ते पिण शोभा पामे नहीं ॥ २ ॥

एवो विचार करी, सारु मुहूर्त जोइने शुभ दिवसें पोताना स्वजन क्षत्रियोने जिमाडी वस्त्राभरण आपी, केशर कस्तूरीनां छांटणां करी, हाथी रथ घोडा शिणगारी, गीत वाजिंत्र सहित महा महोत्सवथी निशालीयाओने आपवा सारु गोलपणा मेवा प्रमुख लीधा तेनां नाम कहे छे वरसोला, गुंदवडा, खारक, खोपरा, द्राक्ष, खजूर, सिंघोडा, अखोड बदाम, चारोली, नालियेर, साकर, सेंव, पेंडा, फल, फूल, साकरीया चणा, एलची पाक, धाणी गोलधाणी, बीजोरा चणा, सोनाना खडीया, रत्नमंडित लेखणी, रूपानी पाटीओ पानना बीडा प्रमुख अनेक वस्तुओ साथें लेइने तथा पंडितने आपवा योग्य वस्त्राभूषण साथे लेइनें सोहागणी स्त्रीयो गीत गाती थकी श्रीवर्द्धमानने स्नान करावी शिणगार पहेरावी हाथी उपर बेसाडी मेघाडंबर छत्र चामरो सहित, याचकोने दान देता थका, भाट स्तुति करता थका, ब्राह्मण वेद

छानि भणता थका, आशिर्वाद ,करी वदी जता थका भणाववा वाला
पंडितनी पासें आव्या तेवारे पंडित पिण सिद्धार्थ राजानो छोकरो
सकल देशनो अधिपति हमारी पासें भणवा आवे छे एवुं जाणी
अहंकार आणी महोटुं आसन मडावी शिणगार करीने बे मणिबंध, बे
बाहु, बे कक्षा, बे कान, बे काननी मूलमा, एक ललाटमा अने एक
चोटमा एवा बारे स्थानकें तिलक करी पोताना परिवारने सर्व शिण
गारी वाट जोतो जोतो बेठो छे ए अवसरमा इंद्र महाराजनुं आसन पि
ण ध्वजानी परे कंपायमान थयुं अथवा जलमा चंद्रबिंबनी परे चपल
थयुं अथवा हाथीना काननी परे चपल थयुं तेवारें इंद्र महाराजें अव
धिज्ञाने जोयुं तो भगवान भणवा बेठा छे एवुं देखी कौतुक पामी चिंत
ववा लाग्यो के आ मोहनीयनो चमत्कार जूओ कहेवो छे माटे; माता
पिता जाणे मे एने भणावीये पिण भगवानतो त्रण ज्ञाने सहित छे
महागंभीर छे एने शुं भणावुं छे? एनो भणवा गुणवा स्वयंबुद्ध छे, अमृत
मा वली मीठाश शी करवी छे? सरस्वतीने वली पोथी शी देखाडवी
छे? चंद्रमाने वली उज्ज्वलता शी करवी छे? आंबाने विषे तोरण शां
बंधु? तथा मातानी आगल मोसाल वर्णन करवो तेम एमणे अज्ञानना व
शथी भगवानने निरर्थक भणवा बेसाड्या छे माटे हिवे भगवाननी आ
शातना न होवी जोइये एवुं विचारी शक्रेंद्र ब्राह्मणनुं रूप करी जिहां
भगवान नीशालमा आव्या छे तिहां ब्राह्मणने सिंहासन उपरथी उ
ठाडी भगवानने उंचा सिंहासन उपर बेसाडी प्रथमतो उपाध्यायनी समी
पे बेसी तेने केटला एक शास्त्रार्थना प्रश्न पूछ्या परंतु उपाध्यायथी बरा
बर तेनो जबाब अपायो नही तेवारें वली तेहज प्रश्न भगवानने पूछ्या
तेना उत्तर भगवाने निःसंदेह पणे आप्या ते जोइ अध्यापक जे भणा
वनारो ते मनमा विचार करवा लाग्यो के आ वातोना तो महारा मनमा
पिण आज सुधी संदेह हता में पूर्वे घणा पंडितोने एना अर्थ पूछेला
हता पिण कोइये महारो शंकाओनुं समाधान कर्युं नहीं अने

नी बालके महारा संदेह दूर करचा ए महोटो आश्चर्य जणाय छे वली पिण इद्र महाराजें जगवानने शब्दोनी उत्पत्ति पूछी तेवारें जगवानें संज्ञा सूत्र, परिजाषा सूत्र, विधि सूत्र नियम सूत्र, प्रतिषेध सूत्र, अतिदेश सूत्र, अधिकार सूत्र, अनुवाद सूत्र, विजाषा सूत्र अने निपात सूत्र ए दश सूत्रना अर्थ सर्व पृथक् पृथक् कही बताव्या, शब्दसाधनिका बतावी तेवारें लोकोयें जाएयुं जे आ कोइ परदेशी ब्राह्मण आवेलो छे ते बालकने प्रश्न करे छे अने बालक तेना उत्तर आपे छे पिण एवा उत्तरनो आ जणावनार पंडितना मातापिता पिण जाणता नथी एम लोक सर्व आश्चर्य पामीने विचारवा लाग्या के आटला शास्त्र आ बालक ते किहां जणयो हशे? अने उपाध्याय पिण चमत्कार पामीनें केहेवा लाग्यो के आते कोण ब्रह्मा पोते साक्षात आंही आ या छे के शुं? ते वारें सर्व लोकना मनना संशय मिटाडवा सारु इद्र महाराज बोल्या के अरे लोको आ वर्द्धमान कुमार छे, एने सामान्य पुरुष जाणशो नहीं ए त्रण लोकनो नाथ छे, सर्व पदार्थोनो जाण छे, परंतु महागजीर छे माटे पूछ्याविना उत्तर आपे नही, लोकोमां कहावत छे के, ठाला ते बाजणा, ठाला बोला पोगढोल, जाणे आश्विन अने कार्तिकनो मेघ, जेवो असति स्त्रीनो स्नेह तथा जेवो शरदृतुनो गर्जारव तेवो ठालो जाणवो पिण जे पंडित छे ते तो वर्षादना मेघ सरखा ठाला बोले नहीं जे मूर्ख होय ते पोतें पोताने जाणे जे हुं पंडित छुं एवी लपरायो करे पिण एवा महोटा पुरुष जे छे ते विना पूछे बोले नही एवुं कहीने जगवाने प्ररूप्या जे व्याकरण संबंधि दश प्रकारना सूत्र तेनी वृत्ति तथा उदाहरण करीने व्याकरण बनाव्युं ते जिनेंद्र व्याकरण नामा आठ व्याकरणनी आदिमां थयो पछी इद्र महाराज पंडित प्रमुख लोकोमां जगवान सर्वज्ञ छे, एवुं जणावी पोतानुं रूप प्रगट करीने स्वर्गमां गयो उपाध्यायें जगवानने पगे लागीने कह्यो के हे प्रजु! तुमे ज्ञानसमुद्र छो हुं तो अपूर्ण कलशनी परे माटे तुमे महारा गुरु छो पछी प्रजुयें उपाध्यायने घणुं दान आप्युं

भगवानना मातापिता घणा राजी थका थया भगवानने हाथी उपर बे साडी उत्सवसहित गाजते वाजते घेरे तेडी आव्या ॥

॥ इति लेखक शालामहोत्सव समाप्त ॥

हिवे प्रथम इंद्रमहाराजें आवीने भगवानने जलेना अर्थ पूछ्या छे ते विस्तार होवाथी उपरे सूचव्या नथी माटे अहीं लिखीयें छैयें ॥

॥ अथ जलेना अर्थ प्रारंभ ॥

श्री वीरप्रभुने नीशाळे बेठा जाणीने सौधर्म इंद्र ब्राह्मणने रूपें आवी प्रभुने नमस्कार करी सर्वलोकनें चमत्कार उपजाववा निमित्तें प्रथम जलेना अर्थ पूछ्या थका प्रभुजीयें इणप्रमाणे अर्थ कह्या ॥ १ बे छोगी ते जीवनी बे राशि छे तेमा एक सिद्धना जीव ते निष्कर्मी अने बीजा संसारी जीवते सकर्मी जाणवा २ जले ते अरे जीव तु सिद्धना जीवनी राशीमा जेडवानी इच्छा राखजे ३ मिंडु ते संसार रूप गोळाकारें उंडो कूप छे ते माहेथी निकळवानु छिद्र छे माटे निकलीश तो सिद्धमा जलीश ४ निळाडी ते जेम कूवामा वस्तु पडी होय तनी लोढानी बिलाडीथी बाहेर काहाडीयें तेम इहा संसारी जीवने संसार रूप कूपमाथी काहाडवानी एक देशविरति अने बीजी सर्व विरति रूप बे बिलाडी जाणवी हिवे ते सिद्धना जीव किहा रहे छे ते कहे छे, ५ त्रीगण चोटीओ माथे चोटीओ एटले चौदेराज लोकना एक अधो लोक बीजो मध्य लोक अने त्रीजो ऊर्ध्व लोक एवा त्रण भाग छे तेमा ऊर्ध्व लोकने चोटीने स्थानकें बार योजन विस्तार वाली इसीपभारा नामे पृथ्वी छे तिहा एक योजनने चोवीशमें भागें ३३३ धनुष्यउपर बत्रीश अंगुल जेटला विस्तारमा लोकने मस्तकें अलोकने अडी रह्या थका सिद्धना जीव रहे छे। ६ ननो वीटाळो ते हे जीव ! तु संसारना काम भोगमा मग्न थइ वीटाइ रह्यो छो तेथी अधो गति एटले नीची गति पामीश. ७ ममो मा उळो ते आ संसार जे छे ते जीवनु अनादि घर छे तेमा मोह नामे मा उळो एटले मोसाळीयो छे, ८ ममा हाथ बे लाडुवा ते पर्वे क

गोह नामे माउजो एटले मोसाळीयो छ ने जीवने काम जोग रूप बे ला
वा हाथमा आपीने जोरवी राखे छे ससारमाथी निकळवा देतो नथी ९
सेरी राणी चाकरी ते सिद्धि रूप राणीने मंदिर चढता चार कषाय रूप
चोकडीनी चोकी राखी छे ते चोकीने वचीने कदापि कोइ उचो चडे
तो पिण तेने चढवा आपता नथी, १० पाछी चार कुडावलि ते इग
आरमी पावडीथी पाछो ढोलीने तेने ते चोकडी ससार कूपमा नाखे
छे, ११ ढाउ ढाउ ढोकलो मावे छोकरो एटले हे जीव! तु ससा
रमां घाइ घाइने गर्भावासमा पडीश तिहा ढोकलानी पेरें सीजाइ रहीश
वली छोकरा छैया ते ताहारे माथें विटबना पाडशे माटे जो तु धर्मना
चक्रवर्ती महाराजनु सिद्ध नगर छे तेने जोवाने वाछतो होय तो प्रथम
तेनो सम्यकत्व नामे महामत्रीश्वर छे तेनी साथें मिळने एटले ते तुजने
धर्म महाराजथी मिलाप करवी देशे, हिवे सम्यकत्व नामा प्रधानना
घर सुधी जातां थकां विचमा घाट छे तिहा लूटारा रह्या छे तेने निवा
रण करवानो उपाय कहे छे, १२ हाथमा डागडी ते धर्मकथा वार्ता
रूप यथा प्रवृत्ति करण करी, अपूर्व करणना शुभ परिणाम रूप डां
गडी एटले महामुद्गर हाथमा लेइने, १३ आइडा दो जाइडा वडो जाइ
कानो एटले राग द्वेष रूप बे जाइडाने पछाडी वेगळा करजे तथा बीजी
पिण सात प्रकृति रूप चोरनो भय करी अपूर्व करण रूप मुद्गरथी
मिथ्यात्वनी गाठ जागीने एटले ग्रथीभेद करी आघो जाजे तिहा सम्य
क्त्व नामा महामत्रीश्वर पाच रूप करी रह्या छे तेना तु दर्शन पामीश
पछी तेनी सेवामा रहेता थका ते ताहारामा योग्यता जाणीने आगळ
धर्म चक्रवर्त्तीनी छ पुत्री छे, १४ इडिकेवळी इडिउकारु एटले एक
देश विरति नामे लघु पुत्री छे अने बीजी सर्व विरति नामे महोटी दी
करी छे ते तुजने परणावी देशे परतु जो सम्यकत्व मत्रीनी सेवा एकाग्र
चित्तें सन्मुख रही करीश तो ते प्रसन्न थाशे केमके, १५ आउ आउ
आकोडा नडे आकड फाकोडा एटले तिहा शका कखा कषाय रूप

आवडा फाकडा महोटा छे तेनी जो तु सगत करीश तो सम्यक्त्व मंत्रीना विचारा जर्म पडशे तेवारे ते ताहारी साथे दोहेलो थाशे १६ निर्जीतोडवे कांठोला वडे एटले निरा वली विषय कषाय रूप अथ वा ममता माया रूप एरो व विषनी वेरडी छे तेमांहे काम अने जो गरूप बे सर्प सूताछे तेने जगाडीशमा छेडीशमा एम करवाथी स्वामी सुप्रसन्न थयो थको तुजने सिद्ध नगरीयें जवानो मयवारो करी आप शे १७ एनवेन बेगाडी एटले मासिति अने गुप्ति रूप बे गाडीयोमा बेसाडीने १८ श्रीरखवाला वलदिया एटले तेमा ज्ञान अने चारित्र रू प बे बलद जोतरी आपशे तेने, १९ अमीया बे रासडी एटले सवर अने निर्जरा रूप बे रासडी बाधीने गाडली शिवपूर नगरना मार्ग सणी चलावजे २० कक्को वेवडो एटले केवलज्ञान रूप वोलावा विना सिद्ध नगरे पोहोंचातु नथी ते केवलज्ञान तो अणाहार मार्गथी उपजे छे माटे २१ खम्बो खाजलपे एटले तु चार प्रकारना आहारनो स्वादी माइशमा रसेंद्रियना लोलुपी थाइशमा २२ गगा गोरी गाय वीयाणी एटले ते अणाहारीजे तपादिक मार्ग छे तेना बतावनारा तो गुरु छे माटे गुरुनी भक्ति बहुमान्य करजे केम के गुरु महोटा उपकारी छे स सार समुद्र तिरवाने बोधबीज धर्मनु आलबनादिक गुरु आपे छे माटे गुरुनु गौरव पणु करजे, २३ घघोघरट पलाएयो जाय एटले अरे जीव तु घरनो घघो जे आरभ समारभ तेना चारे करी अहर्निश पलाण्यो थको वहे छे ते चारथी तुजने गुरु मुकावशे, २४ ननीजो आमण दूम णो एटले गुरुयें जे घरनो चार छोडाववा माटे पाच अणुव्रत अने पा च महाव्रत रूप अभिग्रह नियमादिक अंगिकार कराव्या ते पालता थका आमण दूमणो उन्न चित्तवालो थइने पश्चात्ताप करीशमा, २५ पचाचिनीचोपडी एटले गुरुदत्त चारित्र धर्म पालवानी चित्तमा चोंप राखजे, २६ छच्छावदियापोटला एटले उदारय पणे गुरु समीपें श्रुत ज्ञान चौदपूर्वनी विद्यानु पोटलु बाधजे ज्ञाननो अभ्यास

जे, २७ अडजोजेसजआलीड एटले ‹ क्रियाणशल्य, मायाशल्य अने मिथ्यात्वशल्य ए त्रणशल्य ताहारा अंतरगने विषे छे तेने टालवानो वळीज व्यापार करजे २८ कक्काकारीमारिखो एटले तु कारी सरखो स्वभाव राखजे जेम कारीनु मुख साकडु होय अने पेट पोहोलु होय तेम ते तु पिण पेट महोटु राखजे अने मुख थकी कोइना दोष मर्म प्रकाशीशमा एवी रीतें मुखने साकडु राखजे २९ नन्नीयो खांडो चारे एटले खाडोचादो ते अर्द्ध चद्रमा जाणवो तेना जेवा आकार वाली सिद्धशिला छे ते स्थानकें जावानु तु निरतर साधन करजे ३० टहापो लिखंडिपु एटले तु पोताना व्रत नियम अगड आखडी जे काइ गुरु समी पें लीधा छे ते खडित करीश नही अर्थात पच्चखाणनी पोल जे बारणा तेनें दृढ राखजे, ३१ ठठाठोबर गाडुओ एटले तू ठोंबर ते प्रागेलो घ डो तेनी परें थाइशमा गुरुयें आपेली श्रुतिशिक्षा तें हृदयरूप घटनें वि पे सग्रह करी राखजे, ३२ डडाडामरगाठे एटले तु बाह्य आडबर करी अभ्यतर कर्मनी गाठि वधाइशमा, ३३ ढढा सूणोपूछे एटले तु सूणो ते श्वान तेना पूछडानी परें वक्र स्वभाव राखीश नही परतु सरल स्वभाव राखजे, ३४ गाणोताणोसेले एटले जो तु मोहराया साथें कूक करे तो ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तथा त्रण गुप्तिरूप त्रण सेल हाथमा राखजे, ३५ तत्तोतावे तेले एटले तु जप तप करतो थको कोइना आक्रोश वचन साभलीनें तप्त तेलनी परें तातो थाइशमा, ३६ थत्था थैरखवाली एटले कदापि ताहारु मन वशवर्त्ति न थाय तो पिण वचन अने काया ए बेने तो थिरथाप करी राखजे, ३७ दद्दीयोदीवट्टो एटले समकित दर्शनरूप दीवो तेने हृदयरूप घरमां राखजे वली दया दमनअनें दान तेनी अभि लाषा धरजे, ३८ धद्धीयोधाणको एटले तु धन कमाववानु परिग्रह मे लववानु ध्यान राखीशमा केवल धर्मध्यान ताहारा हृदयमा राखजे ३९ नन्नीयो पुलायरो एटले तु नास्तिक मति अगीकार करीने हृदयमांथी स ... पोलु एटले पातलु करीशमा ४० पप्पापोलीपाटे एटले पाप

आत्रवानी पोल जे पांचेंद्रियना आश्रवद्वार छे तेने संवर रूप किवाड नहीने बधकरी राखजे पिण पोला राखीश नही जेम अढार पापस्था नकनो प्रचार तेमा प्रवेश करी शके नही एवा दृढ मजबुत बधकरी राखजे ४१ फप्फाफगडे जोडे एटले फोकट फासीया, अशुद्ध, अवि नीत, अनाचारीनी जोडे संगत करी विचरीशमा ४२ बब्बामाहेबाद ण एटले बोधबीजनो वधारो करजे जेम जेम बोध वधतो जाशे तेम तेम हृदयने विषे ज्ञानरूप चादणुं एटले चद्रमा प्रगट थाशे ४३ भ भोजारी भेसको एटले भैंस जेम सुकु लीलु भक्षण करीने पेट भारी था य तेम तु पिण बावीश अभक्ष अने बत्रीश अनतकाय जे कदमूल क हेवाय छे ते पापीने तेनु भक्षण करी पेटे भारी थाइशमा कदापि दे वादिक आवीने चलावे तो पिण चलायमान थाइश नही माममूकीशमा एटले अर्हन्नक श्रावकनी पेरे दृढता राखजे तथा वली व्रत नियमादि क पालतो थको मनमा महोटो अभिमान धरीशमा, फिरी कहे छे मंमोयोभाटचूलेतरो एटले जेम चूलानी भाट धगधगती रहे छे तेम तु कोइना आक्रोश असह्यमर्मवेधाला वचन साभलीने अतरग हियडामा क्रोध रूपअग्निये धगधगतो रहीशमा एटले क्रोधाग्नियेंजलीशमा, ४४ ममयोयोमोचक एटले आठकर्मने मूक जे मोक्ष मार्ग महोटो छे तेने आ दरजे, ४५ यर्योयोजाडो पेटरो एटले ससारमाहे यमजे कृतात तेनु पे ट महोटु छे ते सर्वजगतने ग्रास करे छे तोपिण तेनु पेट भरातु नथी तेमाटे एनो भय ताहारा हृदयमा राखीने धर्मने विषे आलस करीश मा ४६ रायरोकटारमल्ल एटले राग अने द्वेष ए बे महोटा मल्ल छे तेमा रागना वली बे प्रकार छे एक प्रशस्तराग अने बीजो अप्रशस्त राग ए बेहु मल्लने जीतीश तो कर्मथी हलवो थइ केवलज्ञान उपार्जन करीने अक्षयपद जे मोक्षपद तेनो भोगी थइश ४७ लल्लालोडोलतवा एटले लोभरूप घोडानी लातथी वेगलो रहेजे, ४८ वव्वाविगणवासबे एटले कामादिक व्यसन छे तेने ताहारा मनरूप घरमा वास एटले वसवा

देजे नही, केमके जो कामादिक ताहारा मनरूप घरमा प्रवेश करश तो आत्मना उत्तम गुण रूप धनने सर्व चोरी लेइ जशे, ८९ शशा कोटा मरडीया एटले शसलानी परे कोट अने कानथी ढकाइने गलीयार थइ बेशी रहीशमा पिण धर्मने विषे उद्यमी थाजे जे पटला लोकनी गति थाशे तेम ताहारी पिण थाशे एवु चिंतवता एक दिवसे कालरूप पारधी दुर्गतिमा लेइ नाशे जेम ससलाने आहेडी लेइ कोट एटले गलु मरडी नाखे तेम तुजने पिण काल आहेडी मरडी नाखशे, ९० पथासूयें फ हिया एटले खरु बोलने खोटु बोलीशमा केमके एक पिण मृषावाद वचन बोलवाथी सर्व गुण अने सर्व व्रतनो नाश थइ जाशे जेम कोइक वस्त्रनो कोथलो खुणे फाटो पछी तेमा जे वस्तु भरेली होय ते हले हलवे निकलती थकी अनुक्रमे सर्व खाली थइ जती रहे तेम ताहारा गुण तथा व्रत जता रहेशे, तथा खुणे बेशी एटले कोइ नही देखे एवी रीते एकाते बेशी पाप करीश तो पिण ते आगळ उदायेक काले प्रगट थाशे ९१ सारसे दती ठोक एटले जो तु मोहराजानी साथे युद्ध करे तो दंती एटले हाथीनी परें साहसिक थको सर्वनी आगल आगेवान थइ किल्लाना कपाट, गढ कोट सर्वने भागी नाखे तेम तु पिण मोहरा जानो मिथ्यात्व रूप गढ भागी नाखीश, ९२ हाहोलो हरिणेकलो ए टले तु मोहरूप पारधीना पाशमा पडीशमा पिण हरण जेम पारधीने देखी नाशी जाय तेनी परें तु पिण फाल मारीने नाशी जाजे परतु जो मोहना पाशमा पड्यो तो ससारना बधनथी छूटीश नही, ९३ लावेच्छो दीपणीहार एटले जोतु मोक्षनो अभिलाषी थइने ससारना बधन छे दिश तो एक द्रव्यलक्ष्मी अने बीजी भावलक्ष्मी ए बे प्रकारनी लक्ष्मी ताहारे घरे पाणी भरशे एटले जो अनुत्तरविमाने देवना पणे उपजीश अथवा मनुष्यभवे नरदेव चक्रवर्त्ति पणे उपजीश तो भरतादिक जेम द्र व्य लक्ष्मीना पुण्य भोगवीने सिद्धने विषे भावलक्ष्मी भोगवे छे तेम तु पिण पामीश ॥ हिवे एवा सिद्धना सुख केवी रीते पामीये ते आगळ कहे

छे, ५० घडीया खाटक मोर पाळे बाध्या बे चोर एटले ससारने विषे षट्काय जीवोना आत्माना जे ज्ञानादिक गुण छे तेने लूटवाने माटे राग अने द्वेष रूप बे चोर खडा छे एटले ठग्या छे तेने पकडी बाधीने तेनु बीजमात्र काहाडी नाखजे के जे थकी कर्मरूप वृक्षनी उत्पत्ति फिरी थाय नही ॥ रागोयदोषोयमाबीज इतिवचनात् ॥ माटे ए बे ने टालीने चार घन घातीया कर्मने टालजे के जेम केवल रूप लक्ष्मी पामे पछी ते केवल श्री जोगवीने अंते चौदमे गुणठाणे योगनिरुधी शैलेसी कारण करी शुक्ल ध्यानने चोथे पाइये कार्मण शरीर छेदी क्रिया राहित थइ सिद्धना जीवोनी राशीमा जळजे के जेम ५५मगल महाश्री, देविद्या पर मेश्वरी एटले मगलिक रूप महोटी जावलक्ष्मी पामीश अर्थात पोताना आत्माना अनंत ज्ञान, अनत दर्शन, अनत चारित्र, अनतवीर्य, अगुरु, लघु, अरूपी, अखड, अक्षय, अव्यय एवी महामगलिक रूप जावलक्ष्मी पामी सादिअनतजागे अजर, अमर, अविनाशि पणे, महानद, परमानंद पद पणे रहीश इति तत्व ए जलेना अर्थ समाप्त थयो ॥ वली तेनो अर्थ प्रकारातरे जुदा जुदा महा पुरुषोनो करेलो घणा प्रकारनो दीठामा आयो छे परतु आही ग्रथगौरवना जयथी मात्र आ एक प्रकारनोज दाखल कर्यो छे ॥

हिवे जगवान जेवारे बाल्यावस्थायें करी राहित अने यौवनवय पाम्या तेवारें मातापितायें रूडु मुहूर्त्त जोवरावीने घणा आडबर सहित समरवीरलामा सामतनी पुत्री यशोदा नामे हती ते प्रजुने परणावी पणी प्रतोमा नरवर्मराजानी पुत्री यशोदा परएया एवा अक्षर लिखेला छे पछी ते यशोदा राणी सार्थे विषयसुख जोगवतां प्रियदर्शना नामे एक पुत्री थइ ते पुत्री जगवाननी बहेननो पुत्र जमाली नामे हतो तेने परणावी एम करता जगवानने गृहस्थ पणामा अठावीश वर्ष वीत्या ॥

हिवे जगवानना परिवारना नाम सूत्रकार वर्णवे छे महावीरस्वामीना पिता काश्यपगोत्रीयाछे तेना त्रण नाम छे ते कहे छे, एक सि

द्धार्थ, बीजु श्रेयास, त्रीजुं यशस्वी हिवे जगवाननी मातानु वाशिष्टगोत्र छे अने तेमना पिण त्रण नाम छे ते कहे छे. एक त्रिशला, बीजु विदेहदिन्ना, त्रीजु मीतिकारिणी तथा जगवानना काकानुं सुपार्श्व एवु नाम छे तथा जगवानना महोटा जाइनु नंदीवर्द्धन एवुं नाम छे तथा बहेननु नाम सुदर्शना छे तथा स्त्रीनु नाम यशोदा छे तेनु कोडिन्न गोत्र छे तथा जगवाननी पुत्रीनु काश्यप गोत्र छे तथा तेना अणोद्या अने प्रियदर्शना एवा बे नाम छे तथा जगवाननी दौहित्री तेनु काश्यप गोत्र छे अने शेषवती तथा यशवती एवा बे तेना नाम छे ॥ ११० ॥

हिवे जगवान श्रीमहावीरस्वामी केहेवा छे तोके " सर्वकलाओमां निपुण छे, जलीरीतें निर्वाह करवा वाला, जला रूपवत, सर्व गुणे संपूर्ण, सरलपरिणामी, विनयवान, ज्ञानराजाना पुत्र, प्रसिद्ध एवाने सिद्धार्थराजा तेना कुलमा चन्द्रमा समान, जलो छे देह एटले शरीर वाला, कांतिवंत, ममता रहित, दीक्षानी वाछा करनार, त्रीशवर्ष गृहस्थावासें रह्या तेवारें मातापितातो प्रजुनी अठावीशवर्षनी वयमां देवलोके महोता हता ते दिवसें दीक्षा लेवाने माटे पोताना महोटा जाइ नदीवर्द्धननी आज्ञा लीधी अने जाइने कह्यु के मातापिता जीवता रहे तिहां सुधी महारे घरमा रहेवु एवी महारी प्रतिज्ञा हती ते पूरण थइ फिरी जाइनी अनुमतिथी बे वरस घरमा रह्या तेवारें लोकांतिक देवो आवीने इष्टाकारी वचन वाणीयें करी नित्यआशीष देता थका नित्य स्तवना करता थका एवु कहे ॥ १११ ॥

के हे प्रजु ! हिवे तुमारो अजिग्रह पूरण थयो, ते हिवे अजिग्रह सबधि वात लिखे छे, जगवान अठावीश वर्षना थया तेवारें जगवानना मातापिता देवलोके गया ते आवश्यकनिर्युक्तिमा तो चोथे देवलोके गया एवुं लिख्युं छे ए वातनु समाधान करवा सारु केटलाएक एवी कल्पना करे छे के देवोनी थयी मिली चारनिकाय छे तो ते चार देवनिकाय आश्रयी ए चोथी निकाय वैमानिक देवोनी छे माटे एवो

सेषा कारवा निमित्तें मोकल्या हता ते सहुयें मज्ञो एवा धीर अनुष्ठान करता देखीने विचाग्यु जे ए चक्रवर्त्ती नथी एनो समय आही तीर्थंकर छे एवु जाणी ते सर्व पोतपोतानें स्थानकें गया जगवान पिण एवी स्थितिमा बेगी बे वर्ष गहस्थावासे रह्या, सर्व सचित्त वस्तुनो त्याग करचो, ब्र ह्मचर्य पाल्यु पिण जे वखत दीक्षा लीवी छे ते वखत सचित्त जलथी स्नान करचु छे केमके एवी मर्यादा छे जे दीक्षा लेती वखतनु स्नान उष्ण जलथी करवु तीर्थंकरनें न होय तेथी मनिमाने पिण उष्ण जल चढावता नथी एवी स्थिति छे पछी बे वर्षमाथी जेवारें एक वर्ष वीत्युं तेवारें नव लोकांतिक देवो आव्या तेना नाम कहे छें १ सारस्वत, २ आदित्य, ३ वन्हि, ४ वरुण, ५गर्द्दतोय, ६ तुषित, ७अव्याबाध, ८ अग्नि ९ अरिष्ट. ए नव आवीनें जो पिण जगवान स्वयबुद्ध छे तो पिण एमनी एवी मर्यादा छे माटे प्रजुनी पासे आवीने जाण करे केवी रीतें जाण करे ते कहे छे ज य जयवत होवो हे समृद्धिमान ! हे कल्याणवान ! तुमारु जलु थाओ, हे क्षत्रियोमा टषजसमान ! तुमारो जय होवो बोध करो बोध करो बुजो बुजो हे जगवान ! हे लोकनाथ ! सर्व जगत जीवने हितकारी प्रवर्त्तो हे जगवान ! तुमे धर्म तीर्थ प्रवर्त्तावो, ते धर्म तीर्थ सर्व लोकनें हितकारी सुखकारी, मोक्षकारी थाशे एवु कहीने जयजय शब्द कहे ॥ ११२ ॥

हिवे श्रमण जगवान श्री महावीर स्वामीनें मनुष्य योग्य गृहस्थ धर्म थी गृहस्थना व्यवहारथी पहेला, पिण अनुपम उपयोग ते अप्रतिपाति एवु अवधिज्ञान अने अवधि दर्शन हुतो हुवो ते अनुत्तर अवधिज्ञान अने अवधि दर्शने करी पोतानी दीक्षानो अवसर जाणीने, रूपानो त्याग करी ने, सोनानो त्याग करीनें, धननो, राजनो देशनो, वाहननो, कोठारनो जंडारनो, अनेउरनो, देशवासी लोकनो, धन कण, धान्य, मणिरत्न, मो ति, दक्षिणावर्त्त शख, शिला प्रवाल, रातारत्नादिक जे पोतानी पासें छ ता छे ते सर्वनो अर्थात तेना उपरथी मन उतारी लीये, सर्व रूपादिक छोडीने जे चादी प्रमुख धरतीमा दाटेला होय तेने बाहार

थो देवलोक ते चोथी निकाय वैमानिक देवोनी समजवो तो ते चौथी निकायमां बारमो देवलोक आवीगयो इणवी आचारंगमां कह्या प्रमाणे बराबर वातमिली आवे छे ए प्रमाणे समाधान करे छे पछी तत्त्व केवली गम्य छे ॥ हिवे मातापिता देवलोके गया पछी महोटा भाइ नंदीवर्द्धनने भगवाने पूछ्युं के हुं दिक्षा लउ तेवारें नंदीवर्द्धन बोल्या के भाइ तुं दाझ्या उपर लूण नाखे छे केमके मातापिता मरण पाम्या तेना वियोग रूप दाझ जे बळतरा एटले फोडला तेतो हालमां मने कायम छे तेना उपर वली ताहारा वियोग रूप लूण नाखवुं ते महाराथी सह्यो जाय नही हजीतो माता पितानो शोक पिण मिट्यो नथी माटे हुं दीक्षा लेवानी रजा हमणा आपीश नही तेवारें भगवान बोल्या जे माता पिता भाइ बहेन एतो जीवने अनंतिवार थया ते सर्वने मूकीने पछी जीवतो एकलोज आवे छे, एकलोज जाय छे, एकलोज पोताना करेला शुभ शुभ कर्मोने भोगवे छे, एवीरीते संसारमा कोइ कोइनो सगो नथी तो हिवे कोनो शोक करीयें अने कोनी कोनी साथें प्रतिबंध राखीयें ? फिरी नंदीवर्द्धन बोल्या के भाइ ! एवुं हुं पिण जाणु छु तो पिण हुं शु करु जे महारे मोहनीयकर्मनो बंध हजी घणो भारे छे तेथी ताहारो विरह हुं खमी शकतो नथी तेमाटे हजी महारा कहेवाथी तुं बे वर्ष घरमा रहेतो ठीक छे हिवे उत्तम पुरुषनी चाल छे के दुःखीयाने देखी तुरत करुणा आवे माटे भाइनुं एवुं कहेणुं सांभलीने कह्यो के हे भाइ हुं बे वर्ष रहीश पिण भातपाणी सर्व फासु लेइश महारा वास्ते आरंभ करीने काइपिण बनाववुं नही तेवारें भाइयें कह्यो के सुखे एमज रहो अमे तुमारा वास्ते काइ करीशुं नही तेवारें भगवान फिरी पिण बे वर्ष गृहवासें रह्या ॥

हिवे जेवारें भगवान जन्म्या हता तेवारें लोकमां एवी प्रसिद्धि थइ हति जे चौद स्वप्न मातायें दीठा माटे ए चक्रवर्ति थाशे, एवुं जाणीने श्रेणिक अने चंदप्रद्योतन राजायें पोताना कुमारोने बालक ठाकोरनी

सहु आपणा गोत्रियानें वाटी आपीने आ सूत्रथी वरसीदाननो अधिकार एवो छे के भगवान दिक्षाना दिवसथी एक वर्ष पहेला वरसीदान देवा माटे ते सूर्य उग्याथी माडीने जिमवानी वेला सुधी प्रति दिवसें प्रभातना सवा पहोर दिवस चढता सुधी नित्य प्रत्यें एक क्रोडने आठ लाख सोनैया भगवान दानमा आपे अने गाममा एवी उद्‌घोषणा करे के जेने जे वस्तु जोइये ते वणी ते वस्तु मागे तेवारें जे घणी जे मागे तेने आपे ते सर्व शक्रेंद्रना आदेशथी देवता पूरण करे एवी रीते एक वर्षमा केटली सोनैया दान आपे ते कहे छे त्रणसो क्रोड एटले त्रण अब्ज अठ्यासी क्रोडने ऐंशी लाख एटली सोनैया एक वर्षमा दान आपे ते, सोनैया एक ऐंशी रतीभार जेटलो होय अने तेना उपर तीर्थंकरना मा बापनु तथा पोतानु नाम होय ते बारसो सोनैयानो एक मण करता नव हजार मण सोनैया दिन प्रत्यें दान देवाय तेना आजना समय प्रमाणे एक गाड मा चाळीस मण भार नाखतां बसोने पच्चीस गाडला थाय ते सोनैया शक्रेंद्रना आदेशथी वैश्रमण देवता देव मायायें करी आठ समयमा नी पजावीने, तीर्थंकरना घरमा भरे, ए दानदेवानो अतिशय छे, अने तीर्थंकरना हाथने विषे सौधर्मेंद्र एवी स्थिति करे के दान देता थका तीर्थंकरनो हाथ थाके नहीं इशानेंद्र रत्ने जडित सुवर्णनी लाकडी लेइ उभो रहे ते चौसठ इंद्र वर्जीने बीजा देवताओने दान लेता वर्जे तथा जे मनुष्यना ललाटमाहे जेवी प्राप्ति होय जेवु जेने आपवु पोसाय तेवु तेना मुखमाथी इशानेंद्र वचन कहेवरावे, तथा चमरेंद्र अने बलेंद्र ए बे इंद्र जो तीर्थंकरनी मुठीमाहे अधिकद्रव्य आव्यु होय तो पाछु पडावी नाखे अने ओछु द्रव्य आव्यु होय तो पूरण करे मागनारनी प्राप्ति माफक पामे तथा भुवनपति देवता भरतक्षेत्रना मनुष्यने दानलेवा सारु तेडी आवे अने वाणव्यंतर देवो ते मनुष्यने पाछा तेने स्थानके मूकी आवे तथा ज्योतिषी देवता विद्याधरोने दान लेवानी खबर आपे ए सर्व तीर्थंकरना अतिशय जाणवा ए

प्रभावे तीर्थंकरनो पिता म्होटी त्रण शालाओ करावे आहीं भगवान ना मातापिता देवलोक गया छे माटे तेने ठेकाणे एमनो म्होटो भाइ नंदीवर्द्धन छे ते त्रणशालाओ करावे तेमा पहेली शालायें भरतक्षेत्रना मनुष्यने अन्नपानादिक आपे, बीजी शालामा वस्त्र आपे अने त्रीजी शालामा आभरण आपे हिवे तीर्थंकरना हाथना दाननो महिमा कहे छे चोसठइन्द्रने दानने प्रभावे बारे वरस पर्यंत माहोमाहे कलेश उपजे नही तथा राजा अथवा चक्रवर्त्ति प्रमुख तीर्थंकरनु दान लेइने ते सोनै या पोताना भंडारमा मूके तो वर्ष सुधी तेमनो भंडारअखुट रहे तथा शेठ सेनापति आदिकने दान मिलेतो तेना महिमा बारे वर्ष पर्यंत यश कीर्ति घणी वधे तथा रोगी पुरुषने दान मिलेतो तेना प्रभावथी रोग सर्व मिटी जाय अने फिरी बारे वर्ष पर्यंत तेना शरीरमा कोइ नवो रो ग पेदा थाय नही इत्यादिक दाननो महिमा जाणवो हिवे छ घडी दि वस चड्या पछी दानदेवा माडे ते पुणी बे पोहोर दिवस चड्या सुधी दा न आपे एवो पाठ घणी प्रतोमा लिखेलो छे परतु एमा सूर्य उग्याथी ते जिमवाना वखत सुधी आपे एवो प्रथम लेख आव्यो छे एवीरीते प्रभु जी वरसीदान रूप वर्षाद सुधी वरसावीने मनुष्योना दारिद्र रूप दावानलने उपशमावे जे दारिद्री हता ते सर्व धनवंत थया, घोडे करी वध्या, वस्त्रेकरी वध्या, आभरणे करी वध्या, ए आदिक लक्ष्मीयें क री सहित थया ए प्रभुना हाथनु दान लेइने जेवारें पोताने घेरे पाछा आवे तेवारे तेना घरनी स्त्रीयो सरखी पिण पोताना स्वामीने ओलखे नही पछी इन्द्र महाराज आवी ओळखणा करावे तेवारें तेने सर्व प्रका रनी ओलखणा पडे ए प्रभुना हाथनु दान सर्व भव्यजीवोने मिले पर तु अभव्यनेतो ए प्रभुना हाथनु दान सर्वथा मिलेज नही

॥ इति संवत्सरीदान महिमाधिकार वर्णन समाप्त ॥

हिवे भगवान महाराजनो दीक्षा समय जाणीने नंदीवर्द्धन राजा दीक्षा नो महोत्सव करवाने अर्थे प्रथमतो क्षत्रियकुंडपुर नगरने विषे ध्वजाओ

थानी हाट शिणगारचा, घरघर तोरण बधावर्या एवीरीतें नगरशिणगारीने
ठी चोसठ इन्द्र अभिषेक करवा आवे तेवारे देवोना प्रजावथी देवोये
ेला जे आठजातिना अभिषेक कलश ते कलश नंदीवर्द्धन राजाना
ावेला अभिषेक कलशमा प्रवेश करी मिली जाय पछी नंदीवर्द्धन
ाज भगवानने पूर्व सन्मुख बेसाडीने देवनायें लावेला जलथी जगवानने
ाभिषेक करे ते वखते इन्द्रादिक देवो सर्व शृंगार दर्पण हाथमा लेइ
ायमय शब्द कहेता थका आगल उजा रहे पछी जगवानना शरीरने
ठी बावनाचंदने करी शरीर लेपे अमूल्य वस्त्र मुकुट, मोतीना हार,
ठसूत्र, केयूर, बाजुबंद, बहिरखा अने कुंडलादिक सर्व जातना आज
ण पहेरावे, पुष्पादिके करीने कल्पवृक्ष समान करे पछी नंदीवर्द्धनना
ेहेवाथी अनेक सेवक पुरुष पचाश धनुष लाबी, पच्चीश धनुष पोहोली अने
्रीश धनुष उची मणिकणक रचित एवी एक चंद्रप्रजा नामे पाल
ी बनावे तेमज देवता पिण एवीज एक पालखी बनावे ते पालखी
ेव्यानुसारे नंदीवर्द्धन कृत पालखीमा प्रवेश करे पछी ते पाल
ी प्रजुना मुख आगल मुके प्रजु ते पालखीमा पूर्व सन्मुख सिंहासने
ानेने बेसे अने जगवाननी जिमणी बाजु कुलमा वडेरी कुलमहत्त
ेरा हंस लक्षण स्त्री साडी लेइने बेसे तथा डावी बाजु जगवा
नी धाव्यमाता आवी दीक्षाना उपकरण लेइने बेसे तथा जगवान
ी पिठवाडे शोल शिणगार पहेरीने एक वैणीज स्वरूपवान जली स्त्री
्रधरीने बेसे तथा इशानकोणे एक स्त्री जले पूरेण कलश हाथमा ले
उजीरहे अग्नि कोणे एक स्त्री मणिमय विचित्र वींजणो करती उ
ीरहे, ए सर्व स्त्रीयो शिणगार करेली युवान अवस्था वाली जाणवी
ारे पछी नंदीवर्द्धन राजानी आज्ञाथी एक हजार सेवक पुरुषो जे
ालामां ते शिबिकाने उपाडे एटलामा ते वखतमा शक्रेंद्र ते पालखीनी जि
णी बाजुनी आगली उपरली तरफनी बाहा उपाडे, तथा इशानेंद्र डाबी
ाजुनी आगली उपरली बाहा उपाडे तथा चमरेंद्र जिमणी बाजुनी पाछली

तरफनी उपरली बाहा उपाडे तथा बलिंद्र हाथी बजुनी पाछली तरफनी उपरली बाहा उपाडे अने बीजा भवनपती, व्यतर, ज्योतिषि अने वैमानिक देवोना जे इंद्र छे ते जिहा देखे तिहाथी उपाडे, केटलाएक देव दुंदुभी बजावे, केटला एक पचवर्ण फूलनो वर्षाव करे पछी शक्रेंद्र अने इशानेंद्र बाहुनें छोडीने चामर ढोले तेवारे शिबिकानें बीजा इंद्र उपाडे एम शिबिकाने प्रथमतो मनुष्य उपाडे पछी सुरेंद्र, असुरेंद्र, नागेंद्र उपाडे बीजा सर्व देवो हर्ष पाम्या थका केटला एक आकाशे रह्या थका नृत्यादिक करे आ ठेकाणे जेम वनखड फूलें करी शोभे तेम पद्मसरोवरमा शरदकालें कमल शोभे तेम देवता आकाशें रह्या थका शोभे छे तथा जेम अलशीनु वन, कनेरनु वन, चपानु वन, फूलेकरी शोभे तेम क्षत्रिय कुड नगरथी माडीने देवताना भवन सुधी देवदेवीओयें करी आकाश सकीर्ण थयो थको शोभे छे प्रधान पडह भेरी झालरी दुंदुभी इत्यादिक क्रोडोगमे वाजित्र आकाशे तथा धरतीयें वाजी रह्या छे, घरना व्यापारधधा मूकीने मनुष्यना छुद जोवा मिल्या छे, हिवे पालखी चालता देवदेवी तथा नरनारी पोतपोतानी खुशी प्रमाणे मनमा आवे तेवा प्रकारना हर्षना वाजा बजावे छे, गावे छे, नाचे छे, फूलफल मोती प्रमुखने वरसावे छे ॥

हिवे वर घोडामा भगवाननी आगल अनुक्रमें सहुथी पहेलातो आठ मंगल चाले, पछी पूरण कलश भृगार चाले, पछी महोटी वैजयंति ध्वजा चाले, पछी छत्रधर चाले, पछी मणिपीठ सिंहासन चाले, पछी शिणगारेला पिण असवार विनाना एवा एकसोने आठ हाथी चाले पछी एकसोने आठ घोडा चाले, पछी एकसोने आठ शस्त्रें भरेला रथ चाले, पछी एकसोने आठ पुरुष चाले, पछी घोडा, हाथी, रथ अने पाला ए, चार प्रकारनी सेना चाले पछी एक हजार योजन उंचो अने न्हांनी न्हानी एक हजार ध्वजायें मडित एवो महेंद्रध्वज चाले, पछी कुतग्रहा बाणग्रहा, तीरग्रहा, गोफणग्रहा, हास्यकारिका, कर्मकारिका, बराबर

रिका, ज्ञानकारिका, विनोद कारिका, खड्गधर, धनुर्वर, एवा पुरुषो चाले, पछी पाटीया धरवावाळा पुरुष चाले, पछी घणा चारण भीखारी मागता थका चाले, पछी घणा उग्रभोगकुलादिकना क्षत्रिय, माडलिक, कोडंबिक, शेठ, सेनापति, सार्थवाह, देव, देवी प्रजालोक चाले, भगवाननी पिठवाडे घणी सेनायें परवरयो थको, छत्र चामर धरावतो थको, घणा आडंबर सहित नंदीवर्द्धन राजा चाले, बीजा पिण घणा लोक चाले, ते वखत अनेक प्रकारना बाजा बाजे तेनो शब्द सांभळीने नगरनी स्त्रीयो पोत पोतानुं काम मूकीनें त्या आवे ते केवी थकी आवे तोके त्रणवातो स्त्रीयोने वल्लभ छे एक झगडो, बीजु काजल त्रीजो सिंदूर वली त्रण वातो बीजी अत्यंत वल्लभ छे एक दूध बीजो जमाइ, अने त्रीजु वाजु ॥ दोहरा ॥ तिणिमतितिया वल्लहा, कलिकज्जल सिंदूर ॥ एपुण अतिहि वल्लहा, दूध जमाइ तूर ॥ १ ॥

माटे ते स्त्रीयो बाजानो शब्द सांभळीनें उतावलथी दग थई तेथी कोइएक स्त्रीतो काजल आंखमा आजती हती ते आंखने बदले गालोमा लगावी दीधु अने गालोमा कस्तुरी लगाडवी ते आंखोमा आजी दीधी, केटलिएक स्त्रीयो पगोमा झाझर पहेरवा भूलीगइ तेने बदले गळामा झणेणाट करता झाझर पहेरी लीधा, केटलिएक स्त्रीयोये गळामा पेहेरवाना घरेणा ते पगमा पहेरी लीधा, केटलीक स्त्रीयोये कटीमेखला गळामा पहेरी लीधी अने गळानो हार ते कटीमेखलाने स्थानके केडमा बाधी दीधो, केटलिक स्त्रीयोये चदन घसीने पगे चोपडयु अने अलतो मस्तके चोपडी लीधो, केटली एक स्त्रीयो अर्धस्नान कर्युं न कर्यु एवी थकी दोडती आवी, कोइकतो घाघरा ओढीनें चालती आवी तेथी नीचेना भागमा नागीज दीसवा लागी, कोइक बीजी पारका पुरुषनी स्त्रीयोना छोकरा ते भूलथी पोताना काखमा तेडीने दोडी आवी, केटलिएक तो पोताना रडता बालकने पडता मूकी चाली आवी, केटलिएक पहेरवानु वस्त्र ताणी बाध्यु नही तेथी वायराने योगें ते वस्त्र

उडीगयु तेना योगे नववधू बालकुमारी सरखी दीसवा लागी, कोइ ए क स्त्रीये एक कानमा आभूषण पहेर्यु अने बीजा कानमा पहेरता भू लीगइ कोइ एक स्त्री निमणो तो रह्यु पिण चलु करवु रहीगयु, कोइक स्त्रीये एकन पगघोयो बीजा घोवो रहीगयो, कोइक काचली पहेरता वीसरी गइ एवी उतावळथी जोवा नीकली केटलिएक चावल उछाळे छे, केट लीएक नाचे छे, एवा आडंबरथी जगवाननो दिक्षा महोत्सव थयो ते कया दिवसे थयो ते दिवस कहे छे तेकालने विषे ते समयने विषे श्रमण जगव त श्रीमहावीरस्वामी ते हेमतऋतु एटले शीयाळाना ऋतुनो पहेलो महीनो पहेलु पखवाडीयु, मार्गशिरवदि दशमीने दिवसें दिवसनी पाछली छाया ए टले पोरीसीदिन रहे एक पहोर दिवस रहे तेवारें तथा सुव्रननामा दि वसतु नाम ते दिवसने विषे, विजयमुहूर्त आवे थके चद्रमभा नामा पा लखीमा बेठा थका, जेनी आगल पाछल देवता अने मनुष्य चाली र ह्या छे, शखना वजाववा वाळा सोनाना चक्रना धरवावाला, हलना ध रवावाला तथा मगल शब्द बोलवावाला एवा भिक्षु प्रमुख भाट प्रमुख तथा घटाने बजाववा वाला तेमनो समुदाय ते सर्व आशीष आपे छे ॥ ११४ ॥

के हे समृद्धिवत ! तुमारो जय जय होवो, हे कल्याणवत ! तुमोने भद्र थाओ, तुमारा ज्ञान, दर्शन अने चारित्र अतिचार रहित होवो, एमां जग मतथाजो, नही जीतवामा आवे एटले जीतवाने वणी कठण एवीजे इंद्रियो तेने तुमे जीतो, साधुधर्म पालो, सर्वविघ्न रहित होवो, उग्रविहार करवामा तुमारु नाम थाओ, रागद्वेषरूप बे मल्लोने तुमे हणो, तथा तपरूप धैर्य अने सतोष रूप लगोटाने कसीने आठकर्मरू प शत्रुओनु मर्दन करो, उत्तम शुक्लध्याने करीने अप्रमत्तपणे रह्या थ का विचरो, हे वीर ! तुमे आराधना पताका ग्रहण करो, त्रणलोकरूप रग एटले मल्लनो अखाडो तेमां अधकार रहित एवु अनुपम केवलज्ञान, ते तुमे पामो मोक्षरूप परमपद पामवाने केवळी जगवाने देखाड्यो जे सधो मार्ग ते मार्गे तुमे जाओ. केवीरीते जाओ तोके ? बावीश परिसह

रूप फोजने हणीने जाओ हे क्षत्रियोमा वृषभ समान, तुमारो जय थाओ, घणादिवस, घणा पक्ष, घणामास घणावर्ष जय पामो वली बे पखनो एक मास, बेमासनो एकऋतु थाय, त्रण ऋतुर्ये एक अयन थाय अर्थात् छ मासें एक अयन थाय एवा त्रण अयन लगें वली बे अयने एक वर्ष थाय छे, पाच वर्षनो एक सवत्सर थाय छे, एवा घणा सवत्सर पर्यंत परीसह तथा उपसर्गोथी डर नही राखो, बीजली सिंहादिको ना बीहामणा भय भैरवोने क्षमायें करीने सहन करो, तुमोने धर्ममा कोइ विघ्न मत करो, एवु कहीने जय जय शब्द करे ॥ ११९ ॥

पछी भगवान श्रीमहावीर स्वामी दिक्षा लेवा नीकल्या ते वखत हजारो नेत्रोथी देखता थका अर्थात् हजारो लोको देखी रह्या छे, देखी देखीने हर्ष पामे छे, हजारो लोको वचने करी स्तवना करी रह्या छे हजारो लोकोना मनमा एवु छे के घणा कालपर्यंत ए जीवता रहो, हजारो लोको विस्तारी विस्तारीने मनमा एवा मनोरथ करी रह्या छे के ए तीर्थंकर थाशे तेवारें एनी सेवा करीशु, एमना काति रूप गुण देखीने लोको एवु चिंतवन करे छे के ए अमारो स्वामी थाओ, हजारो लोको पोताना जिमणाहाथनी आगुलीथी देखाडी रह्या छे के ए भगवान विराज्या छे एवो कहेते थके हजारो पुरुष हजारो स्त्रीयो अजली सहित हाथ जोडी जोडीने प्रणाम करे छे ते जिमणा हाथे लेते थके, हजारो गमे घरोनी श्रेणी मध्यें उल्लघते थके, रूडा प्रकारे वीणा, हस्त तालें, वाजित्र गीत, शब्द ते मीठा मनोहर जयजय शब्दनी साथे मिलेला एवा लोकोना स्वरे करीने सावधान होते थके, सर्व ऋद्धिसहित, सर्व आडवर साहित, सर्वबले साहित, सर्वसेना सहित, सर्ववाहन सहित सर्वसमुदाय साहित, सर्वआदर साहित, सर्वसपदा साहित, सर्वउत्सव सहित, देखवाने मनमा आवे एवा सर्वमिलाप साहित, सर्वलक्ष्मी साहित, सभ्रम साहित, सर्वनगरलोक साहित सर्वनाटक साहित सर्वतालेवरत, सर्वअतेउर साहित, सर्वपुष्प गधमाला घरेणायें सुशोभित,

पाना घोष सहित, महोटी ऋद्धि, द्युति, बल, वाहन, समुदाय सहित महोटा भला बाजां समकाल बाजता थका, शंख ढोल, पडह, काछर, खरमुखी, हुडुक्क, देवदुदुभी प्रमुख बाजाना प्रतिशब्द सहित, क्षत्रियकुंडपुरनगरनी विचमां थइने निकले, नीकली करीने जिहां ज्ञातखंडवन नामे उद्यान छे तिहां अशोकवृक्ष घणुंज रूडुं छे, तिहां आवे ॥ ११६ ॥

आवीने अशोकवरवृक्षनी नीचे पालखी राखे, राखीने पालखीथी उतरे उतरीने पोताना हाथथीज घरेणा माला प्रमुख अलंकारादि उतारे उतारीने ते घरेणा जे तेमना कुलमां वडेरी हंसलक्षण स्त्री ते पोताना वस्त्रमां लीये, पछी पोताना हाथथीज पंचमुष्टी लोच करे ते केश इंद्रमहाराज पोते लेइजइने क्षीरसमुद्रमा मूके लोचकरीने चउविहारी छठ एटले बेलानी तपस्या करे, उत्तराफाल्गुनी नक्षत्रनी साथे चंद्रमानु योग आवे थके एकज शक्रेंद्रे आपेला देवदुष्य वस्त्र लेइने, एकला रागद्वेष रहित तथा साधुना सथवारा रहित थका द्रव्यथी अने भावथी मुंडित थइने,गृहस्थपणानो त्याग करीने अणगारपणानो अंगिकार कर्यो॥११७॥

हिवे जे वखते भगवान सामायिकनो उच्चार करे ते वखते शक्रेंद्र सर्व कोलाहल वाजित्र प्रमुख बंध करे, पछी भगवान नमोसिद्धाणं एवुं कहीने करेमिसामाइयं इत्यादि यावत्तुतस्सपडिक्कमामि इत्यादिक कहे इहां बीजो गुरु करवानो अभाव छे पोते स्वयं चारित्र लीये छे माटे भंते ए पद कहे नही तीर्थंकरनो एवोज कल्प छे, ते माटे भंते पद न कहे, इहां भगवानने चोथुं मन पर्यवज्ञान उपन्युं हिवे सर्व इंद्र तथा देवो ते भगवानने नमस्कार करीने नंदीश्वरद्वीपे जइ अठाइ महोत्सव करीने पोतपोताने स्थानके गया, अने भगवानने पिण पोताना भाइ नंदीवर्द्धन प्रमुखने पूछीने विहार कर्यो हिवे स्वजनादिको पिण ज्यां सुधी भगवान नजरे देखाता हता त्यां सुधी त्यांज उभा रह्या, पछी भगवानना गुण याद करता झूरता झूरता पोताने घरे आव्या ॥

॥ इति कल्पव्याख्याने पंचमो वखाण समाप्त ॥

हिवे भगवाने दीक्षा लेइने पछी विहार करचो ते वखतमा बे घडी दिवस शेष बाकी रह्यो हतो तेवारें भगवान कुमारगामनी बाहेर काउस ग्ग रह्या ते वखत एक हाली आव्यो तेणे पोताना बळदो भगवानने भ लाव्या अने पोते घरे जइ जिमीने केटलीक वार रही पाछो तिहा आ व्यो एटलामा आखो दिवस खेडवाथी थाकी गयेला बळदीया तो व नमा चरता चरता क्याय चाल्या गया पछी हालीये इहा तिहा घणा जोया पिण बळद मिल्या नही तेवारें भगवानने पूछवा लाग्यो के बळद क्या गया ते वखत भगवान मौन रह्या थका काइ पिण बोल्या नही, पछी ते हालीये वनमा जइ आखी रात्रि बळदोने शोध्या, परतु तेने ब ळद लाध्या नही—अने बळदतो वनमा चरी चरीने पाछली रात्रे पोतानी मेले त्याज आवी बेशी रह्या हाली पिण पाछो आवीने जूए छे तो ब ळद त्याज बेठा ते देखीने क्रोध पाम्यो थको बोलवा लाग्यो के हे पापी ! हे पाखडी ! आ बळद तेज सताडी मूक्या हता ए बधु ताहारुज काम करेलु देखाय छे मने आखी रात्रि निरर्थक भमवु पड्यु एम कही हाथ मा रासडी लेइने भगवानने मारवा दोड्यो ते वखतमा इन्द्र महाराजे पि ण अवधिज्ञाने करी भगवानने थतु उपसर्ग जाण्यु अने पोते तिहा आवी ने हालीने केहेवा लाग्यो के अरे दुष्ट ! तु जाणतो नथी के आ श्री वर्द्धमान स्वामी नदीवर्द्धन राजाना भाइ छे, सिद्धार्थ राजाना पुत्र छे एणे दीक्षा लीधेली छे एम कहीने हालीने हलकारी काहाड्यो पछी इन्द्र महाराजे भगवानने कह्यो के हे भगवान! आपने बारे वर्षपर्यंत छद्मस्थपणु छे तेमा उपसर्ग घणा थवाना छे माटे आप आज्ञा करो तो हु आपनी पासे हरहमेश रहु अने आपनी सेवा करू तथा उपसर्ग निवर्त्तन करु एवो महारा मननो मनोरथ छे तेवारें भगवान बोल्या हे इन्द्र ! आ वात थइ नथी थती नथी अने थाशे पिण नही जे श्री अरिहत भगवत इन्द्रना सहायथी केवलज्ञान उपजावीने मोक्ष जाय ? अरिहततो पोतानाज उठाण कर्म ब ळवीर्यथीज केवलज्ञान पामीने मोक्ष जाय एवु साभळ्यु तो पिण इन्द्रे म

रणानिक उपसर्ग टालवा सारु जगवाननी माता त्रिशला देवीना बहेन ना पुत्र सिद्धार्थ नामे वितर तने आज्ञा आपीने जगवान पासे मूकी ग यो आही सिद्धार्थ वितरने मासीनो दीकरो कह्यो पिण कोइक स्थानके एने काको करी पिण लिखेलो छे पछी इन्द्रमहाराज देवलोके गयो अ ने शूलपाणि पोताने घरे गयो ॥

॥ इति शूलीकृत उपसर्ग ॥

हिवे प्रजातमा जगवान तिहांथी विहार करीने कोल्लाग सन्निवेशे गया तिहां बहुलनामे ब्राह्मणने घरे कास्यपात्रे खीरलेइने प्रजुये परमा न्ने पारणुं कीधुं पात्र धर्म बतावावा सारु गृहस्थना कास्य पात्रमा खीर लीधी तिहा पाचादिव्य प्रगट थाय ए जगवननो अतिशय छे ते पाच दिव्य कहे छे एकतो आकाशमा ध्वजा विस्तार देवता करे बीजो सु गंधि जलदेवता वर्षावे, त्रीजा फूल वर्षावे, चोथो देवदुंदुजी बजावे, पाचमो अहोदान महोदान एवो ध्वनि करे, प्रकारातरे कयाएकतो सा डीबार क्रोड सोनैया वरसावे एवा पाठ पाचमा दिव्य विषे लिखेला छे इत्यादिपिण कोइक आचार्यना मते पाचमु वखाण पुरु थयु कहेवाय छे ॥

हिवे प्रजुये दीक्षा लीधी, तेवारे इन्द्रादिकोये सुगंधिद्रव्यना चंदनादि के करी जगवनने शरीरे लेप करचो छे, तेनो गध, चार मास जागे रा पर्यंत न जाय, ते वासनाये करी हजारो गमे भ्रमरादिक मदोन्मत्त थ या थका जगवतना अगोअगने वैधे छे, महोटो उपद्रव करे छे कोनी परे तो के जेम कामी पुरुष कामाध थया थका स्त्रीने आलिंगन देता तेना गलस्थल होठादिकने विषे अनुकूल पणे चुबन करे, इस मारे तेम भ्रमरापिण वासनाये अवयुर थया थका, जगवतना शरीरना अवयवे दं शमारे छे ए दृष्टांत कह्यो पिण अहींआ एटलो फेर छे जे स्त्री तो कामी पुरुषथी हारी जाय, परतु जगवान् तो जमरानो एटलो बधो उ पद्रव छता पिण वज्रऋषभनाराच सघयणना प्रतापथी मेरुनी परे अड

ग रहे ते अगरा श्रीने अर्थे अराएया कामी पुरुष, गत उगर मुज्झी पाम्या थका गध लेवाने अर्थे, जगवानना शरीर सार्थे पोतानु शरीर घ सवा लाग्या तथा कामी स्त्रीयो आवीने आलिंगन करवा लागी एम जगवान पासेंथी सुगध मागवा लागा एवो उपसर्ग चार महीना जानेरा रह्यो तोपिण जगवान् डग्या नहीं मेरुनी परे अखर रह्या ॥

हिवे जगवान निहाथी विचरता मोराक सन्निवेशने विष सिद्धार्थराना प्रजुना पिता तेनो मित्र कुळपती, हुईजन नामा तापसने आश्रमे आव्या, तापस पिण जगवानने देखी मामो मित्रा आव्यो, तेने जग वत पिण टूकडा पूर्वपरिचयाम्यास थकी हाथ पसारीने मिल्या, पछी ते ना आग्रहथकी नीराग चित्त रहा एक रात्रि निश रह्या, फिरी प्रजाते विहार करवा लागा, तेवारें ते तापस, पगेंचाडवा सार्थे चाल्यो अने आ माप अन्यत्र विहार करीने चोमासु पोताना आश्रमें रहेवानी प्रजुने वेनेति करी, घणो आग्रह कर्यो तेवारें प्रजुयें देशकाळ विचारीने क ह्यो के एमज थाओ एवुं कही पछी चार ज्ञानें सहित एवा प्रजु पृथिवीने विषे विहार करता जेवारें चोमासुं आव्यु तेवारे ते ता पसनी कुडीमा रहेवाने आव्या कुळपतियें तृणपलानु कुडु प्रजु ने रहेवा मारु आप्यु जगवान तेमा रह्या पिण दैवयोगें वर्षाद न थयो तेवारें गामनी गायो प्रमुख ढोर जुखें मरता थका कुडीना तृ णपळा खावा आवे ते जोइ बीजा तापसी तो पशुना समूहने हाकी काढे पिण प्रजुतो मौन पणें रहे कोइ जनावरने तृणपळा खाता दूर करे नहीं, एम करतां सर्व तृण पशुओ खाइ गया तेवारें कुडु उ घाडु देखी कुळपति बोल्यो के हे देवाणुप्रिया हे प्रजु! पंखीओ पिण पोताना माळा माचवे छे अने तुमे तो राजपुत्र थइ पोतानो आश्रम केम साचवी शकता नथी? एवी रीतें कुळपतिने अप्रीति उपनी दे खी जगवाने निर्धार्यु जे महारे अहींआ रहेवु नहीं, पछी आषाढ दी पन्नरमे ---- दिवसें एटले श्रावण वदि अमावास्याये चोमासा

ना पन्नर दिवस जाता मर्जुरै तिहाथी विहार करयो तेवी उाया जगवतने न गमे चोमासु एवु कहेवाणुं तिहा जगवने पाय अजिग्रह लीधा ते कहे छे एक अप्रीति उाने तिहां न रहेवु बीजु ज्यां र्घी छ अस्थपणु छे त्यासुधी निरतर काउस्सग्गमान रहेवु, त्रीजु गृहस्थना विन य न करवो, चोथु यथा सर्वे मौन पणे रहेवु, कायार्ये करीउतु उजा उज रहेवु पिण सुवु नही पांचमु सर्वदा हाथमा जोजन करवु एवा अजिग्रह सहित विचरता थका शूलपाणि यक्षने देहरे आस्थिमामे प्रथम चोमासु रहेवा पधारच्या, त्या अत्यत उपसर्ग सहन करीने शूलपाणि यक्षने प्रति बोध्यो, तेनी कथा कहे छे धनदेव नामें सार्थवाह पाचसें गाडा मालना जरी, व्यापार करवा कोइ गामातरे जतो हतो, मार्ग मां वेगवती नामे बहुवालुका नदी वर्द्धमान गामपासे आवी, तिहा उ नालाना दिवस हता तेथी कोइ बलद ते रेती जरेली नदी माथी गाड ताणीने चाली शके नहीं पिण ते बलदीमा एक बलद घणो जोरावर हतो तेणे ते पांचसें गाडा नदीमकी उतारी पहेले पार कर्यां, परंतु पोते त्रुटी पड्यो, तेथी चाली न शक्यो तेवारें सार्थवाहें चारा पाणीने अर्थे वर्द्धमान गामना अधिकारी शेठ, पटेल, गामोद, पटवारी, प्रमुख पचने ते धोरी जला यो तेने घृत गोल तृण जलादिक सारु घणु धन आप्यु, वली ते बलदनी चाकरी करवानी घणी जलामण आपीने शेठ पि हाथी चाल्यो गयो पिठवाडेथी ते गामना लोकोयें ते बलदनी सार सजा ल काइ पिण कीधी नही, शेठनु धन आपेलु सर्व वापरीनें खाइ गया, पछी ते बलद जूक तृषायें पीड्यो थको अकाम निर्जरायें मरण पामीने ठयनर दे वोमां शूलपाणीनामे यक्ष थयो, तेणे अवधिज्ञाने पाछलु वृत्तात जोयु, पछी गामना लोको उपर रूठो थको मरकी विकुर्वी तेथी घणा माणस अने ढोर मरवा लाग्या तिहा कोइ माणसने चालवावालो पिण मिले नहीं जे कोइ मरे तेने लोको गामनी बाहेर नाखी जाय तेथी त्या हाडकाना ढगला थइ

तिहा आव जाव करनारा लोकोयें तेनु अस्थिगाम एवु नाम पाड्यु

रोग पछी घणा माणसोने मरता देखीने गामना लोकें मिली तेने आराध्यो तेवारें यक्ष प्रगट थइ आकाश वाणीयें करी बोलवा लाग्यो क हु बलदनो जीव छु तुमें महारु द्रव्यखाइने चाइपिण चाकरी करी नहीं तेथी तुमें मने कुमरणें मारयो छे माटे हु कोप्यो छु तो तुमें हिवे माहारा नामनु हाडका उपर देहेरु करावो, तेमा उपजना रूप शूलशस्त्र हाथमा आपीने महारी मुर्त्ति थापो, तेनी पूजा करो तो रोग पिण मिटशे, अने जीवता पिण रहेशो नहीका सर्व मरण पामशो एवी वात साजलीने लोकोयें मरण जयथी तेनी प्रतिमा करी देहेर थापी पुजा करी, तेथी मरकी उपशम थइ हिवे जगवान ते शूलपाणी नामा यक्षने प्रतिबोधवाने माटे तेने देहेरे आव्या, तेवारें ते यक्ष महादुष्ट छे, कोइने पोताना देहेरे रात्रें वास करवा आपे नहीं, तेथी ते यक्षना देहरानो पूजारो इद्रशर्मा नामें विप्र हतो, तणें जगवतने रहेवानी मनाइ करी, तेम बीजा लोकोयें पिण वारया, तो पिण प्रभु मौनपणे तिहा रात्रें काउस्सग रह्या, ते देखीने यक्ष रूठो अने संध्या समयथी उपसर्ग करवा लागो, तिहा प्रथम तो डरावाा सारु अट्टहास्य कर्यु, पछी हस्तीनु रूप करी उछाल्यु, पिशाचना रूप करी छरी कहाडी बीवराव्युं, तेमज सर्प थइने डक मारयो इत्यादि घणा उपसर्ग करवा माडया पिण जगवत लिगार मात्र क्षोज न पाम्या तेवारें वली मस्तक, कान नासिका, आख, दात, होठ, पूठ, नख, ए आठ स्थानके विविध वेदना उपजावी तथापि जगवतने अक्षोज जाणी यक्ष प्रतिबोध पाम्यो अने प्रजुनी जक्ति करवा लाग्यो, एटलामा सिद्धार्थ व्यतरो आव्यो, तेणें कह्यो के अरे शूलपाणी यक्ष ! आ ते शु कर्यु ? तु नथी जाणतो के ए सिद्धार्थराजानो पुत्र छे, महोटी समतानो जडार छे, जो इद्रमहाराज जाणशे, तो तने बाहिर काढी मूकशे, ते साजली जगवाननी शातमुद्रा देखी वली पिण यक्षें पोतानो अपराध खमाव्यो अने प्रजु आगल गीत गान करवा लागो तिहा ते यक्ष समकेत पाम्यो ॥

हिवे भगवत पिण रात्रिना चार महर कदर्थना पाम्या तेना श्रमें फरी काउस्सग्गमाज पाछली रात्रें वे घडी निद्रा आवी गई, तिहां निद्रामा दश स्वप्न प्रभुयें दीठा ते कहे छे, एक तालपिशाच हएयो, बीजु उजलो कोकिला पक्षी अने त्रीजु पचवर्ण विचित्र कोकिलानु जोडुं, सेवा करतु दीठु, चोथी फूलनी माला बे दीठी, पांचमु गायनो वर्ग दीठो, छठु पद्मसरोवर दीठु, सातमु समुद्र भुजायें तर्यो दीठो, आठमु सूर्य उगतो दीठो, नवमु आत्रडे वींट्यो मानुष्योत्तर पर्वत दीठो, दशमु पोते मेरुपर्वते चढ्या एवु दीठो, ए दश स्वप्न देखीने भगवंत प्रभाते जाग्या, ते वखते लोक पिण एवु जाणताहता जे ए साधु रात्रे मरीजशे तेथी प्रभातना जोवा आव्या तिहां भगवाननो देव महिमा देखीने लोकोयें भगवतने पूज्या, घणा हर्ष पाम्या यक्ष पिण नाटकादिक पूजा सेवा करतो हुवो, तेथी लोक चिंतववा लागा जे साधुने उपसर्ग करी हिवे गीत गान करे छे, पुष्पादिकें करी पूजे छे, त्यां लोके पिण स्वामीनो घणो महिमा कर्यो एवा समयने विषे श्रीपार्श्वनाथनो श्रावक उत्पलनामा निमित्तियो ते पिण तिहां आव्यो प्रभुने वांदी ने कहेवा लागो जे हे स्वामी! तुमें पाछली रात्रे स्वप्न दीठा तेनु फल कहु छु॥

हे प्रभु! तुमे जे ताल पिशाच हएयो, तेथी तुमे तुरत मोहनीय कर्मने हणशो, वली श्वेत कोकिलापक्षी दीठो तथी असोज शुकलध्यान ध्यावशो, पाचवर्णा विचित्र कोकिल पक्षीनु जोडलु दीठ, तेथी द्वादशांगी प्ररूपशो तथा गायनो वर्ग दीठो तेथी अनुपम चतुर्विध संघनी थापना करशो वली तुमे देवतायें सेवित पद्मसरोवर दीठु, तेथी चार निकायना देवता तुमारी सेवा करशे, वली मेरुपर्वतनी चूलिका उपर तुमे चढ्या एवु दीठु, तेथी तुमे देवोयें रचित सिंहासने बेशी, धर्मोपदेश देशो, धर्मनी प्ररूपणा करशो वली सूर्यनु मडल दीठु, तेथी केवलज्ञान पामशो, तथा मानुष्योत्तर पर्वत आत्रडे वींट्यो दीठो तेथी जगतमा न कीर्त्तिनु मडाण पामशो तथा समापवत देवनिकायें करी सेवनीय था

ओ पोतानी भुजावडे समुद्र तरयो दीठो तेथी तुने संसार रूप समुद्र ने तारश, हे जगवन ! तुमे फूलनी माळानु युगल दीठु तेनो अर्थ हु नथी जाणतो माटे तुमेज उपकार करीने कहो तेवारें जगवंत मौन छे माटे छद्मस्थावस्थाने विषे बोल्या नहीं, तेथी सिद्धार्थ व्यंतरो जगवान ना मुखमा प्रवेश करीने कहेवा लागो के फुलनी बे माला दीठी माटे श्रावकनो अने यतिनो ए बे प्रकारना धर्मनी प्ररूपणा हु करीश एवीरी ते फल सांजलीने सर्वलोक जगवानने वंदना करी पोतपोताने स्थानके ग या हिवे जगवाने निर्विघ्न पणे पन्नरदिवस न्युन प्रथम चोमासु तिहां पूर्ण करीने मेरुनी परे धैर्य धरता समता रूप रसमयथका चोमासी पारणुकरी तिहांथी विहार करयो ए प्रथम चोमासु ॥ १ ॥

तिहांथी विहार करी मोराकसंनिवेशें उद्यानमाआवी काउस्सग्गें रह्या तिहां जगवाननो महिमाकरवा सारु सिद्धार्थ व्यंतरो स्वामीना श रीरमा संक्रमीने लोक आगल जूत, जविष्य अने वर्त्तमान सबंधि निमि त्त जाखें छे तेथी त्याना लोक जगवाननी सेवा करवा लागा हिवे ते गाममा अछंदक नामा निमित्तियो रहे छे ते जगवाननी इर्ष्या करवा लाग्यो केमके लोक तेने कहेवा लागा के देवार्य सरखो तु निमित्त जा णतो नथी मे काले खेत्रमा सर्प दीठो ते तेणे कही दीधो तथा हु नमीने गयो हतो ते कही दीधु तेवारें ते अछंदक नामा निमित्तीओ क्रो धकरी जगवाननु निमित्त कुडु करवा सारु हाथमा तृण लेइने प्रजुने पू छवा लागो के हे आर्य आ तृण छेदाशे, किंवा नहीं, ते सांजली सि द्धार्थ ना कही तेवारें ते छेदवा लागो एटलामा इंद्रें अवधियें जोइने जगवतनो महिमा राखवाने ते निमित्तिआनी आंगली छेदी नाखी ते थी तृणतुग्यु नही निमित्तिओ विलखो थयो पछी सिद्धार्थें लोक आ गल कह्यो के ए निमित्तिओ चोर छे, कांइ जाणतोनथी एणे वीरघोष कर्मकरनो दश पलनो कास्यनो पात्र चोरीने खजूरीनावृक्ष हेठे गाड्यो छे तथा इंद्रशर्मा ब्राह्मणनो बोकडो मारीने तेनु मास एणे खाधु छे ते

ना अरिम एना घरनी पिछवाडे गोन्डीनाआड नीन पुन्या छे तथा त्री ज दूपण जे एणा छे ते हू नही कहीश एनी स्त्रीने केहेशे एवु मां त्रणी लोकें सर्वेवातमाची मानी एनी स्त्रीने जइ पुच्यु, तेवारें ते स्त्री बोली के ए पापिष्ट, पोतानी जगिनीने जोगवे छे, एवी पोतानी निंदा नी वातो प्रसिद्ध थयाथी अच्छदक लजापायो अने गाममा फिट फिट थयो थको प्रजुपासें आवी विनति करी के तुमे त्रैलोक्य पूजनीक छो, हु अहींआन सुर्ने उदर पूर्ण करु छु ने जीवु छु जगवतें अप्री ति जाणी त्याथी विहार करचो ॥

हिवे जगवान श्रीमहावीर स्वामी एक वर्ष उपर एक महीना सु धीतो इन्द्रे आलेला देवदुष्य वस्त्र सहित रह्या अने तेवार पछी वस्त्र रहित अचेलक थया हाथमा जोजन करे पिण अतिशयना योगथी ना गा देखीये नही हिवे वस्त्र रहित शी रीतें थया ते कहे छे जगवाने जेवारें वरसीदान दीधु तेवारें सिद्धार्थराजानो मित्र सोमदेव नामा ब्राह्म ण जन्मथी दारिद्रीछे ते परदेश धनकमावया गयो हतो पिण क्यायें धन पाम्यो नही तेवारे वळी जगवाने दीक्षा लीधा पछी जेवो गयो ते वो ठाले हाथे पाछो पोतानें घरे फिरी आ यो पिण एक कवडी मात्र क माइ आव्यो नही दारिद्री रह्यो तेवारें तेनी स्त्रीयें तेने घणो निभ्र छ्यो अने कहेवा लागी के अरे निर्जाग्य तु किहा गयो हतो तुं जिहां गयो हतो तिहा आवीने आवो दारिद्री रह्यो जेम मडो जिहा जाय तीहा पाणीजरे तथा कपासीयो जिहा जाय तिहा लोढाय तेम तु पि ण जिहां गयो तिहा दरिद्री रह्यो पिण दारिद्रय ताहारो केडो मूक तु नथी जेम कोइ दरिद्री पुरुष धन कमावानें अर्थे परदेशे जवा तै यार थयो तेवारें ते पुरुषें दारिद्रयने कह्यो के ॥ रे दालिद्दवियक्खणा, वयण इक्क सुणिज्ज हम देसांतर चल्लिया, तु घर घरें रहिज ॥ १ ॥

एग्ले हे दारिद्र हे विलक्षण, तु एक महारी वात कहू ते सांजल जे हिवे हु देशातर जाऊ छु अने तु घरमान थिर थइ रहेजे एवा तेना वै-

घन सांजली दारिद्र बोल्यु ॥ पाडिवन्नो गिहथ्था तणो अविहड जाण गुजाण ॥ पाउतरें ॥ पालिजइ मुनिहाण ॥ तुमे देशांतर चालिया, तो प्र में आगेवान ॥ १ ॥

' अर्थ —हे जाइ सांजलो हुं तो महोटानो विनय मूक नही केमके जे उत्तम पुरुष अंगिकार करे ते अविचल जाव जीव अंगिकार करे माटे रे जाइ ! जो तुमे देशांतर जाशो तो हु पिण आगेवान थइनें तुमारी साथे आगलेनुं आगल चालु छु तेम हे निर्जाग्य ! ताहारी पिछवाडे पिण ए मम दारिद्र रहे छे तु हमणा घरमा आव्यो छो पिण घरमा तो कांइ पिण नथी, खावानें अन्न नथी, पीवानें पाणी नथी, जूखे मरती बेठी छु वयांथी ताहारा वास्ते खावा सारु लेइ आवुं घरमा तो शाकमा नाख वानें मिरची अने मीठ पिण नथी, मात्र दारिद्रज लहेरो ले छे ॥

चोपाई ॥ जिणघर चेंस न रीके पाडो, जिणघर बलद न दीसे गाडो ॥ जिणघर नारि न चूडी खलके, तिणघर दारिद्र लेहेरि लहके ॥ १ ॥

अर्थ —जेना घरमा चेंस सहित पाडो रीकतो न होय, वली जेना घरमा बल्द न अने गाडु दिसतु न होय, वली जेना घरमा स्त्रीना हाथमा चूडी खलकती न होय, तेना घरमा दारिद्र लहेरे लहकतु जा णवु ते माटे तुं घरमा आवीश नही आवीश तो जूखे मरीश अरे दा रिद्री हजी हमणा पिण तु जगवान पासे जइश तो कांइक पिण मि लशे एवा स्त्रीना वचन सांजली ते ब्राह्मण, जगवान पासें आव्यो अ नें बे हाथ जोडी हीन स्थितीये थको दीन वचन करी श्री वीर जगवान नें पगें लागीनें विनति करतो हुवो के हे कृपानाथ ! हे परदुःख जंजक ! हे परमार्थ करनार ! हे महारा मित्रना पुत्र ! हे दारिद्ररूपवेलडीने छेदक ! तु महारी मूल थकी विनति सांजलीने महारो विस्तार करच, आ महारो दारिद्र रूप बाधव, महारो सहायी, महारी साथे जनम्यो, महारी साथें वध्यो, वली परणवाने समयें पिण महारा पहेलां महारी स्त्रीने एणे परणी शु घणु तुमारा आगल कहु ए दारिद्र महारा शरीरनी

छायानी परे तथा पोतानी बांधेली कर्म प्रकृतिनी परे एक क्षण मात्र पिण महारो केड मुक्तू नथी में धन उपार्जन करवा निमित्तें परदेश चालवाने समयें एने घणो घणो वर्ज्यो तो पिण ए महारो साथेंज चाल्यो, में गंगामा स्नान कर्युं, में यमुना, नर्मदासरखे तीर्थ कर्या तो एणे पिण महारी साथेंज तीर्थ करवा माटे एना प्रभावथी परदेशमा घरघरने विषे लोकोनी आगल भिक्षा मागती थकत हुं तो सर्वने देखुं परतु दारिद्र वा धरना प्रतापथी हु प्रत्यक्ष प्रगट छता पिण मने कोइ पिण देखे नही ॥
॥ यदुक्त ॥ दिसति जोग सिद्धा, अननसिद्धा य केइ दीसति ॥ दारिद्द जोग सिद्धा, पासेंठिया न दीसति ॥ १ ॥ भोदारिद्रयनमस्तुभ्य, सिद्धोहतवदर्शनात् ॥ अहसर्वप्रपश्यामि, नमापश्यति कश्चन ॥ २ ॥
अर्थ —जे योग साधीने सिद्ध थया ते पिण कोइएक प्रयोगथी प्रगट नथी देखाय परतु दारिद्र्य रूप योगें करीनें जे सिद्ध थया ते पुरुष जो पासें उभारह्या होय तो पिण देखाय नहीं ते माटे हे दारिद्र्य ! तुमने नमस्कार थाओ जे हु ताहारा दर्शनथी सिद्ध पुरुष थयो तेथी हु तो सर्वने देखु छु पण मने तो कोइ पिण देखतो नथी ॥ २ ॥

ए कारण माटे हे स्वामी ! ते दारिद्र्य बाधवना प्रसादथी हु परदेशने विषे घणो भम्यो, घणो उद्यम कर्यो, घणा शेठ साहुकारोनी चाकरी करी पिण, हु भाग्य हीन तेथी एक फूटी कवडी मात्र पिण धन पाम्यो नही जेवो घरथी गयो हतो तेवोज घरे पाछो आव्यो तेथी में हजी महारा घरमा प्रवेश न कर्यो तेनी पहेलाज तेणे माहारा घरमा प्रवेश कर्यो तेना प्रतापथी अनार्जणी एवी जे महारी स्त्री ते क्रोध करी मुशललेइने महारी सन्मुख मने मारवाने दोडी आवी ते वारे में जाण्युं ने मगलिक करी मुजने वधावे छे पिण तेणेतो पासें आवीने एवा कठोर अने निठुर वचन बोलवा माडया अने कह्युंके हे निर्भाग्य शिरोमणी ! अरे जन्मदरिद्री अरे निर्गुणनाथा अरे ढोठणा हु तुजो धनविना साक्षात् दारिद्री रूपनें शु करु तु परदेशें गयो थो

। पिण काइ लाव्यो नही महारे पिण ताहारा दारिद्र्य रूप जाइ
। सहायथी ॥ श्लोक ॥ अन्ननास्त्युदकनास्ति, गृहे नास्ति युगधरौ ॥
ाकमध्येलवणनास्ति, तन्नास्तियत्तुत्तुउयते ॥ १ ॥

भावार्थ — स्त्री कहे छे के ताहारा भाववना सहायथी महाराघरमा
न्नपिण खावाने नथी अने पाणीपिण पीवाने नथी, जुवार पिण नथी
ाकमा नाखवानें निमक पिण नथी एवु कांइ पिण घरमा नथी के जे
ी तुजने आदरकरी घरमा बेसाडीने जिमाडु महाराघरमा तो एक
ारिद्र्य रहके छे वली ब्राह्मणी कहे छे रे ढोला, धनेकरीने जगत
ा मान्यता थाय छे, पिण धनविना जगतमा कोइ कोइने पूछतु नथी.
रुक्त श्लोक॥ धनैर्दुष्कुलीना कुलीनाभवति, धनैरेवपापात्पुन निस्तरंति ॥
नेभ्यो विशिष्टोन लोकेपिकश्चित्, धन मार्जयध्वंधन मार्जयध्व ॥ १ ॥

भावार्थ -- धनेकरीने हीणाकुलवालो पिण उत्तम कुलवान, कहेवा
य, वली धनेकरीने पापथकी निस्तार पामे, धन वान होय तेज जगत
ा महोटो कहेवाय, ते कारण माटे धनउपार्जन करवानो उद्यम पुरु
ने श्रेष्ट छे वली धनविना जीवतो थको पिण पुरुष मुडदा समान छे
ायुक्त श्लोक॥ धनमार्जय काकुत्स्थ, धनमूल्मिद जगत् ॥ अंतरनैवपश्यामि,
निर्धनस्य,मृतस्यच ॥ १ ॥

भावार्थ -- जेवारें रामचद्रजीने वनवास थयो तेवारें विचारयु जे
वसिष्ठ ऋषिने नमस्कार करीने चालीये तेवारे जिहा कदलीवनमा व
सिष्ठ ऋषि बेठा छे तिहा जइ रामचंद्रजीयें नमस्कार करयो परतु व
सिष्ठ ऋषियें नेत्र उघाडीनें सामु पिण जोयु नही कारणके रामचद्रजी
नी पासें ते वखत धन कांइ पिण न हतु पछी जेवारें लकाजीतीने चतुरगिणी
सेना लेइ धनधान्य सहित पाछा आव्या ते वखत वसिष्ठ ऋषि सा
आठ पगला सामा चाली आव्या तेवारे रामचद्रजी बोल्या के तेह
हु रामचद्र छु अने आ तेनु कदलीवन तथा तुमे वसिष्ठऋषि पिण तेज
तेज छो परतु पहेला हु तमारी पासें आव्यो हतो तेवारें तो तुमे ने

उवाडीनें सामु पिण जोयुं न हतु अने हमणा उठीने सात आठ पगला सामा आव्या तेनु शु कारण' तेवारें वसिष्ठजी पुर्वोक्त श्लोक केहता हुवा के हे काकुस्थ'हे रामचन्द्र!एक धननु उपार्जन करो, आ जगतमां धनेकरीने ज प्राणी शोभे छे, परतु निर्धनने अने मुडदाने काइपिण अतर देखातु नथी, ते कारणे तु प्रथम आव्यो हतो तेवारें निर्धन हतो तेथी में ता हारा सामु न जोयुं अने हमणातो तु सर्व विभूति सहित छो माटे हु सामो चाली आव्यो छु एवु कहीने वली स्त्री कहेवा लागी के हे मूर्ख! धनविना हु तने शु करु? वली कह्यो छे के श्लोक ॥ पुत्तायसीसायसमविभत्ता, रीसाय देवाय समविभत्ता ॥ मुखातिरिखाय समविभत्ता, मुयादरिद्दा य समंविभत्ता ॥ १ ॥

अर्थ —पुत्रने शिष्य ए बे बरोबर जाणवा, वली ऋषी अने देव ए बे पिण बराबर जाणवा, वली मूर्ख अने तिर्यंच ए बे पिण समान जा णवा, तेम मूवेला अने दारिद्री ए पिण बे सरखाज जाणवा ॥ वली ते स्त्री कहेवा लागी के अरे भाग्यहीन! श्रीवीरभगवाने वरसीदान आ पीने सर्वना दारिद्रदु खनो विनाश कर्यो, ते वेलायें तु परदेश गयें ते ताहारे कहेवु थयुं के जेम द्राख पाक्वाने समये कागडानी चाच पा की आवे तेनी परे थयु अथवा नदी तटे जवासाना काड तुल्य तुं थयो अथवा रात्रि दिवस मेघ वर्षेता छता पिण पलाशवृक्षना पानडां त्रणज होय माटे रे!अनिष्ट!रेपापीष्ट! रे पाडुरपृष्ट! तुं इहांथी जा इत्यादिक निष्ठु र वचनें घणो निभ्रछीने गलहच्छो देइ मने घरथी बाहेर काहाड्यो ते कारण मदिादोहरा॥ आगें दारिद्र पाछे दारिद्र,डावे जिमणे पासि ॥पिंडिया णीपुन मारण माड्यो, तेथे हु आयो नासि ॥ १ ॥ माटे हे स्वामी! महारे आगल पिण दारिद्र चाले छे, पाछल पिण दारिद्र चाले छे अने बे बाजुयें पिण दारिद्र चाले छे एम महारे चारे बाजु दारिद्र चाल्यु आवे छे तेथी ब्राह्मणीयें मने मारवा माड्यो माटे हु नाशिने तुमारी पा सें आव्यो छु अने में विचार्यु जे श्रीवीर अगम्यगतिवत छे, जो पिण

दीक्षा लीधी ते तो पिण परमदयालु छे, माटे मुजने निश्चयथी काइक पिण आपशे एवु चितवीने प्रतीति पूर्वक निरधारकरीने तुमारी पासें आव्या छु माटे महारा दारिद्रने चूरीने मनोरथ पूर्ण करो पिण हे स्वामी ! एवु मनमा आणशो नही जे महारा वर्षीदानने अवसरें सर्वलोक मनवांछित दान पामी गया अने तु काइपिण केम पाम्यो नही एवो विचार आणशोमा ॥ श्लोक ॥ स्वामिन्कनकधाराभि, स्त्वयि सर्वत्रवर्षति ॥ अभाग्यच्छत्रसछन्ने, मयिनायातिबिंदव ॥ १ ॥

अर्थ —हे स्वामी ! तुमे कनक रूप धारायें सर्वत्र वरस्या पिण महारा मस्तक उपरें अभाग्य रूप छत्र ढकायु हतु तेथी एक बिंदुमात्र पण महारे माथे पड्यु नहीं तेवारें एवु विचार्यु जे ॥ यत ॥ रे रे अप्पा सतिधर, चिंताजाल मतपाड ॥ फलतत्तोहिज पामीयें, जित्तो लख्यो लिलाड ॥ १ ॥ एम चितवी बेसी रह्यो पिण हे स्वामी ! एतो तुमारु दान न पाम्यो ने वली तुमारा दाननो व्यतिकर सांजली सामो मुजने महागिरूईयें घरथी काहाडी मूक्यो तेमाटे कह्यो छे के ॥ श्लोक ॥ त्वयि वर्षति पर्जन्ये, सर्वेपल्लविता द्रुमा ॥ अस्माकमर्कवृक्षाणा, पूर्वपत्रेषु सशय ॥ १ ॥

अर्थ —हे स्वामी ! तुमारा रूप मेघवर्षता छता सर्वजन रूप वृक्ष पत्रछत्रयुक्त थया अने महारा सरखा अर्क वृक्षोने पूर्वपत्रनो सशय थयो इत्यादिक ललित पल्लवित वचन सांजलीनें, कृपासागर जगवत विचारता हुवा जे हु निर्ग्रंथ छु महारी पासें काइपिण नथी अने ब्राह्मणनें नही देवाथी इन्द्रादिक सर्वलोक समक्ष प्रार्थना जग होय ते प्रार्थना जग करावाथी लघुता थाय ॥ गाथा ॥ तणलहु य तूल लहु य, तिणतुम लहुयच पच्छणा लहुय ॥ तत्तोवि सो लहुओ, पच्छण जगो कओजेण॥१॥

अर्थ —सर्वथकी तृणलघु छे ते थकी तुष लघु छे अने तृणपला थकी तुष थकी पिण प्रार्थना करवा वालो लघु जाणवो अने वली प्रार्थनानो जग करवावालो जे छे तेतो सर्व थकी लघु जाणवो ॥

गाथा ॥ परपच्छ णापवात्ते, मा जणणी जणओ एरिसपुत्त ॥ उयरोमि घरिजओ, पच्छण जगो कओ जेण ॥ १ ॥

अर्थः—परपासें प्रार्थनानो करवा वालो एवो पुत्र हे माता तु जर्ण श नही अने वली प्रार्थना जग करनारनें तो उदरनें विषे पिण धारण करीशमा ॥ श्लोक ॥ यातुर्यातु वत प्राणा, अर्थिनि व्यर्थतागते ॥ पश्चात् पिहितव्य, क्रमार्थ पुनरीदृश ॥ १ ॥

अर्थ —जाओ रे महारा प्राण जे अर्थिप्राणी व्यर्थ घरथी जाय तेनी सार्थे तुमे पिण जाओ केमके पाछउ पिण तुमने कोइक दिवसें जावु तो छेज तो एवो साथ वडी तुमोने मिलवो मुशकील छे माटे हमणाज जाओ ॥ १ ॥ इत्यादिक शिष्टाचार आचारनो विचार जाणीने श्रीमहावीर देव रूपाकरी अरधु देवदुष्य वस्त्र फाडीनें ब्राह्मणने देता हुवा ए विप्र ने चीवर दीधाथी बीजा प्राणीओने एवु जणावता हुवा ॥ यत ॥ जां सतिता देहु धन, इणपरि व्यरस वीर ॥ पितामित्र धाजण भणी, अ ओ दीधो चीर ॥ १ ॥

भावार्थ.— ज्यासुधी घरमा सपत्ति होय त्या सुधी धन, चीवर अन्न दिकनु दान देवु, पिताना मित्र ब्राह्मणनें अरधु चीर आप्याथी श्रीवीर एवु पुर्वोक्त प्रमाणे जणावता हुवा ॥ १ ॥

हिवे ते ब्राह्मण अरधुंचीर लेइने पोताने घरे गयो तेने चीवर सहित बारणाने समीपे आवतो देखीने ब्राह्मणी हर्षित थइ थकी उठीने स सु ख आवी बे हाथ जोडी एवीरीते कहेती हुई के हे प्राणनाथ! हे म म जीवना! हे महारा हियाना हार, हे कात! सुजग हु तुमारी सेवे नी परें वाटजोती हती अने जेम जल विना माछली टलवले तेम तु मारा विना हु टलवली रही हती इत्यादिक मीठा मनोहर वचन रचन कथन पूर्वक अपूर्वरीतें घणी प्रीतियें स्नान मजन करावी भोजन पान तांबूल आपीने वली घणा सन्मान पूर्वक सुखशय्या शयन प्रमुख सुख उपचार करीने स्त्री घणो प्रमोद पमाडती हुई तेवार पछी ब्राह्मण ते वस्त्रनी द

धोयो वणववाने वास्ते तुनारा पासें गयो तुनारे पिण ते वस्त्र तेवु अण
मूल्यु जाणीने सोमविप्रने केहेवा लागो के हे ब्राह्मण ! आ वस्त्रनो
बीजो, कटको लेइ आव्य तो एनें साध्या थका ए लाख मूल्यनु थाशे
तेथी ताहारा अने महारा बेहुना दारिद्रनो नाश थाशे तेवारें ते विप्र
पाछो फिरीने लोर्जें वचनो ठतो श्रीवर्द्धमान स्वामी पासें आवतो हुवो
पिण मनमा विचारवा लागो के हु वारवार केवीरीते याचना करु, अ
तिलोज करवो पुरुषनें युक्त नथी अने जगवान पिण एवु जाणशे जे
आ विप्र लोजी छे एवु जाणीने लाजनो मारचो मौन करी रह्यो पिण
मुखथी मागे नही ॥गाथा॥ लज्जा वारेइ मुह, असपया जणई मागिरे मग्ग॥
दिन्न मानकवाड, देहिसिमग्गिया वाणी ॥ १ ॥

अर्थ — लज्जा छे ते मुखने वारती हुवी अने असंपदा कहेति हुवी
के माग्य रे माग्य ! पिण मानरूप किवाड देवराणा तेथी आपो एवी
वाणी मुखथी न निकलती हुइ ॥ १ ॥ अने जाण्यु जे कदाच पिण
खजाउपरथी पडी जाय तो उपाडी लेइश एवीरीतें जेवारें जगवतने
दीक्षा लीधे एकवर्षने उपर एक मास थयो त्या सुधी जगवाननी पाछ
ळ ते ब्राह्मण चाल्यो पछी एक दिवस ते देवदुष्य जगवानना खज
उपरथी वायराना गोटथी उपडयु ते उत्तर वाचाळगामनी पासें सुवर्ण
वाळुका नदीनें कांठें बोरडीना वृक्षना काटामा जइ पडयु तेने विप्रे
ग्रहण करयु जगवान पिण सिंहावलोकन दृष्टियें करी देखता हुवा इ
हां कोइकतो कहे छे के ममत्वें करीनें देखतां हुवा, कोइक कहे छे
के शुजस्थानकें पडयु के अशुजस्थानकें पडयु ते जोवाने माटे देखता
हुवा वळी कोइक कहे छे के सहसात्कारे देख्यु, कोइक कहे छे के म
हारी पाछळ महारा शिष्योने वस्त्रपात्र सुलजजावे थशे के नहीं थाय
एवा कारणथी देखता हवा कटके लाग्यु तेथी जगवानें विचारयु जे म
हारी पिछवाडे जे साधु स्वसतानिक थाशे ते सर्व बहुल कषायि कढ
ळी कुलहकारी प्राय असमाधिकारक थाशे मुडा घणा थाशे अनें स

धु थोडा थाशे एवु जाणीनें निर्ममत्वथी ग्रहण कर्यु हिवे विप्र पोता ना आत्माने धन्य कृतार्थ मानतो थको, संपूर्ण मनोरथवत थयो थको तुनाग पासें वे खड सधावी तूणावीने वेच्यु तेना लक्ष सोनैया आव्या तेमाथी अर्द्धा तुनाराने दीधा अने आर्द्धा ब्राह्मणे राख्या मेंटनु दारि द्र गयु जावजीव सुखी सुखी थया आनदमा रह्या ॥

॥ इति अचेलक दृष्टात कथन समाप्त ॥

तेवार पछी जगवाने कपडा राख्यां नही ते दिवसथी अचेलक थया अने बीजा त्रेवीश तीर्थंकरोना देवदुष्य वस्त्र जावजीव रह्या हता केट लोक प्रतोमा विचला बावीश तीर्थंकरोना देवदुष्य जावजीव रह्यां कह्यां छे तेथी ते सचेलक जाणवा हिवे श्रीमहावीर स्वामी बारेवर्ष उपर सा डा छ महीना छद्मस्थपणे कायानें वोसरावी काइ शुश्रूषा करे नही एवा थका विचर्या तेमां जे काइ देवताना करेला, मनुष्यना करेला, तिर्य चना करेला, अनुलोम अने प्रतिलोम एवा बे प्रकारना उपसर्ग थया तिहा जे नाटक देखाडवा, आलिंगन करवा, इत्यादिक देवादिकोयें करे ला उपसर्ग ते सर्वे अनुलोम उपसर्ग जाणवा अने जे देवादिकोयें ज य बताव्या, प्रहार कर्या, कूट्या, मार्या एवा उपसर्ग ते सर्वे प्र तिलोम उपसर्ग जाणवा ए बन्ने प्रकारना उपसर्ग सर्वे पोतानी खुशी थी सहन कर्या पिण चारित्रथी लिगार मात्र चलायमान थया नही तेमज कोइ उपर रागद्वेष पिण लाव्या नही तथा कोइनी पासें दीन वचन पिण बोल्या नही तेमज कोइनु जय पिण लाव्या नही एवीरीतें अनेक प्रकारना उपसर्ग सहन कर्या ते कही देखाडे छे ॥

एकदा जगवान् उत्तरवाचाल सन्निवेशें जाता मार्गे वर्द्धमान गामें आव्या, तिहां एक सुवर्णवालुका, बीजी रूपवालुका, ए बे नदीओ आवी, ते उतरी आगल चालता एक वक्रमार्ग बीजो सरल मार्ग, एवा बे मार्ग आव्या, तिहा लोके निवार्या के पाधरामार्गमा सर्पनो जय माटे जाशो नही तो पिण जगवत वक्रमार्ग मूकीने सरल मार्गे थइ

कोशी या सर्पने प्रतिबोध देवासारु चाल्या, ते मार्गमा कनक खड ना मा वनमां तापसनो आश्रम छे, तिहा एक महाजोरावर घणो डशीलो चडकोशियो सर्प रहे छे ते चडकोशिया सर्पने भगवाने देवता करयो, तेनी कथा कहे छे कोइक गामने विषे बे साधु गुरु चेला चोमासु र ह्या हता ते एक दिवसें मास खमणना पारणाने अर्थे बे जणा गोच रीयें गया, त्यां वर्षाऋतुने लीधे घणा जीवोनी उत्पत्ति थये छते मार्गमा गुरुना पग नीचे सुक्ष्म डेडकी आवी ते चपाइ मरण पामी तेवारें चे लायें कह्यो महाराज तुमारा पग नीचें डेडकी आवी ते मरण पामी एवु सांजली गुरु बोल्या घणी डेडकी मरेली पडी छे माटे बीजा कोइ नो पग आपवाथी मरण पामी हशे तेवारें तिहा ते चेलो मौन रह्यो वली गोचरी आलोवता शिष्य बोल्यो के डेडकीनो मिच्छामि दुक्कड ल्यो ते सांजली गुरुने रीश चडी अने चेलाने कहेवा लागो जे अरे आ डेडकीतो प्रथमथीज मरेली हती, मैंतो मारी नथी चेले घणु कह्यो तो पिण मान्यु नही तेवारें चेले विचार्यु जे सांजें पडिक्कमणामा आ लोयण लेशे गुरुयें पिण सांजें पडिक्कमणामा सर्वे आलोयण लीधी, पि ण डेडकीनो आलोयणा न लीधी तेवारें वली पिण चेले कह्यो जे महा राज डेडकीनी आलोयण ल्यो तेवारें पिण गुरुयें रीश करीनें तेवोज जवाब आप्यो फिरी रात्रें सथारानी वेलायें कह्यो के हे महाराज! डे डकीनी आलोयणा ल्यो एवु सांजलता गुरुने रीश चडी तेथी हाथमां ओघानी डाडी लेइने मारवा दोड्यो रातनी वेला हती तेथी चेलो नाशी गयो, गुरु तेनी पाछल दोड्यो अने उपाशराना थाजलामा अथ डायो तेथी गुरुनु मस्तक फूट्यु त्याथी मरण पामी बीजे भवे ज्योति षी देवता थयो त्यार्थी चवीने चडकोशी नामें तापस थयो तेना पाच सो शिष्य थया परतु पोतें घणो क्रोधी हतो तेथी एक दिवसें राजकु मारने वाडीमाथी फूल लेता देखीने हाथमा फरसी लेइ तेमने मारवा दोड्यो तिहा पग लपसीगयो तेथी मार्गमा एक अध कूवो आव्यो, तेमां

पडचो पोताने फरसीआगी तेथी आर्त्तध्याने मरण पामीने तेहज आश्रमने विषे चोथाजवें चडकोशीओ सर्प थयो छे, आम्यामा झहेर घणु छे,जे को ई देखे, तेने बाळी भस्म करे छे, घणा तापसोने बाल्या, बीजा पेटम एक नाशी गया लोकें पिण ए मार्गे जवानु छोडी दीधु, एक कोश प्र माण भूमिमां रहेला जीवमात्रने बाली नाखे छे त्या ते सर्प कोइने आवा देतो नथी ते सर्पना बिल उपर भगवत काउसग्गें रह्या, ते देखी सर्पें क्रोध आणीने प्रभुने डख मारचो, तेवारें प्रभुना पगमायी दूध सरखो लोही मास निकल्यु, तेने देखी सर्पें विचारचु जे हु जेने साहामु जोउं तेने पिण बाळी भस्म करु अने एने तो डख मारचो तो पिण थोलु लो ही निकल्यु माटे ए कोइ महोटो पुरुष छे एम चितवीने भगवानना मुख सामु जोयु तेवारें भगवान बोल्या के अरे चडकोशिया! बूझ बूझ तु नथी जाणतो एवु केता थका ते सर्पने विचार उपन्यो जे आवु रूप में क्याक दीठु छे एटलामा मूर्च्छा आवी गइ अने जाति स्मरण ज्ञान उ पन्यु तेवारे पाछलो भव दीठो, पछी प्रभुने त्रण प्रदक्षिणा देइ विन ति करी के हे करुणासागर! दुर्गतिरूप कूपथी तुमे मुजने उद्धरचो, पछी वैराग्य पामी पन्नर दिवसनु अनशन करी परोपकारार्थे ते सर्प पोता ना बिलमाहे मुख घाली अने आखु शरीर बाहेर राखीने रह्यो पछी ते मार्गे दूध, दहीं, घृतना वेचनारा आहिर लोक तेणे ते नागराज सतुष्ट थयो एवु जाणी दूध, दहीं, घृत, शर्करादिकें करी सर्पने पूज्यो तेनी ग धें करी कीडीओ शरीर उपर चडी पछी विचारचु, जे हु महारा श रीरने फेरवीश तो कीडीयो मरीजशे एवु जाणी शरीर हलाव्यु नही कीडीयें ते सर्पने फोली चालणी सरखो कीधो, ते सर्प शुभध्यानें मरण पामीने आठमे देवलोकें देवता थयो प्रभु तिहाथी विचरता उत्तर वाचाळ सन्निवेशें पहोता तिहा नागसेन श्रावकनें घरे परमान्नें पारणु करचु, देवतायें पचदिव्य प्रगट करचा तिहाथी विहार करीने भगवा न श्वेतांबिका नगरीने गया तिहा परदेशीराजायें प्रभुनो महिम

यो ॥ तिहाथी विचरता थका भगवान सुरभिपुरनगरनां मार्गमा गंगा
आवी ते उतरवाने अर्थे घणा लोक सिद्धदत्त खारुआनी नावमा
तेनी साथे प्रभु पिण बेठा एवामा घूवड बोल्यो तेनु शुकन जोई क्षो
नमे निमित्तिओ ते नावमां हतो तेणे कह्यु के हे लोको आज आपणने
ान कष्ट उपजशे परतु आ साधु महात्मा पुरुषना प्रभावथी जीवता
शु मरशु नहीं एवामा भगवते त्रिपृष्ट वासुदेवना भवमा जे सिंहने विदा
ो हतो ते सिंह घणा भवभ्रमण करीने हमणा भुवनपति देवोमा सुदंष्ट्र
ने नागकुमार देवता थयो छे ते अवधिज्ञाने प्रभुने जोई पूर्व वैर सभा
तिहा आवीने नाव डूबाववानो उपद्रव करवा लाग्यो ते वखत नवा उप
। एवा कबल अने सबल नामे बे नागकुमार देवता तेणे आवीने एक
तायें तो नाव डूबती राखी अने बीजा देवतायें पहेला सुदंष्ट्रदेवनी
पे लडाइ करी तेमा सुदंष्ट्र हारीगयो तेथी भगवान गगानदी उतरया
वे ए कबल संबलनी पूर्वभव सबधि कथा कहे छे, मथुरा नगरीमा
नदास नामा श्रावक रहे छे तेनी साधुदासीनामे स्त्री ते पिण श्राविका
ते बन्ने, जणायें पाच अणुव्रतमा चतुष्पद जीवो राखवानो त्याग
लो छे तेथी दूध दही जे घरमा वापरवा सारु जोईयें ते एक आ
र पासेथी मूल्य आपीने वेंचातु लीये छे तेने लीधे ते आहिरने अ
शेठने माहोमांहे प्रीती थइ ते आहिर साथे लेवड देवडनो सतोष
र्नां, राखेलु छे हिवे एकदिवस ते आहिरने घरे विवाह आव्यो ते
े आहिरे पासेथी विवाहने माटे केटलिएक चीजो मागी शेठे पिण ते
। चद्रवा प्रमुख सर्व उपकरण तेना मागवा मुजब आप्या तेथी ते
े विवाह घणो सिरेकार थयो तेवारें ते आहिर खुशी थइने सरखी
मरखावाळा घणा रूपवत एवा बे बाळ वृषभ लावीने शेठने घरे बळात्कारें
ाधी चाल्यो गयो ते यद्यपि शेठने तो राखवानी इच्छा हती नही
ो पिण शेठे विचार्यु जे पाछा आपीश तो ए बीजे कयाय वेचशे
तिहा ए मारडा दुःखी थाशे, बाध्या रहेशे, भार ताणशे, एवु विचा

रीतें पोतानें घरें राग्या तिहा तेमनें पुत्रनी परे फासु याम जउ प्रमु
ख खवरावीने पोष्या कबल अने सबल एवा बे नाम दीधा हिवे शठ
पासीने दिवसे पोसह करे धर्मचर्चा करे पुस्तक वाचे ते वातो सान
ता सांजलता ते बलदीया घणीज रूडी समजण वाला थया एवा प्र
द्रिक परिणामि थया के शेठ जेवारे उपवास करे तेवारें ते पिण उप
वास करे तृणादिक चारो बिलकुल खाय नहीं एवीरीतें शुभजावनायें
विचरे छे हिवे एक दिवस शेठ पोसहमां बेठा हता एटलामा कोइएक
शेठनो मित्र आव्यो ते पुष्ट रूपजनु जोडलु देखी शेठने पूछ्याविना
पोताना रथमा जोडीनें जंडीर वनमा यक्षनी यात्रायें लेइ गयो मार्गमा
घणा दोडाव्या तेथी ते बलदोनी नाडियो तूटी पडी पछी ते छानो
आवीने पाछा शेठने घरे बाधी गयो पिण हाडका भागी गया तेथी चा
रो पाणी त्यागी बेठा शेठें पोताना पुत्र जेवा बलदोने दुःखी थयेला दे
खी घणो विषाद करीने अनशन करोव्यु चार आहारना पच्चखाण क
रावी नवकार सजलाव्यु ते बलदीया शुजध्यानें मरण पामीनें नागकुमा
र देव थया ते नवा उपन्या थका अवधिज्ञाने उपयोग आप्यो तेथी ए
कृत्य देखी इहां आवीनें जगवानने थतो उपसर्ग मिटाड्यो अने जगवान
आगल नाटक नाची गीतगान करी पूजा सत्कार करी स्वस्थानकें गया ॥

॥ इति कबल सबल दृष्टांत समाप्त ॥

एक दिवसें जगवान् विहार करता गगा नदी उतरता सूक्ष्मवेलु
माहे प्रतिबिंबित पगलानी श्रेणीने विषे चक्र, ध्वज, अंकुश प्रमुख ल
क्षण थया एवामा पाछलथी कोइ एक पुष्पनामा सामुद्रिकशास्त्रनो जा
ण आव्यो तेणे मनमा चिंतव्युं जे आ कोइएक चक्रवर्त्ती थनारो
जीव छे चक्रवर्त्ती विना एवा पग बीजाना न होय ते हमणा एकाकी
जाय छे माटे हुं जइ एनी सेवा करु, पछी ते चरणानुसारें तिहा आ
व्यो अने जगवानने वस्त्ररहित दिगम्बररूपें देखीने विचारवा लागो जे
" सामुद्रिकशास्त्र फोकट जण्यो छु जो एवा लक्षणनो धणी जिक्षुकरूं

हे एकाकी छे तो ए महारां पुस्तक खोटा छे पाणीमा बोलवा लायक छे, एम चितवी पुस्तकने पाणीमा बोलवा लाग्यो, इंद्रमहाराजे ए व्र त जाण्यु, तेवारें तिहा आवीनें प्रजुनी सेवा साचवी पुण्यनिमित्ति या आगल प्रजुनु स्वरूप वर्णवी शास्त्र पाणीमा बोलवा नदीधा, पछी प्रगवनना गुण ग्राम कही इंद्र स्वस्थानकें गयो, पुष्प पिण इंद्र पासें थी मणि कनकादिक धन पामी हर्ष पामतो पोताने स्थानकें गयो, प्रजुयें परोपकारार्थे गगानदीउतरी विहार कीधो ॥

हिवे गगानदी उत्तरीने प्रगवान बीजे चोमासे राजगृही नगरीयें ना लंदीनामा पाडामा वणकरनी एटले ततुवायकनी शाला छे तेना एक बा जुने विषे खूणामा आज्ञा लेइने रह्या तिहा प्रथम मास खमण कर्यु अहींआ शरवणग्रामे मखली पुत्र सुजद्रानो अगज बहुलध्वजनी गो शालाने विषे उपन्यो छे तेमाटे तेनु नाम पिण गोशालो राखेलो छे ते अनुक्रमें प्रमतो प्रमतो प्रगवत पासें आव्यो, प्रगवाने तिहा चारमासम ना मास खमण करीने चार पारणा कर्या तेमा पहेला मास खमणने पारणे प्रजुनें विजयशेठें क्षीरादिक विपुल जोजने पारणु कराव्यु तिहा देवतायें पच दिव्य प्रगट कर्या पछी ते सरस क्षीरादिक कूरादिक मो दकादिकनो आहार देखीने गोशालायें विचार्यु जे एने घर घर वोहरावे छे माटे हु पिण जुदो जिक्षायें फिरीश तो माहारी पिण मान्यता वधशे, तेवारें प्रगवतने जेणे वोहोराव्या तेना पाडोशीने घेरे गोशालो पिण वो होरवा गयो ते देखी पाडोशी हर्ष पाम्यो जे महारे घरे प्रगवान पधा र्या तेथी उठी बेठो थयो पछी वादीने कह्यो के हे महाराज! महारे घरे पारणु करो तेवारें गोशालायें बे हाथ पसार्या गृहस्थें उनी उभी र होइ पीरशी अने उचु माथु करी जोवा लाग्यो जे महारे घरे सोनैयानो वर्षाद थाय एम करता वायस आवी माथे बेठो, तेवारें बेडा उपरथी गो शालाना हाथ उपर एक बाइयें देवता नाख्यो ते जोइ शेठें विचार्यु जे पाडोशीने घरे तो सोनैयानो वर्षाद वरश्यो अने माहारे घरे तो को

थला वरश्या गोशालाना हाथ मल्या तिहाथी उदास थइ गोशाा
निकल्यो हिवे भगवानने बीजु पारणु नंदे पक्वान्ना दिकनु कराव्यु
त्रीजे मासखमणे त्रीजु पारणु सुनंदे परमान्नादिकें कराव्यु तिहा सर्वत्र
पंच दिव्य प्रगट थया ते जोइ गोशाले मनमा विचार्यु जे एनो पा
सार विद्या छे जे घर घर सोनु वरसावें छे, ए विद्या हु पिण शीखु म
टे एनी संगत करू तो शीखु अने महारी शोभा वधे । एम विचार
गोशालो बोल्यो हे भगवान ! हु आपनो शिष्य छु एम कही भग
त सार्थे फिरवा लागो, भगवाने तिहाथी जइ चोथु पारणु कोल्लागसन्निवेशं
बहुलनामा ब्राह्मणने घरे केवल खीरना भोजने कर्यु तिहा पाच दि
प्रगट थया ए बीजु चोमासु जाणवु ॥ २ ॥

पाछलथी गोशालाने भगवान दीठा नहीं सर्व नगरमां फिरी जोयु ते
भगवान मिल्या नही तेवारें सर्व उपकरण ब्राह्मणने आपी क्षुरमुंड थइ
चाल्यो पछी कोल्लागसन्निवेशे भगवानने देखी बोल्यो के आपनी दिक्ष
मुजने हो हु आपनो चेलो छु ए वात भगवाने पिण मानी पछी गोशाल
सहित भगवान विहार करी एक दिवसें भगवान स्वर्णखलग्रामें चाल्य
मार्गमां कोइ गोवालीए खीर पकावता देखी तिहा गोशालो बोल्यो हे भ
गवान ! ए खीर थाशे ते खाइने जइशु माटे थोडीवार बेसो तेवारें सि
द्धार्थ बोल्यो ए खीरनु पात्र भागशे पछी गोशालायें जइ गोवालीयाने
कह्यो हाडी फुटशे गोवालीयायें घणा यत्न कराव्या तो पिण हांडे
फूटी गइ तेवारें बोल्यो जे थानार होय ते थायज एवु बोली हठ
कडी नियतवादीपणु पाडिवज्यु ॥ तिहाथी भगवान विहार करी ब्रा
ण गाम गया तिहा एक नद अने बीजो उपनद ए बे भाइना बे पा
छे तेमाथी भगवाने नदना पाडामा पारणु कर्यु अनेगोशालाने उप
दने घरे वाशी अन्न सात दिवसनी थेंस मिली तेथी कोपायमान थइ
गोशालो बोल्यो जे महारा धर्माचार्यना प्रभावथी तहारु घर बली जा
शुजो एवु कहेताज व्यतर देवोयें भगवाननु महत्त्व राखवा माटे तेनु घ

चालो नाख्यु ' हिवे त्रीजे चोमासे बे बे मासनी तपस्यायें प्रभु चउनाण रीयें रह्या ए त्रीजु चोमासु ॥ ३ ॥

त्या छेलुं पारणुं करी कोछाग सन्निवेशे गया तिहा शून्य गृहमा का उसग्ग रह्या तिहा सिंहो रजपुत चोधरीनो पुत्र विद्युन्मती दासी सार्थे क्रीडा करतो हतो तेने रमतो देखीने गोशालो हस्यो तेवारें तेने गोशा लाने कूट्यो गोशालो प्रभुने कहेवा लागो जे मने मार आपे छे माटे तु मे एने का वारता नथी ? प्रभु मौन छे तेथी सिद्धार्थ बोल्यो के आज पछी एवु हास्यनु काम म करीश ए काम करीश तो एवाज फल पामीश तेवार पछी स्वामी मोराकसन्निवेशे रमणीय नामा उद्यानमा काउस्सग्ग र ह्या, त्या कुंभारशालामा श्रीपार्श्वनाथना शिष्य मुनिचंद्र सूरि घणा शि ष्यो सार्थे रह्या छे ते साधुओने देखी गोशाले पूछ्यु तुमे कोण छो, ते बोल्यो अमे साधु छैयें गोशालो बोल्यो तुमे क्या अने महारो धर्मा चार्य क्या ? तेवारें ते साधु बोल्या जेवो तु छे, तेवो ताहारो गुरु पि ण हशे तेवारें गोशालो रुठो थको बोल्यो जे महारा धर्माचार्यना तप तेजना प्रभावथी तुमारो आश्रम बळी भस्म थाओ तेवारें शिष्य बोल्या एथी काइ अमे डरता नथी, हिवे आश्रम बल्यो नही तेवारें गोशाले आवीने प्रभुने कह्यो के स्वामी आगल जेवो तुमारो प्रभाव हतो तेवो हमणा नथी तप तेज घटी गयो जणाय छे तेवारें सिद्धार्थ बोल्या अरे गोशाल ! ए साधुओने श्राप लागे नही ए साधु नही बळे, पछी ते पार्श्वनाथना शिष्य मुनिचंद्र सूरि जिनकल्पनी तुलना करता काउस्सग मां उभा छे तेने कुंभारें चोर जाणीने मार आप्यो मुनिचंद्रने अवधिज्ञा न उपन्युं मरण पामी देवलोकें गया तेनो देवतायें महिमा कर्यो त्या उद्योत थयो ते देखीने गोशालो बोल्यो जुओ साधुना आश्रम बले छे महारा गुरु साचा छे, तेवारें सिद्धार्थ व्यंतरो बोल्यो के अरे कुपात्र ! ए तो मुनिचंद्र देवलोकें गया तेनो महोत्सव थाय छे ते सांभली गो शालो विलखो थयो ॥ ते पछी प्रभु चोरा नगरियें गया तिहां गोशालो

गाममाहे हेरतो फिरे तेवार त्याना लोकोयें हेरु जाणी प्रथम गोशा लाने (कूप) खाडामाहे घाल्यो पछी जगवतने पिण नाखवा लागा, ए वामां उत्पलनामा विप्रनी बेहेन सोम जयति नामे ते चारित्र त्यागीने सन्यासणी थइ छे तेने आवी जगवानने ओलखीने छोडा या. गोशाला ने पिण छोडी मूक्यो ॥ तेवार पछी त्याथी विहार करीने चोथु चोमासु स्वामी पृष्ठ चपायें चार मासी तप करीने रह्या, तिहा चोमासुं सपूर्ण क री बाहेर पारणु कर्यु ए चोथु चोमासु जाणवु ॥ ४ ॥

तिहाथी विहार करी जगवान कयगलें गया, तिहा माघ मासें जागरणना दिवसें दारिद्र अने स्थविर पाखडिणी नाचें छे, तेनी गो शाले हासी करी तेथी तेओए गोशालाने मार आप्यो वली प्रजुनो शि ष्य जाणी मूक्यो ॥ तिहाथी विहार करी जगवान सावत्थीनगरीयें आ वीने काउस्सग्गें रह्या तिहा पितृदत्तवाणिक्नी स्त्री श्रीजद्रा छे तेना पुत्र जीवता नथी, तेवारें शिवदत्त निमित्तियें तेने पुर्व कह्यो छे के मृतक पुत्रनु मास खीरमा राधीने, कोइ जिक्षुकने खवरावजो तो तुमारा पुत्र जीवता रहेशे हिवे ते स्त्रीने जेवारे मृतक पुत्र थयो तेवारें तेना मासनी खीर तैयार करी राखी अने अहीं गोशाले सिद्धार्थ व्यतरोने पूछ्यु के मने आज केवु जोजन मिळशे? सिद्धार्थे कह्यो तने आज मनुष्यनु मास मिळशे, ते खाइश पछी सिद्धार्थनु वचन खोटु करवा सारु गोशालो श्रावक वाणीयाने घेरे वहोरवा गयो, मनमा विचार्यु के वाणीयाने घरे मास होयज नहीं एवु जाणी तिहा खीर जिमी फिरी पाछो आवी सि द्धार्थने कह्यो के हु खीर जिम्यो छु सिद्धार्थे कह्यो तु मास जिम्यो छे, तेवारें गोशालायें घरामा आगळी घाली वमन कर्यु, माहे मासना कटका दीठा तेवारें गोशालो क्रोध करीने तेने घरे गयो परतु ते स्त्रीये आपना जयथी घरनु बारणु फेरवी नाख्यु हतु तेथी गोशालाने घर लाध्युं नहीं तेवारें केहेवा लाग्यो जे महारा स्वामीना तप प्रजावथी तुं सारो कुपडो बळी जस्म थाजो तेथी तेने कुपडो बल्यो ॥ इति ॥

तिहांथी भगवान दरिद्र सन्निवेशनी बाहेर काउस्सग्गे रह्या तिहां पथीयोयें भगवानना पग पासें तापणी बाली तो पिण भगवान किंचि। मात्र सरक्या नही भगवानना पग बल्ता देखीने गोशालो नाशी गयो॥ तिहांथी गल गामें वासुदेवने देहरे भगवानें काउस्सग्गे रह्या तिहां गोशालो आव्यो आवीने बालकोने बिहीवराववा लाग्यो तिहां लोको मारयो, कू ट्यो वारयो भगवाननो शिष्य जाणी मूकयो त्यांथी विहार करीने भग वान आवर्त्त गाममा बलदेवना मदिरने विषे काउस्सग्गे रह्या तिहां गो शालाये छोकराओने बिवराववा सारु महोटु मरडी बताव्यु तेथी छो करा सर्वे भय पामीने पोताना मातापितानी आगल वे वा लागा ते वारें ते मातापिताओ तिहां आवीने केहवा लागा-के आ चेलाने शु मारवो एना गुरुनेंज मार आपो एटले फिरी चेलाने पाधरे मार्गें चाल वानो उपदेश करशे एवु कहीने जेटलामा भगवानने मारवा तैयार थया एटलामा बलदेवनी मूर्त्तिये हल लेइने लोकोने बिवराव्या तेवारें सर्वे लो क भगवानने नमवा लागा॥ पछी तिहांथी विहार करी घणा क्लिष्ट कर्मोनी निर्जरा करवाने अर्थे भगवान लाटदेश गया तिहां अनार्य लोकोयें घणाज उपद्रव कर्या ते प्रभुयें सहन कर्या॥ तिहांथी पूरण कलश नामें अनार्य गामे जाता थका भगवानने मार्गेमां बे चोर मिल्या ते भगवानने देखी अपशकुन थया एवु मानी खड्ग लेइ मारवा दो ड्या तेने इन्द्र महाराजें वज्रथी मारी नाख्या केटलिक मनोमां इन्द्र महा राजें ते चोरोना पग थम्भ्या तेथी ते वृक्षनी पेरें तिहाज उभा रह्या एवी रीतें उपसर्ग निवारण थयो॥ पछी तिहांथी प्रभु चोरांगे आव्या तिहां मांडवे धान रधातु देखी गोशालो नीचो थइ जोवा लाग्यो तेने लो कोयें चोर जाणी मार्यो, गोशालो रुठो थको बोल्यो जे महारा स्वा मीना तप थकी तुमारो मडप बलजो, ते तेमज थयो तेवार पछी भगवं त हरिद्र नीचें काउस्सग्गें रह्या, तिहां कोइ पथीयें आगल भूमिका बाली हती तिहां गोशालना पग बल्या तेवारें त्यांथी गोशालो नाठो॥

तेवार पछी पाचमु चे मासु प्रभु भद्रिका नगरीय रह्या तिहा चोमासी तप भगुये कीधु ए पाचमु चोमासु चार मासी तप्न जाणवु ॥ ५ ॥

पछी पारणु करी तिहांथी भगवान कृदिक सन्निवेशें गया त्या गो वेयें चोर जाणीने पकड्या पछी श्री पार्श्वनाथजीनी एक विजया बीजी प्रगल्भा ए वे साध्वि परिव्राजिकाणी थयेलीओ छे तमणे छोडाव्या तिहा गोशालायें जाण्यु जे एनी पिछवाडे फिरवाथी घणा दुःख सहन करवा पडे छे एवु विचारी भगवतथी जूदो विचरयो मार्गमा जाता पाचसें चोर मिल्या ते मामो मामो कहीने गोशालानी खाध उपर चडी आगल पाछल फिरावया लागा तेथी दुःख पाम्यो वली बीजे पिण ज्या जाय त्या कुरापत करे, तेवारें लोक मार आपे तेथी गोशालायें विचार्यु जे भगवत सायें रहेवुज भलु छे एवु जाणी भगवानने गोवालायो हिवे भगवंत विशाला नगरियें गया, तिहा लोहकारनी शालायें काउसग्गें रह्या, लोहार पिण छ महीना सुधी आजारी हतो ते पिण ते दिवसे साजो थयो छे, तेथी लोह घडवाना उपकरण लेइने आव्यो, प्रभुने मुडा देखी अपमगलिक जाणी घण लेइने मारवा उठ्यो, एटलामां इद्रें अवधिज्ञानथी जाणी त्या आवी लोहारने निवारयो कोइक स्थानकें इद्रमहाराजें लोहारनें तेहज घणथी मारी नारयो एम स्पष्ट लिखतु छे पछी तिहांथी भगवान ग्रामाकसन्निवेशें आव्या तिहा वन माहे विभेलेक यक्षें महिमा करयो त्यांथी निकल्या थका शालिशीर्षग्रामनी बाहेर आवी काउसग्गें रह्या ते वखते माघ मासनी ऋतु हती तेमा अत्यत थडी पडे छे एवा वखतमा भगवानें शीत उपसर्ग सहन करयो ते कहे छे त्रिपृष्ट वासुदेवना भवमा भगवाननी अपमानिती स्त्री हती ते स्त्री अनेक भवभमती थकी ते वखत कटपूत नामा व्यंतरी थयेली छे भगवानने देखी तेने द्वेष उपन्यो तेथी तापसणीनु रूपकरी पोतानी जटामांहि पाणी भरीने परमेश्वरना शरीर उपर छाट्यु घणो कठण शीत उपसर्ग करयो एकतो शीयालानो ऋतु

हती तेमा वली व्यतरीयें मेघवृष्टि करी, घणो थडो वायरो विकुर्व्यों ए मा एवा विकट उपसर्ग करचा ए सर्व प्रमाण विनाना पूर्वकृतकर्म प्रभु ना हता ते आहीं आवी नडचा तेने कठण उपसर्ग सहन करीने दूर करचा पछी व्यतरीना उपसर्गथी प्रभु आडग रह्या एवा धैर्यवत प्रभु ने जाणी पोताना अपराध खमावीने व्यतरी स्वस्थानके गइ, हिवे नि द्रा शीतवेदना सहन करता थका भगवतने छठने तपें करी यथार्थ लो कावधिज्ञान उपन्यु ॥ त्याथी भगवाने फिरी छठु चोमासु भद्रिका न गरीयें करचु तिहा चार महीना सुधी अनेक प्रकारना दु मह अभि ग्रह करचा ए छठु चोमासु जाणवु ॥ ६ ॥

इहा छ महीना बाहेर भटकीने गोशालो पिण फिरी आवी प्रभु ने मिल्यो हिवे ए चोमासु पुरु थया पछी शेषकाल आठ महीना सु धी भगवान मगधदेशमा विचरचा ते आठ महीनामा भगवानने को इ पिण उपसर्ग थयो नही तेवार पछी सातमो चोमासो आलभिका नगरीनी बाहिर देवकुले चारमासी तप करीने रह्या ए सातमु चोमासु ॥७॥

तिहा गोशालायें बलदेवनी प्रतिमाना मुखमा लिंग घस्यु ते लोकें दीठु तेवारें गोशालाने मार आप्यो कोइक प्रतमा बलदेवनी मूर्त्ति उ पर पुरुषचिन्ह राखीने सूतो तेथी पूजारायें मार आपी एम पिण लिखे लु छे तिहाथी विहार करी मर्दनग्रामे वासुदेवने देहेरे तेमज गोशाला यें मूर्त्ति उपर पुरुषचिन्ह करचु तिहा पिण मार खाधो पछी प्रभु उन्नागगामे जता रस्तामा कोइएक नवपरिणीतवहूने तेडी जाय छे ते मा बन्नेना दात बाहार निकलेला महोटा हता अने बहु कालो हती ते जोइ गोशालो हसीने बोल्यो के आ तो देवें सरखी जोड मेलवी आपी छे तेण गोशालाने मार आपीने वशजालमा नाखी दीधो ॥

" आ ठेकाणे कोइक कूटपूतनानो उपसर्ग लिखे छे एकदिन विचरता थका भगवान पुरिमताल नगरनी बाहेर शकटमुख उद्यानमा काउस्स ग्गे रह्या ते वखत ते नगरनो वग्गुर नामा शेठ तेनी सुभद्रा नामे

र्या ते देहु जणे पुत्र थवा सारु श्रीमल्लीनाथजीनुं नवु मंदिर करावीने तिहां नित्य पूजा करे छे हिवे जे वखत शेठ स्त्रीसहित पूजा करवा आव्यो छे तेवखत भगवाननी आगल इंद्रमहाराज बेठा छे तणे भगवाननो महिमा करवा माटे शेठने कह्यो के हे शेठ ! जेनी तुं पूजा करे छे ते हुं तुजने प्रत्यक्ष देखाडुं एवुं कही शेठने तेडी भगवानने पगे लगाड्यो शेठे पिण भावेस्त्री सहित भगवानने पूजीने पछी श्री मल्लीनाथजीनी पूजा करी तेवार पछी आठमुं चोमासुं भगवाने राजग्रही नगरीमां कर्यो तिहां चार मास तप कर्यो पछी चोमासी तपनुं बारणे पारणुं करीने प्रभु अनार्य देशमां विचरवा गया छे ए आठमुं चोमासुं जाणवुं ॥ ८ ॥

हिवे अनार्यदेशमां विचरता थका भगवाने घणा घणा कठण उपसर्ग सहन कर्या छे अने नवमुं चोमासुं पिण तिहां अनार्यदेशमांज कर्युं ते वली चारमासी तप सहित कर्युं वली तिहां रहेवाने जायगा पिण मिली नहीं तेथी विचरताज रह्या छे ए नवमुं चोमासुं जाणवुं ॥९ ॥

वली पाछल पिण बे महिना तिहांज अनार्यदेशमां तप सहित विचर्या ते पिण आहार विनानुं ब मासी तप थयुं ॥ पछी अनार्यदेश माथी विहार करीने सिद्धार्थगामथी कुर्मगामें जता मार्गमां एक तिलनुं झाड उगुं देखीने गोशाले भगवानने पूछ्युं के आ थंभ थाशे के नहीं थाय भगवानने कह्यो ए तिलना फूल सात छे तेना जीव मरण पामीने एक साकलीमां शींगमां तिलपणे उपजशे ते सांभली गोशाले भगवाननुं वचन जूठुं करवा सारु ते झाडने उखेडीने फेकी दीधुं तेवारे निकट रहेला व्यंतर देवतायें चिंतव्युं जे भगवाननुं वचन जुठुं मत थाजो एवुं जाणी वर्षाद कर्यो पछी गायना खुरथी ते तिलनुं झाड चपाणुं तेथी धरतीमां पेठुं थिरथयुं अने वर्षादना योगें पाछुं उगुं थयुं॥

हिवे भगवान कुर्मगाम गया तिहां एक वेस्यायन नामा तापस छे तेनुं नाम वेस्यायन केम पड्युं ते कथा कहे छे राजग्रही नगरी अ

ते चपानगरी ए बेनी विचमा गूर्वर नामा एक गाम छे तेमा कोशबी नामे एक कुटुंबी रहे छे हिवे ते गूर्वर गामनी पासें वली एक बीजु गाम छे ते गामनी बाहेर कोइक राजानी फोज आवी पडी तेथी गामना लोक सर्वे नाशी गया तेमा एक स्त्री पोताना पुत्र सहित नाशति यकी जाय छै ते स्त्रीने मार्गमा चोर लोकोयें पकडी लीधी अने बालक गूर्वरगामने बाहेर पड्यो रह्यो तेने कोशबी नामा कुटुंबीयें बाहेर रमतो देखीने उपाडी लीधो ते कुटुंबीने पुत्र हतो नही माटे तेने पुत्रनी परे राखीने महोटो कर्यो अने ते छोकरानी माताने चोर लोकोयें जइ चपानगरीमा कोइ वेश्यानी पासे वेची तेथी ते वेश्यानो धधो करवा लागी पछी अनुक्रमें ते छोकरो ज्यारें महोटो थयो त्यारें एक दिवसें चपानगरीमा व्यापार करवाने अर्थे आव्यो तिहा पोतानी माता जे वेश्यानो धधो करे छे तेनी सार्थे अजाणपणे भोग भोगववा लाग्यो एक दिवस तेनी कुलदेवी गाय वाछडानु रूप करीने रस्तामा आवी बेठी एटलामा ते छोकरो पिण वेश्यानें घरे जाय छे तेणे रस्तामा वाछडाना पूछ ऊपर पगदीधो तेवारे वाछडो बोल्यो जूओ माताजी आ महारा पूंछ उपर पग आपीनें चाल्यो जाय छे पिण रस्तो देखतो नथी तेवारें गाय बोली के हे बेटा! तु एनु नाम लेइश नही एनो पोतानी सगी माता सार्थे भोग करता पिण काइ डरतो नथी तो वली ताहरू शु साजलशे ? ए वात साजली छोकरो चमक्यो पछी सर्वहकीगत कुलदवीयें कही तेथी साजलीने तापस थयो लोकोये तेनु वेश्यायन ऋषि एवु नाम आप्यु ते झाडमा उंधे मुखे लटकतो नीचे अग्नि कुड करयो छे तेमा तापे छे तेने तेजोलेश्या उपजी छे एवामा तिहाथी भगवान चाल्या जाय छे पिछवाडे गोशालो पिण चाल्यो जाय छे ते वखत वेश्यायन पोतानी जटाजूटमाथी जूओ निकलीने जमीन उपर पडी गयेली छे तेने उपाडीने पाछी पोतानी जटामा मूके छे ते जोइने गोशालो बोल्यो अरे तु तो निष्केवल जूनोज घर छो के मुनि छो ?

हास्यनुं वचन भगवान बोल्यो एटले वेश्यायनने क्रोध चडयो तेवारें गोशाला उपर तेजोलेश्या मूकी ते जोइ भगवानने करुणा आवी ते वारें भगवाने तेने साहामी सीतलेश्या मूकी तेथी गोशालो बल्यो न हीं तपसीये पिण भगवाननो प्रताप जाणी भगवानने खमाव्या पछी गोशालायें भगवानने पूछ्युं के तेजोलेश्या केम प्राप्त थाय तेनो उपाय बतावो तेवारें भगवान बोल्या के बेलानी तपस्या करे एटल छठ करी ने पारणे एक मुठी उडदना बाकुला खाइने तेना उपर एक पलसीभर उष्ण पाणी पीये, सूर्य साहामो उभो रहे, ए रीते छ महीना सुधी करे तो छेवट तेजोलेश्या पुरुषनें उपजे आही केटला एक कहे सिद्धार्थ व्य तरे ए विधि कह्यो छे गोशाले पिण ए सामान्य विधि धारण करी लीधो ॥ हिवे भगवान कुर्मगामथी सिद्धार्थपुरें आवता रस्तामा पूर्वे क हेलु तिलना काडने उगेलुं थत्ररूप देखी तेने गोशाले विदार्यु तेमा सात पुज तिल दीठा तेवारें सर्व सत्य मानीनें गोशाले विचार्युं जे थवा वालु होय ते जरुर थाय एवी रीतें मानी लेइने दृढ निश्चय वादी थयो ए वस्त निरधार करी लीधो तेवार पछी गोशालो भगवानथी जूदो रह्यो अ ने सावच्छी नगरीयें आवी तेजोलेश्या साधि ते पिण सिद्ध थइ तथा दिशाचरोनी पासेथी अष्टाग निमित्त शीख्यो ते जिन नही एटले तीर्थकर न हतो तो पिण लोकोने कहे हु तीर्थंकर छुं एवी रीते तीर्थंकर नाम धरावतो पोतानी सिद्धाइ लोकोनी आगल देखाडतो थको भगवानथी न्यारो सावच्छी नगरीयें फिरे छे ॥ एवामा भगवान पिण विचरता वि चरता दशमु चोमासे सावच्छी नगरीनें आवीनें रह्या अने तिहा अनेक प्रकारना तप करया ए दशमु चोमासु जाणवु ॥ १० ॥

हिवे भगवान चोमासु पुरु करया पछी विचित्र तपें विचरता थका ॥ ॥ उक्तंच ॥ दढभूमि बहु मिच्छा, पेढालु जाणमागयो भयव ॥ पोलास चेइयमि, ठिण्गराय महापडिम ॥ १ ॥ सक्कोइय देवराया, सज्जागओ भणइ हरिसिउ वयणं ॥ तिन्निविलोग समत्था, जिणवीरं मणं चलेउमें

॥ २ ॥ सामाणिय संगम्ओ, देवो म्कारसतो अमरिसेण ॥ अह आगओ तुरंतो मिच्छदिठि पाडिनिविठो ॥ ३ ॥

- हिवे भगवान हृढ एटले कठणभुमिने विषे बहुम्लेच्छ निहां म मे छे एवा म्लेच्छना देशमां गया तिहां भगवानने कुतरां सामवें करड्यां छे एवा बीजा पिण अनेक प्रकारना कठण उपसर्ग थया छे ते सर्व सहन कर्यां पछी एक दिवस भगवान पेढाल नामा ग्रामना उद्यानमां पो लास नामा कोइएक देवनो चैत्य छे तेन विषे आठम तपें सहित एक रात्रि महाप्रतिमायें रह्या छे एवामां शक्रेंद्र देवताओनो राजा ते पोतानी सभाने विषे रह्यो थको भगवानना धीरपणानी प्रशंसा करे छे के जो त्रणलोक भेगा थाय तोपिण श्रीवीरप्रभुने चलाववाने समर्थ थाय नहीं एवु प्रभु नुं सत्व छे एवु इंद्रमहाराजनु वचन सर्व देवतायें सत्य करी मान्युं प रंत एक संगम नामे सामानिक देव मिथ्यादृष्टि अभव्यजातिनो छे ते ण अमर्ष आणीने विचार्यु जे मनुष्यने चलाववु डगाववु ए काइ मोटी वात नथी एवु चिंतवी इंद्रमहाराज पासें बोल्यो के हु एक क्षण वारमां चलावी आवु एवु कही इंद्रना वचन अणमानतो थको एम प्रतिज्ञा करीने तुरत प्रभु पासें आव्यो तेणे आवीने एक रात्रि मां महोटा वीश उपसर्ग प्रभुने कर्या तिहां प्रथमतो धुल उडावी धू लनो वरसाद करीने प्रभुना श्वासोश्वास रुध्या, पछी बीजो वज्रना जेवां मुखवाली कीडीयो विकुर्व्वीनें प्रभुना शरीरनें चुटाव्यु करडाव्यु चालणी जेवु शरीर कर्यु, पछी त्रीजु वज्रना जेवा मुखवाला डांस म छर विकुर्व्वीने प्रभुना शरीरने करडाव्यु, चोथु घीमेल कीडीयो बना वीने चुंटाव्यु, पांचमु वीछी बनावीने शरीरने करडाव्युं, छठु सर्पना रूप करीने डसाव्यु, सातमु नोलीयाना रूपबनावीने मुख अने नखथी शरीरने विदारण कराव्यु, आठमु उदरोना रूप बनावीने शरीरने क रडाव्यु, नवमु हाथी अने हाथीओना रूप करीने शुंढथी उचा उछाल्या, दशमु दांत अने पगथी शरीर मर्दन एटले शरीरने कचराव्यु, इग्यारमु

पिशाचोना रूप बनावीने अट्ट हास्य करी बीवराव्या, चारमु सिंहनु रूप करी नख मार्या, शरीर फाड्यु, तेरमु सिद्धार्थ पिता तथा त्रिशला माता ना रूप करीने विलाप करतो बोल्यो के हे पुत्र ! अमे ताहारा माता पिता आव्या छैयें माटे तु दु ख देखीशमा अमारी साथे आव अमे तुने सुख क री आपीशु, चौदमु तीक्ष्ण चाच वाला पक्षीना रूप विकूर्वीने प्रभुना कान अने मुखनु मास खवराव्यु, पन्नरमु चाडालना रूप करीने तर्जना करी, सोलमु लाकडा मध्ये बाली करीने बेहु पग उपर हाडी चडावी उपर खीर राधी, अग्निथी बाल्या सत्तरमु प्रचड वायरे करी भगवत न उचा उछालीने पाछा नीचे जमीन उपर पटकी दीधा, अढारमु क लिकाल वायरो विकूर्वीने जे वायरो भगवानने चक्रनी परें भमाडे ते रीते भमाड्या, तेवार पछी उगणीशमु हजार भार प्रमाण लोखडनो गो लो बनावीने भगवानना मस्तक उपर नाख्यो तेण करी भगवान केड सुधी केटलिक प्रतोमा दीचण सुधी भूमिमाहे पेसी गया ए उपसर्गथी जो बीजो कोइ गमे तेवो बलवान होय तो पिण चूरण थइ जाय पिण ए तो तीर्थंकरनु शरीर छे तेने काइ पिण थयो नही, वीशमु रा तनी वखते दिवस करी देखाड्यो अने सगमो बोल्यो के हे देवार्य ! प्रभात थयो माटे हिवे विहार करो, गोचरी जाओ ते वखत भगवाने अवधिज्ञाने करी रात्रि जाणीने विचार्यु जे ए देवकृत चरित्र छे वली सगमोयें देवतानी ऋद्धि देखाडी देवागनाना रूप करी हाव भाव दे खाडी अनुकूल उपसर्ग करया अने वली बोल्यो के तुमोने जोइयें वर मागो जो स्वर्ग मागो तो स्वर्ग आपु एवु कह्यो तो पिण कोइ रीतें भगवान लिगारमात्र डग्या नही चलायमान थया नही एम महावि कट एवा वीश उपसर्ग एक रात्रिमा सगम करया पछी जेवारें भगवान गाममा गोचरी करवा जाय तेवारें ते घरनो आहार अशुद्ध करी आ पे जे भगवानने लेवो कल्पे नहीं एवो करी नाखे तथा हरहमेश गा ममाथी चोरी करीने ते चीज भगवान आगल मूकी जाय तेथी लोक

ज्गवानने मार आपे वलक घडावे वगे ज्गवाननो घगे बनीने गाम मां कोइकोइ लोकोना छिद्र जोवा जाय जेवारे लोक पूछे के तु शा वास्ते आडो आवो अवलु जोर्या करे छे तेवारे तेने कहेके महारो गुरु रात्रिये चोरी करवा आवशे ते माटे हु आगलथी जोइ राखु छु ते सात्नली लोक आवीने ज्गवानने मार आपे एवो उपसर्ग थयेलो जोइन ज्गवाने अजिग्रह करचो के जिहासुधी आ उपसर्ग मने थाय छे तिहासुधी महारे आहार पाणी लेवु नही वली वली ते सगमो केट लिएक गामनी स्त्रीयो ज्गवान साथे मिलती छे एवु लोकेमाने तेवु कारे दे खाडे तेवु छता पिण तिहा ज्गवान एकात स्थाने रह्या एवा छ महीनासुधी उपसर्ग करचा तो पिण इद्रमहाराजे तेने उपसर्ग करताने वारचो नही के मके इद्रमहाराजे एवु विचारयु जे हु एने वारीश तो ए कहेशे के हु तो ज्गवतने चलायमान करत पिण शु करु के तुमे मने वर्जना करी तेथी लाचार थयो एवो अपवाद टालवा सारु इद्रे तेने काइपिण कह्यो नही तो पिण जिहा सुधी एणे उपद्रव करचा तिहा सुधी इद्रे श्वास लीधो नही, मनमा घणोज उदास रह्यो, बीजा पिण सर्व देव देवीयो शोकमां निस्तेज थका बेशी रह्या एम करता छ महीनानी अते ते स गमो देवता पोतानी मेले पोतेज हार खाइने बोल्यो के हे आर्य ! तुमे सुखथी गोचरी करो हु हिवे बिलकूल उपसर्ग करीश नही तेवारे ज गवाने कह्यो हु महारी इच्छाये गोचरी जइश एवी रीते हारीने सगमो स्वर्गमा गयो, इद्र महाराने तेनु मुख पिण जोयु नही लाकडीयोथी कु टावी मार मराव्योने स्वर्गमाथी काहाडी मूक्यो, ते तिहाथी निकलीने पोतानी देवागणाओ साथे लेइने मेरुपर्वतनी चूलिकाये आवी रह्यो, एनु एक सागरोपमनु आयुष्य छे. अने ए अज्व्यजीवनो जाति छे एवु क हेवाय छे एम प्रजुने दशमा वर्षने विषे घणा उपसर्ग थया पछी प्र जुये छ मासी तपनु पारणु वज्रगाममा गोपालकने घरे खीरना जोमने करयु घणी मतोमा गाकुलने विषे वत्सपाली नामे वृद्ध स्त्रीये

माझे पारण करानु कह्यो छे तिहां पांच दिव्य प्रगट थया वली चोसठ इंद्रादिकोयें तथा देवोये आवीने प्रभुने सुखशाता पूछी सावच्छी नगरायें शक्रेंद्रे प्रतिमामां प्रवेश करीने प्रभुने वांद्या लोकोयें देखीने भगवाननो महिमा कर्यो ॥ हिवे इगीआरमुं चोमासुं भगवाने विशाला नगरीमां कर्युं, तिहां जीर्णशेठें भावना भावी भगवान भातपाणीनो लाभ देजो एवी रीते चार महीना पर्यंत भावना भावी तो पिण मिथ्यात्वी पूरणशेठें दासीने हाथें उडदना बाकुला आप्या ते लेइने भगवाने तेने घरे पारणुं कर्युं तिहां पंच दिव्य प्रगट थया तेवारें लोक सर्व पूरणशेठने धन्य छे धन्य छे एम कहेवा लाग्या अने जीर्णशेठें जाण्युं जे हुं भाग्यहीण तेथी महारे एवो योग किहांथी मिले, एम पश्चात्ताप करतो रह्यो पछी केटलेक दिवसे केवली भगवान ते गाममां पधार्या तेवारें राजा प्रमुखें पूछ्युं के महारा नगरमां भाग्यशाली कोणछे ? केवली बोल्या के जीर्णशेठ भाग्यशाली छे राजायें पुछ्युं भगवानने दानतो पूरणशेठें दीधुं छे ? केवली बोल्या एणे भावविना दान दीधुं छे माटे तेने द्रव्यथी लाभ थयो छे अने जीर्णशेठें भावथी दान दीधुं छे माटे बारमो देवलोकनुं आयुष्य बांध्युं छे ए इग्यारमुं चोमासुं कह्यो ॥ ११ ॥

हिवे भगवान तिहांथी विहार करीने सुसमारपुरे प्रतिमास्थित काउस्सग्गे रह्या तेवखते चमरेंद्रनुं सौधर्म देवलोके जावुं थयुं छे अने ते चमरेंद्रे प्रभुनुं शरण लीधुं छे ए अधिकार आगल दश अच्छेरानी वातमां सविस्तर आवी गयो छे माटें लिख्यो नथी तेवार पछी अनुक्रमें चंदनबालायें प्रभुने पडिलाभ्या छे एटले भगवंतें काइंक कर्म शेष रह्यां जाणी कोशांबीनगरी विषे पोष वदि एकमना दिवसें पोतानी इच्छाथी एवो अभिग्रह कीधो छे के १ द्रव्यथीतो सूपडाना खुणामां बाकला राखेला होय, २ क्षेत्रथी एक पग घरनी डेलीनी माहली कोरे होय अने एक पग डेलीनी बाहेर रह्यो होय ३ कालथी सर्व भिक्षुक लोक भिक्षा मागी जाय ते पछी ४ भावथी राजानी पुत्रीहोय परतु दास

ण पामेली हाय, ९ माथु मुंडेलुं होय, ६ जेना पगमा बेडीयो पडेली
ाय, ७ आठम तपकरयु होय ते वळी रुदन करती बेठी होय एवी
ी जो बे पोहोर दिवस चडे मध्यान्ह पछी भिक्षा आपे तो महारे पा
णु करवुं एवो अभिग्रह करीने श्रीवीरभगवान् गोचरीये नित्य भ्रम
ण करे पिण वयाय एवो योग बने नही त्या राजाना मंत्रीश्वर प्रमुखे
अनेक उपाय कर्या पिण कोइरीते प्रभुनो अभिग्रह पूर्ण थाय नही
एवा अवसरमा चंपानगरीनो दधिवाहन नामे राजा तेनी धारणी नामा
स्त्रीनी वसुमतिनामा पुत्री छे तेनु अपर नाम चंदनबाला छे हिवे कोश
बी नगरीनो सतानिक नामे राजा छे तेणे राज्यविरोधे लशकर लेइ
चंपानगरीने लूंटी तेवारे दधिवाहन राजा नाशी गयो अने धारणी रा
णी तथा चंदना ए बे कोइ एक सतानिक राजानो पायदल सेवक हतो
तेना हाथमा आवी तेणे धारणीने कह्यो के तने हु महारी स्त्री करीश
ते सांभळी धारणी राणी तो पोतानी जीभ चापीने मरण पामी पछी
सुभटे विचार्यु जे रखेने आ छोकरी पिण मरी जाय एवुं जाणी तेने
विश्राम आपीने कोशंबी नगरीना चोवटा माहे ते चंदनबालाने वे
चवा गयो तेने वेश्या लेवा आवी तेवारे चंदनाये पूछ्यु तुमारो शो आ
चार छे वेश्या बोली उत्तम पुरुष साथे प्रीती करवी भला मन मान्या
भोजन करवा, ए अमारो आचार छे. तेवारे चंदना बोली ए महाराथी
न थाय तथापि ते वेश्यायें बलात्कारे लेवा माडी तेवारे शासन देवीये
वेश्याना कान अने नाक छेदी नाख्या वेश्या नाशी गइ पछी धनावह
नामे शेठ जैनधर्मी हतो तेणे मूल आपी चंदनाने वेचाती लेइ पो
ताने घरे तेडी आव्यो अने चंदना एवु नाम आपी पुत्री पणे थापी,
पिण चंदनानु सुरूप देखी धनावहशेठनी मूळानामा वाजणी बुहाड
ली छे ते मनमा द्वेष राखवा लागी के रखेने ए माहारी शोक थाय'
तेमाटे मथमथीज काइ उपाय करु तो सारु पछी एक दिवस शेठना
पग पखाळता चदनाना माथानी वेणी धरतीयें पडी तेने शेठे

उंची करी ते पेहेली दुराचार मूला स्त्रीयें दीठी अने मनमा चितववा लागी जे शेठ एनी वेणीयें मोह्यो देखाय छे मुखथी तो पुत्री कहे छे पि ण एने स्त्री करी राखशे एमां संदेह नथी केमके हु हिवे बुढी थइ छु अने ए स्वरूपवती छे पछी एक दिवसें शेठ कोइ एक गामें गया पि छवाडे मूलायें चदनानु मस्तक मूडावी हाथ पगमा बेडी घाली स जूनु वस्त्र पहेरावीने छाणा प्रमुखना ओरडामां बेसाडी पोते घरने बारणे तालु आपी पोताने पीयरें जती रही हिवे चदना तो ओरडामा बेठी नवकार गणे छे पोताना करेला कर्मने निंदे छे एम करता चोथे दिवसें शेठ फिरी पोताने घरे आव्यो तिहा चदनबालाने दीठी नही, तेवारे पाडोसी लोकने पूछवा लाग्यो पिण पहेली कजीयाखोर मूलानी बीकथी कोइ जवाब आपे नही पछी एक डोकरीये सर्व वात कही तेवारें शेठें तालु उघाडी ओरडा मांथी बाहेर काहाडी डेलीमा बेसाडीने कह्यो के हूं लोहारने बोलावी ला वु छु ते ताहारी बेडीयो उघाडशे चदनायें कह्यो हू भूखें मरु छु तेवारे शेठे उडदना बाकला एक सूपडाने खूणे नाखी चदनाने आपी आप्या अने कह्यो के तु त्रण दिवसनी भूखी छे ते आ बाकला खाजे हु बेडी काहाडवा, सारु लोहारने तेडी आवु छु एम कही चदनाने पुर्वेली अवस्था सहित उबरे बेसाडी पोते लोहारने तेडवा गयो पिछवाडे शु द्धसम्यक्त्वनी धरनारी चदना सती चिंतवे छे जे कोइ अतिथि आवे तो तेने ए बोहोरावी आपु एवामा मध्यान्ह वीत्या पछी प्रभु पधारया तेने देखी चदनबाला हर्षवत थइ थकी बाकला देवा लागी परतु प्रभु यें लीधेला अभिग्रहना चार भेद तो दीठा पिण पाचमु रुदन दीठु नहीं तेथी पाछा वल्या तेवारें चदना दु ख धरती थकी रुदन करवा लागी जे साधु पिण महारा हाथनो आहार लेता नथी माटे मने धिक्का र छे पछी भगवते रुदन करती देखी पोतानो सपुर्ण अभिग्रह थयो जा णी ते उडदना बाकला लीधा तिहा देवतायें पचदिव्य प्रगट कर्या अने नेउर थया मस्तकें वेणी पाछी आवी इंद्रमहाराज आ

भ्या, चंदनानी मातानी बहेन मृगावती ते चंदनानी मासी थाय तेना भरथारी शतानिकनामे राजा धन लेवा लाग्यो तेने इंद्रे वार्यो अने कह्यो के चंदनाने दीक्षा लेवानी वखते ए धन काममां आवशे, चंदनाये कह्यो ए धन धनावह शेठनें स्वाधीन करो तेने आपीने इंद्र बोल्यो भगवाननी प्रथम साधवी ए चंदना थाशे एम कही इंद्र स्वस्थानके गयो आहींआ पांचदिवसें उणा छम्मासी तपनु प्रभुने पारणु थयुं वली कोइक मतमां एम कह्यो छे के वसुधारानी दृष्टि आपणे घरे थइ एवु मूलाशेठाणी पोताना पियरथी छटति छटति कसति काचली जेम तेम नाथती तिहां आवी पछी महोटो जोलो वालती उतावलमा खोला करीने धन उपाडवा मांडयु ते उपाडता अग्निज्वाला उठी वस्त्र सर्व बली भस्म थया श्याम वदन थइ थकी जाती हुई तेने देवताये तर्जना करी कह्यो के ए द्रव्य चंदनबालानु छे चंदनायें ते धन शेठने आप्यु शेठें ते सर्व धन चंदनानी दीक्षाना महोत्सवें खरच्यु छे. पछी भगवान चन्मानिक्ता गामें कायोत्सर्गे रह्या तेवारें इंद्र महाराज वांदवा आव्या अने बोल्या हे भगवान ! आपने एटला दिवस पछी अमुक दाहाडे केवलज्ञान उपजशे एवु कहीने गया हिवे प्रभु विचरता अनुक्रमें चपा नगरीयें स्वातिदत्त ब्राह्मणनी शालायें बारमु चोमासु रह्या ए बारमुं चोमासु ॥ १२ ॥

पछी तिहाथी पारणु करीने भगवान विचरता चन्मानिक गामें आवी बाहेर उद्यानमा काउस्सग्गें रह्या ॥ ते अवसरमा भगवतना कानमा गोवालियें खीला ठोक्या ते उपसर्ग कहे छे प्रभुयें त्रिपृष्ट वासुदेवने भवें शय्यापालकना कानमा तरुओ उष्ण करी नखाव्यु हतु ते कर्म अहींआ प्रभुने आव्यु, ते शय्यापालक अनेक भवभ्रमण करी हमणा गोपालक थयो छे, तेथी ते वैरने लीधे तेणे गोवालीये प्रभुने बलद भलाव्या पोतें गाममा गयो त्यांथी पाछो आव्यो तेवारें बलद न दीठा पछी बलद जोवा सारु चार महर रात्रि भम्यो प्रभाते

आव्यो तो भगवत पासे बलद बेठा दीठा, ते वखत ते गोवालीयाने पूर्व जनना वैरथी द्वेष उपन्यो तेथी भगवतना कानमा खीला बेसाड्या, जेम कोइ देखे नही कोइने खबर पडे नहीं तेवीरीते बहिरथी कापीने सरखा करी दीधा ते खीला जेना तीर थाय छ एवा शरकट वृक्षना अग्र कापी ने कानमा ठोक्या तेथी भगवतने महावेदना प्राप्त थइ तेनायोगे अत्यत कृश थइ गया पछी भगवत तिहाथी विहार करता मध्यम अपापायें सिद्धार्थ वणिकने घरे गोचरीये पधार्या तिहा खरक वैद्य बेठो ह तो तेणे मार्गानुसारे प्रभुने सशल्य दीठा तेवारे शेठने कहेवा ला ग्यो के भगवानने व्यथा छे शेठे कह्यो तो ए व्यथा मिटावी आपवानो लाभ तुमे का लेता नथी ? पछी शेठ अने वैद्य बेहु प्रभुनी पिछवाडे गया तिहा वैद्ये विचार करी बे साडसा लेइ बे वृक्षोनी विचे वृक्षो नी डालीयो रेसमथी बाधी कानं माहेली रोठी साडसमा पकडीने रेसमनी दोरीयोथी बे बाजुये बे वृक्षोनी डालोमा बाध्या पछी ते बेहु डालीयो एकज वखतें साथेज छोडी तेथी बेहु कानना खीला तुरत मांसेज नीकली आव्या एम बुद्धिना प्रपचें करी खीलातो काढाड्या पिण ते व खते प्रभुने वेदना एटली थइ के ते वेदनाना योगथी हाकमारी अग्हाट मूक्यो वनमा घोराकार शब्द थयु तेथी पर्वत फाटी पड्या ते पर्वत हा लमा भजणवाड गामनी पासे छे त्या भजणवाड तीर्थ थयो प्रभु मूर्छा पामी धरतीयें पड्या तेने बे पुरुषे उपाडी बसाड्या एम लोको कहे छे परतु तीर्थंकरने एवु सभवे नही ते उपरथी अनुमान करीये छैये के कायाना व्यापारथी हाक थइ हशी पिण भावथी थयेली जणाती नथी "अनत बलित्वात्" ए वचन उपरथी निरधार थाय छे पछी कानोनी उ पर सरोहिणी औषधी लगावी तेथी ते घाव मिली गयो समाधि थइ ते शेठ अने वैद्य बेहु मरण पामी देवलोकें गया, गोवालीयो मरी सातमी नरकें गयो ए रीते भगवानने ए छहेलो महोटो उपसर्ग गो वालीयें कर्यो हिवे भगवानने जघन्य, मध्यम अने उत्कृष्ट एवा त्र

ए मन्तारा उपसर्ग थया तेमा कया कया जातिना उपसर्गमा महोटा मा महोटो उपसर्ग थया कयो थयो ते कही देखाडे छे प्रथम जघन्य उपसर्गोमा तो शीत परीसहनो महोटो उपसर्ग व्यंतरीयें कर्यो तथा मध्यम उपसर्गमांहे संगम देवतायें महोटो उपसर्ग कर्या, अने उत्कृष्ट उपसर्गमांहे महोटो उपसर्ग कानमा खीला ठोकाणा तथा खीला काढ्यानो थयो ए रीतें जगवाने बारे वर्ष सुधी काया वोसरावी जेम कोइ पुरुष पाय दोहोवाने बेसे तेने आसने प्रजु बेठा । पिण कोइ दिवसें धरती बेठा नही ॥ तेमा मात्र बे घडी शूलपाणि यक्षने देरेरे निद्रा करी बाकी सर्वकाल निद्रा विनानो गयो एम श्रीवीरप्रजुनें घणा उपसर्ग सहन करवा पड्या अने श्रीऋषजदेव तीर्थंकरने एक वर्ष सुधी जिक्षा मिली नही एटलो उपसर्ग थयो तथा मध्यम बावीश तीर्थंकरने स्वल्प उपसर्ग थया छे ॥

हिवे जगवान जेवारें आगार एटले घर तेणे करी रहित एवा अणगार थया तेवारें एक चालवानी ईर्या समिति एटले जोइने चाले, बीजी जाषा समिति एटले विचारीनें बोले, त्रीजी एषणा समिति एटले दोष रहित आहार लीये, चोथी आदाण जंडमत्त निखेवणा समिति एटले जांड मात्रा प्रमुखने जोइने जयणाये ग्रहण करे तथा जयणाये मूके पांचमी उच्चार पासवण खेलजल्ल सिंघाण पारिष्ठापनिका समिति एटले वडी मात्रो, खेखार अने सेडो ए सर्व निर्जीवस्थानकें परठवे ए पांच समितिये समता होता हुवा पिण श्री तीर्थंकरनो आहार विहार कोइना दीठामा आवे नही, कोइना जाणवामा आवे नही, खेल, नाकमल, खखार, होयज नही केमके एने रोगनो अजाव छे वली जगवान मन, वचन अने कायाने कुकर्ममा न चलावता हुवा मन वचन कायाने जली रीते वर्तावतापो त्रण समिति सहित थया ॥

वली जगवान मनगुप्ति, वचनगुप्ति अने कायगुप्ति ए त्रण गुप्तियें गुप्त होताहुवा, वली जगवान इंद्रियोने गोपवी नववाड सहित शील पालता हुवा, वली क्रोध मान माया अने लोजरहित, प्रशांत शी

तउ स्वजावषाग, जेमने क्रोधादिक उपशांत थइ गया छे एवा छे, व ली जेणे पापने रोंधि मूक्यां छे, निराश्रव थया छे, ममत्वरहित धनर हित, ग्रथरहित होवाथी निर्लेप थया छे जेम कामानां पात्रने पाणी लागे नही तेम जगवान पिण निर्लेप स्नेह रहित छे जेम शखने रंग लागे नही तेवा निरंजन छे तथा कोइ उपर राग नही द्वेष नही माटे रागद्वेष रहित, जेमजीवनी गतिकर्यांय रोकाती नथी तेम जगवानने क्यां यजाता गति हणाती एटले जगवानने विहार करवामा कोइ रोकी श के नही, आकाश जेम निरालंब छे तेम जगवान पिण कोइनो आधार राखता नथी, वायरानी पेरें अप्रतिबद्ध विहार करे, शरदऋतुना मेघ स मान जेनु हृदय निर्मल छे कमलनां पत्रनी पेरें निर्लेप जाणवा, काच बानी पेरें इंद्रियोने गोपवी राख्यां छे, वली खडगी नामनु जनावर था य छे तेना शिंगडानी पेरें एकलाज छे, पक्षी जेम पोतानी पासे कांइ पि ण परिग्रह राखे नही तेम जगवान पिण पोतानीपासे कांइ पिण परि ग्रह राखे नही, जारंडपक्षीनी पेरे अप्रमत्त, हस्तिनी पेरे कर्मरूप शत्रु ओने मथन करवामां महापराक्रमवंत, वृषजनी पेरे संजमरूप जार नि र्वाह करवाने सामर्थ्यवान सिंहनी पेरें परिसह जीतवामां दुर्द्धर, मेरु नी पेरे अचल अकंप चलायमान थाय नही एवा छे, समुद्रनी पेरे गंजीर छे, चंद्रमानी पेरे सौम्य लेश्यावंत छे, वली सूर्यनीपेरे दीपतु तेज छे जेनु तपा या कुंदनना सोना सरखा जातरूप छे, पृथ्वीनी पेरें सर्व फरस सह न करनार छे, घृते होमेला अग्नि सरखा तेजे करी जाज्वल्यमान छे, ते जगवानने क्यांये प्रतिबंध नथी ते प्रतिबंध चार प्रकारनो छे ते कहे छे प्रथम द्रव्यथकी प्रतिबंध त्रण प्रकारनो छे तेमां एकतो मातापिता पु त्रादिक ते द्रव्य थकी सचित्त प्रतिबंध जाणवो बीजो घरेणा प्रमुख प्रतिबंध ते द्रव्यथी अचेत प्रतिबंध जाणवो, त्रीजो शिणगार करेली स्त्री प्रमुखनो प्रतिबंध ते मिश्रप्रतिबंध जाणवो एरीतें द्रव्यथकी त्रणे

प्रतिबंध जेने नथी माटे ममत्व रहित छे, वली बीजो क्षेत्रथकी

प्रतिबंध ते गाम नगर उजड, खेत्र, खाला घर, घरना आंगणा, आकाश इत्यादिक काइनो उपर महारा पणु नथी माटे प्रतिबंध नथी, त्रीजो कालथी प्रतिबंध ते समयने विषे आवलिका, श्वासोश्वास, सात श्वासोश्वासें एक स्तोक, क्षण, सात स्तोकनो एक लव, बे घडीनु मुहूर्त्त, त्रीशमुहूर्ते एक अहोरात्रि पन्नर अहोरात्रिय एक पक्ष, बे पक्षे एक मास, बे मासे एक ऋतु, त्रण ऋतुनु एक अयन, बेअयननु एक वर्ष, पाच वर्षनो एक संवत्सर, इत्यादिक बीजा पिण दीर्घ कालने विषे कोइ वखत ए अमुक काम हु करीश एवो प्रतिबंध नथी तथा चोथो भावथी प्रतिबंध ते क्रोध. मान, माया, लोभ, भय, हास्य, राग, द्वेष, वचन युद्ध, खोटु कोइने कलंक आपवु, चुगली करवी, परना दोष प्रगट करी कहेवा, अरति द्वेष, रति प्रीति, कपटथी बोलवु, मिथ्यात्वशल्य ॥ ए काम करे तो भावथी प्रतिबंध कर्यो कहेवाय ते माहेलो ए भगवानने विषे काइ पिण नथी ॥ ११८ ॥

वली ते भगवंत वर्षादना कालविना शेष उनाला अने शीयालाना आठ महीनामां गामने विषे एक रात्रि अने नगरने विषे पाच रात्रि लगण रहेवु एवो विहार कर्यो एवा थका विचरे तथा जेम कुहाडो चंदनने कापीनाखे पिण चंदननो उलटो कुहाडानी धारनें सुगंध आपे अने जे नहीं छेदे, तेने पिण सुगंध आपे छे तेम भगवानने कोइ वासले छेदे कोइ चंदने लेपे ते बेहुनी उपर समान सरखु मन छे जेनु वली तृण अने मणी तथा पाषाण अने सोनुं ए बेहु समान छे जेने, दुःख अने सुख बेहु समान छे जेने, इहलोक अने परलोकनी गरज नथी जेने, जीववा अने मरवानी इच्छा नथी जेने, संसार समुद्रथी पार थवा वाला, कर्म रूप शत्रुनें मारवाने उद्यमाल थया एवा थका विचरे छे ॥ ११९ ॥

ते भगवानना उत्कृष्ट ज्ञान दर्शन अने चारित्र छे, आदि रहित स्थान विहार पराक्रम आर्जव मार्दव अल्प उपधी क्षमा निर्लोभता गुप्ति मनप्रसन्नता ए सर्व काम उत्कृष्ट छे, साचो संजम तप करवाथी उपचय क

वेलु फल निवार्णमार्ग तेने विषे आत्माने आराना थया विचरे एवी रीते भगवानन बारे वर्ष वीत्या ॥

हिवे बारे वर्षमा जे कांइ तप करयु तेनी संख्या तथा पारणा करया तेनी सख्या कहे छे एक सगम देवना उपसर्गमां छ मासी तप तेनु पारणु एक बीजु पाच दिवसें न्यून छ मासी तप तेनु एक पारणु, नव वखत चारमासी तप करयु तेना नव पारणा, बे त्रिमासी तपनां बे पारणा, बे अढीमासी तपना बे पारणा, छ दोयमासी तपनां छ पारणा, बे दोढमासी तपनां बे पारणा, बार एकमासी तपना बार पारणा, बहोत्तर अर्द्धमासी तपना बहोत्तर पारणा, दोयसोने ओगणत्रीश छठ तप करया तेना दोयसोने ओगणत्रीश पारणा, ए बेलानी तपस्या करता पन्नरमहिनानें आठ दिवस तपस्यामा गयां, भद्रप्रतिमा दिन बे, महाभद्र प्रतिमा दिन चार, सर्वतोभद्र प्रतिमा दिन दश, ए त्रण प्रतिमाना त्रण पारणा अने तपना दिवस सोल जाणवा तथा एक रात्रिकी प्रतिमा बार तेना पारणा ए बार ए रीतें सर्व तपना दिवसो मिलावतां सर्व मिली इगीआर वर्ष छ महीनानें पचीस दिवस एटला सर्व दिवस निराहार पणे चउविहारा जाणवा एना यंत्रनी स्थापना नीचे करी छे तेमा दोयसोने ओगणत्रीश छठ करी छे तेना पारणा बेसे ओगणत्रीश थया तेमाथी एक छठनु छेलु पारणु केवली पणे थयो गणीनें बाकी दोयसो अठावीश पारणा लिख्या छे तथा बारे एक रात्रिकी प्रतिमाने स्थानके बारे अठम तप लिखीनें सर्व मिली ४१६६ दिवस चउविहारा तपना थया अने ३५० दिवस प्रथम पारणा सहित आहारना थया सर्व मिली ४५१६ दिवस छद्मस्थपणेरह्या तेना एक वर्षमा ३६० दिवसनी सख्या करता बारे वर्षनें साडा छ महिनाथाय ए रीतें भगवाने नित्य भोजनतो रह्यो पिण चोथ तप एटले एक उपवास करीने पिण पारणु कोइ वखत करयु नही थोडामा थोडु तप करयु ते पिण एटले बे उपवासनु करयु छ ॥ यंत्र स्थापना ॥

श्री महावीर स्वामीना तप पारणानी संख्या.

तपनां नाम	केटला करया	एकदरदिव सनीसख्या	पारणानी संख्या
छमासी पूर्ण	१	१८०	१
पांचदिवसउण छ मासी	१	१७५	१
चारमासी.	९	१०८०	९
त्रणमासी	२	१८०	२
अढीमासी	२	१५०	२
बेमासी	६	३६०	६
दोढमासी	२	९०	२
एकमासी	१२	३६०	१२
अर्धमासी	७२	१०८०	७२
प्रतिमा, आठमतप	१२	३६	१२
छठतप	२२९	४५८	२२८
भद्रप्रतिमा.	१	२	१
महाभद्रप्रतिमा	१	४	१
सर्वतो भद्रप्रतिमा	१	१०	१
सर्वमिली	३५१	४१६५	३५०

हिवे श्रीवीरचरित्रानुसारें छद्मस्थपणाना चोमासानी संख्या कहीये छै. एक अस्थिग्रामें, बीजुं नालंदी पाडे, त्रीजुं चंपानगरीयें, चोथुं पृष्ठचंपायें, पांचमुं भद्रिकायें, छठुं पिण भद्रिकायें, सातमुं आलंभिका, आठमुं राजग्रहीयें, नवमुं वज्रभूमीयें, दशमुं सावच्छियें, इगीआरमुं विशालायें, बारमुं चंपानगरीयें. एरीतें बार चोमासा मझुना थया ॥

हिवे तेरमा वर्षने विषे वर्त्तमान थका वैशाखनो बीजो महीनो, चोथो पक्षवारशुं एटले वैशाखशुदि दशमने दिवसे पाछलो पोहोर दिवस

रहे थके सुव्रतनामा दिवसे विजयमुहूर्त्तमा जंभिक गामने बाहेर उ
जुवालुका नदीना तीर उपर वैयावर्त्तनामा चैत्यने घणु दूर नही तेम
घणु ढूकडु पिण नही एवा स्थानके सामक नामे गाथापतिना क्षेत्रमा
शालिवृक्षने नीचे भगवान गोदुह आसने एटले गायने दोहेवा जेमाय
तेवा आसने उकडा बेसी आतापना लेता थका पाणी रहित बेलानी
तपस्यामा आत्माने भावता एवा स्वरूपे रह्या थका उत्तराफाल्गुनी न
क्षत्रमा चंद्रमानो योग आवे थके ते अवसरे ध्यानमां वर्त्तमान अर्थात्
शुक्लध्यान ध्यावता थका भगवानने जे समान बीजु कोइ ज्ञान नथी
एवो व्याघात रहित, आवरण एटले ढांकणा रहित, सर्व द्रव्य पर्यायोने
ग्रहण करवा वालू संपूर्ण पूर्णिमाना चंद्रनी परे केवल एटले एकज पिण बी
जो कोइ जेने सहाय नही एवु केवलज्ञान अने केवलदर्शन उत्पन्न थयु॥१२०॥

पछी भगवान श्री महावीरस्वामी अर्हन एटले पूजनीय थया रागद्वेष
रहित थया, केवली थया, सर्व जाण थया, सर्वना देखवावाला थया, सर्व
देव, मनुष्य, असुर लोकना पर्यायोने जाणे देखे, सर्व लोक सर्व जीवोनी
आगति, गति, भवांतरमा जावु आयुष्य, देवलोकादिकोथी चववु, देव
लोकादिकोमा जइ उपजवु, ते जीवोने मन, मनमा चिंतवे ते, अन्न प्रमु
ख खाय ते, चोरी प्रमुख करे ते, मैथुनादिक सेवे ते, प्रकट कर्म करे ते,
छानु कर्म करे करावे ते, इत्यादिक वातो माहेली कोइ एक पिण वात
जेनाथी छानी रहे नही एवा ज्ञान थया जेनी जघन्यथी पिण एक क्रोड
देवता सेवा करे एवा थया, ते कालमां मन वचन कायाना योगमा वर्त्तमान
सर्व जीवोना सर्व भाव जाणता थका, देवता थका भगवान विचरे ॥ १२१ ॥

हिवे भगवानने केवलज्ञान उत्पन्न थया पछी चोसठ इंद्रोना आसन च
लायमान थया तेवारे चोशठे इंद्र दिक्षा महोत्सवनी परे केवलज्ञाननो म
होत्सव करवा आव्या ते महोत्सव करीने जंभिकगामनी बाहेर समोस
रणनी रचना करी तिहां प्रभुयें क्षणेकवार देशना आपी पिण ते देशना
निष्फल थइ कोइयें मात्र सामायिकादिक व्रत पिण ग्रहण कर्या नही,

था देव सर्वे अप्रीति छे तेणे नवरारशी प्रमुग पचग्याण पिण करघुं
ो, 'इदमत्रिआश्चर्य" एटले ए पिण आश्चर्य जाणवु जे तीर्थंकर जे
नी देशना पिण खाली गइ तेवारें भगवाने लाभनो अभाव जाणी आ
ाव लाभ थवानो अवसर जाणी तेज वखत तिहाथी विहार कर्यो
त ॥ कहेता जेमाटे कह्यो छे के ॥ श्लोक ॥ तत्रादिश्यक्षणधर्मं, देवोद्योते
गद्गुरु ॥ लाभालाभावान्मध्यमाया, महासेनवनेगतम् ॥ १ ॥

अर्थ—जिहा केवलज्ञान उपन्यु तिहा भगवान जीत एटले तीर्थंकर
नो आचार पालवा माटे एक क्षणमात्र धर्मदेशना आपीने देवोना उद्यो
तने विषे जगतना गुरु एवा वीरस्वामी लाभनो अभाव जाणी तिहाथी
बारे योजन मध्यम पावानगरी तेनो महसेन नामक वन तिहा आवता हु
वा एटले रात्रियें विहार करवानी मर्याद नथी अने एमणे विहार कर्यो
ते कल्पातीत पणु जणाववा माटे जे तीर्थंकर आचरे ते कल्पमा होय तथा
कदापि नही पिण होय परतु छद्मस्थ साधु तो जे प्रमाणे तीर्थंकरे कल्प
कह्या होय ते प्रमाणेज चाले पिण जो तेथी विपरीत चाले तो प्रायश्चित्त
ने पामे वली रात्रिनो विहार ते जीवनी जयणाने अर्थे वर्ज्यो छे केमके
रात्रियें कोइ जीव जोवामा आवे नही माटे इहा श्लोकमा देवोद्योत एवो
पाठ कह्यो ते व्यवहार जणाव्यो अन्यथा तीर्थंकरने तो ज्ञान उद्योत स
दा सर्वदा छे वली देवरचित कनककमल उपर पगला देता चाले,
ते माटे एमनु चालवु सदा रात्रि दिवस सरखु छे पिण एनु दृष्टात
आपीने जे साधु रात्रिये विहार करे छे ते सुखशीलिया तीर्थंकरनी आ
ज्ञा बाहिर छे माटे ते चारित्रथी भ्रष्ट जाणवा ॥

हिवे भगवान मध्यमपावापुरीयें आव्या तिहा शु थयु ते कहे छे
तेवारें मध्यम पावापुरीयें वीर प्रभु पधार्या तेवारें देवोये विशेष सम
वसरणनी रचना करी तिहा भगवत पूर्वने बारणे पेसी अशोकवृक्षने त्र
ण प्रदक्षिणा देइ सिंहासने बेसी "नमोतित्थस्स" एम कही धर्मोप
देश आपे इहा मगलाचार जणाववा माटे तीर्थ एवु सूत्रनु नाम छे ते

ने नमस्कार करीने पछी धर्मोपदेश करे हिवे एहवामा तिहा एक
मिल ब्राह्मण यज्ञार्थे यज्ञ एटले होम करावे छे तिहा घणा ब्राह्म
एकठा थयेला छे वली तेना तेड्या इगीयार महा पंडित सर्वशिरोम
ब्राह्मण आव्या छे ॥ श्लोक ॥ अपापाया महापुर्यां, यज्ञार्थी सोमिलो
य ॥ तदाहूता समाजग्मु, रेकादशद्विजोत्तमा ॥ १ ॥

अर्थ —अपापा नामनी महानगरी तेने विषे रहेनारो सोमिलना
ब्राह्मण तेणे यज्ञकरवाने अर्थे इगीयार महोटा ब्राह्मण बोलाव्या,
तिहा आव्या छे " तेषा नामानि " एटले तेना नाम कहे छे १
द्रभूति, २ अग्निभूति, ३ वायुभूति, ४ व्यक्त, ५ सुधर्म, ६ मंडित, ७
र्यपुत्र, ८ अकंपित, ९ अचलभ्राता, १० मेतार्य ११ प्रभास ए
गीयारे महापंडित, चौदेविद्याना जाण, वेदपाठी, महाअभिमानी छे
एवु जाणे छे के अमारा जेवो जगतमा कोइ पंडित, नथी तेम सर्वज्ञ
लोक कहे छे ते अमेज छैये हिवे ते इगीयारे जणना मनमा जे इ
यार जुदाजुदा संदेह छे ते कहे छे ॥

पहेला इंद्रभूतिना मनमा जीव छे के नथी एवो संदेह छे बीजा
अग्निभूतिना मनमा कर्मनो संदेह छे, त्रीजा वायुभूतिना मनमा जीव
ने कर्म जूदा छे के एक छे एवो संदेह छे, ए त्रणे संदेह वाला
णे जण सहोदर एटले सगा भाइ छे एमनु गौतमगोत्र छे, चोथा व्यक्त
ना मनमा पंचभूतनो संदेह छे पाचमा सुधर्मना मनमा जे जेहवो
तेहवो एटले जे स्त्री होय ते मरीने पाछी थवे पिण स्त्रीज थाय अ
जे पुरुष होय ते मरीने पुरुषज थाय एवो संदेह छे, छठा मंडितना
नमा बंध मोक्षछे के नथी एवो संदेह छे, सातमा मौर्यपुत्रना मनमा
व छे के नथी एवो संदेह छे, आठमा अकंपितना मनमा नरक छे
नथी एवो संदेह छे, नवमा अचलभ्राताना मनमा पुण्य पाप छे के
थी एवो संदेह छे, दशमा मेतार्यना मनमा परलोक छे के नथी एवो
देह छे, इगीआरमा प्रभासना मनमा मोक्ष छे के नथी एवो सं

छे एवा इगीआरे जणने वेदना अथ विपरीत समनवाथी संदेह रही गया छ, पोतापासे पडिताइनु बऊ थणु छे माटे अभिमानथी बीजानी पास वाऊरा देता नथी हिवे ए इगीआरनी पासे जे छात्र जणे छे ते नी सख्या कहे छे ॥ गाथा ॥ पचन्ह पचसया, उठुउसयाइहुंति दुन्नि गणा ॥ दुन्न तु जुअल सयाणो, तिसओ तिसओ हवइगच्छो ॥ १ ॥

अर्थ —पहेला पाच पडितोनी पासे पाचपाचसो छात्र जणे छे ते पांचोना पचीशसो छात्र थाय तथा छठा अने सातमा पासे उठुठसया एटले साडात्रणशें साडात्रणशें छात्र जणे छे एम-बेउना मातसें थया तेवारपछी वली बे युगल एटले आठमो अने नवमो ए पहेलो युगल अने दशमो तथा इगीआरमो ए बीजो युगल मिली चारजणनी पासे त्रणसो त्रणसो छात्र जणे छे ते चारना मिली बारेसो थया एम सर्व मिली इगीआरेना चुमालीशसो छात्रोनो गच्छ एटले समुदाय थयो एटले इगीआरे पडितोने चुमालीशसो विद्यार्थिओ छे एम घणा विप्र तिहां यज्ञमा मिल्या छे ते सर्व यजन, याजन, अध्ययन, अध्या पन, दान, प्रतिग्रह ए षट्कर्म साधे छे, प्रभाते ब्रह्म गायत्री जपे छे, मध्यान्हे विष्णुगायत्री जपे छे, सध्यायें शिवसरस्वती जपे छे, हिवे ए ना प्रथम उपाध्यायना नाम कहे छे, शकर, शिवकर, इश्वर, महेश्वर धनेश्वर, सोमेश्वर, शुभकर, भभिकर, क्षेमकर, करुणाकर इत्यादि ॥

हिवे ज्ञानीना नाम कहे छे, गगाधर, गदाधर, विद्याधर, महीधर, श्रीधर, लक्ष्मीधर, धरणीधर, भूधर, दामोदर, लघोदर इत्यादि ॥

हिवे देवना नाम कहे छ महादेव, शिवदेव, रामदेव, धामदेव, क मदेव, सहदेव, हरदेव, वासुदेव, श्रीदेव, बळदेव, धनदेव, चद्रदेव,

हिवे व्यासना नाम कहे छे, श्रीव्यास, उमापति, गणपति, प्रजा पति, विद्यापति, भूपति, महिपति, लक्ष्मीपति, गगापति, पृथ्वीपति, दे वपति, दानवपति, धनपति, हिवे पंडितोना नाम कहे छे, नागार्जुन, ..., गोवर्द्धन गुणवर्द्धन, विष्णु, कृष्ण, मुकुंद, गोविंद,

मानद, श्रोद्धव, माधव, केशव, पुरुषोत्तम, नरोत्तम हिवे जोशीना नाम कहे छ, खिमाइतजोशी, जीमाइत, रामाइत, मनाइत, गुणाइत, विरुपाइत, सोमाइत, धनाइत, कर्माइत धर्माइत, देवाइत, चद्राइत, सू राइत, हिवे तिवाडीना नाम कहे छ हरिशर्म, अग्निशर्म, महाशर्म, देवशर्म, नरशर्म, मोमशर्म, सूरशर्म, राजशर्म, वासशर्म, गुणशर्म, ध र्मशर्म, कर्मशर्म, कुमारशर्म, धनशर्म, जयशर्म, नागशर्म, विष्णुशर्म, शिवशर्म, हिवे चतुर्वेदीना नाम कहे छे, हरि, हरिहर, नरहरि, ना रायण, नीलकठ, कालकठ, वैकुठ श्रीकठ, मुरारि, हरिराम, जगन्नाथ, विश्वनाथ, श्रीराम, रामकृष्ण, शुकदेव वामदेव, चद्रदेव, स्वयभू ।हिवे शुक्लना नाम कहे छे कमलाकर, दिवाकर, मजाकर, शंकर, यशस्कर, शोजाकर, गुणाकर, रत्नाकर, श्यामदास, रामदास, गोकुलदास कृष्ण दास, देवीदास, हरदास, द्वारकादास, इत्यादिक जदी जुदी शाखानां नामवाला ब्राह्मण त देवतांना सुख पामवाना अर्थी थया थका याग कर्म करी रह्या छे ॥ एवा अवसरमा श्री वीरस्वामी पूर्व सन्मुख बेठा थका मिथ्यात्वकर्दम दूर करे एवी मेघसमान गभीर ध्वनियें देशना आपे छे ते साजलवा सारु वैमानिक देवता आकाशें देवदुदुभि वजडावता थका आवे छे, ते दुदुभिनो नाद साजली सर्व ब्राह्मण हर्ष पाम्या अने कि हवा लागा के अमारा यज्ञमत्र कहेवा छे के जे जणवा थकी मत्यक्ष देवो आवी उना रहे एवा मत्र अमे हमणा जणया जेथी देवो पिण आव्या एटलामा तो जेम चाडालनो पाडो वेगलो मूकीने माणस बीजे रस्ते चाले तेम ते देवो पिण विप्रानो याग मंडप मूकीने श्रीवीरने समोसरणे जावा लागा वली ते देवो माहो माहे एवु कहेता थका चाल्या जाय छे के गउदी उतावला जइ सर्वज्ञ देवने वादीये एवो देवोना मुखनी वाणी साजलीने इद्रभूति मनमा अमर्ष लावीने बीजा ब्राह्मणोनी आगल कहेवा लागो के जूवो जाइ ए आश्चर्य जेवी वात छे के जे मनुष्य तो अजाण छे मूर्ख छे माटे जूले पिण आ देवो ज्ञानवान थइने पिण जूले छे जे माटे

ए आश्चर्य लागे छे के एवो महोटो यज्ञमंडप देखीने आगा ते वली तिहां जाय छे वली महाराथी उपरात बीजो सर्वज्ञ ते कोण छे के जेनी पासें ए जाय छे? तेवारें ते ब्राह्मणमाथी एक ब्राह्मण कहेवा लाग्यो के हे स्वामी! ए कोइक महोटो ढोंगी इद्रजालीओ आ नगरनी बाहेर आव्यो छे ते इद्रजाल काढीने पोते ज्ञानी थइ बेठो छे, बीजा लोकोने कहे छे के हु पारका मननी वात बधी जाणु छु, एम घणा लोकोने भरमाव्या छे तेथी देवता पिण तिहां जोवा जाय छे एवुं सांभली इद्रभूतिने अयत मान सहित क्रोध चढयो तेवारें कहेवा लाग्यो के एवो कोण छे जे महारा छता ज्ञानीनु अभिमान धरीने इहा आवे, ते शु मने जाणतो नथी? माटे जूओ भाइ ए देवने जूठा ते ए देव पिण एना जेवा अणसमजु हशे जेवो ए ज्ञानी तेवा ए देव पिण जाणवा ॥ यत ॥ अहोसुरा.कथभ्रात्या, तीर्थाश्रइववायसा ॥ कमलाकरवद्देका, मक्षिकाश्चदनयथा ॥ १ ॥

अर्थ —अहो कहेता आश्चर्य जे ए देव थइने भ्रांतिये करी जेम कागडा तीर्थमध्ये छोडी जाय छे तेम ए पिण यज्ञ छोडीने जाय छे माटे ए देव कागडा सरखा छे, वली जेम देडका समुद्र तजी जाय छे तेम ए पिण यज्ञ तजीने जाय छे माटे देडका जेहवा ए देव छे, वली जेम मक्षिका चदनने छाडी जाय तेम ए देव पिण यज्ञरूप चदनने छोडी जाय छे॥ श्लोक ॥ करभा इव सद्वृक्षान्, क्षीरान्न शूकरायथा ॥ अर्कस्यालोकवत् घूका, त्यक्त्वायाग प्रयातियत् ॥ १ ॥

अर्थ —वली ए देव केहेवा छे ते कहे छे जेम उट भला वृक्षोने छोडी देइने काटाना वृक्ष उपर जाय तेम ए देवो पिण यज्ञने छोडी चाल्या जाय छे, माटे उट जेवा छे, वली जेम क्षीरना भोजनने मूकीने भूंड विष्टा उपर जाय तेम ए देवो पिण यज्ञरूप क्षीर भोजन तेने मूकीने विष्टाना भोजन समान इद्रजालीया पासे जाय छे माटे भूंडा ए देव छे, वली जेम सूर्यना तेजने मूकीने घूड अंधारामा

चतरूा मूर्खने मूकीने ए देव अयाराङप इंद्रजालीयां पासे जाय छे माट मूड समान ए देवो छे ॥ १ ॥

अथवा वली एवी पिण रीतिउ के जे जूडो माणस होय ते जूडा पासे जाय जे माटे कह्यो छे के ॥ गाथा ॥ अहवा भारिसो चिय, सो नाणी तारिसा सुरावेनि ॥ अणुचरिसो मजोगो, गाम नडाण च मुक्खाण॥५॥

अर्थ —अथवा वली इंद्रजूति चिंतवे छे के जेहवो ए ज्ञानी छे ते वा ए देव छे तेथी ए बेहुनो सरखो सयोग मिल्यो छे जेम गामनट मूर्ख छे तेम गामना लोक पिण मूर्ख छे ए बेनो सरखो सयोग मिले छे तेम ए देवना जे जाय छे ते पिण मूरख छे अने जे ए ज्ञानी छे ते पिण मूरख छे तेमाटे जे पोते जेवो होय ते पोताना सरखा बीजा पासे जाय एम सरखे सरखा एक बीजानी पासे जाय आवे छे एरीत छे वली ॥

॥ गाथा ॥ रे हिछी विहिछी करेली, मम चडिस पायवे निंवे ॥ अहवा तुज न दोसो, सरिसा सरिसेण रच्चति ॥ १ ॥

अर्थ —कोइ एक माणस कारेलीनी वेलीने निंबडाना वृक्ष उपेर च ढती देखीने बोल्यो के हे भाखि ! हे कारेली ! तु ए निंबना वृक्ष उप र चढीश नही केमके तु पोते कडवी छे अने निंब वृक्ष पिण कडवो छे माटे रे जूडी ! तु वली अधिक कडवी थइश एव केण तेणे मान्यु नही अने निंबना वृक्षनी उपर चडती बंध थइ नहीं तेवारे ते माण स बोल्यो हे वेली ! ए ताहारो दोष नथी केमके जगतमा सरखे सर खा मिले तेवारे राजी थाय तेम तुमे पिण बे सरखे सरखा छो तो एमा काइ आश्चर्य नथी तेम इहा पिण ए देवता अने ए ज्ञानी बेहु सरखे स रखा मिल्या छे वली एवा इंद्रजालीयाने जइ देवो वांदे छे तो शुं ए दे वो पिण जूला पड्या न कहेवाय ? वली पिण इंद्रजूति चिंतववा ला ग्यो के महारा जेवा पंडितनी आगल ए लोकोने ठगे छे अने ज्ञानी नाम धरावे छे, ते महाराथी केम सहन करी शकाय ? महाराथी तो ए नुं मोटु अभिमान सह्यु जाय नही अने ए लोगोनो ढोंग पिण माहारा

शिवाय बीजो कोइ पाधरो करी शकशे नही माटे हु जइने एनु अभि मान उतारो नाखु जेम एक आकाशमा बे सूर्य होय नही वळी एक गुफामा बे सिंह एकठा न रहे तथा एक म्यानमा बे तरवार समाय नही तेम ए पिण सर्वज्ञ अने हु पिण सर्वज्ञ एम कोइ वारे थायज न ही ए इंद्रजालीयो तो विदेशी कला शीखी आवेलो छे ते सर्वेनु ना म धरावी लोकोने अने देवताओने छोलवे छे अने हुतो सर्व विद्याओ मा निपुण छु एवो विचार करे छे एवामा प्रभुने वांदीने समोसरणथी केटला एक लोक फिरी आव्या तेमने इंद्रभूति पूछवा लाग्यो के अहो लोको तुमे जेनी पासे गया हता ते सर्वज्ञ कहेवाय छे ? तेवारें लोक बोल्या के एनी वात कांइ कहेवामा आवती नथी परतु तुमे पोने सर्व ज्ञ नाम धरावीने अमने शुं पुछोछो, ते सर्वज्ञतो सघी मननी वातो जा णे छे पिण तुमे तो एटलुं पिण नथी जाणता अने फोकट सर्वज्ञ कहे वरावो छो ते सांभली इंद्रभूतियें जाण्यु जे ए निश्चय मायानु घर छे, जेणें सर्वलोकतो ए एने मानवा लाग्या पिण जेवारें हु जइश तेवारें ए मा हारा आगळ बोली शकशे नही, ॥ दोहरा ॥ घरशूरा मठ पडिया, गाम गमारा गोठ ॥ जरी सभामा बोलता, थरथर धुने होठ ॥ १ ॥

अर्थ —पोताना घरमा तो सघाय कहे के अमे शूरवीर छैयें अने पोताना मठ मा पिण सघाय कहेके अमे पडित छैयें वळी पोताना गाममा गमार होय ते पि ण पच थाय छे, परतु जेवारे पडितोनी जरी सभामा बोलवु पडे तेवारें तो तेना होठपिण थर थर धुजवा मंडी जाय छे तेम ए पिण सर्वज्ञ एवु नाम बीजानी आगळ कहे छे पिण माहारी आगल ते बोली शकशे न ही, वळी पिण विचारे छे के जे अग्निये पर्वतोने बाली नाख्या ते तो अ रुनी आगळ रुखनो श्यो भार ? तथा जे वायुयें हाथी जेवाने उडाडी मूक्या ते वायरानी आगल पुणीनु शु जोर चाले ? तथा जे नदीमा हाथी तणाइ गया ते नदीमां कीडी बापडी शा हिसाबमा गिणाय, एम इंद्र भूति चिंतवे छे एवामा अग्निभूति बोल्यो के हे भाइ ! तुमे ए इंद्रजाली

याने जीतवा माटे एटलो विचार शुं करो छो, ए कीडी उपर क
श्यो करवो ? अलसीयानी उपर गरुडनें तेडवो ते शु ? तृणनी छ
कुहाडो उपाडवो ते शा कामनो, कमलनी नालने कापवा सारु फर
उपाडवो ते शा कामनो, वेलडी उखेडवा माटे हस्तिनु शु काम पडे
तेम ते बिचारा गरीबडा सर्वज्ञ पासे तुमे वाद करवा शुं जाशो, मने
आज्ञा आपो तो हुंज एने जीती आवु, एवा जाइना वचन सांभली इद्र
ति बोल्यो के हे जाइ ! एने शु जीतवो छे एने तो महारा पाचसें
य महिलो कोइ एक शिष्य जाय ते पिण जीती आवे तथापि म
राथी रह्यो जातु नथी केमके थोडु पिण शल्य कामनु नही माटे हु
तेम जाइश जे कारण माटे बीजा तो सर्व वादी मात्रने में जीत्या छे
ण एक ए किहाएक रही गयेलो देखाय छे जेम हाथीना मुखमाथी को
क कण पडी जाय, जेम मुग राधता कोइक कड्डु रही जाय, जेम घाए
पीळता कोइक तिलनो दाणो रही जाय, जेम अगस्ति ऋषिने समुद्रन
पण मलु करतां कोइक जलबिंदु रही जाय, जेम चणा जुनता कोइ
चणो बाहेर पडी जाय, ते मए विण रही गयेलो जाणवो माटे हे जाइ
ए एकने अणजीते सर्वने न जीत्या एम लोकोमा कहेवाय जेम एकवार
जे स्त्रीनु शील खडन थयो ते स्त्री असती कहेवाय तेम एने जीत्या विना
लोकमा महारो यश रहे नही माटे एनाथी माहारे पोतानेज वाद कर
जवु पडशे अने एने हु हरावु तोज महारो यश जगतमां रहे, वली पि
ण अभिमानथी इद्रभूति कहे छे ॥ यत. ॥ हहो वादिगणा जोटा , क
टादि समुद्भवा ॥ कस्मादद्दश्यता प्राप्ता, यूय ममपुर सदा ॥ १ ॥

अर्थ —अरे कर्णाटकादिक देशोमा उत्पन्न थयेला वादिओ ! तुमे महार
आगल केम नथी देखता ? शा माटे अद्दश्य थइ रह्या छो ? भावार्थ
छे जे तुमे बधाय वादीयो महारा आगल हारेला छो तेथी छुपी रह्या छो
ते शा माटे के में एटला देशोना पडितोने हराव्या छे ते कहे छे
॥ काव्य ॥ लाटा दूरगता भवादिनिवहा मौन श्रिता मालवा , मूकह

मगधागता गतमदा गरकति नो गुर्जरा ॥ काश्मीरा प्रणता पलायनकरा
आनातैलगौद्भवः, विश्वे चापि सनास्ति योऽहि कुरुते वाद मया सामत ॥१॥

अर्थ —चोट कर्णाटक देशना वादी माहारी आगल अदृश्य थया तो
बीना देशोना वादिओनो माहारे आगल रयो च्यार तेज कहे छे, लाट
देशना वादिओना समूह ते तो महारु नाम साम्भलीने दूर जइ रह्या
परतु कोइ ढूकडो नाव्या, एटले तेणे एवु विचार्यु जे जइशु तो हारीने
पछु आवतु पडशे एम जाणी दूर जइ रह्या तथा एक लाखने ठ्याण ह
जार मालव देशना वादी हता ते हारीजवाना भयने लीधे माहारी आ
गल मौनपणु धारण करी रह्या वली मगध देशना दश लाख वादी ते तो
महारा आगल मुगा थया एटले एक मोल पिण बोली शक्या नही त
था सत्तर हजार गुजरात देशना वादि ते महारी आगले मद रहित थइ
गया परतु हाथीनी परे गाजीने एक शब्द पिण कही शक्या नही एटले
दीन थइ रह्या हता वली जिहा सरस्वतीनो वास छे एवो श्रीकाश्मीर
देश तिहाना वसनारा वादी ते आवीने महारे पगे लागा तथा जे तैलग
देशमा उत्पन्न थयेला नवलाख वादी ते तो मात्र महारु नाम साम्भली
ने नाशी गया बीजी काइ पिण बुद्धि तेमने उपनीज नही वधारे शु कहु
जगतमा एवो कोइ पिण पडित नथी जे महारी साथे आवीने हमणा
वाद करे एटले में सर्व कोइने जीत्या पिण मने जीतनारो जगतमा कोइ
पिण नथी तो ए इद्रजालीयानो श्यो भार छे हु ज्या सुधी प्रमादमा छु
त्या सुधी ए सर्वज्ञ कहेवाय छे पिण जेवारे हु वाद करवाने साहामो
थयो तेवारें ए तेज वखत नाशी जाशे जेमाटे कह्यो छे के ॥ श्लोक ॥
तावद्गर्जति खद्योता, स्तावद्गर्जति चद्रमा ॥ उदिते तु सहस्रांशौ, न
खद्योतो न चद्रमा ॥ १ ॥

अर्थ —खजुआनो उद्योत क्या सुधी रहे के जिहा सुधी चद्रमानो उ
दय न थयो त्या सुधी खजुओ जलहल करी गाजतो चलके परतु चद्रमानो
उदय थाय तेवारें खजुआनो उद्योत काइ पिण चाले नही अने चद्रमानो

उद्योत पिण तया सुधी रहे के ज्या सुधी सूर्यनो उदय न थाय त्या
धी रहे, पिण जेवारे हजार किरणोनो धरनार एवो जे सूर्य तेनो उ
थाय तेवारे खजुआनो अने चद्रमानो ए बेहुनो उद्योत रहे नही तेम
जा वादीयोने हरावयाने तो ए इद्रजालीयो समर्थ छे पिण महारी
गल एनो प्रभाव चाले नही एणे ज्यासुधी मुजने दीठो नथी त्या
धी बीजा लोकोने जरमावे छे तो हिवे महारे फोकट घरमां बेशी मा
करवु ते शा कामनु ! हुं पोते तिहा जइने तेनु बल पराक्रम जोउ
ए शु जाएयो छे मुजने एटला शास्त्रतो जलेना पाठनी परे आवडे छे।
॥ श्लोक ॥ लक्षणे मम दक्षत्व, साहित्ये साहिता मतिः ॥ तर्के कर्कशता
स्य, क शास्त्रे नास्ति मे श्रमः ॥ १ ॥

अर्थ —लक्षण शास्त्रमा महारु दक्षपणु छे एटले लक्षण शास्त्रतो हु
सारी पेठे जाणु छु स्त्री पुरुषादिकोना बत्रीश लक्षण रुडी रीते कही
देखाडु तथा पदार्थना लक्षण तो एवा प्रतिपादन करु के जेमा अन्या
प्ति प्रमुख दोष रहे नही ॥ १ ॥ तथा साहित्य शास्त्र जे काव्यादिक ते
तो सर्व महारे अस्खलित छे ॥ २ ॥ तथा तर्कशास्त्रमा तो हु एवो नि
पुण छु के महारा साहामो कोइने जवाब देता आवेज नही एवा कठण
तर्कने जाणु छु माटे तर्कशास्त्र महारे कठण नथी एतो सदा अकर्कश छे॥३॥

घणु शु कहियें एवु कयु शास्त्र छे के जेमा महारो श्रम न थयो हो
य? अर्थात् अष्टार व्याकरण, कोशनीतो गणतीज नथी, छद रत्नाक
रादिक, अलकार ते काव्यनी शोभा अतिशयालकारादिक, नवरसादिक
ते वात्स्यायनादिक, धर्मशास्त्र ते सर्व पुराण मीमासादिक, ज्योतिष शा
स्त्र ते चूडामणी प्रमुख, वैद्यकशास्त्र कालज्ञानादिक, ए बधा शास्त्र म
हाराथी अजाएया नथी तो ए इद्रजालीयो ते शु महाराथी जीते एवो
छे माटे हिवे हु त्या जइ देव, दानव, मानव सर्वने देखता एने हरावीने ए
नु सर्वज्ञपणनु बिरुद टाली नाखु एवो मनमा गर्व आणी पाचशें छात्रो
लेइ जेम जाणे इद्र खेंची लेइ जतो होयनी ? ते दयामाटें के

नाननी देशना प्रथम खाली गइ छे ते माटे भगवान बार योजन चा
ने एक रात्रीयें आव्या तेथी इंद्रमहाराजे जाण्यु के एमने शिष्यनी
प्ति थाय तो रुडु थाय ते माटे इंद्रनो प्रेरयोज जाणे इंद्रभूति समो
रण तरफ जतो होयनी ? एवी कवीश्वर घटना करे छे अन्यथातो
प्रन घनारु छे, हिवे इंद्रभूति पाचशे छात्रसहित परवरचो थ
को वाद करवानी इच्छाथी श्रीवीर भगवानना समोसरण तरफ चा
ल्यो ते वखते पाचशे छात्रो इंद्रभूतिनी बिरुदावली बोले छे ते
कहीयें छैयें, सरस्वती कठाभरण एटले सरस्वतीतो अमारा उपाध्या
यने गळानु आभूषण छे अर्थात् सरस्वतीतो सदा एमना कंठमाज व
सछे, वादिविजय लक्ष्मी शरण, ज्ञात सर्वपुराण, वादिकदली कृपाण,
पंडितश्रेणी शिरोमणि, कुमताधकार नभोमणि, जितवादिवृंद, वादिग
रुड गोविंद, वादिघटमुद्गर, वादिघूकभास्कर, वादिसमुद्र अगस्ति, वा
दिवृक्षहस्ति, वादिमुखभजन, सकलभूपालरंजन, षड्भाषावल्लीमूल, पर
वादिमस्तकशूल वादिगोधूमघरट्ट, मर्दितवादि मरट्ट, वादिकदकुद्दाल,, वा
दिवृदभूपाल, वादिगजसिंह, वादिशिरलीह, वादिवेश्याभुजंग, शद्रुन्हरी
मैमानंग, सरस्वतीभडार, चौदविद्या अलकार, वादिहृदयशाल, वादि
मुद्गमाल, बहुराजसमाजमुकट, बहुबुद्धिविकट, ज्ञानरत्नाकर, शब्ददिवा
कर, महाकवीश्वर, कृतशिष्यबृहस्पति, निर्जितभार्गवमति, कीजगम स
रस्वती, प्रत्यक्षभारती, जितानेकवाद, सरस्वतीलब्धप्रसाद, इत्यादि अ
नेक प्रकारनी बिरुदावली छात्रो बोली रह्या छे अने इंद्रभूति चाल्यो
जाय छे वली रस्तामा विचार करवा लाग्यो के अरे जुओतो खरा के
आ मूर्खे शु करयो एणे सर्वज्ञपणाना आटोपथी मने नाहक क्रोध च
ढायो तो हिवे एथी ए शु सुखी थवानो छे जेम कोइ अग्निमा पडे
तो बळी भस्म थया विना रहे नही तेम एणे पिण कर्यु छे एम चित
वतो चालतो चालतो जेवारें समवसरणनी पहेली पावडी छे तिहा चढी
ने जोवा लाग्यो ने जोयु तो त्रण गढ दीठा ते गढ कहेवा छे ते क

हे छे त्या प्रथम रूपानो गढ छे तेना सुवर्णमय कोशीशा छे, चारे दिशायें चार पोहोळ छे, बीजो सुवर्ण गढ छे तेना रत्नना कोशीशा छे त्रीजो रत्ननो गढ छे तेना मणिकातना कोशीशा छे एक योजनने विस्तार छे तेनी विचमां अशोकवृक्ष छे उपर त्रण छत्र तिहां सुवर्णनु सिंहासन छे तेनी उपर स्वामी बेठा छे ते इंद्रभूतियें पोतानी नजरे दीठा तेवारें मनमा विचारयु जे में धणाय वादी दीठा छे परतु, आवो प्रकार किहा पिण दीठो नथी तो ए शु ब्रह्मा छे, ना ए ब्रह्मा पिण देखातो नथी केमके ब्रह्माने तो सावित्री नामे स्त्री छे, हाथमां पवित्री छे, करे कमडलु छे, हंसवाहन छे, चारमु गर्दभनु मुख छे एटला ए चाणा मिलता नथी तेमाटे जाणीयें छैयें जे ए ब्रह्मा तो नथी, तो शु ए विष्णु छे, ना ते पिण नथी केमके विष्णुनेतो लक्ष्मी नामे स्त्री छे, चार हाथ छे, शख चक्र, गदा अने धनुष्य ए आयुध छे, गरुड वाहन छे, वर्ण श्याम छे, ते एवाण एने नथी माटे ए विष्णुपिण नथी तो ए शु ब्रह्मज्ञानी छे, ना ते पिण नथी केमके ते तो अरुपी छे, वली चद्रमा सोले कलायें संपूर्ण छे परतु कलंकसहित छे माटे चद्रमा पिण ए नथी तथा वली जो एने सूर्य कहु तो सूर्यथी पिण एनु तेज तो घणु अधिक छे परतु तेना किरण उष्ण छे ते उष्ण किरण एने नथी माटे सूर्य पिण केम सजवे! वली इंद्र छे एम जो कहु तो ते पिण नथी कारण के तेने सहस्रनेत्र छे ते एने नथी वली जो ए मेरु हशे एम कहु तो मेरु कठण छे ते एमा कठणपणु देखातु नथी माटे ए मेरुपिण नथी तो ए सर्वगुणसपूर्ण सर्वथी अधिक जे तीर्थंकर कहेवाय छे ते ए तीर्थंकर छे केम के एवा गुण तो तीर्थंकर विना बीजा कोइमा होय नही माटे समस्त पापहर, सर्वलोकना शिवकर, षट्कायना रक्षक, अनाथना नाथ, अशरण शरण, तिरण तारण, एवा श्रीवर्द्धमान सर्वज्ञ तीर्थंकर जे कहेवाय छे ते ए सजवे छे सूर्यनी परे तेजवत, चद्रमानी परे सौम्य, समुद्रनी परे दुस्तर, एवा ए छे ते श्रीमहावीर तीर्थंकर विना बीजो केम स

नवी। वली पिए इंद्रजाति श्रीवीर प्रभुने देखीने चिंतवे छे ॥ काव्य ॥ किंनदी किंमुरारि किंमुरतिरमण किंनलः किंकुबेर किंवा विद्याधरोऽसौ किमिह सुरपति किंविधु किंविधाता ॥ नायनाय नचाय न खलु न हि न वा नापि नासौ न चैव, तीर्थ कर्तुं प्रवृत्तो जिनगुणविजयैर्वीरदेवाधिदेव ॥

अर्थ — शु ए महादेव छे' अथवा शु ए कृष्ण छे' अथवा शु ए बहु रूपवन्त छे माटे कामदेव छे' अथवा शु ए नलराजा छे' अथवा शु ए इंद्रनो भंडारी कुबेर छे' अथवा शु ए विद्याधर छे' अथवा शु इहा ए इंद्र आव्यो छे, अथवा शु ए चंद्र छे' अथवा शु ए विधाता छे' एवीरीते कल्पनाओ करीने पछी विचारपूर्वक निर्णय करवा लाग्यो के ए महादेव तो नथी केमके ते तो लगोव्यो छे माटे ए कामदेव पिण नथी वली राजचिन्हे करी वर्जित होवाथी निश्चयथी ए नलराजा पिण नथी वली त्यागी छे माटे कुबेर भंडारी पिण नथी, तथा पादचारी छे माटे विद्याधर पिण नथी, भगरहित छे माटे ईंद्र पिण नथी, कलंक रहित छे माटे चंद्र पिण नथी, घटना विवर्जित छे माटे विधाता पिण नथी, एतो ए पूर्वे जे कह्या ते सर्वथी अधिक उक्षण धारी छे तो ए कोण छे एम विचार करता आणवामा आव्यु जे अरे एतो तीर्थंकरवाने अर्थे पोताना अतिशयादि गुण रूप धनवडे करीने प्रवर्त्यो छे एवो देवाधिदेव श्रीवीर जिनेंद्र जे लोक कहे छे ते एज छे बीजो कोइ नथी एम जणाय छे तो हा इतिखेदे ए में शु कर्यु आ हु कहेवा सकटमा आवी पड्यो, हिवे हु शु करु एनी आगल माहरु मान केम रहेशे। ॥ श्लोक ॥ कथ मया महत्त्वं मे, रक्षणीय पुराऽर्जित॥प्रासादं कीलिकाहेतो,र्भंक्तु कोनाम वाञ्छति॥१॥

अर्थ — तो हिवेजे महारु पूर्वे महोटापणु थयु छे तेने हु केम करीने राखीश' एटले में पूर्वे घणा वादियोने जीत्या छे तेथी हु लोकमा प्रसिद्ध थयो छु, पंडित थयो छु, तो हिवे मुजने महारा पंडितपणाने राखवानो उपाय शो करवो के जे थकी ए महारी पंडिताइ लोकोमा कायम रहे अने जो एनाथी वाद न करु तो लोको कहेशे के ए वाद करवा' बीयो

हतो ते पाछो केम फिरी आयो, माटे में ए मूरखाई करी तो पिण हिवे वाद करचा विना महारे पाछु जाबुं नही केमके मोरे तो हिवे ए एकज जीतवो रह्यो छे तो हिवे अल्पने माटे महारो सघो यश न गमाववो जे म कोइने एक खीलो जोइतो होय तो ते एक खीलाने माटे आखो प्रास द आगी खीलाने काढवा वाछे नही एवो मूर्ख कोइ होय नही वली कहे छे ॥ श्लोक ॥ सूत्रार्थी पुरुषोहार, कस्त्रोटयितुमीहते ॥ क. कामकलश स्याश, स्फोटयेत् ठिक्करीकृते ॥ १ ॥

अर्थ — एवो कोण पुरुष होय जे सूत एटले तांतणाने अर्थे हारने तोडवानी वाछना करे एटले सूतनो तागो जोइतो होय तेटला माटे हार तोडवो एम कोइ वाछे नही तेम महारे पिण ए एकने हारव्या विना महारो यश रूपी हार तोडी नाखवो नही ए तात्पर्य जाणवु तथा वली कोण पुरुष ठीकरी जोइती होय तेने अर्थे मनोवाछितने पूरनार एवो जे कामकुंभ तेना गला प्रमुखने फोडी नाखे अर्थात् ठी करीने अर्थे कामकुंभने कोइ फोडी नाखे नही तेम हुं पिण एनी साथे वाद करचा विना जो एमज पाछो फिरी जाउ तो कामकुंभ जेवो माहारो यश रूप घट ते फोडी नाख्या जेवु थइ पडे, तेथी हु मूर्खोनी गणतीमां थाउ माटे महारे एम न करवु वली पिण कहेछे ॥ श्लोक ॥ जरमने चदनकोवा, दहेटुद्र माप्यमप्यथ ॥ लोहार्थी कोमहाजोधौ, नौजगं कर्तुमिच्छति ॥१॥

अर्थ — वली कोण डाह्यो पुरुष जरम एटले राखने अर्थे टु से मा स थाय एवा चंदनने बाले एटले जरमने अर्थे मलयागिरि चदनने को इ बाले नही तथा एवो कोण मूर्ख होय जे लोखंडना कटकाने अर्थे म हासमुद्रनी मध्ये नाव एटले वाहण तेने भागी नाखवानी वाछा करे अर्थात् कोइ पिण भागे नही परंतु जो मूर्ख होय तो भागी नाखे तेम जो हु एनी साथे वाद न करु तो महारु यशरूप मलयागिरि, चंदन ते बलीने जरम थाय तथा महारी यश रूपी नौका महासमुद्रमां भागी ना

ष्पा जेवु मने थाय माटे एवो मूर्ख हु न थाउ इति ॥ अथवा ए पूर्वोक्त श्लोकानो अर्थ आवी रीते मेळववो. जे इन्द्रभूतिये भगवानना अतिशय जोइ तेथी विचारवा लाग्यो जे ए कोइ महापुरुष छे माटे एनी साथे हु वाद करीने अवश्य हारी जइश तेथी में पिण एनी पासे आवीने एक बीजाने माटे महारो यशरूपी प्रासाद भागी नाखवा जेवी मूर्खाइ करी तथा एक तातणाने माटे हार तोडी नाखवानी इच्छा करी वळी एक ठीकरीने माटे वासकुंभने फोडी नाखवा जेवु कर्यु तथा रासने अर्थे चंदन बाळवा जेवु कर्यु तथा लोखंडना कटकाने अर्थे महासमुद्रमा महारा सत्पादन करेला यशरूपी जहाजने भागी नाखवा जेवु कर्यु एम चिंतवी प्रभुना वचननो अतिशय जोता माडयो तो आ प्रमाणे छे ते कहे छे ॥

॥ श्लोक ॥ सारंगी सिंहशावं स्पृशति सुतधिया नंदिनी व्याघ्रपोत, मार्जारी हंसबाल प्रणयपरवशात्केकिकांता भुजंगं ॥ वैराण्याजन्मजातान्यपि गलितमदाजंतवोन्येत्यजंती, श्रुत्वासाम्यैकरूढं प्रशमितकलुषं योगिनं क्षीणमोहं ॥ १ ॥

अर्थ.— समपरिणामे करी एकांते रहेवाथी प्रकर्षे करीने उपशम्या छे कलुष एटले पाप जेमना एवा वळी क्षीण थयो छे मोह जेमनो एवा योगीओने मुणीने एटले उपशमसहित, पापरहित, मोहरहित एवा जे योगी मुनिराज तेमने सुणीने अर्थात एवा मुनिना वचन सांभळीने घोना जीव पिण जे जन्म थकीज परस्पर एक बीजानी साथे वैर रहे छे एवा तिर्यंच जीव पिण समोसरणमा मद रहित थया थका पोतपोताना वैरने छाडे छे एटले जेना एवा वचन छे के जे सांभळवा थकी जीवो जन्मना वैरने पिण भूली जाय छे ते वैर कोने कोने छे ते कही देखाडे छे —प्रभुना समोसरणमा आवेली (सारंगी के०) मृगली ते सिंहना बाळकने स्पर्शे छे एटले मिंहने अने हरणने जन्मनु वैर छे पिण इहा समोसरणमा तेने वैर मिटी जाय छे तेथी ते पोतपोताना मिळीने रमे बेठा छे तथा (नंदिनी के०) गाय ने (सुतधिया के०)

ऋनी वुद्धियें करीने (व्याघ्रपोत के०) वाघना बा ८ , चाटी रह्या
एटले वाघने अने गायने वैर छे तो पिण इ्ना ते वैर ट ी गया ऊ
माटे वाघना बालकनी पासें बेठी थकी लाड करे ऊ व ी नि ारी छे ते
(प्रणयपरिवशात के०) स्नेहना वश थकी हसना बा कने स्पर्श करा
बेठी छे एम्ले बिलाडी पिण हमना बाळकने मारती नथी वली मोर अ
ने सर्प्पने पोतमोतामा वैर छे तो पिण ते इहा मञ्जुना समोसरणमा की
हेवा थइ बेठा छे तो के० (केकिकाता के) केल ऊ ते (जुजग के०)
सर्पनी साथे बेठी छे ए रीते इहा एवा भकाग्ना वैर ते सर्व जीवोना
मिटी गया छे एवो जगवानना वचननो अतिशय देखो इद्रजूति विस्मय
थइ रह्यो छे एटलामा जगवान बोल्या के हे इद्रजूति ! गौतम गोत्रि
या ! तु जले आव्यो तु सुख समाधिमा वर्ते छे एवु स्वामिनु वचन
सा नली इद्रजूति मनमा चिंतववा लाग्यो जे ए महारु नाम गोत्र कि
हाथी जाणे छे केमके हु एनी साथे क्यारे पिण मिल्यो नथी, तथापि
वली एम विचारयु जे महारु नाम तो जगतमा प्रसिद्ध छे माटे कोण नथी
जाणतो सर्व कोइ जाणे न छे जे हु काइ अछतो माणस नथी मूर्य किहा
पिण छानो रहे नही पिण एणे मने महारु नाम कहीने जे बोलाव्यो
तेनु तत्त्व महारा जाणवामा आवी गयु के एणे मात्र मने ठगवा सारुन
बोलाव्या जणाय छे परतु हु काइ एवो अणसमजु नथी जे एना मीठा
वचनथी रीझ पामु पिण हु तो जेवारे ए महारा मनमा जीव छे के जीव
नथी एवो सदेह रहेलो छ ते कही आपे अथवा ते सदेह भाजी आपे
तेवारे रीझ पामीने जाणु जे ए खरोखर सर्वज्ञ छे नही का तो ; मात्र म
हारी साथे एने वाद करवो पडे तेथी बीहितो थको मने राजी राखवा
माटे मीठे वचने करी बोलावे छे तेणे करी ए पोताना मनमा एवु सम
जतो हशे जे ए महारी साथे वाद करशे नही, पिण तो हु मानु नही
एवु विचारे छे एटलामा फिरी जगवान बोल्या हे इद्रजूति ! जीव छे के
नथी एवो ताहारा मनमा सदेह छे ते हे इद्रजूति ! ते वेदना पद जीवने

उच्चारता बोलो अने जीवने थापवावाळा जाणीने संदेहमा पड्यो छो तेहनो अर्थ तु विपरीत करे छे तेथी तने संदेह रह्यो गयो छे माटे ते वेदना पदोनो अर्थ पूर्वापार विरोध रहित हु तुमोने कहु छु ते साजल एम कही भगवान पोते स्वमुखे वेदना पदोनु उच्चारण करे छे ते केहेवा ध्वनियी करे छे ते कहे छे ॥ श्लोक ॥ समुद्रोमथ्यमान किं, गंगापुरोथवा किंमु ॥ आदिब्रह्मध्वनिर्किंवा वीरवेद ध्वनिर्बभौ ॥ १ ॥

अर्थ —जेम समुद्र मथन करवा माड्यु होय ते वखते जे ध्वनि थाय तेहवोज ध्वनि थाय छे के शु ? अथवा गंगा नदीनु पूर आवे ते वखते जे ध्वनि थाय तेम ध्वनि थाय छे के शु ? अथवा आदिब्रह्म ध्वनि थाय छे के शु एवो वीर भगवानना मुखथी ध्वनि थयो तेमा वेदना अनुक्रमथी निषेधपद एवा छे ते कहे छे ॥ अथ वेदपदानि यथा केहता ॥

, वेदना पद एम छे " विज्ञानघन एवैतेभ्योभूतेभ्य समुत्थाय तान्येवानुविनश्यति, नप्रेत्यसज्ञास्तीति इति जीवाभावश्रुति ॥

अर्थ —हे गौतम! ए वेदना पदोनो अर्थ तें आ प्रकारे जाण्यो छे के विज्ञानघन एटले विज्ञान समूह जे चेतननो पिंड (स एव के०) ते एज चेतन पिंड ते(एतेभ्योभूतेभ्य के०) भूतने पृथ्वी, अप, तेज वायु अने आकाश ए पाच भूतो थकी (समुत्थाय के० उत्पन्न थईने (तान्येवानुविनश्यति के०) ते भूतोनो नाश थया पछी ते विज्ञानघन चेतननो पिंड नाश थाय छे तेमाटे (नप्रेत्यसज्ञास्ति के०) परलोक न थी एटले ए पृथिव्यादिक पाच भूतोथी जीव उत्पन्न थाय छे अने ए पृथिव्यादिक पाच भूत ज्यारे नाश पामे त्यारे जीवनो पिंड नाश थई जाय ने माटे जीव मरण पामीने परलोके जाय छे एम कहेवु एवा छे केमके परलोके जाय एवो जीव नथी तो शु छे तोके ज्ञान छे तेहज ए भूतोथी उत्पन्न थाय छे जेम दीपक उत्पन्न थईने ज्यारे विनाशने पामे छे त्यारे तेनो प्रकाश पिंड जतो रहे छे तेम भूतोनो नाश थये ए

।पण नाश थाय छे वर्ग प्रयोग पिण इहां छे ॥ ज्ञाननान्यत्रवगजोति
त्त्वात् दीपवत ॥

अर्थ —ज्ञान छे ते भूत थकी उत्पन्न थाय छे माटे वाजे भवे न आर नथी एटले बीजा भवमा जवावालुं नथी जेम दीपक छे तेम ए पिण छे माटे परभवे जनारो जीव नथी वत्री प्रत्यक्ष देखीये छैयें जे पांच भूत तो देखवामां आवे छे पिण जीव देखवामा आवतो नथी जेवारें माणस मरण पामे छे तेवारें तेने बाळीने राख करीये छैये निश हाड प्रमुख तो नजरें दीठामा आवे छे पिण जीवनुं चिन्ह तो काइ देखातु नथी एवो विचार वेदना पदना अर्थथी तने जाते उ के जीव नथी बीजु वळी ताहारा मनमा एम पिण थाय छे के वेदमा एवु पिण पद छे ॥ सवैत्र यमात्माज्ञानमयो मनोमयो वाङ्मयश्चक्षुर्मय आकाशमयो वायुमय स्तेजोमय आपोमय पृथिवीमय क्रोधमय अक्रोधमय हर्षमय शोकमय धर्ममय अधर्ममय इत्यादि ॥

अर्थ —(स के०) ते (वै के०) पादपूरणे अथवा संबोधने (अयं के०) ए (आत्मा के०) जीव ते ज्ञानमय एटले ज्ञानवंत, मनवाळो, वचनवाळो, नेत्रवाळो एमज आकाशमय, वायुमय, तेजमय जळमय, पृथ्वीमय तथा क्रोधमय, अक्रोधमय हर्षमय, शोकमय, धर्मभय, अधर्मभय इत्यादि वेदना पद देखवाथी तने शंका उत्पन्न थयेली छे के जीव छे के नथी एवो तने संदेह छे पिण हे इंद्रभूति! योगीश्वरें प्रत्यक्ष जाणेलो एवो ए आत्मा छे एटले ज्ञानीने ए आत्मा प्रत्यक्ष छे जेम परमाणु बीजा सामान्य जीवोने दीठामा आवता नथी पिण ज्ञानवंत जाणे छे (अनुमानादपि के०) अनुमानथी पिण ए जीवसत्ता सिद्ध थाय छे ते अनुमान आ प्रमाणे छे—अस्त्यात्माशुद्धपदवाच्यत्वाद्घटवत् ॥

अर्थ —छे आत्मा शुद्धपद कहेवा पणु छे माटे, जेम घट पद छे ते असंयोगी पद छे तो ए घट नथी एम न कहेवाय तेम आत्मा पद पण छे तेपिण संयोग रहित पद छे तेथी एनी पिण नास्ति कहेवाय

ही मगनमा जे जे पदार्थ शुद्धपद वाच्य छे ते ते पदार्थ जमन् न
। अर्थात सन् छे वळी शास्त्रमा विण आत्मा क े छ तो हिवे शु
रीर्य जीव छ के नथी केमके एक सूत्र जीव कहे अने एक सूत्र
ास्ति कहे एवु जाणी हे इद्रभूति । तने सदेह पड्यो छ पिण ते म
ह खोटो छे, व्यर्थ छे, केमके जीवने नास्ति कहेनारूं जे " विज्ञानघन "
द तेनो अर्थ तु विपरीत करे छे तेथी ए पूर्वापार विरोधने लीये तने
का रही छे माटे एनो अर्थ एम करवो योग्य छे जे विज्ञान एटले ज्ञा
अन दर्शन ते अभिन्नपणा थकी विज्ञानघन एवु जीवनु नाम छे ने
म " एतेभ्योभूतेभ्य " एटले भूत ते घटादिक छे तेने देखी उत्पन्न
ाय छे एटले ज्ञाता जे विज्ञानघन तेने घटादिक जे ज्ञेय ते देखी ज्ञान
पने छे तेवारें जाणे जे घट ते एहज छे ए ज्ञान ते (समुत्थाय के०)
पर्नीने (तान्येव के०) तेहज ज्ञान ते जेहना उपयोग जावाथी तेमा
नाश थाय (अनुविनश्यति के०) पछी ते घटना बीजनो पर्या
प करीने विनाश पामे छ (नप्रेत्यसज्ञास्ति क०) जे पूर्वनी ज्ञानसज्ञा
हनी ते रहे नही एटले जे घट दीठो ते घटनु ज्ञान तेहज घटमा रह्यो
ण घटनो उपयोग पटमा न थाय परमार्थ ए छे जे इद्रभूतिने विज्ञान
घननी श्रुतिना अर्थथी सदेह हतो के जीव भूतमा उत्पन्न थाय अने भू
तमान नाश थाय परतु परलोक नथी ए सदेह हतो ते भगुरें अर्थ क
ह्यो के जे उपयोग घटनो हतो ते उपयोग घटमाज रह्यो " पनु पटमा नथी
ना एम न मानीयें तो (यथाकारी तथा भवति के०) जेहवु करे तेहवु थाय
(सा धुकारी साधुर्भवति के०) भलु करनारो भलो थाय अने (पापकारी
पापी भवति के०) पाप करनारो पापी थाय (पुण्यपुण्येन कर्मणाभवति
के०) पुण्य कर्म करीने पुण्य थाय (पाप पापेन भवति क०) पापें
करीने पापी थाय तथा " ददद " ए त्रण दकारनो अर्थ दया दान अ
ने दम छे (इति दकार त्रययोवेत्ति के०) ए त्रण दकारने जाणे (स,
जीव के० (ते जीव छे ए यजुर्वेदादिकना पद छे ते केम मिळे माटे

नुमान करीयें ॥ विद्यमान भोक्तृकमिदं शरीरं, भोग्यत्वादोदनादिवत् ॥

अर्थ --विद्यमान छे भोक्ता जेहनो एवु ए शरीर एटले विद्यमान छे भोगवनार जेहना एवु शरीर छे तो ए सूत्रथी एनो भोगवनार जीव छे ते विद्यमान छे एम सिद्ध थयो तेथी ए शरीर भोगववा योग्य छे माटे एनो भोगवनार जिव छ जेम आहार भोग्य छे तो तेनो भोक्ता पि ए छे तेम ए शरीरने भोगववावाळो भोगवनारो जीव छे ए अनुमानथी जीव छे ते माटे हे इंद्रभूति ! जेम (क्षीरेघृतं के०) दधमा घृत तथा [तिलेतैलं के०] तिलमा तेल अने [काष्ठेऽग्नि के०] काष्टमा अग्नि तथा (सौरभ्यं कुसुमे के०) फूलमा सुगंध वली (चंद्रकांतौ सुधा के०) चंद्रनी कांतिमा अमृत [यद्वत्तथा के०] जेम ए छे तेम (आत्मागगत मतिक्षेत्र भिन्न के०) आत्मा शरीरमा छे सर्व शरीर शरीरमा जुदे जुदा छ ते (अतींद्रियक के०) पुद्गल रहित (पारिणामिक के० पारिणामिक छ, कर्ता छे, भोक्ता छ, (सजीव के०) ते जीव छे (अन्यथा जीव विना दयादि विषया स्यात् के०) एम जो जीव न मानियें तो जीवदया ते शाने विषे होय (तस्मादस्तिजीव के०) ते माटे हे इंद्रभूति ! जीव छे ॥

इत्यादि वेदपदना अर्थ सांभळी, संशय टाळी, मद छांडी, वैराग्य पामी, पांच सहस्रमी पासडीयें चर्या, श्रीवीरप्रभुने त्रण प्रदक्षिणा देइ, इंद्रभूति पगे लाग्यो अने शुद्ध भावथी पांचसो छात्रसहित दीक्षा लीधी एवु गौतमगोत्र हतु माटे गौतम एहवे नामे प्रसिद्ध थयो भगवानना मुखथी उत्पन्नेवा, विगमेइवा, धुवेवा ए त्रिपदी पामीने द्वादशांगीनी रचना करी ज माटे कहे छे ॥श्लोक॥ श्रीवीरमुखतोवेद, पदर्थं सवगत्यच ॥ प्रव्रज्य त्रिपदीं लब्ध्वा, द्वादशांगीं स निर्ममे ॥ १ ॥

अर्थ --श्रीवीरना मुखथी वेदपदनो अर्थ जाणी दिक्षा लेइने त्रिपदी पामी बार अंगने रचतो हुवो ।. इति प्रथम गणधर ॥ १ ॥

हिवे इंद्रभूतियें दिक्षा लीधी ए वात एनो बीजो भाइ अग्निभूति

ठतो साजली तेवारें विचारवा लाग्यो के कदाचित अग्नि जे छे ते पाणी थइ जाय, पाषाण नरम थइ जाय, पर्वत वायुथी डगी जाय सूर्य पश्चिम दिशायें उदय थाय, चद्रमाथी अगारा वर्षे, पाणा छे ते अग्निज्वाला थइ जाय, अमृत खावाथी मरण नीपजे, विष खावाथी जीवतो थाय, पातालमा पृथ्वी पेसी जाय, मेरु पर्वत चलायमान थाय, समुद्र मर्यादा मूकी आपे, एटला थाना बनी जाय तेनी ना नथी परतु महारो भाइ ए इन्द्रजालीयाथी हारी जाय ए वात केवारे बने नही एम चिंतवना करे छे एवामा समोवसरणथी केटलाक बीजा लोको गाममा आव्या तेमने अग्निभूतियें पोताना भाइ मबधी वृत्ता त पूछवाथी ते कहेवा लाग्या के शु पूछो छो ? इन्द्रभूतितो भगवान ना शिष्य थया ए अमे अमारी नजरे जोइ आव्या छैयें एवु साभ ळी अग्निभूति विचारवा लाग्यो के महारो भाइ अत्यत डाह्यो हतो के म ठगाय! पिण दैवेच्छायें वखते ठगाइ गयो हशे तो हिवे हु त्या जइ इन्द्रजालियाने जीतीने महारा भाइने पाछो वाळी आवु अने एना सर्वज्ञ पणानु बिरुद पिण टाली आवु एम कही आमर्ष सहित पाचशे छात्राना परिवारे परवरयो थको बिरुदावली बोलावतो थको त्या जइ स मवसरणनी पहेली पावडीयें पग आव्यो तेने पूर्वली रीतें नामगोत्र क हीने बोलाव्यो अने कह्यो के हे अग्निभूति! तुजने कर्म छे किंवा नथी एवो सशय छे ते तु वेदपदनो अर्थ जाणतो नथी तेथी सशय रहे छे ते आवी रीतें --अथ वेदपद ॥ पुरुष एवेदङ्गुमर्वंयद्भूतं यच्चभाव्य ॥ इत्या दिक वेदना पदथी तु जाणे छे के जीव छे तेहज सर्व छे तो एथी बीजु कर्म ते वळी जूदु केम सभवें! एटले कर्म नथी केमके आत्मा तो अमूर्त्ति छे तेने कर्म केम लागे कारण के मूर्त्तिने अने अमूर्त्तिने माहोमाहे सयोग हो य नही माटे नथी वळी कर्मथी जीवने सुखदुःख पिण केम थाय ए पद उपरथी कर्म नथी एम तु माने छे तथा वळी कोइक वेदमा पद एम पिण छे जे "पुण्य पुण्येन, पाप पापेन" ए उपरथी

एम लिंग देखाय छे तो शुं कर्म छे के नथी ए ताहारो संदेह छे पि
ण हे अग्निभूति ! ते जे वेदना पद छे ते आत्मस्तुतिना छे, परंतु कर्म
निषेध करनारा नथी केमके अमूर्त्त छो मूर्त द्रव्य साथे संयोग तो
प्रत्यक्ष देखाय छे अमूर्त आकाशने मूर्त बादला तेओने परस्पर योग
थाय छे जे मूर्तिवंत छे ते अमूर्तने सुख दुःख करे छे जेम मदिरापा
न करनारने अचेत पण थाय छे ते मदिरा मूर्तिमंत छे पिण अमूर्त
जीव छे तेने मुकावे छे ते माटे कर्म छे एम सिद्ध थाय छे वली लोक
मा एक सुभाग्य, एक दुर्भाग्य, एक सरूपवान एक कुरूपवान, ए
क धनवान एक दारिद्री ए सर्व शुभाशुभ कर्मविना केमो रीते सजे
ए रीते वेदपदमा पिण कर्म सत्ता सिद्ध छे तेथी कर्म अवश्य छे, इत्या
दिक वेदपदना अर्थ सांभलीने अग्निभूतिनो पिण संशय टल्यो तेवा
रे अहंकार छोडी भावसहित पांचसें छात्रनी साथे दिक्षा लीधी ॥
इति द्वितीय गणधर ॥ २ ॥

हिवे त्रीजो भाई वायुभूति छे तेणे अग्निभूतियें दीक्षा लीधी ते
वात सांभली ते वारे चिंतववा लाग्यो जे महारा बे भाईये ए सर्व
ज्ञनी पासे दिक्षा लीधी तो ते कांई महात्मा पुरुषोत्तम देखाय छे
तेमाटे हूं पिण तेने वांदू पूजु अने संशय पुछी पाप रहित थाउं एम
विचारी ते पिण भगवान पासे आव्यो भगवाने तेमज पूर्वोक्त रीते
बोलाव्यो अने कह्यो के हे वायुभूति ! जीव तेहज शरीर एटले
जीव अने शरीर ए बे एक छे एवो तुजने संशय छे ते वेदपद
ना अर्थ बराबर न जाणवाने लीधे छे ते वेदपद " विज्ञानघनएवैतेभ्यो भू
तेभ्यः समुच्छाय " इत्यादिक एनो अर्थ पूर्वली परे जाणवो ए पदथी
जीव सत्ता छे तो एम जाणीयें जे जीव छे तो ते जीवनुं भोग्य जे शरीर ते
जीवथी भिन्न छे तथा ॥ सत्येनलभ्यस्तपसाह्येषब्रह्मचर्येण ॥ इत्या
दि वेदपदनो ए अर्थ छे के सत्य, तप, ब्रह्मचर्य, एणे करीने सत्पुरुष,
एह जाणे छे जे जीव शरीरथी भिन्न छे एवी प्रमाणथी पिण अनंत

। अने शरीर जिन देखाय छे केमके ए महारु शरीर छे एम कहे
। छे तो देहा महारु शरीर छे एम कहेनारो जीव छे माटे जीव श्र
शरीर जिनछे एवु मानजी वायुभूतियें पिण दीक्षा लीधी ॥ इति
तिय गणधर ॥ ३ ॥

हिवे चोथो अव्यक्त पिण प्रभुपासे आव्यो स्वामीये कह्युं के पा
नूं छ के नथी ए तुनने सदेह छे ने तु वेदपदनो अर्थ नथी जाण
माटे संदेह रहे छे ते वेदपद [स्वप्नोपमवक्र के०] स्वमनी पेरे स
छ एवो अर्थ थाय छे ए पद उपरथी तु जाणे छे जे पाचभूत छे के
नी। पिण ए पाठ जे छे ते अनित्यता बतावनारो छे परतु भूतनी ना
। करनारो नथी वली पृथ्वी देवता, आपो देवता, इत्यादिक वेदपद
छे ते प्रहु भूतनी सत्ता जरी जूदी कहे छे माटे पाचभूत छे ते प्रत्य
देखाय छे एवु सामजी संशयरहित थइ तेणे पिण दीक्षा लीधी ॥
ने चतुर्थ गणधर ॥ ४ ॥

। हिवे पाचमो सुधर्म आव्यो तेने भगवाने कह्यु के हे सुधर्म ! इण
जनमा मे जेहवा होय ते परभवमा तेहवाज थाय एटले पुरुष मरीने पु
रुष थाय अने स्त्री मरण पामीने परभवमा पिण स्त्रीज थाय छे एवो
तने संदेह छे ते वेदपद कह छे ॥ पुरुषोवैपुरुषत्वमश्नुतेपशु पशुत्व ॥
नो अर्थ तु एवोरीते जाणे छे के पुरुष मरीने पुरुष थाय अने पशु
रण पामीने पशु थाय ए अर्थ तु नित्य जाणे छे परतु नित्य नथी ए
। वेदपद छे ते कांइक जीव आश्रयी छे जो ए पद नित्य होय तो वेद
। लिखे छे जे ॥ शृगालोवैजायतेय सपुरुषोदह्यते ॥

अर्थ — (य के०) जे पुरुष (दह्यते के०) बले छे (स के०) ते पुरु
। (शृगालो वै०) सीयालीआ वै शब्द पादपूरणार्थमा छे (जायते के०)
थाय छे एटले जे पुरुष बले छे ते पुरुष मरण पामीने सीयाल था
। छे एमा पुरुष ते सीयाल थाय एम कह्यो माटे पुरुष मरीने पुरुष
। थाय एवो संशय राखवो नही पुरुष मरी स्त्री

त्यादि सांभळी संशय मिटावी दीक्षा लीधी ॥ इति पंचम गणधर ॥ ५॥

हिवे छठो मंडितजी आव्यो तेने प्रभुयें कह्यो बंध मोक्ष छे के नथी ए तुजने संशय छे ते तु वेदपदनो अर्थ जाणतो नथी ते वेदपद कहे छे। सएषविगुणोविभुर्नबध्यते, संसरति वा न मुच्यते ॥

अर्थ — (सके०) ते (एष के०) ए (विगुण० के०) सत्वगुणादि रहित (विभुके०) सर्वव्यापी (नबध्यते के०) कर्मेकरी बंधातो नथी (संसरति वा के०) संचरतो नथी एटले चालतो पिण नथी (नमुच्यते के०) कर्मादि बंधनथी छूटतो पिण नथी ए अर्थथी तु जाणे छे जे जीवने बंध मोक्ष नथी परंतु एम न जाणवु ए वेदपद जे छे ते सिद्ध वर्णवतु छे केमके सिद्धना जीवोने बंध मोक्ष नथी पिण जे रागादियुक्त संसारी जीवो छे तेने तो बंध अने मोक्ष बेहु छे एवु सांभळी संशय टाली एणे पिण दीक्षा लीधी ॥ इति षष्ठ गणधर ॥ ६ ॥

हिवे सातमो मौर्यपुत्र आव्यो तेने प्रभुये कह्यो हे मौर्यपुत्र ! तुजने देव नथी एवो संदेह छे ते तु वेदना पदनो अर्थ बराबर जाणतो नथी ते वेदपद एम छे ॥ मायोपमान इंद्र यम वरुण कुबेरादि ॥ एनो अर्थ — माया जेम इंद्र, यम, वरुण अने कुबेरादिक छे एनाथी तुजने एवो संदेह छे के देवादि सर्व मायारूप छे परंतु वस्तुगते नथी एम तु जाणे छे पिण ए मायारूप जे कह्या छे ते तो अनित्यता जणाववा माटे कह्या छे अने वेदमा ॥ सएष यज्ञायुधी यजमानो जसा स्वर्गलोकं गच्छति ॥

अर्थ,—यज्ञरूप आयुध छे जेहने ते ए यज्ञ करनारो यजमान तत्काल सुखे स्वर्ग एटले देवलोकें जाय छे ए वेदपद उपरथी हे मौर्यपुत्र ! देवलोक छे एम सिद्ध थाय छे एवी रीतें वेदपदनो अर्थ सांभळी मौर्यपुत्रनो संदेह टल्यो तेथी दीक्षा लीधी ॥ इति सप्तमगणधर ॥ ७ ॥

हिवे आठमो अकंपित आव्यो तेने स्वामीयें कह्यो हे अकंपित ! तुमने नारकी नथी एवी रीतनो संदेह छे ते वेदपदना अर्थनु रहस्य तु जाणतो नथी तेने लीधे संदेह छे ते वेदपद कहे छे ॥ नेह वै प्रेत्य नरके ना

श्नाप्नुति ॥ ए वेदपदना अर्थथी तु एम जाणे छे के परलोकमां ना
रकी नथी परंतु ते अर्थ तुं खोटो समजे छे एनो अर्थ एम छे ते
हु तुजने कहु छ के (नह के०) नही इहा (प्रेत्य के०) परलोकमा (नर
के०) नरकने विषे शाश्वता [नारका के०] नरकना जीव [वै के०]
निश्चे एटले नारकीना जीव शाश्वता नथी एम जाणवु पिण नारकी नथी
एम न जाणवु केमके वेदपदमा नारकी छे ते पद कहु छु ॥ नारको वैएष
जायते य शूद्रान्नमश्नाति ॥

अर्थ–जे शूद्रनु अन्न लीये ते नारकी थाय ए वेदपद उपरथी नारकी छे
एवो अर्थ साजली एणे पिण दीक्षा लीधी ॥ इति अष्टम गणधर ॥ ८ ॥

हिवे नवमो अचलभ्रातजी आव्यो तेने प्रभुयें कह्यो के ताहारा मनमा
पुण्य पाप छे किंवा नथी एवो सदेह छे ते तु वेदना पदनो अर्थ विरुद्ध
समजे छे तेने लीधे छे ते वेदपद ॥ पुरुष एवेदं ॥ इत्यादि बीजा ग
णधरना वेदपदना पाठमा एनो बधो अर्थ करेलो छे ते रीते आहीं पि
ण जाणवो माटे जीव पुण्यथी सुख पामे अने पापथी दुःख पामे एम
पुण्य पाप ए बे वेदमा छे ए अर्थ साजली सदेह टाली एणे पिण दि
क्षा लीधी ॥ इति नवम गणधर ॥ ९ ॥

हिवे दशमो मेतार्यजी आव्यो तेने प्रभुयें कह्यो हे मेतार्य ! परलो
क छे के नथी एवो तुजने सदेह छे तेना उपर वेदना पद जे रीते प्र
थम गणधरने कह्या हता ते रीते सर्व कही देखाड्या वली ॥ अस्ति पर
लोक इहलोकस्यान्यथानुपपत्तेस्त्वत्पूर्वजवत् ॥

अर्थ — परलोक छे जो न होय तो आ लोक पिण केम कहेवाय
माटे ताहारा पूर्वजनी परें परलोक पिण छे जेम ताहारा पूर्वज छे तो
तु पिण छे अने जे पाप करीने मरण पामे ते नरकमां जाय अने धर्म क
रे ते मोक्षे जाय एवो अर्थ साजली तेणे दिक्षा लीधी अने प्रभुनो शि
ष्य थयो ॥ इति दशम गणधर ॥ १० ॥

हिवे इगीआरमो प्रभासजी आव्यो तेवारे प्रभु बोल्या हे प्रभास

तुजने मोक्ष छे के नथी एवो संदेह छे ते तु वेदपदनो अर्थ बराबर जा णतो नथी तेने लीधे छे ते वेदपद कहे छे ॥जरामर्यं एतत्सर्वं यदग्निहोत्र
अर्थ — जे ए (अग्निहोत्र के०) यज्ञ छे (तत्सर्वं के०) ते स(जरामर्यंवा के०) जावजीव करवो अने ए होममा जीव मरण प मे छे ते पाप रूप छे ते स्वर्गना सुख आपे पिण तेथी मोक्ष न थाय के के जावजीव ए करवो कह्यो माटे स्वर्गज जवाय पिण ते विना मोक्ष जावानो उपाय नथी तो मोक्ष केम थाय एम विचारता मोक्ष नथीज। वो अर्थ तु करे छे तेथी तुजने संदेह रह्या छे परन्तु ते अर्थ तु करे छे ते नथी एनो अर्थ एवी रीते छे ते हु तुजने कहु छु ते सांभल जे ए अग्नि होत्र छे ते जावजीव सर्व पिण छे परंतु वा शब्दथी मुक्तिना अर्थ जे जीवो छे तेओए मोक्षना कारण सारू पिण क्रियानुष्ठान करवु। टले ए होमज सर्वकाल करवो नही परंतु मोक्षनो पिण उपाय करवो तथा वली बे ब्रह्म छे (परमपरके०) तेमा एकतो परब्रह्म अने बीजो अपर ब्रह्म (तत्रपरंसत्यज्ञानमनंतब्रह्म के०) तिहा परब्रह्म तो सत्यरू प ज्ञान अनंतरूप नाशरहित ब्रह्म छे एटले अनंत ज्ञानमय ब्रह्म ते पर छे ए श्रुतिथी मोक्ष छे एम जाणवु ए अर्थ सांभली एणे पिण दी क्षा लीधी ॥ इति एकादशम गणधर ॥ ११ ॥

एरीते श्रीगौतम स्वामीथी माडीने यावत् प्रभासमी पर्यंत सर्वे मि ळी इगीआर गणधर आव्या ते सर्वेना मनमा जे जे संशय रह्या ह ता ते प्रभुयें टारया तेथी इगीआरे जणे मिली पोताना चुम्मालीस सो शिष्यो सहित प्रभु पासेथी दीक्षा लीधी प्रभुयें सर्वेने त्रिपदी आ पी ते आवीरीतें —प्रथम उपन्नेइवा ॥ एटले सर्व उपजे छे एम कह्यो तेवारे शंका पेदा थाय जे सर्व उपजे छे तो ते जगतमा केवीरीतें समाय तेवारे बीजु पद ॥ विगमेइवा ॥ एटले विनाश पामे छे ए पदमा पिण शंका उपजे छे के जो विनाश थतो जाय तो सर्व संसार शून्य थइ जा य एम विचारी त्रीजु पद कहेछे ॥ धुवेवा ॥ एटले ए संसारनी स्थि

नि निश्चल छे तेवारें जाएयु जे उपजे छे, विगमे छे अने रहेनागे ते ते रहे पिण छे एवो समागनो स्थिरि सद्मतरेद् त्रगर कारमा चाउनी थावे छे एम त्रिपदी प्रभु पासेथी पामीने ए इगीआरेय गणधरे वे घ डीमा एटर एक मुहूर्त्तमा द्वादशागीनी रचना करी ते अवमरने वि षे इद्र महाराज पोते रत्नना थालमा वासक्षेप लेइ हाजर थया तेमाथी प्रभुयें मुठी भरीने इगीआरे गणधरने माथे अनुक्रमे वासक्षेप कर्यो ए तीर्थनी स्थापना थइ देवताओए देवदुदुभि बजाडी अने जयजय शब्दने बोलवा लाग्या ॥ इति गणधर वादस्तथा गणधरस्थापनाधिकारः ॥ १ ॥

पछी चदनवालायें भगवाननी देशना साजळी प्रतिबोध पामीने म हासहेलत्व सहित प्रभुपासेथी दीक्षा लीधी तेनी पिठवाडे बीजा पि ण घणा जनोए दीक्षा लीधी घणा श्रावक थया, घणी श्राविकाओ थइ, एम चार प्रकारना सघनी स्थापना करी ॥

हिवे गौतम स्वामीनो सबध कहे छ, गौतम स्वामीनु उत्कृष्टरूप, प्रथम सघयण, प्रथम सस्थान, छठ आठमादिक तपश्चर्या करता थ का, धर्मदेशना देता थका, तेजोलेश्यादिक अठावीश लब्धिना धरना र, चार ज्ञानवत, चौदपूर्वधारी, श्रुतकेवली थया, जेने दीक्षा आपे, ते ने केवळ उपजे पोताने प्रभुउपर स्नेह घणो तेथी केवल उपजे नही तेवारें चिंतव्यु जे केम मने केवलज्ञाननी प्राप्ति थाशे के नही ? गौत मनी एवी चिंतवणीजोइ श्रीवीर भगवान देशनामा एरीतें बोल्या के जे पातानी लब्धियें अष्टापद पर्वत उपर चढी चोवीश तीर्थंकरनें वादे ते जीव तेहज भवें मोक्ष जाय, एवी वीरनी वाणी साभळी बत्रीश को श उचो अष्टापद पर्वत छे जेनी आठ पावडीयो छे तेना उपर सूर्य ना किरण अवलबीने श्रीगौतमस्वामी पोतानी लब्धियें चढ्या, तिहा चो वीश जिनने वादी जगचिंतामणि स्तवन जोडी श्रीवयरस्वामीनो जी व तिर्यक्जृभकनामा सामानिक देवछे तेने पुडरीकाध्ययन प्रतिबोधीने नीचे उतर्या, तेवारें पन्नरशोने त्रण तापस कौड्न्य आदे आठम

तपने पारणे कदमूल फलादिकनुं पारणुं करे, एम करतां बार मास थई गया छे तेमणे श्रीगौतमने उतरता दीठा तेवारे चिंतव्युं जे आपणे एना शिष्य थाइये तो अष्टापद उपर जइ देवने वांदीये एम धारी उठी ने श्रीगौतमजीने पगे लागा, गौतमे तेमने प्रतिबोधीने दीक्षा आपी प छी मकोलारे अष्टापदें चडावी तापसने देव वदावीने पाछा उतारचा तेवारें गौतमजीयें पूछयुं के हे शिष्यो ! तुमे पारणुं करशो ! ते बो ल्या हा स्वामी, पछी गौतमजी पोतानी लब्धियें करी खीरनो एक पडघो सवा शेरनो भरी आव्या अने तापसोने कह्यो के उठो पारणुं करो, तेवारें खीरपात्र देखी तापस कहेवा लागा के खीर थोडीने खा नार घणा माटे एटली खीरथी तो आवे आनंद थाशे ? अथवा सर्वा ने एकेकु टीलुं कराशे ! पछी गौमतजीयें कह्यो के हे शिष्यो माडले चालो म्हारे पारणुं करी गुरु पासें जावुं छे एम कही माडले बेसाडी ताप सोने संदेह भागवाने अर्थे खीरना पात्रामा पोतानो अंगुठो मेल्यो ते वारे अक्षीण लब्धि थकी पन्नरशें त्रणे तापसने पारणा कराव्या पोते पिण पारणुं करयुं, तिहां पाचशेने एक तापसने तो खीर जिमता जिमता श्री गौतमना गुण चिंतवतां केवलज्ञान उपन्युं अने पाचशेने एकने प्रभुनुं समोवसरण देखी केवलज्ञान उपन्युं तथा पाचशें एक तापसने तो श्रीवी र भगवाननुं मुख देखताज केवलज्ञान उपन्युं एम पन्नरशें त्रणे ता पस केवली थया तेणे वीरभगवानने वांदी केवलीनी सभाये जावा मा ड्युं, तेवारें गौतम बोल्या हे शिष्यो ! तुमे छद्मस्थनी सभायें बेसो अहीं यातो केवलीनी सभा छे माटे न बेसवुं तेवारे वीरभगवान बोल्या हे गौ तम! तुमे केवलीनी आशातना मत करो, ए पन्नरशें त्रणे केवली थया छे, ते सांभली गौतम खेद पाम्या के जूओ ? म्हारा शिष्य केवली थया पिण हुं केवली थातो नथी एम घणो घणो चित्तमा खेद करवा लाग्यो, तेवारें भगवाननें कह्यो के हे गौतम ! तुं खेद म कर, अंते आ पणे बे सरखा थाशुं ॥ इति गौतम संबंध ॥

हिवे जगवानने कया कया गाममां केटला केटला चोमासा कर्चा ते सूत्रकार कहे छे —ते कालने विषे, ते समयने विषे, श्रमण जगवत श्री महावीरस्वामीने अस्थिग्रामनी निश्रायें वर्षाकालनु पहेलु चोमासु थयो तेवार चंपानगरीमा अने पृष्ट चंपानी निश्रायें त्रण चोमासा वर्षाकालना थया एव चार तथा विशाला नगरीयें वाणीय गामनी निश्रायें करीने बारे चोमासा वर्षाकालना थया एव सोल तथा राजगृह नगरना नालंदीनामे पाडानी बाहेर निश्रायें चौद चोमासा वर्षाकालना थया एव त्रीश तथा मिथिला नगरीयें छ चोमासा कर्चा तथा जद्रिका नगरीये बे चोमासा कर्चा तथा आलंजिका नगरीयें एक चोमासु कर्यु तथा सावत्थि नगरीयें एक चोमासु कर्यु तथा अनार्य देशमा एक चोमासु कर्यु एव एक तालीश थया छेलु बेतालीशमु चोमासु मध्यम पावापुरी अपापा नगरीयें हस्तिपाल राजानी जूनी लेखकशालामा जगातनी माडवी कारकुननी सजा मां वर्षाकाले रह्या ॥ १२३ ॥

ते चोमासानो चोथो महिनो सातमु पखवाडीयु कार्तिक वदि अमा वास्याना दिवसनी रात्रिना छेहडाने विषे, जगवान श्रीमहावीरस्वामी काल प्राप्त थया जाति, जरा, मरण, बधन एटले जनमवु, वृद्ध थावु, मरवु तेनु जे बधन तेने च्छेदीने सिद्ध थया, तत्त्व जाणवा वाला थया, मुक्त थया, सर्व दु खनो अंत कर्चो, सतापरहित थया, सर्व दु खनो क्षय थयो. ॥ १२४ ॥

पाच सवत्सर माहेलो चद्रनामा बीजो सवत्सर वर्त्ते छे तेने विषे, प्रीतिवर्द्धन नामे मास ते कार्त्तिक मास तेने विषे, नदीवर्द्धन नामा प क्ष, अग्निवेश्य नामा दिवस तेने विषे तथा क्याएक उपशम एवु बीजु नाम ए दिवसनु कहे छे, देवानदा नामा रात्रि क्याएक बीजो निरत्ति एवु नाम पिण ए रात्रिनु छे जे लवमा जगवंत मोक्षे पहोता ते लवनो नाम अर्च छे एटले अर्च नामा लव, मुहूर्त्त नामा प्राण एटले श्वासो श्वास, सिद्ध नामा स्तोक, नाग नामा करण, सर्वार्थ सिद्ध

स्वाति नामा नक्षत्रनी साथे चद्रमानो योग होते छते भगवान, काय स्थिति भवस्थिति रूपात्रीने कालगत थया, यावत मन सबधि शरीर सबधि सर्व दु खथी रहित थया ॥ १२५ ॥

जे रात्रिमा श्रमण भगवत श्रीमहावीरस्वामी कालगत थया ते रा त्रिये चारे निकायना घणा देव, घणी देवीयो स्वर्गलोक थकी हेठा ति र्छा लोकने विषे उतरवा लाग्या तेणे करी तथा उचा उर्ध्वलोकने वि षे आवा लाग्या तेथी करीने ते रात्रिने विषे आकाशमा घणो उद्योत होतो हुवो ॥ १२६ ॥

जे रात्रिये श्रमण भगवत श्रीमाहवीरस्वामी काल गत थया, ते रा त्रिये घणा देव अने देवीयो आवता जाता बहुन आकुल थया तेथी अव्यक्त कोलाहल थवा लाग्यो ॥ १२७ ॥

जे रात्रिये भगवान श्रीमहावीरस्वामी कालगत थया ते रात्रिमा गौतम जे इंद्रभूति अणगार भगवाननो शिष्य तेनु प्रेमबधन त्रुटयु तेथी श्रीगौतमस्वामीजीने, केवल ज्ञान केवल दर्शन उपन्यु ॥ १२८ ॥

जे रात्रिमा श्रीगौतमस्वामीजीने केवल ज्ञान उपन्यु ते रीते उप न्यु तेनी कथा कहे छे —पोतानो अतसमय जाणीने श्रीमहावीर देवे श्री गौतमजीनो पोतानी उपर निबड स्नेह जाणी ते प्रशस्त स्नेह राग निवर्त न करवाने अर्थे सध्यासमयथी पहेला श्रीगौतमस्वामीने देवशर्मा ब्राह्म णने प्रतिबोध करवा सारु पार्श्ववर्ती ग्रामे मोकल्या हता, ते ब्राह्मण ने प्रतिबोध आपी तिहा रात्रि रही प्रभाते पाछा वल्या, तेवारे मार्ग मा केटलाएक देवोने शून्य चित्ते देखी अने उपयोगथी वीरनिर्वाण साभल्यु, तेवारे वज्राहतनी परे मूर्च्छा पाम्या, थोडीवेला पछी साव धान थया, तेवारे मोहने वशे विलाप करवा लागा के हे प्रभो ! तु मे त्रण लोकना सूर्य अस्त पाम्या तो हिवे मिथ्यात्वरूप अधकार प्रस रशे माडशे ! कुतीर्थरूप घुबडाना समूह जागृत थइ गर्वीवर करशे दुरमति दु काळरूप राक्षस प्रवेश करशे ! कुमतिरूप चोर घणा थाशे !

जेम सूर्य अस्त थये कमळ कुमळाय, तेम चतुर्विध संघरूप कमळ मन कुमळाशे ? जेम चन्द्रविना आकाश, जेम दिवाविना मंदिर, जेम सूर्य विना दिवस, ए जेम शोजता नथी तेम तुमारा विना ए जरत क्षेत्र शोजा रहित थाशे ! हे वीर तुमारा विना हिवे सात प्रकारना अति उपद्रव प्रगट थशे, हे वीर तुमारा विना पाखंडी रूप तारा देदी प्यमान थशे, तुमाराविना धर्मरूप चन्द्रमाने पापरूप राहु ग्रहण क रशे, हे श्री महावीरदेव ? हिवे हु कोना पगतलिया उछासतो थको म्हारा मनना संदेह पूछीश कोने हु जगवान् कही बोलावीश । को ने हु नमीश । हे प्रजो ! हिवे मुजने तुम विना बीजो कोण गौतम क ही बोलावशे ! हाहा !! हे वीर हे वीर ? तुमे ए शु कर्यु जे आ वख तें मने दूर कीधो, लौकिक पण विण नही राख्यु, हुशु बाळकनी पेरे ताहो वेशी आपनो छेहडो पकडी रहेत ? अथवा शु केवलज्ञाननो जाग मांगत ? शु मोक्षमार्ग संकीर्ण थात ? अथवा शु तुमोने कांइ जारळागत ? के मुजने जोळावीने चाल्या गया, हे वीर जे वेळायें पो तानो बाळक वेगळो होय तो पिण तेने बोलावीने पोतानी पासें राखवो जोइयें ते वेळायें उलटो तमे मुजने पोताथी दूर कर्यो, हे वीर तमे शु तुमा रा उपर महारो कृतिम स्नेह जाण्यो? हे वीर हु तुमारे शु घसुसका री थातो हतो जेथी मने मूकी गया, हे वीर तुमे मुजने केम वीसारी मू क्यो, हे वीर तुमे आजे मुजने महोटा विरह रूप समुद्रमा नाख्यो, हे वीर तुमारा विना हु महोटा वियोग रूप दाहमा दाझयो, हिवे तुमा रा विना महारो दुःख कोण जाजशे, हे वीर हिवे समोसरणनी शोजा विलय थइ गइ, हिवे मुक्ति मार्गनो साथ जाग्यो, हे वीर हिवे जेम नउ विना माछळी टळवळे तेम तुमारा विना चतुर्विध श्रीसंघ टळवळ तो थशे, हे वीर तमारा वचनरूप उपशम जळविना जिनशासन रू प वाडीयो बाग बगीचा सूकाइ जशे, हे वीर तुमारा विना समता रू प केतकी सूकाइ जशे, हे वीर हिवे जव्यजीवना मनरूप भ्रमर ते कि

हूं जइने गुनारव करशे, हे वीर हे गुणनिधान, हे जिनशासन नायक, हे भव्यजीव सुख दायक, हे जिनशासन शिणगार, हे करुणासागर, तु मे मुजने विलविलतो मुकीने सातराज दूर जइ वस्या तो हा हा हे वीर हिवे हु कोनी साथे सदेसो कहेवरावु एम अनेक मकारें गौतमजी प्रशस्त मोहना उदयथी नाना प्रकारनो दुख धरता थका श्री गौत मने वार वार मोहने वशें करी वीर ! वीर ! एवा अक्षर मुखें रही गया पछी गौतमजीयें विचार्यु जे ए श्रीवीतराग तोनि स्नेहीज हो य, माटे अहींआ तो महाराजे अपराध छे, हुज मूर्ख थयो जे में मो हने वशें सदा श्रुतनो उपयोग आपी जोयु नहीं माटे ए महारा एक पक्षा स्नेहने विकार होजो ए स्नेहें सर्यु ॥ अरे आ मोहराजानो कहेवो महात्म्य छे जे महारा सरखाने पिण एवीरीतें पीडाकरे छे तो वली बीजा ते सी गणतीमा ? अरे में रागना वशथकी विचार्यु नही जे ए श्रीवीर प्रभुतो निरागी निस्नेही हता तो महारे एना उपर रा ग करवो ते फोकट क्लेश कारीज जाणवो ए निरमोहीने शानो मोह होय अर्थात् काइ पिण न होय वली हे जीव तु कोणछो अने ते कोण छे तेमा पिण जो निश्चें दृष्टीयें विचारवा जइयें तेवारें तो श्रीवीर अ ने हु काइ जूदा नथी केमके आ आत्मातो एकज ज्ञान, दर्शन, चारि त्र मयी शाश्वतो छे, बीजा सर्वभाव अशाश्वता छे, हु एकलो छु, मा हारो बीजो कोइ स्नेही नथी, जगतमा कोइ कोइनु नथी इत्यादिक स म भावना भावता श्रीगौतम स्वामीने केवलज्ञान उपन्यु, इद्रादिकदेव तायें प्रभाते केवलज्ञाननो महोत्सव कीधो, इहा कवि युक्ति करे छे के श्रीगौतमस्वामी अहकारथी तो मतिबोध पाम्या अने रागथी गुरुभ क्ति करी तथा विषवादमा केवलज्ञान पाम्या ए आश्चर्य छे, दीर्घायु ष्यवत जाणीने सौधर्मस्वामीने पाटदीधो ॥ पछी बार वरस केवल पर्या य पाळी सर्व मिळी ब्याणु वर्षायु पाळी, मोक्षें पोहोता छे ए गौतमस्वा जेमने दीक्षा आपे ते तेहज भवमां मोक्ष जाय ए ... (?)मीमा मों

होगे अतिशय कह्यो छे इति गौतम केवलोत्पत्ति संपूर्ण ॥

जे रात्रीयें भगवान मोक्षगया ते रात्रिमा नव मल्लकी जातिना उपन्या, नव लच्छकी जातीना उपन्या काशी कोशल्य देशना मालक गण एटले प्रधानना धणी एवा अढारे गणराजा छे ते भगवाननो मामो चेडो महाराजा छे तेना ए अढारे दशना राजा मित्र समान छे माटे मिलवाने अर्थ आव्या छे ते राजा अमावास्याने दिवसें उपवास करीने रात्रें पोसहमा बेठा हता पछी ते राजाओए भगवंत निर्वाण पाम्या माटे केवलज्ञान रूप जे भाव उद्योत हतो तेतो गयो तो हिवे द्रव्य उद्योत करीशु ॥ एटले पोसह उपवास रूप जे द्रव्य उद्योत ते आगला वरसो वरसें ए अमावास्या आवे थके करीशु अथवा हिवे द्रव्य उद्योत करशु एवु विचारीनें दीवा प्रमुख द्रव्य उद्योत कर्यो ते दिवसथी मंगलिकने अर्थ महोटु पर्व दीपवालीनु थयो ते पर्वे भगवान मोक्ष पाम्या, शिवसुख निरुपद्रव सुख पाम्या ॥ वली कार्त्तिक शुदी एकमने दिवसें गौतम स्वामीने केवलज्ञान उपन्यु तेनो हर्ष जाणवो अने कार्त्तिक शुदी बीजने दिवसें भगवाननो महोटा भाइ नंदीवर्द्धन छे ते प्रभुनु निर्वाण सांभलीने घणोज शोकवंत थयो तेनो शोक मिटाववा सारु भगवाननी बहिन सुदर्शनायें पोताने घरे नंदीवर्द्धनने तेडीने जिमाड्यो भाइनो शोक टाल्यो ते दिवसथी लोकोमा भाइबीज चाली ॥ १२९ ॥

जे रात्रिमा भगवान मोक्ष गया ते रात्रिमा क्षुद्र एटले क्रूर स्वभाव छे जेनो एवो अठ्यासीमो ग्रह माहेलो त्रिशमो भस्मराशिनामा ग्रह तेनी बे हजार वर्षनी एक नक्षत्र उपर स्थिति छे ते भगवानना उत्तरा फाल्गुनी नामे जन्मनक्षत्र उपर आव्यो छे ॥ १३० ॥

जे दिवसथी भस्मराशि नामा महोटो ग्रह भगवानना जन्म नक्षत्र उपर आव्यो ते दिवसथी मांडीनें निर्ग्रंथ जे साधु साधवी छे तेमनी घणी पूजा एटले उठीने उभु थावु आहारादिकनु देवु तथा सत्कार ते वस्त्रादिकनु देवु तेनी वृद्धि थाशे नही ॥ १३१ ॥

इहां प्रथम भगवानने सौधर्मेंद्रे वीनति करी हती के हे महाराज तुमे मोक्ष जाओछो परतु तुमारा सतानीयाने बे हजार वर्ष पर्यंत पीडा थाशे माटे बे घडी भस्मग्रह बाकी रह्यो छे एटलु बे घडीनु आयुष्य तुमारु वधारो एटले भस्मग्रह उतरी जाय तो पाछळथी आपना सतानीया चेडा चेलीने शाता उपजशे ते सांभली भगवान बोल्या हे इद्र ए वात त्रणे कालमा न थाय तुमे तो बे घडी आयु वधारवा कहो छो परतु एक समय मात्र आयु पिण महाराथी वधे नही त्रुटचु आयु कोइथी वधारचु जाय नही ए एमज भावी छे जे बे हजार वर्ष पर्यंत महारा तीर्थमा शिष्योने बाधा थवा वडी छे तेने कोण वर्जी शके कोइनु पिण सामर्थ्य नथी अने जेवारे भस्मराशी ग्रहना बे हजार वर्ष पूरण थइ जाशे तेवारे निर्ग्रंथोनी घणीज पुजा सत्कारादिक मानता थाशे धर्मनो उदय थाशे, श्रीसघने हर्ष थाशे ॥

दुहा ॥ घडी न छने आगली, इश्यु अखे वीर ॥ इम जाणी जीव धर्मकर, ज्यां लगे वहे शरीर ॥ १३२ ॥

जे रात्रियें भगवान मोक्ष गया ते रात्रियें घणा कीणा कीडा कुथुआ तेंद्रिय जातीना जीव उत्पन्न थया ते उद्दरच्या पिण नजाय, उद्दरीने अलगा पिण न मूकाय अने साधु साधवीने नजरे नही आवे सधि चाले तेवारे देखाय ॥ १३३ ॥

ते देखी घणा साधु साध्वीयें भात पाणी आदिक चारे आहारनो त्याग करी अनशन करयु तिहा शिष्यें पुछ्यु जे हे गुरु महाराज एवी रीतनो उपद्रव केम थयो तेवारें गुरु बोल्या हे वत्स ! आज पछी चारित्र दुखे पळशे ॥ १३४ ॥

ते कालने विषे ते समयने विषे भगवान श्रीमहावीरस्वामीने इद्रभूति आदे देइने चौद हजार उत्कृष्टी साधुओनी सपदा थइ ॥ १३५ ॥

भगवान श्रीमहावीरस्वामीने चदनबाला प्रमुख छत्रीश हजार उत्कृष्टी साध्वीओनी सपदा थइ ॥ १३६ ॥

भगवानने शंखजी तथा शतकजी आदे देइने १५९००० उत्कृ
ष्टी श्रावकोनी सपदा थइ ॥ १३७ ॥

भगवानने सुलसा, रेवती प्रमुख ३१८००० उत्कृष्टी श्राविकाओ
नी सपदा थइ ॥ १३८ ॥

भगवानने केवली नहीं पिण केवली सरखा सर्व अक्षरोना सयोग
जाणे तेवा केवलीनी पेरे सत्य प्ररूपणा करवा वाला एवा त्रणसें
साधुओ चौद पूर्वधारीनी उत्कृष्टी सपदा थइ ॥ १३९ ॥

भगवानने तेरेशो साधुओ अवधिज्ञानीनी उत्कृष्टी सपदा थइ ॥१४०॥

भगवान श्रीमहावीर स्वामीने सातसें केवलज्ञानी सपूर्ण केवलज्ञान
अने केवल दर्शनना धरनारनी उत्कृष्टी सपदा थइ ॥ १४१ ॥

भगवानने जे देवतानी ऋद्धि बनावी लीये एवा सातसें वैक्रियल
ब्धिना धरनारनी उत्कृष्टी सपदा थइ ॥ १४२ ॥

भगवानने पाचसें विपुलमति जे अढीद्वीप बेसमुद्रमां सज्ञिपचेंद्रीय
पर्याप्ता जीवोना मनना भाव जाणे एवा विपुलमति मन पर्यवज्ञा
नीनी उत्कृष्टी सपदा थइ ॥ १४३ ॥

भगवानने जे देवो अने मनुष्योनी परपदामा बेशी वाद करता को
इथी हारे नहीं एवा चारसे वादिओनी उत्कृष्टी सपदा थइ ॥ १४४ ॥

श्रीमहावीरने जे अत एटले समीपे वासी एटले वसे रहे तेने अते
वासी कहीयें एवा सातशे शिष्य उत्कृष्टी मोक्ष गया ए भगवानना
पोताना हाथ दिक्षित जाणवा तथा चौदशे साध्वी उत्कृष्टी मोक्ष ग
ई ते पिण पोतानी हाथ दिक्षित जाणवी ॥ १४५ ॥

श्रीमहावीरने जे आगामि भवे मोक्ष जावावाला जेमनी गतिनुं भलुं
आयुष्य एवा उत्कृष्टा आठशे साधुओ विजयादि पाच अनुत्तर
विमाने गया ॥ १४६ ॥

श्रमण भगवान् श्रीमाहावीर स्वामीने बे प्रकारे अनगड भूमि थइ
एटले मुक्ति मार्गनी मर्यादा थइ ते आवी रीते के भव जे ससार तेने

अन करवो तेनी जे भूमिका एटले मर्यादा अथवा कर्मनो अत करवो तेनी मर्यादा ते बे प्रकारना थइ ते बे प्रकारना नाम कहे छे एक जुगा त कृत भूमि अने बीजी पर्याय अतकृत भूमि जाणवी तेमा प्रथम युग एटले कालमान विशेष, अनुक्रमे गुरु शिष्य प्रतिशिष्यादिरूप जे पुरुषो तेना प्रमाणे कालमान जाणवु ते आही श्रीवीर भगवाने त्र ण पुरुषना पाट पर्यंत काल सुधी कर्मनो अन थयो एटले बीजा घणा जीवोए कर्म खपाव्या छे ते श्रीवीर भगवानना पाटथी मांडीने श्रीजं बूस्वामी पर्यंत मोक्षमार्ग चाल्यो तेमा एक तो श्रीवीरभगवान पोते, बीजा तेमने पाटे तेमना शिष्य श्री सुधर्मा स्वामी त्रीजा भगवानना प्रतिशिष्य अने श्री सुधर्म स्वामिना शिष्य श्रीजंबुस्वामी ए त्रण पाट सुधी मोक्ष मार्ग वह्यो छे तेने युगातकृत भूमि कहीयें अने बीजी पर्याय अन कृतभूमि ते श्रीतीर्थंकरने केवल ज्ञान उपन्या पछीनो कालने आश्रयी जाणवी ते भगवान श्रीमहावीरस्वामीने केवलज्ञान उपन्या प छी चार वर्षे मुक्तिमार्ग वह्यो एटले प्रभुने चार वर्षनो केवल पर्याय थया पछी बीजा कोइक जीवने कर्मनो अत थयो कोइ मुनि मोक्ष ग यो एम चार वर्षवीते मोक्षमार्ग प्रवर्त्यो छे. बीजा जीवाने कर्मनो अ त थयो छे ते पर्याय अतकृत भूमि कहीये ॥ १४७ ॥

ते कालने विषे, ते समयने विषे श्रमण भगवत श्रीमहावीर स्वामी त्रीश वर्ष घरवासे रह्या अने काइक जाभेरा बार वर्ष छद्मस्थ पणे रह्या तथा काइक ओछा एटले साडा छ मासे उणा त्रीश वर्ष केवली पणे विचर्या एकदर बेतालीश वर्ष लगे चारित्र पर्याय पाली साधुपणुं पाल्यु सर्वमिली बहोत्तर वर्षनु आयुष्य पालीने वेदनी कर्म, आयुकर्म, नामकर्म अने गोत्रकर्म ए चार कर्म शेष रह्या हता ते क्षय थया तेवारे एह ज अवसर्पिणी कालने विषे दुसम सुसमानामे चोथो आरो घणो वीत्यो अने चोथा आराना त्रण वर्षने साडा आठ महीना बाकी रहे थके पावानगरीमा हस्ति पाल राजानी कारकुननी सभामा पोते एकला परतु साथे बीजा को

इ नहीं एटले बीजा तीर्थंकरो सर्व साधुओना परिवार सहित मोक्ष ग या छे अने श्रीवीर भगवान तो एकलाज बेठानु तप एटले पाणी रहित बे उपवास चउविहार करीने पत्यंकासने बेठा थका स्वाति नक्षत्रमा चंद्रमानो योग आवे थके पाछली चार घडी रात रहे थके पंचावन्न अध्ययन पुण्य फलना कहेवावाला अने पंचावन्न अध्ययन पाप फलना कहेवावाला तथा छत्रीश अध्ययन पूछ्या विना कहीने छेल्लो प्रधान नामा मरुदेवीनु अध्ययन प्ररूपता थका काल प्राप्त थया, ऊंचा गया, जाति जन्म जरा मरणनु बंधन कापीने सिद्ध थया, बुद्ध थया, मुक्त थया, कर्मोनो अंत करीने सर्व संताप रहित थया दुःखथी छूटा ॥ १४८ ॥

भगवान श्रीमहावीर स्वामी मोक्ष गया, पछी नवसे वर्ष वीत्या अने दशमा सैकडाना एंशी वर्ष थया तेवारे एटले वीरनिर्वाणथी ९८० वर्ष पुस्तक लिखाणु अने वांचनामां नवशे त्र्याणु वर्षे पुस्तक छि खाणु एवुं देखाय छे ॥ १४९ ॥

हिवे भगवननु निरवाण थयो, तेवारे इंद्रादिकनो आसन चलायमान थयो, भगवंतनु पांचमु निरवाण कल्याणक जाणी सर्व इंद्र भेला थइने चमरेंद्रादिके बावना चंदने करी भगवंतनी चयरची, अग्निकुमार देवे अग्नि मूक्यो, वायुकुमारे वायरो विकूर्व्यो, भगवंतना मांस सर्व शोषाव्या पछी मेघकुमार देवोये वरसाद वरसाव्यो शरीरनी राख खीर समुद्रमा नाखी, भगवंतनी उपरली दाढा सौधर्मेंद्रे लीधी, हेठली दाढा चमरेंद्रे लीधी ते दाढाने रत्नमय डाबलामा राखी पूजे ए विस्तारे अधिकार श्री जंबुद्वीपपन्नत्तिमा कह्यो छे, त्यांथी जोवो ॥

हिवे पुस्तक लिखाणु ते आ प्रमाणे के श्रीवीर निर्वाण पछी वल्लभीपुर नगरे देवर्द्धिगणि क्षमाश्रमण प्रमुख सर्व श्रीसंघे मिलीने सिद्धांत पुस्तकारूढ कीधी, एटले आगम तो सर्व पूर्वे आचार्य प्रमुखने मुखपाठे हता पछी बार वर्ष दुकाल पड्यो तेने लीधे केटला एक मांड्यो ...

या तथा घणा सूत्रपाठ साधुश्राने मुखे हता ते विच्छेद गया, तेवार
पछी जेवारें सुकाल थयो, तेवारें सूत्रोनो विनाश थतो देखी साधुनो स
मूह भेलो थइ जेने मुखे जेटला पाठ स्मरणमा रह्यो हतो ते सर्व ताड
पत्र उपर लिखी पुस्तकारूढ कर्यो तथा केटला एक एम कहे छे के
नवशे एशीमा वर्षथी सर्व सिद्धांत पुस्तकें लिखवा माड्या ते नवशेने
च्याणुमे वर्षे सपूरण लिखाइ रह्या एवु पण देखाय छे ॥ गाथा ॥ वलहि
पुरमिनयरे, देवड्ढिपमुह सयल संघेहिं ॥ पुत्थे आगमलहिओ, नवसय अ
सिआओ वीराओ ॥ १ ॥

तथा कोइ एक कहे छे के स्कंदिलाचार्य माथुरी वाचना करी पु
स्तक लिख्यो छे तथा कोइएक कहे छे के कालिकाचार्यें चोथनी सव
त्सरी नवशेने तिराणु वर्षे थापी अने पक्षी चोमासी एक दिवसे था
पी एवा केटला एक मतथी बोले छे तेनो मुद्दो केवली जाणे ए वातनो
विशेष विस्तार दीपिका प्रमुख थकी जाणवो ॥ श्रीवीर प्रभुना शा
सननु प्रमाण एकवीश हजार वर्षनु कह्यु छे ॥ श्रीवीर प्रभुना नव
गणधरतो प्रभु पोते छताज राजग्रहि नगरीयें एक महीनानी सलेष
णा करीने परिवार सहित सिद्धि पाम्या छे अने वीरनिर्वाण० पछी बारमें
वर्षें श्रीगौतम स्वामी मोक्ष पाम्या छे, सांप्रत पांचमा कालमा जे मु
निराज वर्त्ते छे ते सर्व भगवतना पाटे श्रीसुधर्मास्वामी पांचमा गणधर
बेठा हता तेनो परिवार जाणवो ते श्रीसुधर्मास्वामी वीरनिर्वाण पछी
वीश वर्षे सिद्धि पाम्या तथा श्रीवीर भगवाननो जन्म चैत्र महीनामां
छे अने कार्तिक मासमा मोक्ष गया छे माटें बहोत्तर वर्षायु बराबर मिल
तु नथी ते बाबत घणा ग्रथोमा सवत्सरना दिनमाननो फेर देखाडी स
माधान करे छे परतु खरोखरी वात केवली गम्य छे ए श्रीमहावीरना
पांच कल्याणक विस्तारे कह्या ए छठा वखाण पर्यंत श्रीवीर भगवा
ननो अधिकार जाणवो ॥

॥ इति सुबोधिनी भाषाया षष्ठी व्याख्यान समाप्त ॥ ६ ॥

हिवे पच्छानुपूर्वी न्यायथी श्रीपार्श्वनाथ स्वामीना पांच कल्याणक क हे छे. ते काउने विषे ते समयने विषे श्रीपार्श्वनाथ अरिहंत त्रेशठ शला का पुरुषमां प्रसिद्ध अने सर्व मतवाला आदेय छे एवा श्रीपार्श्वनाथ स्वामी ना पांच कल्याणक विशाखा नक्षत्रमां थया ते कहे छे. विशाखा नक्षत्रमां देवलोकथी चवीने वामादेवीनी कूखे उपन्या, विशाखा नक्षत्रमां जन्म पा म्या, विशाखा नक्षत्रमां गृहस्थ पणाने त्यागीने साधु पणानुं ग्रहण कीधुं एटले दीक्षा लीधी, विशाखा नक्षत्रमां सर्वोत्कृष्ट केवलज्ञान अने केव लदर्शन उत्पन्न थयो छे अने विशाखा नक्षत्रमां मोक्ष गया छे. इति स त्र वाचना ॥ १५० ॥

हिवे विस्तारथी वाचना लिखीये छैये ते कालमां ते समयमां श्रीपार्श्व नाथ पुरुषोमां प्रधान ते उनालानो पहेलो महीनो, पहेलुं पखवाडयुं एटले चैत्र वदी चोथने दिवसे प्राणतनामा दशमा देवलोकथी वीश सागरोपमनुं आउखुं पूरण करीने तिहांथी चव्या ते इहां जंबूद्वीपना भरत क्षेत्रने विषे वाणारसी नगरीमां अश्वसेन नामा राजा तेनी वामादेवी नामे राणी तेमनी कूखे मध्य रात्रीयें विशाखा नक्षत्रमां चंद्रमानो योग होते छते देवसं बंधि आहार, देवसंबंधि शरीरनो त्याग करीने गर्भ पणे उपज्या ॥१५१ ॥

हिवे श्रीपार्श्वनाथ भगवान प्राणत देवलोके क्यां भवथी आ व्यां ते दर्शाववा सारु श्रीपार्श्वनाथ स्वामिना दशभव लिखियें छैयें ॥ आ जंबूद्वीपना भरतक्षेत्रमां पोतनपुर नामक नगरनो अरविंद नामा राजा तेनो विश्वभूति नामे पुरोहित हतो तेनी अनुद्धरी नामनी स्त्री ना एक कमठ अने बीजो मरुभूति ए बे पुत्र हता पछी अनुक्रमे तेना माता पिता काल धर्म पाम्या केडे राजायें कमठने पुरोहित पदवी आ पी पिण ते कमठ स्वभावे कठोर, कपटी दुष्ट माठा लक्षणवालो मूर्ख हतो, वली तेनी स्त्री छे अने ...तो सरल ...

द्रकपरिणामी धर्मात्मा श्रावकधर्म पालनारो छे तेनी स्त्री वसुधरा ना
मे अत्यंत स्वरूपवाली अने घणी चपल स्वभाववाली छे एक दिवसे ते
कमठ मरुभूतिनी स्त्रीने देखी रूपे मोह्यो थको भोग करवाने माटे तेने
बे त्रण वार बोलावी तेवारें ते स्त्री पिण कमठ उपर राग करवा लागी
एक दिवसें कमठे प्रधान वस्त्राभूषण आपीने वसुधराने पोताने वश क
री माहोमाहे प्रीति बांधी चोर कर्म करवा मांड्यो ते वात कमठनी
स्त्री वरुणाना जाणवामां आवी तेवारें पोताना भरतारने कहेवा लागी
जे हे भरतार! आ अकृत्य तुमे करो छो ते सारु देखातु नथी जो दे
वरना जाणवामां आवशे तो लोकोमां निंदा थाशे एवो पोतानी स्त्रीयें
कहेलो उपदेश कमठे मान्यो नहीं तेने लीधे ते वरुणा नाराजी थइ
थकी कमठना अनाचारनी वात मरुभूतिने कही तेवारे मरुभूतियें वि
चार्यु जे पोतानी नजरें दीठा विना एकाएक स्त्रीयोनी वात मानवी नहीं
एम विचारी एक दिवसें कपटथी कांइक गामें जवानो मिष करीने बाहेर ग
यो वली कापडीनो वेश करी पाछो मरुभूतिने घरे एटले पोताने घरे आवी
रह्यो ते रात्रीयें तेणे दुराचारी कमठ अने पोतानी स्त्री बेहुने क्रीडा कर
ता दीठा तेवारे क्रोध करीने प्रभातें कमठना दुराचारनी वार्त्ता अरविंद
राजा आगळ आवीने कही राजायें कमठने पकडी चोरनी परे खुंडे
हाले करी रासभ उपर चडावी नगरमां फेरवी विटंबना करी बाहेर
कहाडी मूक्यो अने मरुभूतिने पुरोहित कर्यो पछी कमठ दुःखी
थयो थको कोइ तापसनी पासेथी दीक्षा लेइ बारवर्ष पर्यंत तपस्या क
रतो पृथ्वीमां भमतो भमतो फिरी पाछो पोतनपुरनी बाहेर एक पर्व
तनी उपर आवी तपस्या करवा लाग्यो पिण गाममां न आवे गामना
सर्वलोक तेने तपसी देखी भोजनादिक आपे प्रशंसा करे ते वात मरु
भूतियें सांभलीने विचार्यो जे ए महारो महोटो भाइ छे में एने दु
ख दीधुंछे तेथी तापस थयो छे माटे हुं पिण जइने महारो अपराध
[illegible] आवुं एम चिंतवी घणां भोजनादिक रधावी साथे लेइ कमठने

समावता गयो तिहां जइ तेने पगे लागी पोतानो अपराध खमावी पो
छो वळे छ एटलामा कमठे मरुभूतिने ओलखी पोतानो वैर सभारी
ने मस्तक उपर एक महोटी शिला नाखी तेथी मरुभूति मरण पा
म्या ए पहेलो भव कह्यो ॥ १ ॥

हिवे ते मरुभूतिनो जीव आर्त्तध्यानथी मरण पामीने बीजे भवे विं
ध्याचलनी अटवीमा सुजातिक नामा हाथी थयो अने कमठनो जीव
पिण दुष्टकर्मना जोरथी ते पर्वत उपरथी उतरता नीचे त्रुटी पड्यो
तेथी मरण पामीने तेहज विंध्याचलनी भूमिमा पखीनी परे उडतो चाले
एवो कुर्कट नामे सर्प थयो हिवे एकदा अरविंद राजायें सध्या सम
यने विषे पचवर्णा वादला दीठा तेथी वैराग्य पामी दीक्षा लेइ इगीआर
अग भणी उग्र तप करता थका एकाकी विचरवा लागा एकदा सा
गरदत्त नामा सार्थवाहना सघनी साथे अष्टापद समेतशिखरनी यात्रायें
गया तिहां विंध्याचल वनमा एक सरोवर देखी सघे ते स्थानके उतारो
कर्यो एवामा मरुभूतिनो जीव जे हाथी थयो छे ते पोतानी हाथणीयो
ना परिवार सहित तिहा सरोवरने विषे जळ पीवा सारु आव्यो तेणे क्रो
धे करी सर्व सघने उपद्रव कर्यो तेथी सर्व सघवाराना लोक नाशी ग
या पछी साधु काउस्सग्गमा उभा हता तेने ते हाथी मारवा आव्यो ते
वारें मुनिना तप प्रभावथी तिहा थभाइ गयो ते अळगो उभो थको मुनि
ने जोवा लागो मुनिने जोता थका हाथीने जातिस्मरण ज्ञान उपन्यु
तेवारें पूर्वना भव देखी साधुने ओळख्या पछी सूढ लांबी करी साधुने
पगे लागो मुनियें पिण भव्यजीव जाणीने तेणे प्रतिबोध आप्यो तेथी
ते हाथी समकेत पाम्यो ते जोइने बीजा पिण घणा लोक तिहां प्रति
बोध पाम्या पछी हाथीये श्रावक धर्म अगीकार कर्यो श्रावकना बारे
व्रतनी अभिलाषा धरतो थको साधुने नमस्कार करी सरोवरमाथी पाणी
पीइने पोताने स्थानकें गयो साधुजी पिण तिहांथी विहार
दाराने साथे यात्रायें गया चारित्र पाळीने

हिवे मरुभूतिनो जीव हाथी ते एक दिवस उनालाना दिवसोमा मध्यान्ह समयें तृषायें पीडायो थको तळाव उपर पाणी पीवाने आव्यो तिहाँ कादवमा खूची रह्यो ते वखत पेहेलो कुर्कट सर्प पिण तृषायें पीडायो थको उडतो उडतो तिहा आव्यो तणे पाणी पीइने पछी हाथीने दीठो तेवारे आगला भवना वैरेकरीने हाथीनी उपर चढीने तेना मस्तकमा डंक मार्यो तेणी तेज वखत हाथीने झेर व्यापी गयु तिहा श्रावकधर्म पालवाना योगें शुभध्याने मरण पाम्यो ए बीजो भव॥२॥

हिवे त्रीजे भवे ते हाथी त्याथी मरण पामीने आठमें देवलोकें देवता थयो अने हाथी पडता सर्प्प पिण चपाइने मरण पाम्यो ते हाथीनी घातना पातकथी पाचमी नरकें जई नारकी पणे उपन्यो ए त्रीजो भव ॥३॥

चोथे भवें मरुभूतिनो जीव आठमा देवलोकथी चवीने जबूद्वीपना पूर्वमहाविदेह क्षेत्रमां सुकच्छ नामा विजयना वैताढ्य पर्वतनी दक्षिण श्रेणिमा तिलकवती नामा नगरीने विषे विद्युतगति राजानी कनकवती नामा स्त्रीनी कूखें पुत्र पणे उपन्यो तेनु करणवेग एवु नाम मातपिताये दीधु अनुक्रमें युवानअवस्थायें सुरुपा नामा स्त्री परण्यो, राज्यने पिण पाम्यो एकदिवसें सुरुपा राणी साथें सुख भोगवता गोखमा बेठा थका सध्या फूली देखी वैराग पामी दीक्षा लीधी पछी वैताढ्यना हेमशैल उपर काउस्सग्गमा उभा रह्या ते अवसरमा कमठनो जीव पाचमी नरकथी निकलीने ते पर्वत उपर सर्प थयो छे तेणे साधुने करड्यो तेथी साधुयें काल कीधो ए चोथो भव ॥ ४ ॥

पाचमें भवें साधु बारमें देवलोकें देवता थया अने सर्प्प मरण पामीने पाचमी नरकें गयो ए पाचमो भव ॥ ५ ॥

छठे भवें मरुभूतिनो जीव बारमा देवलोकथी चवीने आ जबूद्वीपना पश्चिम महाविदेहने विषे गधीलावती विजयमां शुभकरा नगरीनो वज्रवीर्य नामे राजा तेनी लक्ष्मीवती नामे राणीनी कूखे पुत्र पणे आवी मातपितायें तेनु वज्रनाभ एवु नाम दीधु अनुक्रमे तेना पितायें ते

राजगादे बेमाडचो ते यौवनवयमा राज पालतो थको संसारिक सु
जोगवे छे एक दिवसें शुजकरा नगरीना उद्यानमा श्रीक्षेमकर ना
तीर्थंकर आवी समोसर्या तेमने वजनाज नामा राजा वादवा गयो
तीर्थंकरनी देशना सांजली संसार अनित्य जाणी तीर्थंकर पासें
दीक्षा लेइ इगीआरे अंग जणया जवाचारनी लब्धीना बने करी सु
ज्ञेविमय माहे निज्वलन पर्वत उपर काउस्सग्ग रह्या ते अवसरमा क
जीव पांचमा नरकथी निकलीने वली विषमा संसारने विषे घीना
घणा जवभ्रमण करी ते पर्वतमा कुरंग नामा जिल्ल थयो छे ते
पोताना स्थानकथी बाहेर आहेडो करवा निकल्यो छे तेवारे वजना
साधुने देखी आगला जवना वैरने लीधे साधुने देखताज अशुकन थयु
क्रोध उपन्यो माटे साधुने सामु एक बाण मार्यु ते मर्मस्थानके ला
ते साधु शुजध्यान ध्यावता मरण पाम्या ए छठो जव ॥ ६ ॥

सातमे जवे साधु शुजध्याने मरण पामीने मध्यम ग्रैवेयकें देवतापणे
उपन्यो अने जिल्ल मरण पामी साधुनी वातना पापथी सातमें नरकें ग
ए सातमो जव ॥ ७ ॥

आठमे जवे मरुजुतिनो जीव मध्यम ग्रैवेयकथी चवीने आ जंबू
द्वीपना पूर्व महाविदेहमा शुजकर विजयने विषे पुराणपुर नामे नगर
कुलिशबाहु नामे वासुदेवनी सुदर्शना नामें राणीनी कूखने विषे
पुत्रपणे आवी उपन्यो माताये चौदसुपना दीठा पछी पुत्रजन्म थयो
सुपना विचार्ये सुवर्णबाहु एवु नाम आप्यु हिवे चौद सुपन देख
प्रजावथी ते सुवर्णबाहु चक्रवर्तिनी पदवी पाम्यो, छ खंड सा
चक्रवर्तीनी पदवी जोगवी, वृद्धावस्थामा तीर्थंकरनी देशना सांजली
लेइ वीश स्थानकनुं तप आराधन करी तीर्थंकर गोत्र बांध्यु
ते साधु एक दिवसें उजाडमा काउस्सग्ग ध्याने रह्या छे एवामा
जिल्लनो जीव सातमा नरकथी मध्यम आउखु पूरण करीने तिहां
थयो ते उजाडमा क्षीर गुफायें सिंह थयो ...

कंसने माथे लेइ पोते सैन्य सहित ते राजानी उपर चडी गयो तिहां
जइ कसन आगेवान करी तेनी साथ युद्ध कयु तिंहा कंसें सिंहरा
जाने बांधी लावीने वसुदेवजीने स्वाधीन कर्यो पाछल्थी समुद्रविजय
जीयें क्रोष्टुक निमित्तियाने पूछ्यु जे वसुदेवजी अने जीवयशानु जोडु
मिलतु छे के नथी? तेवारें निमित्तियें कह्यो के ए जीवयशा जे छे ते
परण्या पछी श्वसुरना कुलनो अने पोताना पिताना कुलनो ए बेहु
कुलनो क्षय करनारी छे माटे तुमे विचारीने काम करजो महारा वचन
मा लिगार मात्र संदेह जाणशो नही एवु सांभली निमित्तियाने शीख
आपी विदाय कर्यो अने निमित्तियानी वातथी चितातुर थइ थको
विचारवा लाग्यो जे वसुदेवजी जीत्यो एवु सांभलशे तो जरासंध पोता
नी पुत्री वसुदेवजीने आपशे अने ते कन्या तो बन्ने कुलनो क्षयकरनारी
छे तो हिवे आपणने एनो शो उपाय करवो एवो चितातुर थको बेठो
छे एटलामा तो वसुदेवजी पिण सिंहराजाने बांधीने समुद्रविजयजीनी
पासे लेइ आव्यो अने समुद्रविजयजीने चितातुर थयेलो देखीने पूछवा
लाग्यो जे तुमे शी चिंतामा बेठा छो? तेवारें वसुदेवजीने एकांतमा ले
इ जइने समुद्रविजयजीयें, जीवयशा बेहु कुलना क्षयन करवावाली छे
ए वात सांभली तेवारें वसुदेवजी बोल्या के ए सिंहराजाने में बांध्यो
नथी परंतु कंसें बांध्यो छे ए वात सांभली समुद्रविजयजी विचार
मा पड्या के ए वाणियाना छोकरामा एटलुं बल होय नही माटे तेनी
हकीगत पूछवासारु सुभद्र वणिकने बोलायो तेणे सर्व वृत्तांत कह्यो प
छी ते वाणियानी पासेथी मुद्रिका मगावी कंसने आपी सिंहराजास
हित कंसने राजगृहनगरे जरासंध पासें मोकल्यो जरासंधें पिण कंसने
पोतानी पुत्री जीवयशा परणावी दीधी अने वली कंसें तेनी पासेंथी
मथुरानु राज्य माग्यु तेवारें जरासंधें पोतानु सबल सैन्य आप्यु ते लेइ
कंसें मथुरामा जइ पोतानो पिता जे उग्रसेन तेने जीवतो काष्ठ
पांजरामा नाखी दीधो अने पोतें मथुरानु राज्य करवा लाग्यो हि

ते पोतानो पिता मातापितरामा पड्यो थको दुःख भोगवे छे एवु जोईने, एमनो न्हानो भाइ अतिमुक्तकनामे छे ते संसारथी विरक्त थयो अने दीक्षा लेइ चाली निकल्यो ॥

हिवे वसुदेवकुमरें पूर्वजन्ममा स्त्रीवल्लभ कर्म उपार्जन कर्यु छे ते पूर्व नी कथा कहे छे वसुदेवनो जीव पाछला भवमा कोइ एक गामने वि नंदीषेण एवे नामे कुलपुत्र हतो तेना मातापिता बाल्यावस्थामा मर पाम्या पछी ते मामाना घरमा रहीने महोटो थयो ते जेवारें युवान दशा पाम्यो तेवारें काळु रूप, कुदर्शनी, बिलाडाना जेवी न्हानी आंख, गरोळीना जेवु महोटु पेट, हाथीना जेवा मोटा दांत, उटना जे होट, वानराना जेवा कान, नासिका चापडी, त्रिखूणु कपाळ जो कुरूपी देखीने तेने कोइ कन्या आपे नही सर्व स्त्रीयो तेनी निंदा रे तेथी चिंतातुर थयो थको मामाना घरमा कामकाज करवु मूकी दीधुं, मामाये कह्यो के महारी सात पुत्री छे तेमाथी एक तुजने परणावीश तु चिंता करीश नही पछी मामाये पोतानी दीकरीयोने एनी साथे परणवानु कह्यो तेवारें ते साते जणीओ बोली जे अमे मरी जाइयें ते कबुल करी ये पिण ए दातलाने तो कदापि काले परणीये नही एवु सांभळी ते नंदीषेण मरवाने माटे कोइ एक पर्वत उपर चढीने त्याथी पडवा ला ग्यो एवामा एक मुनिराजे तेने वार्यो अने कह्यो के हे भोळा एवा म रणे मरवाथी ताहारू दुःख मिटे नही तिहा प्रतिबोध पामीने चारित्र लीधु अने साधुओनो वैयावच्च करवानो अभिग्रह धारण कर्यो वळी पोते मासखमणनी तपस्या करे अने साधुओनो पिण वैयावच्च करे एक दिवसें इंद्र महाराजे पोतानी सभामा ते नंदीषेणनी वैयावच्च करव आश्रयी घणीज प्रशंसा करी के एना सरखो वैयावच्चनो करनार बीजो कोइ नथी ते वातने एक देवता अणमानतो थको तिहा आव्यो तेणे अ तिसारना रोगें करी सहित गलेला एवा एक साधुनो रूप विकुर्वीने ए गामने बाहेर ... ... थको चीजा एक साधुनो रूप बना

ना लोका हवाधि विचार सर्व रही सजगाव्यो तेथी वसुदेवनी राजानी
उपर तथा पधानी उपर अमर्ष आणीने आँद राते एकलो नगरथी
बाहेर निकली गयो, अने विनाम्यु जे हिवेथी ए समुद्रविजयजी महा
नी आज्ञा मूकीने पिछवाडे शोध करवा निकले नही एवो कोइ उपा
य करु पछी नगरनी बाहेर एक मुडदाने बाळीने पोलना किमाड उपर
लाईना अक्षरोथी लिख्यु जे हे नगरवासी लोको! तुमे साचली हु तु
माने तथा महारा महोटा भाइने दुख थवाने माटे बळी भस्म थयो छु
हिवे तुमे सुख समाधीमा रहजो एवी रीतें लिखीने चालतो थयो प्र
भाते पोलीये पोल उघाडी तेवारें मुडदु बल्यु दीठु अने वसुदेवजीना लि
खेला अक्षर वाची समुद्रविजयजीने जइ कह्यो समुद्रविजय तिहां आ
वी ते कृत्य जोइ शोकथी मरवा लाग्यो तेवारे भवानादि लोकायें तेने
समजावी राख्यो तो पिण शोकमां गरकाव थयो थको राज्य करे छे
हिवे वसुदेव गामे गामे फिरवा लाग्यो ते ज्या ज्या जाय तिहां पूर्वे
करेला नियाणाना प्रभावथी अयत स्वरूपवान कन्याओ परणे एम
क्याक दश, क्याक वीस, क्याक सो, क्याक पाचसो कन्याओने परणे
ते सर्व विद्याधर राजाओनी पुत्रीयो तथा भीजा भूचर राजाओनी पु
त्रीयो तथा शेठ प्रमुख महोटा धनाढ्य लोकोनी पुत्रीओ जाणवी ए
म सर्व मिली बहोत्तर हजार कन्याओने वसुदेवजी परण्यो अने घणी
विद्याओ पिण शीख्यो, एवा अवसरमा रोहक राजानी पुत्री रोहिणी
नामे छे तेनो स्वयवर मन्डप मन्डाणो छे तिहां त्रण खडनो स्वामी ज
रासध आदि देइने सर्व राजाओ ते स्वयवर मडपें आव्या छे तेमज स
मुद्रविजय प्रमुख सर्व यादवो पिण आव्या छे ते रात्रीयें वसुदेवजीने रो
हिणी प्रज्ञप्ति विद्यादेवीयें आवी सुपनामा कह्यो के हे वसुदेव! रोहिणी
ना स्वयवर मडपने विषे तु जा अने तुजने ते रोहिणी परणशे वली रो
हिणी शिवाय बीजी पिण एक कन्या तु हजी परणीश एम सव तु
वे कन्याओनी प्राप्ति हिवे थवानी छे माटे तु का सुतो छो। प्रभा

तुं निहा जाजे एम कहीने पछी ते विद्यादेवीयें रोहिणीनी पासे जइ
ने पिण समजामा कह्यो के तु मृदग बनाववावाळा कुबडाने परणजे ॥
हिवे रोहक रायें मजातें स्वयवर मंडप शिणगारयो त्या सर्व रा
जा, राजकुमारो पिण शिणगार करी पोत पोताना नामना सिंहासनो उ
पर आवी बिराजमान थया एटलामां रोहिणी राजकन्या पिण पोताने
शरीरे सोल शिणगार करी सखीओये करी परवरी थकी हाथमा फूलमा
ला लेइने स्वयंवर मंडपमा आवी तेवारे सर्व राजा ते कन्याने देखवा
लाग्या अने छडीदारणी प्रतिहारिणी प्रत्येक राजाओना गुण रूपादिक
नो वर्णन करे छे कमके ते रोहिणी सती छे माटे काचमाथी सर्व देखी
के नही तेथी प्रतिहारिणीये सर्व राजाओने वर्णवी देखाड्या पिण
देवीना वचनने हृदयमा धरीने जे मृदग बजाडनारा कूबडानेरूपें व
ते आव्यो छे ते एज वसुदेव एज वसुदेव एवो मृदंगशब्द बजावे छे
ने जोइने तेना गळामा वरमाला पहेरावी तेवारे कुबडो नाचवा लागो
ने मुखथी एरीतें शब्दोच्चार करतो हुवो के अहो आ सर्व राजाओ
तो हु अधिक भाग्यशाली छु जेमाटे ए सर्व राजाओ बेठांरह्या अने
मने वरमाला मिळी गइ एवु जोइ ते मंडपमां आवेला सर्व राजाओ ते
या उपर क्रोध करीने, केटलाएकतो कन्याने निंदवा लाग्या, केटला
क कन्याना पितानी निंदा करवा लाग्या अने केटलाएक बोल्या अ
था कूबडाने मारीने एनी पासेंथी वरमाला खोंसीलयो फोकट बीजा
पर रोष करवाथी शु थाय एवु मांहोमाहे कहीने बोल्या के जेना सु
कूबडा पासे उभेला छे ते कूबडा पासेंथी वरमाला खोंसी लीये अ
तेनीज ए वरमाला पिण जाणवी एवु सांभळी सर्व राजाओना सेवक
कूबडा पासें आव्या तेने कूबडे सोनाना मृदगथी मारीने जमीन उप
नाखी दीधा ते देखी सर्व राजा शस्त्र लेइने मारवा दोड्या तेवारे वसुदे
सर्व राजाओने विरूप करी नाख्या कोइनी मूछो दाढी कापी
लेइने रुंड मुंड करी नाख्यो ते जोइ जरासध रायें

साहामुं जोयुं तेवारें समुद्रविजय राजा बकतर, टोप पहेरी धनुष्य बा
लेइने युद्ध करवा उठया तेने देखी वसुदेवें जाएयु जे भाइनी सार्थे
दवु नही तो हिवे हु महारूं स्वरूप मगट करी देखाडु नहीतों समा
धारो एवो विचारी कूवडानु रूप त्यागी मृदग नामी देइने समुद्रविजय पां
एक बाण नाख्यो तेमा वसुदेवनो तुमोने नमस्कार छे एवु सुवर्णमयी
अक्षरोथी लिखेलु हतुं ते वांचीने समुद्रविजयने विस्मय थयो अने विचा
जे वसुदेव मरण पाम्याने केइक बरस थइ गया तो आहीं वसुदेव किहांथ
आव्यो आतो कोइ इंद्रजालीयो मने छोलवतोतो नथी एवु विचारे
एटलामां तो वसुदेव पिण आवी पगें लागो तेवारें तो समुद्रविजयन
यें सारीपेठें ओलख्यो अने सर्व यादव सुखी थया जरासंध प्रमुख
आग्रो पिण सुखी थया, महोत्सव करीने वसुदेवने रोहिणी परणावी
या आगल पिण जेटली स्त्री परण्या हता ते सहुनी हकीगत सर्वे समुद्र
विजयजीने कही पाछलथी बहोत्तर हजार कन्याओने जेठी करी विम
ममां बेसाडी लावीने वसुदेव घरे आव्या ॥

हिवे स्नेहने लीधे वसुदेवजीने मथुरा नगरीमां कंस लेइ आव्यो श्वा
कंस तप। वसुदेवजी बेहु मथुरामां रहे छे एकदा देवकराजानी पुत्री देव
कीजी वसुदेवने परणावा आवी छे ते देवकीजी अने जीवयशा ए बे
सार्थे रमत करे पिण जीवयशा पोताना बापना बलना गर्वेकरी उ
न्मत्त छे हिवे जेवारे देवकीजीनो विवाह मंडाणो तेवारें जीवयशा म
दिरापान करी देवकीजीने पोतानी खांध उपर बेसाडी नाचे छे ए
मा अवसरमां कंसनो न्हानो भाइ अइमत्तो नामा साधु थयो छे ते
गोचरी सारु फिरतो थको कंसने घरे आव्यो तेने जीवयशायें दीठो
तेवारे मदोन्मत्त थइ थकी मुनिने कंठे वलगीने बोली जे हे देवरजी
तुमे भला अवसरमां आव्या छो तो हिवे एक राजकन्या तुमोने पि
ण परणावीश एवु बोलती थकी तेने मूके नही तेवारे तेने बीवराववा
माटे साधु बोल्या के अरे मूरखणी तुं शु नाचे कुदे छे जेने तें ताहारा

मारे उपर उमारो के तेनो सातमो गर्भ जे थाशे ते ताहारा भरतारने ताहारा पिताने मारवा वालो थाशे एवां साधुना वचन सांभली सा अकंठे वळगेली हती ते मूकी दीधो त्याथी साधुतो विहार करी गयो अने जीवयशाने मद उतरी गयो मनमां शंका पडी जे साधुनु वचन खो टुं थाय नही पछी ते वात एकांते जइ पोताना भरतार कसने कही कंसे पण ते वात सत्य करी मानी तोपिण ते वचन जुठु करवाने अर्थे विचा रयु जे वात कोइने जाणवामां नही आवे तेवीरीतें एनो उपाय करवो ए वु विचार करी एक दिवस वसुदेवजीने कंसे राजी कर्यो तेवारे वसुदे वजी बोल्या हे कंस! ताहारा उपर हु तुष्टमान थयो छुं माटे मांग माग जे मागीश ते हुं आपीश एवुं सांभली कंस बोल्या जे हे मित्र! तु तुष्ट मान थयो तो देवकीजीना पहेलवेला साते गर्भ मने आपजे ते वात वसु देवजीयें सरल चित्तथी मान्य करी अने कंसने कह्यु के हुं तुमोने सात गर्भ आपीश एवीरीतें वसुदेवजी वचनथी बधाइ गया, पछी ते वात दे वकीजी आगल कही तेवारें देवकीजीयें अइमत्ता मुनिना कहेला वचन वसुदेवजीने संभलाव्यां अने कह्यो के आ कंस आपणा पुत्रोने लेइ मा री नाखशे ते सांभली वसुदेवजीने पश्चाताप थयो पिण वचने बधाइ ग यां त्यां शो उपाय? सत्पुरुषनु बोलवु फिरे नही माटे सत्पुरुषें जे बो ल्यु ते विचारीने बोलवु हिवे एवा अवसरमा भद्दिलपुर नगरनो रेहेवासी नाग नामे शेठ छे तेनी सुलसा नामा स्त्रीने मृतवच्छा दोष छे तेथी ते अ णजीवता पुत्रने जन्म आपे छे माटे ते स्त्रीयें अठम तपकरी हरणीग मैषी देवनु आराधन कर्यु ते देव त्रीजा उपवासमा प्रगट थइने बोल्यो जे मने शावास्ते बोलाव्यो तेवारें सुलसा बोली के हे देव मुजने मृतक पु त्र आवे छे ते जीवता करी आप तेवारे देवता बोल्यो कोइनु कर्म दूर क रवाने हु समर्थ नथी माटे ताहारा पुत्रतो जीवता रहेशे नही ए वात नि श्चयात्मक छे तथापि तारी पुत्र सबंधि इच्छा हु पूर्ण करी आपीश ए वु कहीने देवता जतो रह्यो पछी कर्मयोगें देवकीजी अने सुलसा

हुने सार्येज गर्भ रह्यो अने सार्येज जन्म्यो तेवारें हरणीगमेषीयें देवकी जीना जीवता पुत्रो लावीने सुलसानी पासें मूक्या अने मूवेला सुलसाना पुत्र ते देवकीजीनी पासे लावी मूक्या ते मूवेला बालकोने कसना चोकी दारोये लेइ जइने कसने स्वाधीन करचा कसें तेमने सिछा उपर पग ही मारी नारया एवीरीतें देवकीजीना छ पुत्र सुलसानी पासे वाढे पा म्या अने सुलसाना मृतक पुत्र देवकी पासेथी लेइने कसें मारचा ते दे वकीजीयें पूर्वेला भवमा पोतानी शोक्नां सात रत्न चोरी लीधा हतां तेथी शोक दिलगीर थइने जेवारे घणु रुदन करवा लागी तेवारें एक रत्न तेने पाछु दीधु हतु ते कर्मना योगें अनिकयशा, अनत सेन, विजय सेन, निहतारि, देवयशा अने शत्रुसेन ए छ पुत्र देवकीजीना लेइने हर णीगमेषी देवें सुलसाने आप्या हिवे देवकीजीनो सातमो गर्भ सात सु पने सुचित पाचमा देवलोकथी चवीने देवकीजीनी कूखें आवी उपन्यो ते गर्भ जन्मताज लेइ जवाने माटे कसना माणसो चोकीदार बेठेला ह ता तेथी देवकीजीयें वसुदेवजीने कह्योके आ सातमो गर्भ उत्तम छे मा टे कोइपिण उपाय करीने कदापि एने माटे जुठु बोलवु पडेतो जुठ बो लीने पिण आपणें, ए गर्भ राखवो ए वात वसुदेवजीयें सांभलीने पछी वसुदेवजी जे वखत देवकीजीने परण्या हता ते वखत जे देवकराजायें दायजो आप्यो हतो तेमा गोकुलगाम पिण सार्थे आप्यु हतु ते गो कुल गाममां नद नामें गोप तथा तेनी यशोदा नामें स्त्री ए बे रहे छे ते पिण ते दायजामा आवी गया हता एटलामा देवकीजीनें गर्भ थयो ते वर्णे कालो हतो तेने देखी कृष्ण कृष्ण एवु कहीने वसुदेवजी तने तिहांथी छानो लेइने निकली गयो-ते वखत कसें बेसाडेला चोकीदारो ने निद्रा आवी गइ हतीं आगल जता दरवाजो खोलीने निकल्यो ते वारें उग्रसेन बोल्या आ कोण छे वसुदेव बोल्या आ ताहारु काष्टनु पिंजरो भागीने तेमाथी तुजने मुक्त करनार छे एवु कही आगल च ल्यो मार्गमा यमुना नदीयें पिण मार्ग आप्यो ते नदी उल्लघीने गोकु

ना नड़ यशोदाजीने ते बाळक सोंप्यो अने ते वखत यशोदाजीनी
ने पुत्री आवी छे ते लेइ आवीने देवकीजीने सोंपी पाछळथी कसना यो
गयत निद्रामाथी जागया ते बोल्या शु पुत्र आव्यो के पुत्री आवी ते
वारे वसुदेवजीये पुत्री आपी ते कर्से लेइने तेनु नाक कापीने पाछी वसु
देवजीनें आपी आ ठेकाणे अन्य दर्शनीओ कहे के कन्याने पिण शि
ला उपर पछाडी ते वीजळी थइ गइ ए वात मिथ्या छे हिवे कस नि
श्चित थयो आणीगम गोकुलमा यशोदाजी वसुदेवना कहेवाथी कृष्णनु पु
त्रनी परे पालन पोषण करे छे कृष्ण पिण सुखें सुखें वृद्धि पामे
छ हिवे देवकीजीने कृष्णजीने देखवानी घणी चाहना रहे छे पिण कं
सनी बीकने लीधे पन्नर पन्नर दिवसें अथवा महीने महीने आज वच्छ
बारश छे आज गोत्राट छे आज काजळी त्रीज छे एवा नवा नवा उ
स्रव करी करीने गोकुलमा जाय तेने लीधे ते दिवसो सर्व मिथ्यात्वीओना
पर्व थया पछी तिहा जइ देवकीजी श्रीकृष्णने रमत करावे, दूध धवरावे,
अने यशोदाजीने कहे के ताहारो पुत्र मने घणो वह्लभ लागे छे एवा व
चन कही पाछी घरे आवे ए रीतें कृष्णजी बाललीला करता थका
यशोदाजीना दही दूध ममुवना वासण ढोली नाखे फोडी नाखे इत्यादिक
अनेक प्रकारनी रमत करतो विचरे छे एकदा वसुदेवजीयें देवकीने क
ह्यो के तुमारे घणी वखत तिहा जावु नही कारणके जो कसने ए वात
नी खबर पडशे तो वळी काइक उत्पात करशे हिवे जेवारे कृष्ण सा
त आठ वर्षना थया तेवारे तेने कलाओ शीखववा सारु रोहिणीना पु
त्र बलदेवजीने कसथी छानो मोकल्यो अने ते छानो रहेवानो हेतुभूत
कससबधि सर्व हकीगत बलदेवजीने निवेदन करी एम बलदेवजी अने
कृष्ण बेहु जण गोकुळमा नदने घरे रहे छे अने बलदेवजी श्रीकृष्णने
विद्याओ जणावे छे सर्व कलाओ शीखावे छे एम करता श्रीकृष्ण चौ
दे वर्षना थया हिवे राम कृष्ण बन्ने भाइओ तिहा गोवाळीआओनी सा
थे नाचे कूदे गाये बजावे नीला पीला वस्त्र पहेरे,

मोरपीछ राखे, मुरली बजावे, गोपीयोनी साथे गाये, आखो दिवस रमत करे, साजना घरे आवे एवो अवसरमा वली एक दिवसें कंसना मनमा एवी वात आवी के साधुनु वचन जूठ थयो के नथी थयो तेनी चो कसी करवा माटे निमित्तियाने पूछ्यु के मने कोइ मारनार छे किंवा नथी? ते साजली निमित्तियो बोल्यो के साधुन वचन फुठु नथी ता हारो शत्रु कोइक जगायें महोटो थइ रह्यो छे पिण ताहारो शत्रु मर ए पाम्यो नथी तेवारे कसे पूछ्यु ते केवी रीतें महारा जाणमा आवे निमित्तियो बोल्यो जे अरिष्ट नामा बदलने दमन करशे, जे कालीनाग ने वश करशे, जे ताहारा केशी नामना घोडाने दमशे, जे खर अने मेष नामा खरोने मारशे, जे चपोत्तर अने पद्मोत्तर नामा हाथीओने मारशे, जे सारग धनुष्य चडावशे, जे चाणूरमल्ल अने मुष्टिकमल्ल ए बेने मा रशे ते ताहारो मारनार जाणजे ए वात साजली कसे तेनी निगाह कर वाने माटे पडह बजडाव्यो के जे कोइ सारग धनुष्यने चडावे तेने म हारी बहेन सत्यभामा हु परणावु ए वात साजली घणा राजा तिहा जे ला थया एवा अवसरमा वसुदेवजीनो एक अनाधृष्ट नामा महाबलवत पुत्र छे ते पिण धनुष्य चडाववाने जाय छे मार्गमा सांज पडी तेथी रात्रे श्रीगोकुलमा रह्यो तेने बलभद्र ओलखतो हतो तेथी तेनी घणी सेवा करी प्रभात थयो तेवारें अनाधृष्ट बलभद्रने कहेवा लाग्यो जे एक व लावो आपो तो मने मथुरानो मार्ग देखाडी आवे ते साजली बलभद्रें श्रीकृष्णने अनाधृष्ट साथें मार्ग देखाडवा मोकल्यो मार्गे जता अनाधृष्ट नो रथ वृक्षोमा अटकी रह्यो ते अनाधृष्टथी निकल्यो नही तेवारे कृ ष्णजीयें ते बेहु वृक्षोने लात मारी उखेडी नाख्या अने मार्ग करी रथ बाहेर रस्ते चडावी दीधो ते जोइ अनाधृष्टीयें तेने बलवान जाणी रथ मा बेसाडी मथुरामा लेइ गयो ते तिहा जइ अनाधृष्टी धनुष्यने हाथ फेरस वा लाग्यो दैवयोगथी पाछो पड्यो तेवारे तेना उपर लोक हस्या श्री

अनाधृष्टीनु हास्य थतु देखी ते धनुष्यने सहेज उपाडीने चडा

ने कंसना पासे रही हती तण श्रीकृष्णने घरमाग पराती
तेनो वसुदेवनी घनादष्टी उपर क्रोधकरी कहेवा लाग्या के एने
पुत्र थशे आठमो लेइ आव्यो जा हमणाज पाछो मुकी आव ते मा
पछी घनादष्टी छानोमानो कृष्णने गोकुलमा लेइ आव्या एटला दिव
समा आ बळजद्र महारो जाइ छे एवु श्रीकृष्णना जाणवामा न हतु
हिवे अनुक्रमे श्रीकृष्ण सोळे वर्षनो थयो एवा अवसरमा ५ मे
कशी थाडो अन मेष घोडो तथा अरिष्टनामा बलद ए सर्वे गोकुलमा
मोकल्या ते नइ गोकुलमा उपद्रव करवा लाग्या तेमो श्रीकृष्णे मारी
नाख्या एवा अवसरमा वळी मथुरामा कंसे मल्लनो अखाडो माड्यो
त्यहा घणा मल्ल एकठा थया छे तेमा एक चाणूरमल्ल अने बी
जो मुष्टिकमल्ल ए बे मल्ल घणा बळवान छे ते खबर कंसे जाण्यु
के मनुष्य नगारवावाळाने मे सारीपेठे ओळख्यो नही माटे हिवे कोइरीते
ते अहींहीं आवे तो हु तेने मारी नाखु एवु विचारी एक बाजु कस बेठो र
ह्यो छे एवामा श्रीकृष्णे साजळ्यु जे आज मल्लयुद्ध छे ते हु देखवा जा
उं एवु चिंतवी बलजद्रने गुरु जाणी पगे लागी बोल्यो स्वामी आप
णा बे जणो मथुरामा मल्लयुद्ध जोवा जाउं तेवारे बलजद्रे जाण्यु जे
त्यहा जवाथी कदाच कंसनी साथे युद्धथइ जाय माटे कृष्णने जाइपणा
नी वात जणावी आपु एम विचारी बलजद्र बोल्यो हे यशोदा अमो
ने स्नान करवा माटे उन्हु पाणी आप अमे आज मल्लयुद्ध देखवा जइ
शु ते वखत यशोदा बीजा कोइ काममा पडी हती तेथी बलजद्रनु व
चन साजळ्यु अण साजळ्या जेवु करी दीधु तेवारे बळजद्र बोल्यो
केम यशोदा तु महारा जाइनु पाळण पोषण करवाथी शु राणी बनी
बेठी दासपणु चूकी गइ जे थकी महारी वातने अंगीकारी नही ए
वु कहीने श्रीकृष्णने साथे लेइ बलजद्र बोल्यो के चालो आपणे जमु
नाथाहेज स्नान करीशु पछी मथुरामा जइशु एम यशोदाने कडवा व
चन बलजद्रे कह्या तेथी श्रीकृष्ण नाराजी थयो तेवारे मार्गमा बळजद्रे

छ जइने मारवा आदिक कंस संबंधि सर्व वृत्तांत कह्यो तथा आपणे
बे भाइनी माताओ जुदी जुदी छे परंतु बाप एकज छे तुजने कंसना भ
यथी इहां श्रीगोकुलमां राख्यो छे ते वात सांभळीने श्रीकृष्ण
बोल्यो के जो आजने आज हुं म्हारा छ भाइने मारवानुं वैर कंस
पासेथी लेवुं नीज हुं खरो कृष्ण' एम कही मार्गे यमुना नदीमा स्ना
न करवा प्रवेश कर्यो तेवारे कालियद्रहनो कालो नाग आव्यो तेने श्री
कृष्णे पकडीने नाक वींधी नाकमा कमलनेलथी नाथी तेना उपर चढी
असवार थइने घोडानी परे दोडाव्यो आ वात लोकोये जइ मथुरामा ए
क बीजानी पासे करी कंसे पण लोकोना मुखथी सांभळी जे आजे नं
द गोवालीयाना पुत्रे कालिनागने दम्यो एटलामांतो राम कृष्ण बेहु
भाइ घणा गोवालीयाना वृंदे परवर्या थका नगरने बारणे आव्या ति
हां चंपोत्तर अने पद्मोत्तर ए बे हाथीये तेमने रोक्या तेथी बधा गोवा
लीया डरवा लाग्या पछी बलभद्रे अने कृष्णे मिली हाथीओना दंतो
सज्ज उखेडी नाखी हाथीओने उपाडी दूर फेंकी दीधा तेथी हाथीओ म
रण पाम्या पछी कृष्ण बलभद्र बेहु जण मल्लने अखाडे आव्या तिहां एक
राजाने मंच उपरथी नीचे पटकीने ते मंच उपर बेठा त्यां बलभद्रे श्रीकृ
ष्णने पोतानुं सर्व कुटुंब बताव्युं वली कंस पण देखाड्यो अने कह्यो
के ए कंस आपणोज छे परंतु दुष्ट छे एटलामा कंसे पण चाणूरमल्ल अ
ने मुष्टिकमल्ल ए बे ने युद्ध करवा तयार कर्या अनुक्रमे कृष्णजीये
चाणूरमल्लने मार्यो अने बलभद्रे मुष्टिकमल्लने मारी नाख्यो ए री
ते बेहु मल्लने मरण पामेला जोइ कंस क्रोध करीने बोल्यो अरे सुभटो
जेणे ए बन्ने सर्पने पालण पोषण करी महोटा कर्या छे ते नंद अने य
शोदानी बेहुने बांधी पकडीने इहां लेइ आवो एटले घाणीमा पीली ने
खावींये एवुं कंसनुं बोलवुं सांभली श्रीकृष्ण रोषारुण थया थका कु
दको मारीने कंसने कहेवा लाग्या अरे दुष्ट म्हारा छ भाइने तें मार्या
हुं वैर लेउं छुं एम कही कंसनी चोटली पकडी, नीचो नाखी

रे, बूकी मारी तथी कंस मरण पामी नरके गयो यादवोये मिली उग्र
सेन राजाने पींजरामांथी बाहेर काहाडी छूटो करी सभामा लेइ आवी
बेसाड्यो, तेवारे लोकाने जणायु जे आ राम अने कृष्ण बेहु वसुदेवना
पुत्र छे पछी उग्रसेन, राजाये सोल वर्षनी उमरवाला श्रीकृष्णजीने न
वने वर्षनी उमरवाली सत्य भामाने परणावी दीधी हिवे यादवोये जरास
धनी बीके नासीने जीवयशाने पूछयुं के तसने आशिर्वाद करीये?
त्यारे जीवयशा बोली राम कृष्ण तथा बीजा पण घणा यादवोनी
हत्या करीने दाह देवाशे तुमे जुओतो खरा शु थाय छे! ते सांभली कृ
ष्णजी बोल्या के अरे नारी शुं ताराथी थवानुं छे एवु सांभली जीवयशा
तिहांथी निकली परबारी राजगृहमा पोताना पिता पासे जइ त्यारे
रडवे लागी अने कह्युंके ताहारा जीवता यादवोये ताहारा जमाइ
ने मारी नांख्यो यादव घणा उन्मत्त थया छे ते सांभली जरासंध बोल्यो
हे पुत्रि! तुं धीरज धर जे थवानु हतु ते थयु हिवे ए राम कृष्ण बेहु म
हारा अपराधी छे ते बेहुने रावी महारे स्वाधीन करी जाशे तोज याद
व महारा राज्यमा रही शकशे नहीकातो हु ए सर्व यादवोने मारी ना
खीश एवी रीते जीवयशाने दिलासो आपी संतोषी पछी एक सोमनामा
सेवकने यादवोनी पासे जरासंधे मोकल्यो ते यादवो पासे आवीने समु
द्रविजय प्रमुख राजाओने कहेवा लाग्यो के हे यादवो! तुमे महारी
वात सांभलो के, जे थवावालु हतु ते थइ गयुं हिवे मात्र एक राम अने
बीजो कृष्ण ए बे गोवालीयाना छोकरा छे तेने बांधीने महारी साथे
श्री जरासंध पासे मोकली आपो ए दासोने लीधे तुमारा सर्व यादवकु
लनो क्षय करावो नही, ते सांभली समुद्रविजय बोल्या अरे सोम! म
हजनो नथी जे एवा गुणवान अने बलवंत पुत्रोने मरावाने अर्थे अमे
तुमने आपी दइये तो हिवे अमे वृद्ध थया ते केटला एक काल पर्यंत
जीवता रहीशु माटे जे थवानु हशे ते थशे अमे काइ अमारा पु
त्रो नही मेली बलभद्र बोल्या के अरे सोम तुं पिताश्रीनी,

मागता लज्जातो नथी शुं ? अरे हमी तो अने अमारा एक भाइ म, थानु कंस पासेथी वैर लीधु छे परंतु पाच भाइ नीना मा चा छे ते वैर लेवु बाकी रह्यो छे माटे तुं जीवयशानी चाहना राखतो हाथ तो हाथी चाल्यो जा नही का तने तो हमणाज फल देश,ईश एवु मास्त्र सोमनामा सामत बीक पामीने जरासध पासे गयो पाछलथी यादवो प्रभ पाम्या थका कोष्टिक निमित्तियाने पुछय के अमारा जय क्या थ ते देशा अमने बतावो तेवारें निमित्तियो बोल्यो तुमारा कुळमा राम ने कृष्ण ए महा पुरुषो छे वली नेमीश्वर भगवान तीर्थंकर छ माटे तु मारो कोइ रीते बिगाड थवानो नथी परंतु हाल तुमे कृष्णने राजा क रीने पछी पश्चिम दिशायें जाओ ते मार्गमा जता जता जे स्थानके सत्य भामा, पुत्रनु जोडलु प्रसवे ते स्थानके तुमारे रही जावु तिहा तुमारी वृद्धि थवावाली छे पिण आहीं तुमारे रहेवु नही एवुं सांभलीने शौरीपुरथ समुद्रविजय प्रमुख इग्यारे कुलकोटी यादव निकल्या अने मथुराथी उ ग्रसेन प्रमुख सात कुलकोटी यादवो एकठा थइने सर्व कुटुबसहित से रठ देश तरफ चाल्या हिवे तिहां सोम नामा सामते राजगृह नगरे इ राजा जरासंधने समाचार विदित करया जरासध पिण सैन्य मज करी यादवो उपर चढाइ करवा तयार थयो ते वखत जरासधनो पुत्र कालकुमर बोल्यो के जो महारु नाम काल छे तो हु सर्वे यादवोने का लरूप थइ मारी नाखीश जो यादवो आकाशमा उचा गया हशे तो निसरणी माडीने उपर आकाशमा जइ यादवोनो नाश करीश अने जो यादवोयें जमीनमा प्रवेश करयो हशे तो जमीन खोदीने हु पिण प्रवेश करी तेमने मारीश जो पाणीमा यादवोयें प्रवेश करयो हशे तो हु पिण पाणीमा प्रवेश करी तेमने मारीश तथा जो अग्निमा यादवोयें प्रवेश करयो हशे तो हु पिण अग्निमा प्रवेश करीने यादवोनो नाश करीश एवु पण करी पाचसो भाइयो सहित पिताने नमस्कार करीने कालकुमरें यादवोनी पिछवाडे चढाइ करी अने जीवयशाने पिण जती वखते कहेवा

गयो, के महारा वनेवीजीनु वेर यादवो पासेथी लेउ तो महारु नाम
प्रउ करी गणने तेवारें जीवयशायें आशीर्वाद आप्या अने कह्यो
के जइ ताहारु मृत्यु थाय तो चले थाओ पिण यादवोनो क्षय करजे
दीनें मेम धवानुं छ तेम जीवयशाना मुखमाथी वचन पिण निकल्यु हि
पावनी भाइओसहित घणी ताकीदथी कालकुमर चल्हो ते चालता
थका नेवारें यादवोथी एक दिवसना मुकाम जेटले अंतरें आवी रह्यो
ते समा श्रीनेमीश्वर तीर्थंकर, कृष्ण वासुदेव, राम बलदेव बीजा पिण
।। तद्व मोक्षगामी एवा घणा जनो यादवोना परिवारमा छे तेमना
पुन्य-योगें तेवी थकी यादवोनी कुळदेवी आवीने यादवोनु मुकाम
अ, कालकुमरनु मुकाम अे जे स्थानके हतु तेना विचला मध्यभागमा
ऐ पर्वतनी रचना करी ते पर्वतना मार्गमा एक चिता सिलगावी ते
चेताना पासे बली एक डोशीनु रूप करीने कुळदेवी रुदन करती थ
ई बेठी तव कालकुमरें आवीने पूछ्यु के आ चितामा कोण बल्या छे
अने तु शावास्ते रुदन करती रहे छे तेवारे कुळदेवी छल करी रोती
थकी बोली के हे पुत्र ! कालकुमरना भयने लीधे सर्व यादवोनु कुटुंब
आ चितामा बली भस्म थइ गयु छे कोइ पिण यादव रह्यो नहीं माटे
हुं तेमनी कुळदेवी छु सो हिवे मने कोण पूजशे ए कारण माटे मुजने ब
..व आप्यु तेथी रुदन करु छु ते वात साभली कालकुमर पोताना
मैं करेली प्रतिज्ञा राखवा माटे घणा सामंत तथा केटलाएक भाइ
ओसहित तरवार काढीने यादवोने मारवा सारु अग्निमा पड्यो अ
ने बली भस्म थइ गयो पछी मभाते बाकी रहेला जरासंधना लश्कर
ने ... लोकी देवमाया जाणीने पाछा फिरी राजगृहे जइ जरासंधने
... वात कह्यो हिवे आही सर्व यादवो मोन मनामा खुशी थया
... पश्चिम समुद्रना तट उपर आव्या तिहा सत्यभामायें भ्रमरनामा
पुत्रनु ... जण्यु तेवारे नैमित्तिकना कहेवा मनाणे यादवो सर्व तिहां
... रह्या पछी कृष्ण महाराजें अट्ठम तप करी सुस्थित नामा

प देवनुं आराधन करयुं तेथी देवता प्रत्यक्ष आवी उभो रह्यो.तेणे
तेथी श्रीकृष्णे रहेवाने सारु जगा मागी तेवारे देवतायें कह्यो इंद्रमह
राजने पूछीने तुमोने जगा आपीश एवुं कहीने सुस्थित देवता इंद्र
द्वाराज पासे जइ सर्व वात कही इंद्रे धनद नामें भंडारीने मोकल्यो
ते आवीने बारे योजन लांबी अने नव योजन पोहोळी एवी एक द्वारि
का नगरी बनावी तेने फिरतो अढार हाथ उंचो अने बारे हाथ जाडे
तथा नव हाथ धरतीमां उंडो एवो सोनानो कोट बनाव्यो ते कोटने
रत्नना कांगरायें करी शोभित कर्यो वळी ते कोटनी चारे बाजु फिरतं
ख्याइ करी तथा वाडी बाग बगीचाओ सहित एवो ते सुंदर कोट बन
वी पछी धनदें ते द्वारिका नगरीमां श्रीकृष्णने वसवानी आज्ञा आप
ते नगरीमा एक सातभूमियालुं कल्प वृक्षोनी वाडसहित एवुं घर श्र
कृष्णजीने रहेवा सारु बनाव्युं वळी ते घरनी एक बाजु समुद्रविजय
दिक दश भाइओने माटे घरो बनाव्या तथा ते कृष्णनी घरनी बीजी ब
जुमा वळी उग्रसेननुं घर बनाव्युं तेनी बाजुमां वळी बीजा सर्व भाइओ
ना घर बनाव्या ते सर्व घरो त्रण दिवस पर्यंत धन, धान्य, वस्त्र, आ
ण प्रमुख उत्तम वस्तुओंथी भरीने श्रीकृष्णने स्वाधीन करी धनद देव
ता स्वर्गमां पोताने स्थानके गयो हिवे सर्व यादवोये मिळी द्वारिका नग
रीमां वास करयो तिहा यादवोना कुटुंबोनी वृद्धि थवा लागी ते अनु
क्रमे पचास वर्षनी मुदतमां अढार कुलकोटी यादवोमांथी बधाने छप
न्न कुलकोटी यादवोनी वस्ती थइ एवा अवसरमां राजगृही नगरीमां कोई
रत्नकंबलना व्यापारीओय आवीने एवी वात करी के आ नगरीमां काइम
ल नथी सत्वविनानी निर्धन लोकोये करी भरेली छे कारण के अमाराग्न
कंबलना लेवावाला पिण कोइ आवा शहेरमां निकल्या नही अने द्वारिकामां
यादवो वस छे ते महा सुखी छे एवीनेते द्वारिका नगरीनी प्रशंस
जरासंधे सांभळीने विचार्युं के महारा वैरी हजी लगण जीवता छे मा
टे हिवे एनो नाश करु, एम चिंतवी सेना लेइ युद्ध करवा चाल्यो

थयांथी नारद ऋषीयें जइ श्रीकृष्णने कह्यो के तुमारे चेतवु होय
तो जरासंध तुमारा उपर चढी आवे छे ते सांजली श्रीकृष्ण
मना तयार करी लडवाने तेनी सामे चाल्या तेत्रो पचासरा गा
मी पासे आवी पडाव दीधो मुकाम कर्यु अने जरासंधनु लशकर
पण पचासरा गामथी च्यार योजन दूर आवी पोहोच्यु तेमां जरास
धनु लशकर चक्रव्यूहना न्यायथी अने श्रीकृष्णनु लश्कर गरुडव्यू
हना न्यायथी एवा आकारे आवी पडाव दीधो ते बेहु लश्करने माहो
माहे मोहोटु युद्ध थयु लाखो गमे सुजटो मरण पाम्या छे इत्यादि वि
स्तर अधिकार श्रीनेमिनाथचरित्रादि अनेक ग्रंथोथी जाणी लेवो, आ
ग्रंथनो विस्तारना जयथी लिख्यो नही हवे ते बेहु तरफवाला सुजटोनी छ
पुस्तक श्रीकृष्णने जीतवो आपणने कठण थइ पडशे एवु जरास
े विचारीने कोइ उपाय न मूकता जरा नामे एक बाण हतो ते श्रीकृ
ष्णनी सेना उपर मूक्यो तेथी श्रीकृष्णनी सर्व सेना मुखे लोही वमनी
मूर्छा पामी गइ, तवारे श्रीनेमिनाथनाना कहेवाथी श्रीकृष्णे अठम त
प करी धरणेंद्रने आराध्यो धरणेंद्रे आवीने आगामिक तीर्थंकर श्रीपा
र्श्वनाथनी प्रतिमा श्रीकृष्णने आपी तेना नमण निमित्ते श्रीकृष्णनी
सुदृढ देवें आपेलो शंख वजाव्यो अने धरणेंद्रे आपेला बिंबनु स्था
पन थयु तिहां श्रीशंखेश्वर एवे नामे तीर्थ थयु ते स्थान रणमां मो
टु छे कोइक आचार्य वली एम पण कहे छे के श्रीकृष्णनी त्रण दि
वस उपवास करी बेठा ते त्रण दिवसपर्यंत श्रीनेमिनाथ स्वामीयें सग्राम
कर्यो वली इंद्र महाराजे मातली नामा सारथि सहित रथ मोकल्यो
तेमां बेसी नेमिनाथजीयें शंख वजाव्यो तेथी जरासंधनी सेना शि
थिल थइ गइ, अने त्रण दिवस श्रीशंखेश्वर पार्श्वनाथनी मूर्तिनो न्हवण
पोतानी सेनामा श्रीकृष्णे छांटयु तेथी श्रीकृष्णजीनी सेना सज्ज थइ छे
वर कोइ पण रीते श्रीकृष्णनी जीतवानो उपाय जरासंधने
तेवारे श्रीकृष्णने मारवा सारु जरासंधे पोतानु चक्र तेनी

तेथी काइ श्रीकृष्णने बिगड्यु नही पिण उलटु ते चक्र श्रीकृष्णने प्र
ण प्रदक्षिणा आपीने तेमना हाथमा आवी बेठो पछी तेज चक्र लेइ
श्रीकृष्णे जरासंघ उपर चलाव्यु तेणे जरासंघनु मस्तक छेदी नाख्यु
ते वखत देवताओ आकाशमा देवदुंदुभी बजावीने बोल्या जे श्रीकृष्ण
नवमो वासुदेव थयो, ते वात सांजळी समस्त जरासंघनी सेना आवीने
श्रीकृष्णजीनी सेवामा हाजर थइ पछी श्रीकृष्ण द्वारिकामा आव्या
सुख समाधिमां त्रण खंडनु राज्य जोगवता तिहा रह्या छे बहोत्तर कुल
कोडी यादव द्वारिकामा रह्या छे अने साठ कुलकोडी यादवो द्वारिकानी
बाहेर रहे छे तथा महा पुरुष समुद्रविजयादिक दशे दसार तथा बल
देवादिक पाच महावीर एटले महोटा योधा, तेमज उग्रसेनादिक सोल
हजार राजाओ तथा प्रद्युम्नादिक साडा त्रण क्रोड कुमर तथा सांबा
दिक सोल हजार दुर्दांत कुमर अने वीरसेन प्रमुख एकवीश हजार वीर
तथा महासेन प्रमुख छप्पन्न हजार बलवंत राजाओ ए सर्व द्वारिकामा
वसे छे, वली रुक्मिणी प्रमुख बत्रीश हजार राणीयो तथा अनंगसेना
प्रमुख अनेक गणिकाओ एवा परिवार सहित परवरयो थको महोटु राज्य
श्रीकृष्णजी करे छे एवा अवसरमा इंद्रमहाराजे श्रीनेमिनाथजीना बळनी प्र
शंसा करी तवारें त सजामा कोइ मिथ्यात्वी देव इंद्र महाराजना वचनने
अन मानतो थको गिरनार पर्वत उपर आव्यो तेणे त्या सुरधारा
न मे नवीन नगर वसाव्यु तेमा ते देवता पोते आवीने मनुष्यनु रूप
धारण करीने अने द्वारिका नगरी मा रहेनारा लोकोने मिलमलें थ
पुरु दु:ख देवा लाग्यो, उपद्रव करवा लाग्यो, ए वात सांजळीने महा
अभिमानी परनार एवा अनाधृष्टि ते देवने पकडवा सारु गिरनारनी
उपर ते देवें वसावेला नगरनी उपर चडी आव्यो, तेने देवतायें देव मा
यायें करी जीती लावी अने बांधीने पोताना नगरमा लेइ गयो, ए वात
सांजळीने समुद्रविजयजी तेनी साथे लडवाने माटे जवाने तयार थया
तेवारें राम कृष्ण बे भाइओए समुद्रविजयने वर्ज्या, अने पोते त्या

रानी रूबर पिण रही नहीं रात्रीये कोइएर आवसेने प गई धर्म लाभ दीधो ते आवक मन गभोर छे मातापिता ममानने ते या रानी धर्म लाभ सांभलीने विचार्यु में शीद कर्मना वशथी मा मुनु मन डगमग थइ गयु छे एवु भार्णाने निहाल्या उठ्यो गइ मु निने वन्दना करी जोयुं तो साधु महातपस्वी देखाय छे तो आवक पूछ्यु महाराज आपने शु जोइये छैये ' मुनिये कह्यो सिंहकेसरीया मो दक सर्वे छ । आवके कह्यो मुझे ह्यो अमारे घेर रत्ता छे निर्दोष छे एवुं कहीन सिंहकेसरीया मोदकनो थाल भरी लाव्यो अन मुनिने अ होरा या तेवारे मुनिनु मन ठेकाणे आव्युं आवक बोल्या स्वामी पुरि मार्द्धना पच्चखाणनो वखत थाव्यो के नहीं ' मुनिये उपदेश आपी आकाशमा जोयु तो निर्मल तारा, नक्षत्रनी श्रेणिविरहित चन्द्रमा ने जो इ चित्त ठेकाणे आवी गयु तेवारे विचार्युं जे धिक्कार छे । में आ शुं कर्युं । जे हुं रात्रीना गोचरी करवा निकल्या ' महारो साधुनो आ चार किहा गयो ' एम पश्चात्ताप करतो थको नगरनी बारे आवी न सूत्रोक्तविधिसहित मोदक परठवतो थको विचारे छ के आ कर्मने धिक्कार पण मुसकील छे । अरे में आ शुं काम कर्युं धर्मनी निंदा करावी, एवीरीते पश्चात्ताप करतो करतो शुक्लध्यान ध्यावतो थका क्ष पकश्रेणी चढीने केवलज्ञान पाम्यो इहा परमार्थ ए छे के जेम एणे लोलना वशथी सिंहकेसरीया मोदक बहोराव्या तेम बीजा साधुये करवा नहीं एवा इहा घणा दृष्टांतो छे पिण अमे केटला लिखीये ए लोल पिंड उपर दृष्टांत कह्यो ॥ ४ ॥

ए पर्वमा सर्व प्रकारे क्रोधादिक नहीं करवा ॥ ते हिवे प र्युषणमा पजुसण करीने रहेला साधु साध्वीओये जीवादिकनी उ त्पत्ति टाळवा त्रण उपाश्रय राखवा तेमा जे उपाश्रयमा पोते रहे ते उपाश्रयने तो प्रतिदिवस त्रणवार पडिलेहण करवुं पूजवो अने बी जा बे उपाश्रयने एकवार पूनरा पडिलेहण करवा ए पूजवा पडिलेह

ानी पच्चीसमी समाचारी जाणवी ॥ २५ ॥
वर्षाऋतुमा रहेला साधु साध्वीओने पोतानी मरजीमा आवे तिहा
वु होयतो गुरुने पुछीने आवो दिशि बतावीने जावो, शिष्य पुछे उ
क शा वास्ते पुछवानु प्रयोजन कह्यो छे? गुरु कहे छे, साधु म छे
चोमासा विना शेषकालमा तो सामान्य प्रकारना तप करे छे परंतु
चोमासाना कालमा घणा प्रकारना विशेष तप करे छे माटे कोइ त
स्वी दुर्बल होय अने किहा मुर्छा खाइ पडीजाय तो, जे दिशायें ग
ो होय ते दिशाये आचार्य याद रागीने निगाह करावे, खबर कहा
ाव, शोध करावे न एटला वखत केम लाग्यो तेमाटे खबर करावे ते
ारु आचार्यने पुछीने बहार जवु जोइयें ॥ ६१ ॥

ए प्रतिजागरण करवानी छवीसमी समाचारी जाणवी ॥ २६ ॥
वर्षाकालना चोमासु रहेला साधु साध्वीओने औषधप्रमुख कामने
ोधे वैद्यनी पासे जवु पडे तो चार योजन तथा पांच योजनपर्यंत
पोताना गामथी जे गाम दूर होय ते गामे जवु एटले सोले तथा वी
स कोश दूर जइने ते गाममाथी औषध लेइ पाछो फिरीआवीने जो
पोते रहेला गामनी माहे उपाश्रयमा दिवस छता आवी न शकाय
तो तेज गामनी बाहेर आवी रहे पिण जे गाममा औषधादिक लेवा ग
या ते गामना रात्रे रहेवु नही, अथवा दिवस छता गामनी बाहेर न
पोहोंची शकाय तो मार्गमा रहेवु ॥ ६२ ॥ ए औषधादिक लेवा माटे चा
रथी पाच योजन लगे जवानी सत्तावीसमी समाचारी जाणवी ॥ २७ ॥
इत्यादिक संवत्सरीनो पर्यूषणाकल्प जेवीरीते कल्पसूत्रमा कह्यो छे ते
ो विधिथी करे, ज्ञान, दर्शन अने चारित्रनो मार्ग जेवारीतें भगवाने
कह्यो छे तेम करे, त्रण प्रकारथी मन, वचन अने कायाये करी फर
शि, अतिचाररहित पाले, विधिसहित शोभा करी दीपावे, जाव जीव सु
धी आराधे, कांठे पहोंचाडे, लोकोमा कीर्ति करे, आराधीने आज्ञास
हित पाळीने केटलाएक निर्ग्रंथ तो तेहिज भवमा सीजे, तत्वने जाणी

कर्मोथी रहित थइ, सरणागरहित थइने सर्व दुःखथी छूटे, मोक्ष पा
मे, केटलाएक त्रीजे भवे मोक्षे, थावत मोक्ष जाय पण सात आठ
भवनो उलंघे नहीं तेमज केटलाएक सातमा तथा आठमे भवे तो अ
वश्य मोक्ष जाय ॥ ६३ ॥

ए चोमासानी मर्यादा पाळे ते साधुने जे फल थाय तेनी अठाई
समी समाचारी जाणवी ॥ ६८ ॥

ते कालने विषे, ते समयने विषे श्रमणभगवंत श्रीमहावीर स्वामी
राजगृही नगरीये गुणशील नामे चैत्यने विषे इहां जे बागमां यक्ष
देहरु होय ते बागने चैत्य कहीये ते चैत्यने विषे घणा साधुओमां, घ
णी साध्वीओमां, घणा श्रावकोमां घणी श्राविकाओमां, घणा देवोमां
घणी देवीओमां बेठा थका अर्थात् भगवान् बार पर्षदामां बेठा थका
एवा वचने करीने कहे ए करवाने पाळवानुं फल बतावे एवो स्वरूप, ए
पज्जुसणकप्पनामा अध्ययन दशाश्रुतस्कंधना आठमो अध्ययन, ते
अर्थसहित, हेतुसहित कारणसहित, सूत्रसहित, अर्थसहित, सूत्रार्थ
सहित, दृष्टांतसहित, वारवार उपदेश करीने देखाडे एवो जे जंबू
(मे हे०) हुं आ सूत्र भद्रबाहु स्वामीये रच्युं छे दश श्रुतस्कंधना आठमो
अध्ययन करीने रच्यो छे पिण बापना मति सुधर्मस्वामी भने जंबुस्वामीने
जाणवा ॥ ६४ ॥ ग्रंथाग्रंथ ॥ १२९६ ॥ इति नवम व्याख्यान समाप्त ॥९॥

॥ इति श्रीकल्पसूत्रस्य भाषा अर्थ भाषा समाप्त ॥

ए कल्पसूत्र दशाश्रुतस्कंधसूत्रनो आठमो अध्ययन छे, तिहां तिण
नुं महिनाण छे ॥ सर्वेषु सूत्रेषु कल्पसूत्र मेरुवादित सर्वेन्द्रतिसुरवरा
॥ कल्पसूत्र सम कल्पतुल्य, चारित्रार्थ गुरुगुरु महाराजुल्य ॥ १ ॥
इति कल्पसूत्र श्री भद्रबाहु सूरि विरचितायाम् भाषा टीका अर्थ समाप्त

॥ समाप्त ॥